॥ श्रीः ॥

सौन्दर्य्य कुसुम
वा
महाराष्ट्रका उदय ।

दो भागोंमें ।

ठाकुर बलभद्र सिंह लिखित ।

अमृतलाल चक्रवर्त्ती द्वारा भारतमित्र प्रेसमें
मुद्रित और प्रकाशित ।
नं० ८७, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

संवत् १८६६ ।

उदय।

सन्ध्या हो गयी, दिनभरके थके थकाये लोग भी प्रफुल्लित होकर वाटिकाओंमें घूम रहे हैं और धनवान अपनी महान् अट्टालिकाओंमें बैठे झरोखोंमेंसे सन्ध्याके सुहावने समयका आनन्द लूट रहे हैं। वायु भी शीतल स्वभावसे संसारमें घूम रही है। वायु बड़ी चञ्चल है। वह निठल्ली तो घूमनेवाली नहीं है; तो अवश्य ही वह किसी न किसी अभिप्रायसे घूम रही होगी।

निःसन्देह ऐसा है भी। सब जगह सब समय वह एक भावसे नहीं घूमती। कहीं धीमी, कहीं तेज, कभी शीतल, कभी उष्ण, अनेक प्रकृतिसे वह चक्कर लगाया करती है। सचमुच वह बड़ी चञ्चल है, उसका कुछ ठिकाना नहीं। वह दावाग्निके साथ मिल कर तो रङ्ग मचाती है और बेचारे टुटपुंजिये चिरागोंके साथ दिल्लगी करती रहती है। वायुकी दिल्लगी हुई और दीपकदास चल बसे। बस फिर क्या चारों ओर अंधेरा हो गया। वायु बदल गयी। वह बड़े वेगसे वृक्षोंको पकड़कर हिलाने लगी; अपने उग्र वेगमें उसने कई वृक्षोंको तोड़ मरोड़ डाला।

पेड़ोंके टूट जानेसे क्या हुआ, धनवानोंको कुछ चिन्ता है? नहीं जी कुछ चिन्ताकी बात भी नहीं है। वे अपनी बारहदरीमें मसहरीपर बैठे, मनमें न जानें क्या क्या सोच रहे हैं; उन्हें घरके बाहरका हाल क्या मालूम? रामशरणकी झोपड़ीका छप्पर वायुके वेगमें उड़ गया, जिससे रामशरण, सचमुच ही नामके अनुकूल दशामें हो गये। रामशरण रामशरण हो गये। अरे यह क्या हुआ? क्या बतावें क्या हुआ। रामशरणकी झोपड़ीका छप्पर उड़ गया। बरसातका मौसिम है, यदि रातको इन्द्रदेवने कृपाकर जलवृष्टि की तो निःसन्देह रामशरण रामशरण ही हैं।

रामशरण भी कुछ कह रहे हैं। सुनिये तो, वे क्या कह रहे हैं। वे कह रहे थे—रामशरण तो रामशरण ही

हैं, सिवाय रामके उनको कहीं शरण नहीं है। झोपड़ीका छप्पर उड़ गया भरी बरसातमें, वाह वाह क्या बात है, वायु अच्छी पलटी। हमारे पास धन नहीं है, राज्य नहीं है, घोड़ा नहीं है, गाड़ी नहीं है, महल नहीं है, कुछ भी नहीं है, है एक झोपड़ी, नहीं नहीं, अब वह भी नहीं रही। छप्पर उड़ गया, सारा खेल चौपट हो गया। अब रामशरणके लिये रात्रिके विश्रामका संसारमें कोई स्थान नहीं है। और यदि है भी तो वही रामशरण !!!

रामशरण तो रामशरण हैं। इससे उन्हें कोई दुःख नहीं है, परन्तु वे धनवान जो बारहदरीमें पड़े पड़े मनमोदक उड़ा रहे हैं, कहिये उन्हें कुछ भी पता है कि रामशरणकी झोपड़ीका छप्पर उड़ गया। अब निर्धन रामशरण सम्पूर्णतः रामशरण है। वे बिलकुल निर्द्वन्द हैं, उन्हें और किसी बातकी चिन्ता नहीं है। यदि है भी तो केवल झोपड़ीके छप्परकी।

प्रस्थान करते करते सूर्य्य भगवान भी अस्ताचलके शिखरपर जा पहुंचे हैं। उन्होंने रामशरणकी दशा देखी कि वे न आज कहीं जाते हैं, न घूमते हैं और न अपनी फूलोंकी क्यारियोंकी ही सिंचाई करते हैं। उन्हें न तनकी सुध है न मनकी। किसीकी सुध भी है तो केवल झोपड़ीके छप्परकी। सूर्य्य भगवान भी निर्धन रामशरणको इसी दशामें छोड़कर चल दिये। हां जाते समय वे अपनी मन्द मन्द रूपहरी धूप रामशरणको झोपड़ीपर डाल रहे थे, जिसका कदाचित यह अर्थ हो कि "उन्हें रामशरणकी दीन दशा तथा निश्चलभावका ध्यान है।"

सुहावनी सन्ध्याकी बड़ी बहिन, निशादेवीका आगमन हुआ। पक्षी भी चोंचको पङ्खोंमें छिपाकर अपने अपने घोंसलोंमें जा सोये। मनुष्योंने भी चारपाई पर दृष्टि फेरी। खा पीकर बिछौने झटक पैर फैलाकर सो गये और निद्रादेवीकी प्रभावशाली मायामें लपटकर स्वप्नमें तरह तरहके चमत्कार करने लगे। राजा, रंक, सुखी दुःखी, पशु तथा पक्षी सभी सो गये। प्रायः सारा संसार सो रहा है। कहिये ऐसे समय पानी बरसे भी तो कोई जाग सकता है? देखो

बादल तड़तड़ा रहे हैं। ओहो बिजली किस वेगसे नीमपर गिरी। राम राम कैसा भय मालूम देता है।

संसार तो प्राय: निद्रामें मग्न है, भला फिर कौन इन बातोंको देखता होगा? तुम्हें बसन्तकी भी खबर है? तुम्हें दारहदरीमें पड़े पड़े कुछ ज्ञान पड़ता है? यह सब देखा अपनी बिना छप्परकी झोपड़ीके दरवाजेके सामनेवाले आमके पेड़के नीचे बैठे रामशरणने; रामशरण हीको यह अच्छी तरह मालूम है, तुम नहीं जानते।

रात्रि भी अपनी काली चादर ओढ़कर चल दी। निर्धन रामशरणने एक पलभर भी आंखें नहीं मूंदीं। रामशरणमें पड़े हुए रामशरणने किसी भांति रात्रि बिता दी और सुबहकी सफेदी आसमान पर फैलने लगी। रामशरणकी आपत्ति मिटनेकी आशालता हरी हुई और भगवान मरीचिमाली, रामशरणपर दयाकर संसारमें उदय हुए।

सौन्दर्य्य कुसुम।

वा

महाराष्ट्रका उदय।

प्रथम खण्ड।

प्रथम परिच्छेद।

धौरी नदीके किनारे।

सिंहः शिशुरपिनिपततिमदमलिनकपोल भित्तिषु गजेषु।
प्रकृतिरियं सत्ववतां न खलु वयस्तेजसां हेतुः॥

भर्तृहरि।

अढ़ाई सौ बरससे अधिक हुए तीन बालक सन्ध्याके शीतल समयमें बम्बई और पूनाके बीच वाली प्रधान सड़कपर मनोहर भावसे स्थित चौक नामक ग्रामके बाहर प्रसन्नतासे खेल रहे थे। धौरी नदी उस खेतमें होकर बह रही थी, जिसमें वे बालक खेल रहे थे। मठेरन और प्रभुल नामकी सहोदर बहिनोंके समान दो पहाड़ियां कोकनी मैदानके ऊपर आनन्दमय हरे हरे वृक्षोंसे मुकुटके समान शोभित होकर दो या तीन हजार फुट ऊंचे आकाशमें उठी हैं। इन्ही दोनों पहाड़ियोंकी मध्यस्थ गहरी उपत्यकामेंसे (घाटीमेंसे) धौरी आगे बढ़कर बहती है। यहांसे प्रायः छः कोस अग्नि कोणकी ओर सड़क पश्चिमी घाटकी विस्तृत पहाड़ी दीवारपर चढ़ गयी है, जो कोकनी मैदान और दक्षिणको उन्नत

समभूमिको एक दूसरेसे पृथक करती है । कोकनका मैदान, पृथ्वीकी लम्बी पट्टीके समान हिन्द महासागर और घाटोंके पर्वतोंके बीचमें पन्द्रह बीस कोस चौड़ा है । घाटके पर्वतों पर चढ़ जाइये, अब आप दक्षिणके सबसे ऊंचे भाग पर हैं, जिसका ढाल विस्तीर्ण प्रायद्वीपके पूर्वी किनारों तक चला गया है । इसी कारणसे, भीमा कृष्णा प्रभृति नदियोंको उनके उद्गम स्थान, उस समुद्रसे, जो कि भारतवर्षके पश्चिमी किनारेपर है, बीस कोस अन्तर पर होनेसे भी, नीरनिधि तक पहुंच कर अपना जल बङ्गालके आखातमें डालनेके पहिले प्राय: पांच सौ कोस पूर्वकी ओर बहना पड़ता है । इसी सड़कसे, जो कि चौकसे घाटों पर जा निकलती है, पूना, मध्य हिन्द और उन वैभवशाली मुगलोंके प्रसिद्ध नगरोंकी राह फूट निकली है, जिनका शासन हमारे उपन्यासके समयमें भारतके अधिकांश भाग पर फैल गया था और जो अपना विस्तार फैलानेको सदैव उत्सुक रहते थे । अन्तत: उनका राज्य हिन्द महासागरसे बंगालके आखात तक और समरकन्दसे लेकर सीलोन तक पहुंच गया था । चौक प्राय: पश्चिमी समुद्रसे, केवल दस कोस था परन्तु वह, सदा बढ़नेवाली मुगलोंकी राज्यपरिधिके, पहिलेहीसे बहुत पास था । जिस समयका हाल हम लिख रहे हैं, चौक ग्राम निवासियोंको मुगल राजके अतिरिक्त, एक दूसरे यवन राजको अत्याचारप्रणालीका और भी अधिक भय था । बीजापुरके राज्यको शासक, दक्षिणमें भारी राजधानी होनेके कारण, सम्पूर्ण कोकन पर कल्याण तक जो चोकके उत्तर, ग्यारह कोस दूर एक उत्तम नगर है अपना स्वत्व कहते थे । इस प्रकार अभागे कोकन निवासियोंको, अपने धर्म तथा जातिके उन प्रधानोंको छोड़, जो पड़ोसमें स्वतंत्र अथवा अर्द्ध स्वतंत्र शक्ति बरतते थे, बीजापुरसे भेजे हुए शासक तथा सैनिक अधिपतियोंके दबाव और अत्याचारके अधीन रहना पड़ता था । इन दशाओंमें अंधाधुन्ध राजसत्ता कोकनमें राज्य कर रही थी, परन्तु सम्पूर्ण कष्ट अपने ऊपर सहते हुए भी, मनुष्य, किसी न किसी दिन अपने भाग्यभास्करोदयका शुभ भविष्य सोच रहे थे । मैदानोंमें, तराइयोंमें

पर्वतोंमें सारे महाराष्ट्रमें यह भविष्यद्वाणी सर्वत्र मुहामुंह घूम रही थी कि "अन्तमें उद्धारका समय आवेगा और कन्यावृन्द प्रसन्नतासे मङ्गलमय गीत गाकर उस समयको प्रकट करेंगी तथा आकाशसे पुष्पवृष्टि होगी।" इन्हीं आशाओंके प्रभावसे देशके मनुष्य सिर उठाने लगे तथा स्वतंत्रताकी छटा उनके मुख-पर दृष्टिगोचर होने लगी। वायुमें भी मानो स्वतंत्रताकी आशा उत्पन्न करनेवाली शक्ति बह रही थी। आठ महीनेकी ऊष्मा-से संतप्त पश्चिमसे पूर्व और बहनेवाली वायु जिस प्रकार भारतकी उपजकी समृद्धि करने वाले पानीको बहा लाती है, यह शक्ति भी ठीक वैसीही थी। भविष्य ज्ञान और अनुभवके किस गुप्त द्वारसे प्रकट हुई है सो हम नहीं जानते, परन्तु यही शक्ति ऊंच और नीच, धनी तथा निर्धन सभीके हृदयमें छा रही थी और इस समय भी इन तीन बालकोंके खेलमें मौजूद थी जो धौरीके किनारे खेल रहे थे।

इन तीनोंमें सबसे बड़ा द्वादश वर्षीय एक बालक था, जिसका नाम नेताजी था। नेताजी हृष्ट पुष्ट तथा उमरको देखते हुए बली जान पड़ते थे। उनके हाथमें बांसका एक मजबूत डण्डा था, जिससे वे एक बड़ी भाड़ीको पीट रहे थे। पीटनेके साथ अपनी महा-राष्ट्र युद्ध ध्वनि "हर! हर!! महादेव!!" भी करते जाते थे। भाड़ीकी डालियोंसे श्वेतरस-दूध बह रहा था। नेताजीकी स-मझमें उनके कल्पित शत्रुकी देहसे रक्त श्रवित हो रहा था। इस उद्दण्ड श्रमसे नेताजीकी देह प्रस्वेद स्नान कर रही थी और उनकी लाल पगड़ी सिर परसे पृथ्वी पर गिर पड़ी थी। उनके साथ दो बालिकाएं थीं, जिनमेंसे एक उनसे तीन बरस छोटी थी और दूसरी सात बरसकी थी। छोटी उनकी जाति तथा सम्बन्धीकी पुत्री थी और बड़ी उनकी बहिन। छोटी जिसका नाम काशी था, नम्रतासे नेताजीके इस कार्यकी प्रशंसा कर रही थी।

"वाह वाह! साहसी योद्धा!" काशीने उत्साह पूर्वक कहा, यह कहते समय उसकी काली पुतली वाली आंखोंसे मानो आग निक-

लती जान पड़ती थी "वाह वाह साहसी योद्धा! तुम खूब लड़े। जिस समय तुम दाढ़ी वाले सौ यवनोंका बध कर चुकोगे उस समय मैं तुमको इन माला गुम्फित चम्पक कुसुमोंसे अलंकृत करूंगी।"

नेताजीकी बहिन गङ्गा काशीकी अपेक्षा न्यून ध्यानमें लिप्त होने वाली प्रकृतिकी जान पड़ी। उसने कहा "प्यारे नित्य! आओ घर चलें, मां तुझे ऐसी धूपमें खेलते देखकर गुस्सा होंगी। देख तो तूने अपने कपड़े भी फाड़ डाले हैं और अपनी नयी पगड़ी भी धूलमें गिरा दी है।"

दूसरीने कहा "कुछ चिन्ता नहीं, सरल हृदय वाली बाई! (नेताजीसे) तुम अवश्य बध किये जाओ। कारण यह अवश्य जानो कि जबतक एक यवन भी महाराष्ट्रमें जीवित शेष है, मैं कभी तुम्हारी दुलहिन न होऊंगी।"

इसी समय बालक बालिकाओंकी एक लौंडी दृष्टिगोचर हुई जिसने इस छोटी बालिकाको इतनी देर बाहर खेलते रहने पर झिड़का और घर ले जानेको उसका हाथ पकड़ा।

काशीने अप्रसन्नतासे मुंह सिकुड़ा कर अपने साथियोंसे कहा "अच्छा तो अब मुझे जाना ही अवश्य है। मैं जानती हूं कि और दिनसे आज जल्दी (अपनी बातमें इतना और मिलाकर तथा नेताजीसे विशेष प्रेमके कारण कहा) तुमने प्रायः सम्पूर्ण यवनोंको बध नहीं किया, इसलिये वे माला गुंफित चंपक कुसुम जो मैंने तुम्हारे हेतु तय्यार किये थे अब मेरे ही सिरपर अलङ्कृत होंगे और सचमुच तुमसे अधिक मुझपर ही खुलेंगे।

यह कहकर काशी उन माला गुम्फित चंपक कुसुमोंसे स्वयं ही अलङ्कृत हो गयी। चम्पक पुष्प उसके मेघकृष्ण केशों पर श्वेत नक्षत्रके समान जगमगा उठे। अतीव मनोहर चित्र उसका उस समय हुआ जब कि वह अपने छोटे छोटे साथियोंसे विदा होकर घर जाते समय मुसकुरायी और कई बार पीछे फिरकर दृष्टि

करती हुई अपने धनवान पिताके प्रासादकी ओर लौंडी द्वारा ले जायी गयी।

काशीके चले जानेपर नेताजीने अपनी पगड़ी पृथ्वीपरसे उठा ली और सुकुमार तथा छोटी गङ्गाकी सहायता से उसे उचित रीत्यनुसार अपने सिरपर ठीक कर जमायी; पश्चात् भाई और बहिन नेताजी और गङ्गा हाथमें हाथ दिये नहीं नहीं कहना चाहिये कि भारतवर्षीय प्राचीन प्रथानुसार एक दूसरेकी अंगुलीमें अंगुली डाले हुए चौकन्ना स्वस्थ अपने शान्तिमय निवासको ओर चले।

द्वितीय परिच्छेद।

यस्य न विपदि विषादः सम्पदि हर्षो रणे न भीरुत्वम्।
तं त्रिभुवनत्रयतिलकं जनयति जननी सुतं विरलन्॥

नीति।

अब हमारे पाठकोंने उन तीन बालकोंको धौरी नदीके किनारे खेलते देखा था, उस समयसे अबतक लगभग छः वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। नेताजी इस समय ऊंचे पूरे जवान हो गये हैं। तरुणताका अरुणोदय उनके ऊपरी होंठ पर होता आता है। काशी अब अपने पिताकी महत् अट्टालिकाके बाहर खेलती नहीं दीख पड़ती है और सुशीला गङ्गा भी उस वयको पहुंच गयी है, जिसमें महाराष्ट्र लड़कियोंका, अपनी जीवन प्रणालीमें स्थित हो जाना साधारण रीति है। हां परन्तु अब उसका विवाह होनेमें अधिक दीर्घ काल या देर नहीं है। गङ्गाके माता पिताने पड़ोसमें उसके योग्य वर खोज लिया है। वरके अधिक धनवान् होनेके कारण गंगा उसके घर ही पहुंचायी जायगी। वहीं वरकी मान मर्यादाके अनुसार उचित धूम धड़ाकेसे विवाह होगा।

इधर इन अन्तिम छः वर्षों में स्वातन्त्र्य शक्ति उत्तरीय कोकनमें अधिकतर दृढ़ हो गयी है। उन मनुष्योंका जोश जो किसी परिचित तथा विख्यात व्यक्तिकी अप्रस्तुतिमें बीजापुरके विरुद्ध विद्रोह करनेको प्रस्तुत थे, राज्यकी ओरसे छोटे छोटे सैनिकसमूह पर ही जो करोंकी वसूलीकी ताकीद करने तथा विद्रोहियोंके ऊपर दबाव और असीम बल दिखानेको घूमा करते थे, आक्रमण होनेसे प्रकट हो जाता था। अपने ऊपर आक्रमण होनेसे बीजापुरके सैनिकोंका क्रोध भभक उठता था। वे लोग उन अपराधोंके हेतु, जो उनके साथ दूसरोंने किये हैं, अपना बदला चुकानेको हिन्दू ग्रामोंके असहाय तथा निरपराध निवासियोंको पीट कर अपनी दिली हरारत मिटाया करते थे।

ऐसी दशामें जब कि बहुतसे ऐसे ही लड़ाई झगड़े प्रजा तथा बीजापुरी सैनिकोंसे चौकके आस पासके ग्रामोंमें हो चुके थे, गंगाको अरक्षित बडग्राम भेजना निरापद नहीं विचारा जा सकता है। गंगाके माता पिता विशेष धनी नहीं थे। वह समूह जो गंगाके साथ साथ बडग्राम जा रहा है न तो बहुत बड़ा ही है और न साज सामानसे अच्छी तरह दुरुस्त ही है। कुटुम्बके ही प्रायः दस बारह मनुष्य दिक्षणी टट्टुओं पर सवार छोटे बड़े आकारकी तलवारें लगाये उसके आगे पीछे चले जा रहे हैं। तरुण नेताजी उनमें प्रधान दीख पड़ते हैं। वे एक बड़े घोड़े पर सवार हैं जिसे उन्होंने अपनी बाल्यावस्थाकी सङ्गिनी काशीके पितासे इस अवसर पर माग लिया था। दुलहिनका अत्यन्त समीपी सम्बन्धी होनेके कारण नहीं वरन् प्रधानत्वमें उठती उमरके उत्साहोंसे अपनी इस स्थितिमें नेताजी प्रसन्न हैं और अपने सुनहरी कामके कमरबन्द तथा पटके पर जिसमें तलवार लगी है गर्वित हैं। इसलिये तरुण तथा आरोग्यताके गर्वमें इस समूहमें नेताजी कभी आगे कभी पीछे होते हुए चले जा रहे हैं।

कोस भर तक यह समूह धौरीकी बहावकी ओर चला गया। इस जगह धौरी पाटल गंगामें मिलती है—यहीं दोनोंका सङ्गम हुआ है। अब ये लोग घूम पड़े और पाटल गंगाके दाहिने

किनारेसे आगे बढ़ने लगे। अकस्मात् मार्गमें एक उद्दण्ड बाधा उपस्थित हो जानेके कारण इन लोगोंको अटकना पड़ा। बाधा यह थी कि यवन सैनिकोंके एक भारी दलने उनका मार्ग रोक लिया। विवाहके मुखियोंने होनेवाले अत्याचारका निश्चित तथा सम्पूर्ण रूपसे भय विचार कर वापिस चौकको भाग जानेकी इच्छासे शीघ्रतापूर्वक अपने घोड़ोंकी वाग मोड़ी, परन्तु घूम कर दृष्टि करने पर उन्हें विदित हुआ कि रास्ता उस ओरसे भी रोका जा चुका है। यवनोंने अपनी तोड़ेदार बन्दूकोंका इस ओर लक्ष्य बांधा और उनमेंसे एक मनुष्यने जो कदाचित प्रधान हो ऊंचे शब्दसे कहा—"अगर रोकने या भागनेका तुम लोगोंने ध्यान भी किया तो हम एकदम गोली छोड़ेंगे।" गंगाकी रक्षाको साथ गये हुए दो एक अत्यन्त साहसी मनुष्योंने गंगाकी पालकी और अपने घोड़ोंको सड़कसे घुमाकर एक बाजूके मार्गसे निकाल ले जाना चाहा। तुरन्त ही बाढ़ दागी गयी, जिससे दो मनुष्य घायल हुए और एक व्यक्ति मर गया। अब और सब प्रकारकी रोक अथवा युक्ति यवनोंके इस भारी दलके सामने व्यर्थ होती देख पड़ी दोनों घायल, पालकीमें बैठी हुई गंगा, मृत व्यक्ति तथा नेताजीको जिन्होंने अपनी बहिनका साथ छोड़नेसे इन्कार किया था, पीछे छोड़ या उनका पीछा छुड़ाकर साथ आये हुए समूहके शेष मनुष्य भाग गये।

बेचारी गंगा इतनी भयभीत हो गयी कि रो भी न सकी। उसके भाई नेताजीने अपने घोड़ेसे नीचे उतर कर उसे आश्वासन करनेका प्रयत्न करते हुए उसकी बगलमें खड़े होकर कहा—"बाई गंगा! निश्चय रखो शरीरमें प्राण रहने पर्यंत मैं तुम्हारा साथ कदापि न छोड़ूंगा।"

एक यवन जो उस झुण्डका नायक जान पड़ता था और जिसके बदन पर बेशकीमत जिरह बखतर (कवच) था नेताजीके पास आया और कहने लगा;—

'अय जवान! शर्मिंदा मत होओ। शर्मकी कुछ बात नहीं है, क्योंकि ताज्जुब नहीं कि आजका दिन तुम्हारी इकबालमन्दीको

तरक्की आवर हो। तुम्हारी हमशीरा हमारे साथ बीजापुर जाती हैं जहां वह बादशाहके भारी उमराओंमेंसे एककी बेगम बनेंगी। तुम खुद भी जल्द ही एक ताकतवर दौलतमन्द बन जाओगे। साथ ही इसके शाही रिसालेमें तुम्हारी तरक्कीकी भी उम्मेद है। खास कर बशर्ते कि तुम अपनी नादानी हरकत शैतानी हिन्दुबुतोंकी परस्तिश करना छोड़ दो और सच्चे दिलसे एक खुदा और उसके रसूल मुहम्मद पर यकीन ले आओ। क्योंकि अगर सादे भी हों तौभी इकबालमन्दोंके तोहफ़ेको कबूल करना चाहिये। फिर यह कितना भारी मौका और तुम्हारा खुश किसमती है। अपनी तलवार मियानमें करो और हमारे साथ आ............"

नेताजीने उस यवन सेनानायककी इन उद्दण्ड बातों तथा मनोरथोंको चुपचाप सुनते रह कर बिना कुछ कहे सुने उसकी छातीमें एक ऐसी हूल लगायी जिससे उनकी तलवार उसके हृदयमें गहरी खुप कर धस गयी। यवनमण्डलीके नायक मर कर पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके प्राणपक्षीको तनपञ्जरसे पयान करते तनिक विलम्ब न लगा। यवनमण्डलीनायककी बहुतसी बातोंका नेताजीने यही उत्तर दिया। यह देख कर यवनोंके आश्चर्यकी सीमा न रही। वे लोग भयंकर भावसे नेताजी पर टूट पड़े। नेताजी आक्रमण करनेवालोंके अनेकानेक प्रहारोंसे अपनेको बचाते तथा वीरतापूर्वक उनका सामना करते रहे। शत्रुदलके बड़ा होने पर भी रक्तपरिप्लुत वीरोचित अवस्था पाने तथा मूर्छित होनेके पहले वे कई यवनोंको आहत कर भूतलशायी कर देनेमें सफल हो चुके थे। जिस समय नेताजी आहत होकर वहां मूर्छित पड़े थे एक द्वेषी मुल्ला जो प्रसंगवश यवनदलके साथ होगया था नेताजीकी जीवनी-लीला निश्चय ही समाप्त करनेके लिये बर्छी लेकर दौड़ा परन्तु एक तरुण व्यक्तिने जो वहीं खड़ा था उसे यह कह कर रोका कि कतलहुएको मारना कुछ खूबीका काम नहीं है।

"नहीं नहीं रुस्तमजमां" मुल्लाने जवाब दिया यह मुर्दा नहीं है। मेरे ख्यालसे इसे गश्च आ गया है। तुम इसे जिन्दगीका मौका

देनेके पेश्तर दुबारा सोच लो। क्योंकि इसकी जिन्दगी कई बच्चे दोनदारोंको मौतका बाइस होगी। इसकी जान बचानेसे कई आदमियोंकी जान जायगी। अगर यह अपनी जवानीकी मौज पर पहुंचा तो बेशक बड़ा बहादुर और जोरावर निकलेगा। जरा गौर तो करो बुजुर्ग शेख सादी साहबने क्या ही उमदा नसीहत की है कि जो अपनी मेहरबानी पर अपने दुश्मनको जिन्दा रखकर उसे कत्ल नहीं करता है वह अपनी जानका दुश्मन आप ही है। अपने हाथमें पत्थर और सांपका सिर माकूल मौके पर पाकर अकलमन्द उसे कुचल डालनेमें आगा पीछा नहीं करते।"

रुस्तमजमां उदार हृदय शत्रु था। नेताजीकी बहादुरी और अपनी बहिन पर असीम तथा अटल स्नेह देखकर उसका हृदय दयासे द्रवीभूत हो गया। उसका हृदय दृढ़ता पूर्वक बीर नेताजीका पक्ष करने लगा। उसने मुल्लासे कहा ;—

"वही शेख सादी साहब हमको यह भी नसीहत करते हैं कि कालिबसे जान जुदा करना ज्यादा मुश्किल नहीं है मगर मुर्देको फिर जान बख्शना उतनी आसान बात नहीं है। क्योंकि दानाई तीर छोड़नेमें सब्र करना कहती है। कमान पर चढ़ कर हाथसे छूटा तीर फिर कभी वापिस नहीं आता। यह जवान अगर जिन्दा भी हो तौ भी इस तरह बेहोशीमें इसका हलाल किया जाना मुझे नापसन्द है। मगर मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कि यह मुर्दा है।"

इसीसे नेताजी और अधिक आहत नहीं होने पाये। जिस स्थान पर वे गिरे थे उसी जगह उन्हें पड़े छोड़ कर यवन चले गये। वास्तवमें वे मरे नहीं थे। कुछ देर तक सड़ककी बगलमें अचेत पड़े रहनेके पश्चात् उन्हें कुछ चेत हुआ। नेताजीने अपनी आंखें खोल दीं। अशक्त होनेके कारण वे और भी कुछ देर वहीं चुपचाप आंखें बन्द किये पड़े रहे। रात्रिके अंधेरे तथा निर्बलताके कारण उन्हें कुछ भी ध्यान न था कि वे कितने समय तक पृथ्वी पर अचेत पड़े रहे। अन्तमें वे उठनेके योग्य हुए

और अंधेरेमें ही निर्बलताके कारण लड़खड़ाते तथा मार्गमें ठहर ठहर कर विश्राम लेते हुए अपने गांवको लौटे।

जब उठते बैठते किसी प्रकार नेताजी अपने पिताके घर पहुंचे तब उन्होंने अपने माता पिताको उस दुर्दैव पर जो उन पर टूट पड़ा था और जिसने उनको अपने दो बच्चोंसे एक ही पाषाणके कठिन प्रहारसे पृथक कर दिया था—बैठे तथा विलाप करते पाया। दुख और सुख मिश्रित भावसे उन्होंने पुत्रको घरमें लिया और उस समयके पश्चात् जब कि गङ्गाके साथ गये हुए समूहके अन्य मनुष्य (गङ्गा और नेताजी, दोनों घायल तथा मृतकको छोड़कर) भाग गये थे जो कुछ नेताजी तथा उनकी बहिन गङ्गापर बीता था सुना। फिर उन्होंने नेताजीके घाव धोकर लेप और मरहम पट्टी की और दयार्द्र चित्तसे नेताजीको बिछौने पर सुला दिया जहां कुछ घंटों तक उनको आरामसे सोनेका अवकाश मिला।

तृतीय परिच्छेद।

मठेरनका प्रवास।

> अरक्षितं तिष्ठति दैव रक्षितं सुरक्षितं दैव हत विनश्यति।
> जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः कृत प्रयत्नोपि गृहे विनश्यति॥
>
> पञ्चतन्त्र।

कुटिल कालकी महिमासे नेताजी सुखकी शान्तिमय छायामें न रहने पाये। स्वयं अपने ही हाथसे उन्होंने बीजापुरके एक पदाधिकारीका बध कर डाला था। इस हेतु तुरन्त ही भाग जानेके अतिरिक्त बध दण्डसे बचनेके अन्य उपायकी प्रतीक्षा कठिनतासे की जा सकती थी। अवश्य ही उनकी गणना हिन्दू राजविद्रोहियोंमें

की जावेगी। इस बात पर जोर देनेसे कुछ विशेष लाभ होना सम्भव नहीं था कि उद्दण्ड अनुचित रीतिसे तथा बिना अपनी ओरसे छेड़ हुए अपने पर आक्रमण करनेसे उन्होंने यवनोंसे ऐसा बरताव किया था। उनकी कुशलका सर्व श्रेष्ठ अङ्ग इस बात हीमें था कि सर्व साधारणमें यही प्रकट रहे कि जिस जगह वे मूर्छित होकर गिरे थे वे वहीं छोड़ दिये गये। नेताजीके पिताने इसी हेतु उनको गुप्त रीतिसे बाहर पहुंचा देने और प्रत्येक मनुष्यसे यह छिपा रखनेका दृढ़ निश्चय कर लिया कि नेताजी उस झगड़ेके बाद घरको जीवित लौट आये थे।

ग्रामसे थोड़ीही दूर स्थित मठेरन पर्वत पर इस वंशके एक व्यक्ति निवास करते थे। वे अपनी युवा अवस्थामें बड़े वीर थे। परन्तु अब बहुत दिनोंसे उन्होंने संसार त्याग कर दिया था और योग धारण कर शेष जीवन व्यतीत करते थे। अनेकानेक पुण्य स्थान तथा तीर्थोंमें पर्यटन करनेके पश्चात् वे मठेरन शिखरस्थ गिरिगुहामें निवास करने लगे थे। वह गिरिशिखर न तो भली भांति सुरक्षित था और न उपजाऊ; इसी कारण यवन शासकोंका अनुराग उसपर आनेकी नहीं हुआ। नेताजीके पिताने उसी रात्रिमें अपने पुत्रको योगिराजकी सुरक्षामें भेजनेका दृढ़ विचार किया।

प्रातःकालके प्रकाशकी रुपहरी आभा अभी दीख भी न पड़ी थी कि नेताजी नींदसे जगाये गये। नींदसे उठने पर उनसे कहा गया कि उनको अपनी कुशल हेतु "मठेरनका प्रवास" करना अवश्य है। यदि वे चलनेमें अशक्त हों तो उनको ठिकाने तक पहुंचानेके लिये मनुष्योंको खोज की जावे। उन्हें यह भी चिताया गया कि उनके जीवित रहनेका हाल छिपाया जाना अत्यन्त आवश्यकीय है परन्तु थोड़ेसे हितू मनुष्योंको इस गुप्त भेदमें सम्मिलित कर लेना सम्भवतः अधिक कुशल सम्मत है।

नेताजी यद्यपि अब भी अशक्त थे तथापि आराम कर लेनेसे वे कुछ स्वस्थ हो गये थे। उन्होंने घरसे पहाड़ तक

पैदल चले जाना शूरोंकी भांति स्वीकार कर लिया। इसलिये भोरसे पहिले अंधेरे समयमें जिसे उषाकाल कहते हैं, माता पितासे अनुराग युक्त विदा लेकर अपना चेहरा कपड़ेसे ढके हुए एक विश्वासी नौकरके साथ नेताजी अपने नये घर मठेरन पर्वतके शिखरको रवाना हुए।

तीन साढ़े तीन कोस सीधी चढ़ाई चढ़कर वे प्राकृतिक पाषाण निर्मित एक सीढ़ी पर * पहुंचे। यह सीढ़ी मठेरन शिखरस्थ उच्च सम भूमिके किनारे तक दो हजार फुट ऊंची है। बेचारे नेताजी अब और आगे न बढ़ सके। एक तो वे अशक्त थे ही, इतनी दूर चले आने पर और भी थक गये थे। सीढ़ीकी इतनी ऊंची चढ़ाई चढ़नेका प्रयत्न करना तो व्यर्थ ही था।

जिस समय वे लोग सीढ़ीके पदप्रांत भूमिमें विश्राम कर रहे थे, एक पहाड़ी लोगोंका समूह जो अपनी जाति ठाकुर बतलाते हैं उन्हें दृष्टिगोचर हुआ। वे अपने घरोंको पहाड़ पर लौटे जा रहे थे। यह कठिनता उपस्थित देखकर नेताजीके स्वामि भक्त नौकर ईसाजीने उन लोगोंसे अपनी सहायता करनेको कहा। पहिले तो वे लोग नेताजीको पहाड़ पर पहुंचा देनेके परिश्रमके पलटे कुछ रुपया पानेका ठहराव करने लगे; परंतु जब उन्होंने यह सुना कि वे मठेरन शिखर पर रहने वाले योगिराजके शिष्य होनेको जा रहे हैं तब उन्होंने एक पैसा भी लेना अस्वीकार किया। महात्मा योगिराज पर इन लोगोंको ऐसी ही असीम श्रद्धा भक्ति थी।

पहाड़ी लोगोंने कहा कि लम्बे लम्बे ढालू चट्टानोंके चढ़ावसे नेताजीको इस अवस्थामें (आहत होनेके कारण) अतीव कष्ट तथा

---

* यह विशाल प्राकृतिक पाषाण, निर्मित सीढ़ी आजकल Jacob's ladder के नामसे पुकारी जाती है और मई तथा अक्टोबरके गर्म महीनोंमें लोग (विशेषकर अङ्गरेज) प्रति वर्ष वहां जाते हैं।

हानि होना सम्भव है।, इस भांति वे पर्वत पर नहीं पहुंचाये जा सकते। इस कारण हम नेताजीको कुछ विशेष लम्बे परन्तु अधिक सुगम और सीधे मार्गसे ले जायंगे। उस पदसे हम उन्हें बंध या लकड़ियोंका मचान बांधकर ले जा सकेंगे। ईसाजी इस बात पर तुरंत ही राजी हो गये। वृक्षोंकी डालियां काटकर शीघ्रतासे बंध बांधा गया और उन पहाड़ी लोगोंने अपने कम्बल जो वे ठंड और पानीके बचावके लिये अपने पास रखते हैं उस (बंध) पर बिछानेके पश्चात् नेताजीको उस पर लेटा दिया। इस प्रकार प्रबंध कर वे नेताजीको मञ्च पर रखे हुए, उस जङ्गलमेंसे जिससे मठेरन पर्वतका आधा भाग झालरकी तरह भूषित है—एक घूम घुमौए रास्ते पर आगे बढ़ते हुए उन ऊंचे ऊंचे पर्वत शृङ्गोंको (जो अब छोटे और बड़े चौकके नामसे पुकारे जाते हैं) पार करनेके पश्चात् पर्वतके पूर्वी ओर वाले जङ्गलमें धीरे धीरे जाने लगे। वे लोग आहत नेताजीको इतनी सावधानी पूर्वक बराबर कदम रखते हुए ले गये कि उनको नींद आ गयी और वे मार्गके अधिकांश भागमें सुखसे बेसुध सोते हुए चले गये। अब यह समूह मठेरनके शिखर पर जा पहुंचा। एक भली भांति पूर्व परिचित स्थानसे—जहां एक भारी जामुनका वृक्ष देवालय शिखरके समान अपने एकत्रित शाखा टोपसे मार्गपर छाया कर रहा था—होते हुए ये लोग थोड़ी देर तक और चलने पर महात्मा योगिराजके पास पहुंच गये।

योगिराजका निवास पर्वत पर एकांतस्थ एक विस्तीर्ण शिलाकी छोटी सी कन्दरामें था, जिसपर जामुनके वृक्षकी सघन तथा शीतल छाया रहती थी। यह गिरि गुहा "व्याघ्र कन्दरा" के नामसे प्रसिद्ध थी। इसका कारण यह था कि उस कन्दरामें पहिले योगिराज नहीं, एक भयानक व्याघ्र निवास करता था। उसने बेचारे पर्वतवासियोंके बैल, गाय तथा बहुतसे पशु नाश कर डाले थे। जिस समय योगिराजने इस स्थानमें आगमन किया उन्होंने उस भयङ्कर व्याघ्रको अपने लम्बे बर्छेसे मार डाला तथा लम्बी धारियों युक्त उसके चर्म, व्याघ्राम्बरको अपने ओढ़नेके

निर्मित ले किया। व्याघ्रको यह कन्दरा जितनी सुखप्रद थी, उससे अधिक सुपासमय स्थान योगिराजको हुई। उसमें प्रकृति निर्मित द्वार तथा वातायन बने थे। नीचेकी गच (फर्श) पथरीली तथा कन्दराके बाहरवाले धरातलसे बहुत ऊंची थी। वह उन दिनोंमें भी सूखी रहती थी, जब पर्वत शिखर वर्षा ऋतुकी सामयिक वृष्टिसे तर हो जाता था।

उस पर्वतीय गिरि गुहा रूपी कमरेमें योगिराजका बहुत ही थोड़ा तथा साधारण सामान था। वहां कुर्सी, पलंग अलमारी बिस्तर आदि कुछ भी न था। हमारे पाठकोंमेंसे कोई कोई सोचते होंगे कि यदि ये चीजें वहां न थीं तो फिर क्या था? यही तो साधारण सामान हैं।

प्रिय पाठको! यह साधारण सामान नवीन समाजका है। आपका कथन ठीक है कि कुर्सी पलंग आदि साधारण सामान हैं। हैं सही! पर नहीं हैं!! सब कुछ है पर कुछ नहीं है!!! यह नवीन समाज है, नवीन रीति है, नवीन आविष्कार है। वहां प्राचीन प्रणाली है, प्राचीन विचार है, प्राचीन समय है तथा प्राचीन प्रथा है।

यदि आप नहीं जान सकते तो आपको विशेष भूल भुलैयामें न डालकर हम ही बताये देते हैं; सुन लीजिये। वहां यह कुछ टीमटाम या भड़क न थी। योगिराज ही केवल पालथी मारे बैठे थे। उनके पास व्याघ्राम्बरके अतिरिक्त और किसी अधिकतर कोमल पदार्थकी शय्या और कन्दराके पथरीले फर्शके सिवा कोई सुखप्रद पलंग न था। ताले चाभीकी जरूरत रखने वाली या झञ्झट पैदा करने वाली कोई चीज ही न थी। गुफाके कोनेमें एक जोड़ मुद्गर रखे थे, जिनसे योगिराज प्रातःकाल तथा सन्ध्याको सदैव अभ्यास किया करते थे। यद्यपि उनकी आयु पचास वर्षसे ऊपर पहुंच गयी थी, तौभी उनके डंड लोहेके समान अभीतक बने थे, शोभायुक्त चौड़ा सीना बाहर निकला हुआ था, कलाई भरी हुई और पिण्डलियां कठोर तथा तनी हुई थीं।

उनके आस पास तथा देह पर उनके अधिकृत बोझेसे पदार्थ थे। पृथ्वी पर कमण्डलु रखा था। एक ओर पानीका घड़ा और आग पकड़नेका लोहेका लम्बा चिमटा धूनीमें गड़ा था। पवित्र तुलसीको माला कंठको सुशोभित कर रही थी। योगिराजके पास उनकी यात्राओंके स्मारक नारियलका कमण्डलु, शङ्ख आदि थे, लोहेका कड़ा जो दाहिनी भुजा पर था हिमालयस्थ एक तीर्थका था। अष्ट धातु निर्मित सुवर्ण मक्षिका जटा जूटको अलङ्कृत कर रही थी, वह कालिका जीके उस मन्दिरकी यात्राका पता दे रही थी जो बलूचिस्थानमें(१) है। श्वेत शङ्ख जो कलाईमें बंधा था यह प्रकट करता था कि योगिराजने भारतवर्षके दक्षिणमें स्थित रामेश्वर यात्रा भी की है।

ईसाजीने अपने स्वामी पुत्रका परिचय, उनकी बहन गङ्गाकी घटना तथा उनका मृत्युके कराल गालमें घुसकर सौभाग्यवश बच जाना सविस्तार वर्णन कर, योगिराजसे कराया। योगिराजने सम्पूर्ण वृत्तांत उत्सुकता तथा ध्यान पूर्वक सुननेके पश्चात् नेताजीको अपना शिष्य कर आत्मजकी भांति अपने पास रखना स्वीकार कर लिया।

१। किलातसे अनुमान दो सौ पचास मीलके लगभग दक्षिण नैऋत कोणको झुकता और जहां हिंगुल नदीका समुद्रसे सङ्गम हुआ है उससे २० मील ऊपर उसी नदीके किनारे दो पहाड़ोंके बीच एक गुफासी है। उसीके ऊपर हिंगलाज देवीका छोटासा कच्चा मन्दिर बना है, मन्दिरमें मूर्त्ति नहीं है, केवल पिण्डीकी पूजा होती है। यह स्थान हिन्दुओंका बहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। इसको उसका प्रसिद्ध नाम हिंगुला मालूम होता है, क्योंकि हिङ्गलाज शब्द किसी ग्रन्थमें नहीं मिलता, और हिंगुला चूड़ामणि तन्त्रमें उस पीठका नाम लिखा है जहां शाक्त मतवालोंके निश्चयके अनुसार देवीका ब्रह्म रन्ध्र गिरा था। हिन्दुस्थानके जो यात्री वहां जाते हैं उनको कराची बन्दरसे वह स्थान दस मञ्जिल पड़ता है।

स्वामीभक्त सेवक ईसाजीने पर्वत शिखरपर थोड़ी देर ठहरनेके पश्चात् विदा मांगी तथा सम्भवतः जितनी जल्दी हो सके, जाकर नेताजीके माता पिताको उस कार्यकी सफलताको कहने तथा उस चिन्तासे छुड़ानेको, जो अपने पुत्रके विषयमें वे लोग कर रहे होंगे, चौलको रवाना हुआ। ईसाजी उसी प्राकृतिक पाषाण निर्मित सीढ़ीसे पर्वतके नीचे उतर गया और युवक नेताजी मथेरनके शिखर पर व्याघ्र कन्दरामें निवास करनेवाले योगिराजकी गुफामें रहने लगे।

चतुर्थ परिच्छेद ।

मठेरन पर्वतके शिखर पर जीवनकाल ।

वदनं प्रसाद सदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः ।
करणं परोपरणं येषां केषां नते वंद्याः ॥

सुभाषितरत्न भाण्डागार ।

ईसाजीके पर्वत शिखरसे चले जानेके पश्चात् योगिराजने कुछ कृपायुक्त वचनोंसे अपने नवीन शिष्य नेताजीका स्वागत किया तथा उपदेश दे दिया। उन्हें कंदराका वह कोना बतलाया गया जो उनको अपनी चटाईरूपी तोषक बिछानेका स्थान बना। जिस दिन नेताजी यहां आये उस दिन गर्मी बहुत थी। नेताजीको अपने निवास स्थान, कंदराकी विशाल छतकी छायामें, हीन परन्तु निष्कंटक बिछौना बिछाकर आराम करनेको कहा गया। सूर्यास्तसे कुछ पहले ही नेताजी अच्छे प्रकार आराम कर चुके और पर्वत शिखर पर शोभित वन तथा नीचेवाली तराइयोंमें, अपने गुरुके साथ जाकर घूमने फिरने तथा शोभा

निरीक्षण करनेको तैयार हुए। जहां नित्यप्रति आवश्यकीय कृत्य करना होगा और पान तथा स्नान आदिका जल लाना होगा, वहां पर स्थित लोहेके रंगवाले काले पाषाणसे झरते हुए झरने पर उन्होंने कुछ देर विश्राम किया। पश्चिम दिशामें विशाल प्रमुख पर्वतके पीछे सूर्य्य भगवान अभी अस्त ही हुए थे, परन्तु आकाश अब भी बैंजनी और सुनहली प्रभासे रङ्गा था। उसके बायीं ओर दो तीन हजार फुट नीचे चौक ग्रामके आसपासवाली जामुन तथा आमोंकी कुंजें और नेताजीके पिताके मकान दिखाई दे रहे थे। नेताजीने विचारा कि उनके माता पिता इस समय उनके विषयमें विचार करते होंगे और उनकी कुशलके निमित्त भगवानसे विनय करते होंगे। इस प्रकार नेताजीका मन लम्बे अन्तरको उल्लंघन कर उस परिवार वृत्तमें पहुंच गया जिससे भाग्यके निर्दय आघातने उनको छुड़ाकर मठेरनके पर्वत शिखर पर जीवनकाल शेष करनेको वनवासी कर दिया था। प्रमुखके दक्षिण प्रायः बारह कोस अन्तर पर पुर्तगीजोंके बम्बई नामक नगरके सफेद मकान और सुन्दर यूरोपसे आये हुए जहाजोंके ऊपरी भाग काले काले धब्बोंके समान वहांके बन्दरमें दिखाई देते थे। इस दृश्यके केन्द्रमें मठेरनकी जोड़वाली पहाड़ी प्रमुख स्थित है जिसका अर्द्धभाग केवल पाषाण तथा वनसे आच्छादित है परन्तु वह इस समय डूबते हुए सूर्यकी किरणोंसे वियुक्त होकर काला जान पड़ता था।

नेताजीका मन यदि उनकी बहिनकी अनिश्चित अवस्थाके शोकसे छाया हुआ न होता तो इस शिखरपरके हरे हरे वनसे उन्हें इतनी प्रसन्नता होती जितनी मनुष्यको इस पृथ्वी पर होना संभव है। पर्वतशिखरकी निर्मल वायु, तराईकी उस कुन्द हवाकी अपेक्षा जिसमें वे अबतक थे, मनको हरा तथा प्रसन्न करनेवाली थी। जंगली पगडंडियों तथा नीचेवाले मैदानोंकी दूर दूर तककी सुहावनी शोभा, एक बार देखनेपर, कभी विस्मरण होनेवाली न थी। नेताजीके स्वभावमें कार्य तत्परता तथा विचार शक्ति दोनों गुण थे। उनके चाल ढालकी इन दोनोंके संयोगोंके लिये यह नवीन जीवन प्रणालीमें सम्पूर्णतः संतोषप्रद थी।

प्रत्येक दिवस उनका अधिकांश समय, उनको आत्मीय शिक्षामें व्यय होता था। उससे अवकाश पानेपर वे योगिराज द्वारा व्यायामको उत्तम प्रणालीमें लगाये जाते थे। नेताजीके मुख्य मुख्य अभ्यासोंमें मुगदर फेरना, डंड करना, लेजम हिलाना इत्यादि थे। सीना चौड़ा करनेके लिये लेजमको दाहिने तथा बायें हाथके पूरे फैलाव तक, किसीभी एक हाथसे लेजाना होता है और दूसरे हाथसे सांकलको अपनी ओर बलपूर्वक झटका देकर खींचना होता है। पहले पहल नेताजीको इन अभ्यासोंके करनेमें कठिनता जान पड़ी थी परंतु कुछ दिन अभ्यास करने पर वे लगातार सैकड़ों डंड करने लगे। इन्हीं अभ्यासोंके द्वारा, भारतवर्षीय योद्धाओंको, आधुनिक पहलवान सैंडो तथा मेकलेरन प्रभृतिके बहुत काल पहिले अपने शरीर तथा प्रत्येक अवयवको दृढ़ तथा पुष्ट करना सिखाया जाता था।

व्यायामके अतिरिक्त योगिराज नेताजीको शस्त्रविद्यामें भी शिक्षा देते थे। वे उनसे यह कहते थे कि तुम्हारा अभ्यास उस समय तक परिपूर्ण नहीं समझा जावेगा जबतक कि तुम, तलवार, तीर तथा बर्छा चलानेमें अपने गुरुको बराबरी न करने लगोगे। परंतु अब उनको यह बतलाना आवश्यक जान पड़ा कि अभी और कौन कौनसी शिक्षा ग्रहण करना उचित है। नेताजी बलसंबंधी अभ्यासोंमें अपने बराबर वाले पहाड़ी साथियोंको पारकर गये और अब उनका मन इस ओर झुका कि बिना और अधिक शिक्षा ग्रहण किये युद्धभूमिमें अब अच्छे प्रकारसे रणकला चातुर्य दिखाकर प्रसिद्धि पाना योग्य है इस कारण यहां आनेके तीन वर्ष पीछे योगिराज नेताजीको अपने साथ बाहर ले गये और उनके हाथमें एक हल्की बर्छी देकर तथा एक चट्टान सौ हाथ दूरपर दिखाकर बोले :—

"मैं उस चट्टान पर तुम्हारी बर्छीको फेंक तथा लक्ष्य देखना चाहताहूं" अपने शिक्षकको अपना साहस दिखानेको उत्साहित नेताजीने, अतीव प्रयत्न पूर्वक, तुरन्तही उनके कहे हुए कार्यको पूरा करनेकी चेष्टा की।

योगिराजने नेताजीको प्रशंसा कर कहा—"उमर देखते हुए बदन तुम्हारा अच्छा है और जब तुम अपनी बर्छीको फेंकनेमें सम्पूर्ण बल लगानेके योग्य हो जाओगे तब तुम भारी बर्छी चलानेवाले बन जाओगे। देखो, जिस भांति, अभी तुमने अपनी बर्छी पकड़ कर फेंकी थी, उस प्रकार करनेसे तुम्हारा आधा बल व्यर्थ चला गया।"

अनन्तर योगिराजने, नेताजीकी बर्छीकी अपेक्षा अपना बहुत भारी बर्छा उठा कर, तनिकभी परिश्रम बिना प्रकट किये ही, लक्ष्य पर फेंका, और वह भी उसी स्थानके पास जाकर गिरा जहां नेताजीकी सम्पूर्ण बलसे फेंकी हुई बर्छी गिरी थी।

अब शिक्षकने अपने शिष्यके हाथमें तलवार दे दी और आप पटा ले लिया। इसी पटेसे महाराष्ट्र योद्धा अपने ऊपर एक ही नहीं किन्तु अनेक आक्रमण करनेवालोंके लगातार तथा बारम्बार प्रहारोंसे भी अपनी रक्षा किया करते थे। योगिराज बोले,—मुझे यह देखना है कि तुम तलवारकी लड़ाईमें में क्या कर सकते हो! अपने बलभर मेरे सिर, भुजा या पैर में यथाशक्ति चोट पहुंचानेका उद्योग करो।

नेताजीने लज्जामय भावसे अपनी तलवार पृथ्वी पर फेंक-कर कहा—"स्वामी! आप मेरे गुरु हैं, मैं क्योंकर ऐसा अधर्मी तथा नीच हो सकता हूं कि अपने गुरु पर प्रहार करूं?"

योगिराजने कहा "मेरे पुत्र! यथार्थमें गुरुका मान उनकी आज्ञा पालन ही है। इससे अपनी तलवार हाथमें लो और जो मैं आज्ञा देता हूं करो।

नेताजीने गुरुकी आज्ञा पालन की। कुम्हलाये मनसे उन्होंने योगिराज पर कुछ प्रहार किये परंतु गुरुने सरलतापूर्वक अपनेको बचाकर उन प्रहारोंको व्यर्थ कर दिया। अब नेताजी गर्मीसे वार करने लगे। उन्होंने, योगिराजके दाहिने, बांये ऊपर तथा नीचे अनेक प्रहार किये परंतु एकवार भी कुछ न कर सके। योगिराजका लचीला, लपलपाता हुआ फौलादी पटा, नेताजीको, उनकी देह रक्षामें सबजगह प्रस्तुत जान पड़ा।

उन्हें जान पड़ा मानो योगिराजके चारों ओर एक अभेद्य दुर्गभीत स्थित है। योगिराजका पटा ऐसा था। अन्तमें जब उन्होंने देखा कि उनका शिष्य थकता आ रहा है, तो उन्होंने नेताजोकी तलवारमें अपने पटेको फुर्तीसे मारकर एक ऐसा झटका दिया कि उनपर आक्रमण करनेवालेकी तलवार झन झनाती हुई पासवाली झाड़ीमें जाकर गिर पड़ी।

यह प्रथम पाठ था जो नेताजीने, शस्त्रविद्यामें योगिराजसे सीखा! निस्संदेह यह परमोपयोगी पाठ था, कारण अचैतन्यताके प्रभावका प्रमाण शस्त्रविद्याका सबसे बड़ा तथा प्रधान अंग है।

हम अपने पाठकोंपर यह बात प्रकट कर चुके हैं कि नेताजीकी विचारपूर्ण प्रकृति, पर्वतशिखर पर रहनेसे, अप्रकाशित नहीं रही। योगिराजने उन्हें पढ़ना सिखाया कि जिससे वे अपनी आत्माको, राम, भीम तथा अर्जुन प्रभृति वीरोंके चरित्र पढ़कर उत्तेजित करें। नेताजीका हार्दिक उत्साह साधारण ढंगसे धन, बल तथा प्रशंसा प्राप्त करनेकी अपेक्षा, उन्हीं प्राचीन वीरोंको रीतिसे गौरव प्राप्त करनेका था। जब वे वनस्थ मार्गोंसे चलते थे, अथवा पर्वत शिखर पर स्थित होकर नीचेवाले मैदानों पर दृष्टि करते थे तब उनका हृदय, उस समयके लिये तरसता था कि नीचे सम्पूर्ण कोकन और ऊपर सारा दक्षिण प्रान्त, राम अथवा युधिष्ठिरके समान किसी धर्मनिष्ठ तथा भारी राजाके शासनमें हो।

इन उत्साहमय विचारोंमें, नेताजी अपने अध्यापकसे उत्साहित किये जाते थे। उस समय उनकी आत्मा, इसी प्रकारके, प्रकाशमय भविष्य ध्यानोंमें, मग्न होकर अन्य सम्पूर्ण वाह्य विषयोंसे अचेत हो जाती थी। योगिराज कहते थे कि स्वयं मैंने इस महत् कार्य महाराष्ट्रके स्वातंत्र्यके लिये, अपने विचार तथा खड्गसे परिश्रम किया था परन्तु मैं अकृतकार्य हुआ; क्योंकि महाराष्ट्रके उद्धारके निमित्त देवताओंका नियत समय अभी तक नहीं आया है; परंतु अब मुझे यह बात विदित हो गयी है कि वह समय समीप है और मेरी जगह मेरा शिष्य, महा-

राष्ट्रकी सुंदर पहाड़ियों तथा मराठयोंकी नाट्यशाला में एक महान् व्यक्ति का पावन व्यापन करनेके हेतु, प्रधान सूत्रधार बनकर अवश्य नाट्य करेगा।

येही विचार युवक नेताजीके चित्तमें, उस समय घूमते रहते थे, जब वे अपने धर्म सम्बन्धी अभ्यास और दैहिक तथा मानसिक शिक्षाके पश्चात्, किसी बहुत ऊंची, ऊपर निकली हुई पत्थरकी चट्टान पर बैठे ठुड्डीको अपने हाथका सहारा दिये, भारतवर्षीय सूर्यकी अस्त होती हुई प्रभाके कांपते हुए नीले कुहरेसे भोगे हुए स्थित पर्वत तथा कोसों लम्बे, विस्तीर्ण झीकनी मैदान का चिन्तवन किया करतेथे।

पंचम परिच्छेद

———०:०———

योगिराजकी भविष्य ध्यान।

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति,
चन्द्रो विकासयतिकैरव चक्र वालन्।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयं परहिते सुकृताभियोगाः॥
नीति शतक।

काल चक्रके प्रायः दो बरस नेताजीके, इस प्रकारके आरोग्य जीवनमें महेन्द्रके शिखर पर बीत गये। योगिराज, दिन दिन वृद्ध होते जाते थे, उनकी वय ढलती जाती थी। उनकी समाधि भी अब बहुधा अधिक समय तक और अधिक गंभीर हुआ करती थी। संवत १५८१ के आश्विन मासमें, जब मौसिमी हवाने पहाड़को

मेघसे दबाना और कुहरेमें छिपाना बन्दकर दिया था तथा प्रातः कालके सूर्यकी चमचमाती हुई धूप सदा बहार वृक्षोंके झल झलाते कुंजटोप पर एकबार और प्रकाशित हुई तब योगिराजने, एक दिन, अपने शिष्यको पास बुलाकर कहा ;—

"पुत्र ! मृत्युके आगमनकी छाया मुझ पर फैलती जारही है। मुझे विदित नहीं कि कब, कहां तथा किस प्रकारसे वह मुझ पर आघात करे। जान पड़ता है कि मुझ पर वह अकस्मातही आ गिरेगी। तेरे सिर पर भी मृत्युका भय रूपी बाज मड़रा रहा है, परन्तु अपने आन्तरिक ध्यानों द्वारा मुझे प्रतीत होताहै कि तू बच जावेगा और महाराष्ट्र देश, बहुत बहुत वर्षों तक तुझे नहीं खोवेगा। इसलिये मुझको अब तय्यार होना अवश्य है। मेरी मृत्युके पश्चात् तेरे लिये, पर्वतस्थ, अपना यह एकांत वास त्यागकर नीचे संसारमें अपने वंशसे मिलने का समय आवेगा। तू मेरा सदाचारी तथा आज्ञानुवर्ती शिष्य है और मुझे अच्छे प्रकार इस बातका विश्वास है कि तू अपने गुरुका नाम, विश्वासघात, छल, निर्दयता अथवा कादरपनसे कभी न लजावेगा। बल और सैनिक साहसमें अब तू महाराष्ट्र नेतामंडलमें, प्रथम स्थान लेनेके सम्पूर्णतः योग्य है। तू बर्छी बड़ी दूरतक फेंक सकता है और तीर भी अपने गुरुकी अपेक्षा, अधिक सीधा लक्ष्य पर लगा सकता है। यह मेरा झूठा गर्व नहीं है ; तू सत्य ही वह काम करने योग्य है जो भारतमें कभी कोई करने के योग्य नहीं हुआ ; क्योंकि अब तू मेरा सामना कर सकता है और असियुद्धमें तो तू मुझसे भी बढ़ कर निकला है। शस्त्रोंमेंसे फरंगियोंकी तोड़ेदार बन्दूकोंका ही उपयोग सीखना अब तुझे शेष रहा है। परन्तु वह सच्ची निगाह जो तेरे न चूकने वाले बाणको अव्यर्थ करती है। तोड़ेदार बन्दूकका तेरा निशाना भी अटल कर देगी। मैं तुझे शास्त्रोंका व्यवहार पूर्णतया नहीं सिखा सका ; परंतु युद्ध भूमिमें अपनी तथा घोड़ेका पैर जमाना अच्छी तरह बता चूका हूं। इस भांति अब अपनी कलासे तू अपना कर्त्तव्य साधनेके योग्य होगया है। देखना,

जो विद्या और बल तूने मुझसे प्राप्त किया है, उसका इस सावधानीसे उपयोग करना कि जिससे वह दीन दुखी जन और धर्म तथा देशकी रक्षाके अतिरिक्त अन्य किसी विषयमें प्रयुक्त न हो।

मेरी आनेवाली मृत्युके चिन्होंमें, भविष्य प्रकाशक वे स्वच्छ ध्यान भी हैं, जो मेरी आत्मा पर प्रभाव डालरहे हैं। देवादिदेव महादेवने, बारम्बार दर्शन देकर मुझपर यह प्रकट किया है कि उन्होंने महाराष्ट्रका उद्धार करनेके लिये अंश अवतार से मनुष्य देह धारण की है। उनका असीम कृपाकटाक्ष उनके इस लघु सेवक पर होनेका यह लक्षण है कि उन्होंने मुझे दर्शन देकर यह प्रकाशित किया। इस प्रकाशमय युद्धमें मैं उनकी ओर होकर युद्ध करता। परंतु यह सौभाग्य मुझे बदा नहीं है। यह नहीं होगा। अस्तु, कोई चिन्ताकी बात नहीं है, यदि मैं उनकी ओर होकर युद्ध न कर सकूंगा तो न सही हरि इच्छा प्रबल है परंतु यह भी मेरे लिये अतीव संतोषप्रद विषय है कि मैं अपने हृदयरत्न तुझ पुत्रको अनुचरके तुल्य उनकी सेवामें अवश्यही भेज सकूंगा। बहुधा अपने ध्यानोंमें उस अवतीर्ण ईश्वरांशको दाढ़ीवाले यवन आगन्तुकों के विरुद्ध अपने योद्धा ले जाते देखता हूं और उनके विजयके दिन और और भयके समय सदैव उनके दाहिने हाथपर देखता हूं। कारण यह है कि वे भी सदैव विजयी अथवा सफल काम नहीं होते हैं। कभी वे बन्धमें भी पड़ जाते हैं; कभी मैं उन्हें ऐश्वर्य वाली शत्रुके सामने सिर झुकाते भी देखता हूं; परंतु वे सदा नीचेसे ऊपर उठ आते हैं तथा प्रकटमें विनय करते हुए अपनी प्राणघातक असिको शत्रु-हृदयमें प्रविष्ट कर देते हैं जो उनको अपने से विजित अथवा वशमें जानकर अपना मन बहलाता रहता है। अहा जिस समय वे अपनी ओरसे प्रसन्नता पूर्वक युद्धमें अपने आक्रमण करनेवालों पर चीतेकी तरह पीछे घूमकर टूट पड़ते हैं उस समय मानो शत्रु दलमें प्रलय काल आजाता है।

पुत्र ! अपने हृदयमें मेरे इन विचारोंको संग्रह कर रखो, क्योंकि, कदाचित यही अन्तिम समय है जो कि भाग्य मुझे तुझको सम्बोधन करने देता है। तू अपने देश तथा स्वदेशके मनुष्योंका उद्धार करने वालेके पार्श्व भागमें उस समय स्थित होगा जब वह अंतमें, अपने सम्पूर्ण शत्रुओं पर प्रबल होकर कौशेय छत्रके नीचे, जो उसकी राजशक्तिका चिन्ह है, सुवर्णके सिंहासन पर महाराष्ट्रका माहाराज होकर बैठेगा। मुझे यह प्रत्यक्षही होता देखपड़ता है कि ब्राह्मण, उसके सिर पर भारतवर्षकी अत्यंत पवित्र नदियों तथा कुंडोंसे लाये हुए जलको छिड़क रहे हैं तथा बहुत मूल्य रत्नजटित सुवर्णपुष्प-रायगिरिके शीतल वायु पूर्ण पर्वतपर, अपने पृथ्वीपरके कार्य सम्पूर्ण करनेके भारी दिनमें उसको नमन करने आयेहुए समारोह में बांटे आरहे हैं। इसके और भी आगे कुहरे समान, धूमिल भविष्य कालमें मुझे वह समय भी देख पड़ता है जब वह ईश्वरांश अपने स्वर्गीय भवनको लौटेगा। उसकी बुद्धिमत्ता तथा बलसे दृढ़तापूर्वक स्थापित कार्य उसके पश्चात् भी शेष रहेगा। उसके उत्तराधिकारी, महाराष्ट्रकी सीमाका विस्तार बढ़ातेहुए दूर दूर तक अपने अनुयायी पुरुषोंको ले जावेंगे और दिल्ली तथा आगरेके राज भवनोंमें, विजय प्राप्त करनेके पश्चात्, सिंहासनपर बैठकर अपने घोड़ोंको पवित्र गंगामें पानी पिलावेंगे। अब मेरे पुत्र! शरण आकर मेरी इन सम्पूर्ण बातों पर विचारकर। इस समय मैं तेरी तथा देशकी कुशलके लिये विनय करताहूं तथा उन महान शक्ति शाली देववृंदसे "महाराष्ट्रके उद्धार" का समय शीघ्र लानेकी प्रार्थना करताहूं।

अपने गुरुके शब्दोंको वेद वाक्य जाननेवाले नेताजी, अपने बैठनेके प्रियस्थानोंमेंसे एकपर जो उस उच्च सम भूमिके पूर्वी किनारे पर निकली हुई एक चट्टान पर था, चले गये। योगिराज चुप चाप (बिना नेताजीके जाने) उनके पीछे पीछे वात्सल्य भाव पूर्ण नेत्रोंसे देखते, तथा गर्वमयभावसे ऐंठते हुए चले। योगिराजने चित्तमें अनुभव किया, कि उस शिक्षासे जो उन्होंने अपने

शिष्यको प्रदान की थी अपने देशको ही वर प्रदान किया था। योगिराजने किसी प्रकार जान लिया था कि उनके तथा शिष्य के बीचका प्रमाण पत्र शीघ्र ही मृत्युके झपेटे द्वारा छीन लिया जावेगा। परंतु उन्होंने यह विचारकर अपने मनका आश्वासन कर लिया कि उनके जीवनका कर्तव्य सम्पूर्ण होचुका है और उनकी मातृभूमिका उद्धार, उनकी जगह अब उनके शिष्य द्वारा ही सकेगा।

नेताजी उस शिलापर बहुत काल पर्यंत विचारमें मग्न बैठे रहे। अकस्मात् उनकी आंखें घाटकी पर्वतश्रेणी पर घूमीं और उन्होंने, भगवान् मरीचि मालीके पूर्वदिशा से निकलकर धीरे धीरे आकाशका प्रवास प्रारंभ करते समय कुहरे के बादलों को स्वप्नावस्था के समान अंतर्द्धान होते देखा; परन्तु उनका चित्त अपने गुरुके कहे हुए, अन्तिम शब्दोंपर विचार करनेमें ऐसा लिप्त था कि वे, इस बहुरूपी बहुरंगी संसारके कुटिल तथा चंचल काल चक्रान्तर्गत बादलोंकी रमणीयतासे कठिनतासे परिचित तथा सावधान कहे जासकते थे।

एक घोर गर्जनाने, इसी समय उनका ध्यान भंगकर दिया। उसके कुछ क्षणपश्चात् ही किसी भारी देहके ऊपरसे नीचे गिरने तथा धमाके का शब्द हुआ। नेताजी फुर्तीसे खड़े हो गये और अपने चारों ओर दृष्टिकी। जिस स्थानपर वे खड़ेथे, वहांसे लग भग बीस हाथ पर एक विशाल चीता तथा योगिराज ऊपर नीचे पड़े थे! वे दोनों ही इस संसारमे नहीं थे!! चीता, वायुमें, अपनी शक्ति भर उछाल मारकर, सम्पूर्ण भार तथा वेगसे योगिराजके बर्छे पर तड़प कर गिरा था। बर्छा चीतेका हृदय वेधकर निकल गयाथा, परंतु मृत्युके समय, चीतेके भारी पंजे-के गिरनेसे योगिराजका मस्तक टूट गया था। निश्चय जान पड़ा कि उन्हों ने चीतेको, पहाड़पर आते देख लिया था, इस हेतु वे नेताजीके पीछे, खड़े होगये थे। इसप्रकार उन्होंने अपने शिष्यका जीवन, अपने प्राणको नष्ट करके बचादिया!!!

योगिराजकी देह अंतिम विश्राम स्थान पर पंहुचायी गयी

जिसके पीछे पीछे शोक करने वालों का बड़ा झुंड था। वे योगिराज पर अपनी भक्ति और सम्मानकी सूचना हेतु, उनके शवपर गुलाल छिड़कते हुए, बाजे तथा झांझे बजाने लगे, सम्पूर्ण पर्वत निवासी योगिराज पर पिताके सान प्रेम रखते थे तथा उनको देवताके तुल्य मानते थे। उन लोगोंको योगिराज पर असीम श्रद्धा थी। योगिराज, विमान पर पद्मा सनमें बैठाये गये। उनपर चन्दन तथा पुष्प इतने चढ़ाये गये कि उनसे वे ढक गये। इस भांति विमानही में बैठे हुए उनको समाधि प्राप्त हुई। साधारण मनुष्योंको समाधि नहीं होती उनका अग्नि संस्कार किया जाता है। संन्यासियोंका अग्नि संस्कार नहीं होता। उनको उसी आसन बिठाकर समाधि दी जाती है, जिस पर, वे अपने जीवन कालमें बैठ कर ध्यान करते हैं। संन्यासियों के मृतक संस्कार में, विचित्र बात एक यह होती है कि उनका कपाल शंखसे तोड़ा जाता है। वर्त्तमान दशा में ब्राह्मणोंने, सम्मति पूर्वक यह निश्चय किया कि उक्त रीति का अनुसरण न किया जाय; क्योंकि योगिराजका मस्तक चीतेके पंजे से पहिले ही टूट गया था। शक्करका ढेला उनके सिर पर रखा गया और सिरके बदले वही शंखसे तोड़ा गया। एक छड़ी जो तीन जगह बल खायी हुई थी, उनके हाथ में रखी गयी तथा प्रधान शोकाधिकारी होनेके कारण इस समय, शिष्य नेताजीने, अपने गुरुके वक्षस्थल तथा सिरको स्पर्श किया। अंतमें समाधि नमकसे भरी गयी और मिट्टी तथा पत्थरोंसे ढक दी गयी। समाधि कर्म समाप्त होने पर रोने धोने अथवा शोक करनेको अनुमति नहीं दी गयी क्योंकि योगियोंका विदेह मुक्त होना हर्ष का विषय माना जाता है।

षष्ठ परिच्छेद ।

———o———

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।
सजातो येन जातेन जाति वंश समुन्नतिम् ॥
भर्तृहरि ।

बारह तेरह दिन नेताजीने ब्राह्मणोंके बताये हुए विधानसे अपने स्वर्गवासी गुरुके संस्कार क्रिया कर्म्म आदि किये । पीछे एक दिन भोरके तड़के ही नेताजीने उस संसारमें पुनः लौटनेके लिये जिसे उन्होंने दो बरस पहले छोड़ दिया था, व्याघ्रकन्दरा छोड़ी । उन शिक्षाओंके अनुसार जो उनके गुरुने उनको दी थी, सबसे प्रथम आज्ञा उनको चौक ग्रामको वापस जानेकी थी । वहांसे माता पिताका आशीर्वाद पानेके पश्चात् उन्हें दक्षिणके घाटों पर चढ़कर तोरनाके पर्वतीय दुर्ग तक जाना और वहांसे महान् शक्तिशाली देवताओंके इच्छानुसार अपने कर्त्तव्य साधनमें प्रवृत्त होना था । वहींसे किसी गुप्त मार्ग द्वारा प्रकाशित होनेकी आज्ञा उनको योगिराज दे गये थे ।

उन्होंने पर्वत से आते समय योगिराजकी तलवार तथा लम्बा बर्छा अपने साथ ले लिया । स्नेह युक्त पर्वतवासियोंने उन्हें दूध तथा चावल दिया कि जो मार्गमें क्षुधाके समय काम आवे । यह बात स्वाभाविक शोकमय विचार बिना नहीं थी क्योंकि नेताजीको मठेरन पर्वत शिखरस्थ अपने उस सुन्दर तथा रमणीय स्थानको, जहां कि उन्होंने इतने दिन तक शांति आरोग्यता तथा महात्मा योगिराजके सत्सङ्गका आनन्द और प्रभावका अनुभव किया था, छोड़ना पड़ा । सच मुच मठेरन शिखर ऐसा ही रमणीक स्थान है । कोई भी व्यक्ति जिसे यहां आकर पर्वतस्थ सुन्दर पल्लवित वृक्षमय मनोहर सीमा छोड़कर जाना पड़े, भला यह भी कुछ बात है कि वह

वहांसे जानेके समय अनुरागसे एक बार भी पीछे फिरकर उस पर दृष्टिपात न करे। यदि उसके चित्त पर कुछ भी प्रभाव उत्पन्न न हो तो निःसन्देह ही वह मलिनात्मा व्यक्ति होगा; ऐसा कथन अनुचित न होगा।

नेताजीको मठेरन पर्वतसे नीचे आनेवाली प्राकृत पाषाण निर्मित सीढ़ीसे उतरते विशेष देर न लगी। शीघ्र ही वे उस मैदानमें आ पहुंचे, जिसे उन्होंने उस दिनसे नहीं देखा था जब भोरके तड़के अंधेरे ऊषाकालमें वे योगिराजका शिष्य होनेके लिये अपने गांवसे चले थे। उनकी बाल्यवस्थासे तरुणावस्थाके समयान्तरमें जो जो परिवर्तन हो गये थे, वे उनको अपने प्राचीन परिचित मनुष्यों द्वारा पहिचाने जानेमें अवश्य ही कठिनाई उत्पन्न कर देंगे, इसमें तनिक भी सन्देह न था। विशेष कर सिवा उनके माता पिता तथा एक स्वामिभक्त नौकरके, जो उनको योगिराजकी सुरक्षामें सौंप आया था, कोई यह नहीं जानता था कि वे जीते हैं। इन सब बातोंके होने पर भी नेताजीने बिना वेष बदले अपने पिताके घर जाना सकुशल नहीं विचारा। वह यवन जिसका उन्होंने बध कर डाला था, बीजापुर राज्यका एक उच्च पदाधिकारी था। उसके बधकर्ताका पता लगानेवालेको राज्यसे भारी पारितोषिक देनेकी सूचना थी। प्रत्येक ग्राममें बीजापुर राज्यकी ओरसे जासूस नियुक्त होकर इसी कारण मासिक वेतन पाते थे। इसलिये यह विचार शिक्षा युक्त तथा लाभदायक था। यदि अपने कल्याणके लिये नहीं तो प्रत्येक प्रकारसे अपने माता पिताकी कुशलके लिये उनकी मृत्युकी अफवाह अभी फैली रहना ही ठीक है।

इसी कारण अपने मुंह पर विभूति लगाकर भिक्षापात्र (कमण्डलु) हाथमें लिये और चीतेकी खाल कांधे पर डाले हुए वे पर्य्यटन करने वाले योगियोंके समान चौक ग्राममें घुसे। घर घर भिक्षा पानेके लिये कमण्डलु आगे बढ़ाते हुए वे अपने पिताके घर पर, जो ग्रामके सीमाप्रांतमें था, आ पहुंचे। वहां आने

पर बिना अपना वेष प्रकट किये ही उन्होंने अपने पिताके स्वामिभक्त अनुचर ईसाजीसे, उस ग्रामके वृक्षके नीचे जो घरके बाड़ेमें था, रात्रिमें विश्राम करनेकी आज्ञा मांगी। नेताजीकी इच्छा तुरन्त ही स्वीकार कर ली गयी। ग्रामवासियोंके चित्तमें इस प्रकार उनके वहां ठहरनेसे कुछ सन्देह नहीं हुआ, क्योंकि भ्रमण करने वाले अनेक योगी, यती, साधु, संन्यासी आदि ग्रामके पेड़के नीचे वाली उस कुटीमें पहले हीसे ठहरा करते थे जिसने नेताजीके पिताने इसी निमित्त बनाया था।

उन्हें कुटीमें ठहरे देर नहीं हुई थी कि उनके माता पिता वहां यह देखनेको आये कि यदि उनसे हो सके तो अपने अतिथिका अधिक सुपास या विशेष सेवा करें। उस समय कुटीमें (उनके सिवा) और कोई न था। पुत्रने माता पिताके सामने अपनेको प्रकट कर दिया और घुटनेके बल खड़े होकर उनका आशीर्वाद पानेके लिये विनय की। अपने प्रिय पुत्रको एक बार पुनः प्राप्त करके आल्हाद पूरित हो उन्होंने वात्सल्यसे उनका मस्तक चूमा, सिर सूंघा तथा मुसकुराते हुए सजल नेत्रोंसे अश्रुपात कर उन्हें गले लगाया।

प्रिय पाठक वृन्द! निर्जीव लेखनीमें इस समयके स्नेह वात्सल्य तथा पितृभक्ति और अधिक स्पष्ट करनेकी शक्ति नहीं है। यह सुख वे ही भलीभांति अनुभव करेंगे, जिन्होंने भोगा होगा। कठिन दुर्दैवके वज्राघातका सङ्कट तथा आपत्ति उठा चुकने पर जो प्रेममय समागम होता है वह साधारण नहीं है न उस समयका सुख साधारण सुख है। निर्जीव लेखनी उसका वर्णन करनेमें कदापि समर्थ नहीं हो सकती। ऐसा ही सुख माता पिताको नेताजीके मिलने पर प्राप्त हुआ।

उन लोगोंकी बातचीतका अंत होने और अपने अपने बिस्तर पर आराम करनेको लौटनेके पहले कुमुदिनी नायक चन्द्रमा धीरे धीरे मध्य आकाशमें पहुंच गये। नेताजीने अपनी जीवनी घरसे जानेके दिनसे लेकर उस दिन तककी माता पिताको कह सुनायी जब कि योगिराज चीतेके पञ्जेसे देह मुक्त हुए थे। उस

लोगोंने नेताजीसे कहा कि गङ्गाकी खोजमें हमारे सम्पूर्ण प्रयत्न निष्फल हुए; परन्तु एक धुरंधर ज्योतिषीने इस बात पर विशेष ज़ोर देकर हमसे कहा है कि वह अकस्मात तुम लोगोंको मिल जावेगी और तुम लोगोंके सुखकी सीमा न रहेगी। काशी भी और अधिक समय तक चौकमें न रह सकी। उसके पिता पर राज्यको सन्देह हुआ; किन्तु यह सन्देह बिना कारण न था। सन्देह यह था कि काशीके पिता दाताजी शिवाजी नामक एक युवा महाराष्ट्र सरदारके सहायक (प्रकट नहीं तो गुप्त) अवश्य थे, जिसने बीजापुर राज्यसे तोरना, राजगढ़, सिंहगढ़, पुरन्दर, । राजमची तथा दूसरे पर्वतीय दुर्ग छीनकर अपने अधिकारमें कर लिये हैं और उसे महाराष्ट्रके अनेक मनुष्य देशोद्धारकर्ताकी निश्चित दृष्टिसे देखते हैं। बीजापुरसे अपनी गिरिफ्तारीके लिये भेजे हुए अध्यक्षोंसे बचनेके निमित्त दाताजी अपनी पुत्री काशी तथा सम्पत्तिको लेकर राजमची (१) नामक पहाड़ी दुर्गको चले गये। अफवाह उड़ रही थी कि एक दृढ़ सेना बीजापुरके अधिकारसे शत्रुके हाथमें गये हुए दुर्ग विशेषकर राजमची पर, जहांसे सम्पूर्ण दक्षिणको लेकर कल्याण पर्यंत मार्गकी हुकूमत तथा सुरक्षा है और जो राज्यका अत्यंत उपयोगी शासन केन्द्र है, पुनः अधिकार प्राप्त करनेको आगे बढ़ रही है।

जिस समय नेताजीको यह समाचार मालूम हुआ कि राजमची पर शीघ्र ही आक्रमण होनेका भय है और उनकी बाल्यावस्थाकी साथ खेली हुई काशी तथा उसके पिता जान जोखिममें पड़े हैं तब वे उस फुर्सतमें अधिक समय तक कि कर्त्तव्य विमूढ़ होकर चुपचाप बैठे न रह सके। क्षण क्षण उनको वर्षके

१। राजमची एक सुदृढ़ पर्वतीय दुर्ग है, जिसके बुर्ज बम्बईसे पूना आनेवाली रेलकी सड़कसे (जो घाटपर चढ़ती है) आज दिन भी भग्न अवस्थामें दिखाई देते हैं और अपने ओजके समयकी दृढ़ताके साक्षी हैं।

समान भारी जान पड़ने लगा। दूसरे दिन दोपहरके पीछे राज-मच्छीके संरक्षकोंमें सम्मिलित होने और उन लोगोंको उस भयकी सूचना देने तथा सचेत करनेको नेताजीने माता पितासे विदा ली। नेताजीने इस अवसरको, जो अपनेको उस निश्चित कर्त्तव्यमें लगानेका प्रथम ही प्रसङ्ग था तथा जिसके लिये उन्हें मठेरन शिखर निवासी गुरु महात्मा योगिराजने महाराष्ट्र देश, धर्म्म तथा देवालयोंको यवन चङ्गुलसे उद्धार करनेको नियुक्त किया था, उत्सुकता पूर्ण चित्तसे आलिङ्गन किया। वह काशीको बचपनसे ही अधिकतर शांति तथा स्नेहमय विचारसे अपनी निश्चित दुलहिनकी दृष्टिसे देखते थे। यदि काशी भी उनकी बहिन गङ्गाकी तरह मरनेके लिये तथा दूर देशमें किसी यवन हरमकी बेगम बनानेको कहीं पकड़ ली जाय, तो अपनी मातृ भूमिके उद्धार तथा देश हित कार्यमें लगे हुए देशभक्त कहलानेके पलटे वे नीच तथा क्षुद्र कहलाने लगेंगे और लोगोंकी दृष्टिमें गिर जावेंगे और साथ ही इन बातोंका बदला लेनेके अतिरिक्त और किसी बातकी आशा या उत्साहके लिये उनकी आत्मामें स्थान न रहेगा। यही नेताजीने अपने मन ही मन अनुभव किया।

सप्तम परिच्छेद।

अयूबखांकी गिरिफ्तारी।

अद्यापि दुर्निवारं स्तुति कन्या वहति कौमारम्।
सङ्कुचीन रोचतेसा ऽसन्तस्त्यै न रोचन्ते ॥

आर्या सप्तशती।

नेताजीका रास्ता राजमच्छीको खायोली गांव होकर जाता था, जिसके खूबसूरत तालावमें अब छोड़ी हुई अङ्गरेजी लोगें

पड़ी हुई हैं। नेताजी अब भी योगियोंके वेषमें थे ; उन्होंने अपने चौड़े कंधे पर व्याघ्राम्बर धारण किया था। उनकी उत्तम तलवार यथा सम्भव यत्न पूर्वक छिपी हुई थी। गुरुके विशाल बर्छे पर जिसे उन्होंने हाथमें लिया था, लोगोंका ध्यान विशेष आकर्षित न होता था, क्योंकि उन दिनों देशमें भयानक वन्य पशु फैल रहे थे तथा उनसे भी अधिक भयङ्कर डाकू इधर उधर लूट पाट मचाते घूमते थे। ऐसे ही कारणोंसे उनके बर्छे पर किसीका लक्ष्य विशेषकर न हुआ। वह उनकी रक्षाका हेतु विचारा जा सकता था और वास्तवमें था भी।

जिस समय नेताजी पर्वतके शिखर पर पहुंचे उन्होंने एक लम्बे यवन अश्वारोहीको देखा जो भारी उमदा और बेश कीमत घोड़े पर सवार था और नीचे वाली तराई पर निगाह डाल रहा था। उसका जिरह बखतर अस्त होते हुए सूर्य्यकी किरणोंके पड़नेसे चमचमा रहा था। उसकी दाढ़ी साफ ही बता रही थी कि निश्चय ही वह यवन है। ऊंची और झिड़कीकी आवाजमें उसने नेताजीसे कहा—"ऐ उन देवोंके मानने वाले, जो दर असलमें कुछ भी नहीं हैं रजील बुयतरस्त! अगर तुम अपने कालिबमें जान रखना चाहते हो तो इस तरफ आओ और जो मैं पूछता हूं उसका जबाब दो"

नेताजी अदब या खौफसे जमीन पर झुकनेके बदले उस उद्दण्ड यवन अश्वारोहीके पास बेधड़क चले गये। यवन अश्वारोही नेताजीके इस गर्व पूर्ण भाव तथा उनके बड़े बर्छेको देखकर डरसे विवश हो पीछे हट गया। तिस पर भी उसने नेताजीको डराने या धमकी देनेका उद्योग करते हुए गर्जना पूर्वक भयानक रीतिसे कहा ;—

"बेहूदा! कुत्तेके बच्चे जल्द जवाब दे कि राजमच्चीका किला किस तरफ है? वहां बुयाक्त लोग किलेसे मुभ अयूबखांसे आज ही सबका निकाल बाहर कर दिये जावेंगे और दोने इसलामके पाबन्द दूसरे बहादुर पहाड़के बाजूमें अयमाल कर डाल देंगे। मेरे हुक्मकी तामीलमें अगर तूने जरा भी इनकार या इधर

तो मैं अपने इस निहायत उम्दा घोड़े अबू जानकी टापोंसे तुम्हें रौंद डालूंगा ।"

नेताजीने अपना हाथ अयूबखांके घोड़ेकी बाग पर रख दिया और कहा;—"अपनी गर्व पूरित सेना तथा बिजय पताकाको राजमच्छी दुर्गकी ऊंची दीवारों पर लगाकर फहरानेके पहले विशाल प्रभावमय देवताओंके इस तुच्छ दासके, जो इस समय आपके सामने है, तलवारसे निपटारा कर लीजिये । अब आप अपने घोड़ेसे उतरिये ; हम और आप बराबर पैदल होकर मैदानमें एक दूसरेसे निबटें और देखें देवगण हममेंसे किसे विजय प्रदान करते हैं ।"

नेताजीका यह ठहराव, यवन अश्वारोहीको, जिसने अपनेको अयूबखां कहकर प्रकट किया था, किसी भांति पसन्द न आया । ऊंचे, पूरे तथा फुर्तीले घोड़े पर सवार रहनेके लाभको वह पूरी तरह मनमें समझ गया । घोड़े पर सवार रहनेसे उसे दो लाभ थे ; एक तो यह कि वहां वह अपने दुश्मनकी तलवारकी मारके प्रायः बाहर था और दूसरे यह कि यदि भागनेका अवसर आ पड़े तो घोड़े पर सवार होनेसे भाग जानेका बहुत सुबीता है । यवन अश्वारोहीने नेताजीके हाथसे अपने घोड़ेकी लगाम छुड़ानेके मतलबसे घोड़ेको एड़ लगायी, परंतु उन्होंने लगाम दृढ़तासे पकड़ी थी । इस झपटा झपटीमें डरे हुए घोड़ेने भड़क कर अपनेसे भी अधिक डरे हुए सवारको पृथ्वी पर पटक दिया ।

अब विजय लक्ष्मी नेताजीकी दाहिनी ओर आ खड़ी हुई; परंतु उन्होंने तुच्छता दिखा कर अथवा वृथा प्रलापपर, जैसा अयूबखांने किया था, कादरताका उदाहरण नहीं दिखाया । उन्होंने पृथ्वी पर गिरे हुए शत्रुको उठाया और तलवार हाथमें देकर कहा कि अब आप तलवार खींचकर अपनी रक्षाके हेतु प्रस्तुत हो जाइये । अयूबखांने दुःखसे अपने दाहिने कंधेको मलकर दाहिनी भुजा नीचे लटकाये हुए पहलेसे भिन्न और धीमे स्वरसे कहा,—

"ऐ बहादुर फकीर! घोड़े परसे गिरनेकी वजहसे मेरा तलवार चलाने वाला दाहिना हाथ, बिल्कुल बेकाम हो गया और मुझे यकीन है कि तुम अपने उस दुश्मनको कभी कुछ जरर न पहुंचाओगे जो वार करना तो दूर रहा खुद अपना बचाव नहीं कर सकता।"

नेताजी यद्यपि शूर थे परंतु मूर्ख नहीं थे। वे इस बात पर विश्वास न कर सके कि अयूबखांके हाथमें घोड़े परसे गिरनेके कारण वास्तवमें ही भारी चोट आयी थी। इस लिये उन्होंने अयूबखांकी तलवार ले ली और कहा;—

"कुछ ही देर पहले, आपने मुझसे राजमच्छीका रास्ता पूछा था। मैं केवल आपको यही नहीं बताऊंगा कि राजमच्छी कहां है, बल्कि स्वयं आपको वहां तक पहुंचाने चलूंगा। इसलिये आप अब एक लम्बा पहाड़ी सफर तय करनेके लिये तय्यार हो जाइये अथवा आपकी इच्छा अपने मांससे चील कौओंकी दावत करनेकी हो तो वैसा कहिये।"

अयूबखांको अब कोई और बहाना करनेका मुंह न था। वे यह नहीं कह सकते थे कि दाहिने हाथकी तरह उनकी दोनों टांगे भी बेकाम हो गयी थीं, जिससे वे चल नहीं सकते थे। इससे वे इकरारोंका भारी सब्ज बाग दिखाकर नेताजी पर प्रभाव डालनेका प्रयत्न करने लगे और अपनी स्वतंत्रताके लिये बहुत द्रव्य देने को उद्यत हो गये।

"स्वतंत्रताके बदले बहुत द्रव्य आप मुझे दे सकते हैं यह निःसंदेह सही है" नेताजीने उत्तर दिया "परन्तु जिस समय राजमच्छी दुर्गकी दीवारके अन्दर आपको सकुशल पहुंचा चुकूंगा-जहां पहुंचनेके लिये आप इतने उत्सुक थे और कदाचित अब भी होंगे—वहीं, आपकी स्वतंत्रताके बदले, उसी समय, उस द्रव्यकी वसूलीके लिये तय कर लूंगा। राजमच्छीकी दुहरी चोटी, पर्वतशृंग ठीक हमारे मुंहके सामने है; परन्तु अब स्वयं मैं ही वहांका मार्ग नहीं जानता हूं तो तुम्हें किस प्रकार ले जा सकूंगा। (अपने चारों ओर देख कर) यह आपका घोड़ा

है और उसे एक आदमी पकड़े खड़ा है। सम्भव है कि यह मनुष्य हमलोगों को राजमचीको ले जा सके।"

वह देहाती, जो घोड़ेकी बाग थामे खड़ा था तुरंत ही नेताजीको राजमची ले जानेको राजी हो गया। वह फुर्तीला और मुस्तैद था और महाराष्ट्र किसानोंकी भांति साधारण वस्त्र पहने था। नाम पूछने पर उसने कहा कि मेरा नाम रामा है और मैं पहाड़ी मार्गोंसे भली भांति परिचित हूं। राजमची जानेका सबसे सुगम मार्ग, खंडाला होकर, दक्षिणकी उच्च समभूमिके पांच कोस आगेसे जाता है। इस हेतु मुंहकी सीधमें जैसे कौआ उड़ता है, ठीक उसी तरह राजमची जाना अधिकतर निरापद है। यद्यपि इस मार्गसे जाने पर एक गहरी तराई पार करनेको, एक ओर दो हजार फुट नीचे उतरना तथा दूसरी ओर उतनाही चढ़ना पड़ेगा तथापि ऐसा ही करना ठीक है। इस मार्गसे भी हमलोग राजमची उतने ही समयमें पहुंचेंगे, जितनेमें खंडाला होकर अधिक साफ रास्तेसे पहुंचते।

अब अयूबखांके घोड़ेको क्या करना होगा? घोड़ेको अपने साथ, घूम घुमौए, गहरी तराईवाले मार्गसे तो संभवतः नहीं ले जा सकते। यह कठिनाई बीचमें आपड़ी देख कर वह देहाती आदमी, (जिसकी चमकदार आंखें तथा चेहरेका तीव्र भाव देखनेसे वह बुद्धिमान जान पड़ता था) बोला ;—

"उधर उस ओर, सामने, घरमें, मेरा एक मित्र रहता है जो तुम्हारी खातिरसे घोड़ा इस बात पर अपने यहां रख लेगा कि आपके लौट आने तक यदि यवन सैनिक न आवें और घोड़ा छीनकर न ले जावें तो जब आपको इच्छा होगी, आपको घोड़ा सुरक्षित तथा आरोग्य सौंप देगा।"

रामाकी सलाह माननेके सिवा-जिसमें कि लौटने पर किसी प्रकार, घोड़ा पानेकी आशा भी की जाती थी—अन्य कोई प्रयत्न नहीं किया जा सकता था और न था।

इसलिये नेताजी अपने कैदी अयूबखांको लेकर रामाके

साथ उस झोपड़ेमें गये जो उस जगहसे बहुत दूर न था और जहां रामाका मित्र, रहता था। झोपड़ेके मालिक रामाके मित्रने घोड़ेको अपने पास रखना स्वीकार कर लिया। उसने कहा कि घोड़ा मेरे यहां छोड़ जाइये; परन्तु दो बातें हैं। पहली यह कि जब तक घोड़ा मेरे पास रहे मुझे उस पर सवारी करने की इजाजत मिले और दूसरी, यह कि अगर उसे चोर या सिपाही चुरा या छीन ले जायं तो मैं उसका जिम्मेदार नहीं हूं।

इस शर्त पर घोड़ा वहीं बाड़ेमें छोड़ दिया गया और नेताजी, अयूबखां और रामा पहाड़से उतरने लगे। आगे रामा बीचमें अयूबखां और सबसे पीछे नेताजी चले जो कि अपने कैदी पर बारीक निगाह रखे हुए थे कि जिससे वह भागने न पावे; परंतु अयूबखांने वैसा करनेकी कुछ इच्छा या उद्योग नहीं किया। अपनी किस्मतके भरोसे रहकर वे इस हालतमें पहुंच गये थे कि उस गहरी तराईके, ऊबड़ खाबड़ मार्गसे चलनेमें अफसोस कर रहे थे। जब कि वे तराईकी दूसरी ओर चढ़ाव पर चढ़ने लगे, और भी अधिक, चिड़ चिड़ाये, कुढ़े, रोये, झींके; मगर किया क्या जा सकता था। अयूबखां हृष्ट पुष्ट थे, परंतु पैदल चलनेकी अपेक्षा घोड़ेकी सवारीमें विशेष अभ्यस्त थे। इसीसे पहाड़की तराईमें उतरने चढ़नेसे उन्हें अधिक कष्ट तथा शोक हुआ और राजमचीके फाटक तक पहुंचनेके पहले उनके बदनमें नेताजीको, अपने तेज बर्छेकी नोकसे, अड़ियल घोड़ेकी तरह, दो या तीन बार नसीहत या तम्बीहकी निसरेका लगानेकी आवश्यकता पड़ी।

अष्टम परिच्छेद।

—※—

जातः कूर्मः स एकः पृथुभवन भरायार्पितं येन पृष्ठं श्लाघ्यं।
जन्म ध्रुवस्य भ्रमति नियमित यत्र तेजास्व चक्रम्॥
संजात व्यर्थ यशाः परहित करणे नोपरिष्टान्न चाधो।
ब्रह्मांडो दुंबरांतर्मशक वद परे जंतवो जात नष्टाः॥

भर्तृहरि।

जब ये लोग राजमच्छीके फाटकके सामने पहुंचे तो पहरे पर खड़े हुए सिपाहीने इनको रोका। ये लोग राजमच्छी दुर्गके अन्दर उस समय तक न जाने पाये, जबतक इन्होंने अपना मित्र होनेका प्रमाण देकर उसे सन्तुष्ट न कर दिया। इस समय बिलकुल अंधेरा था, मशालके उजालेमें सावधानी पूर्वक उनकी जांच की गयी। यह जांच समाप्त होनेके बाद नेताजीने अपनेको तुरंत ही किलेके अधिपतिके पास ले चलनेको कहा।

"इस समय रात्रिमें दुर्ग अधिपति आराम कर रहे हैं" पहरेदारने उत्तर दिया, "मैं उनको ऐसे समय जाकर जगानेका जोखिमपूर्ण साहस नहीं कर सकता।"

"मेरा समाचार" नेताजीने उत्तर दिया "इतना आवश्यकीय है कि वह सबेरा होने तक नहीं रोका जा सकता है।"

"तुम्हें जो कुछ कहना हो पहले मुझसे ही कहो" पहरेदारने कहा "मैं भी तो देखूं कि वह समाचार दुर्ग अधिपति त्र्यम्बक रावको सोतेसे जगानेके लिये यथार्थमें गुरुतर है कि नहीं।"

"स्वयं त्र्यम्बक रावके सिवा किसी और दूसरे व्यक्तिसे मैं अपना समाचार न कहूंगा और यदि तुम मुझे कुछ और अधिक समय तक उनके पास ले चलनेमें बिलम्ब करोगे तो मैं आपही अपना मार्ग उनके पास तक जानेके लिये बल पूर्वक बना लूंगा।"

धमकीकी इन बातोंसे डरकर पहरेदारको नेताजीका कहना मानना पड़ा और वह सिपाही उनके साथी दोनों मनुष्योंको दूसरे महाराष्ट्र सैनिकोंकी (जो इस दृश्यमें अकस्मात् कहींसे फिरते हुए आ गये थे) रक्षामें छोड़कर उनको दुर्गके अधिपतिके निवास स्थानकी ओर ले चला।

त्र्यम्बकराव गहरी नींदसे जगाये जानेके कारण सचमुच पहले बहुत क्रुद्ध हुए। उन्होंने गर्म होकर तथा बक झककर अभागे पहरेदारको घबरा दिया और नेताजीने कठिनतासे उस सिपाहीको त्र्यम्बक रावके हाथसे पिटनेसे बचाया; नहीं तो उसकी कदाचित अच्छी तरह मरम्मत हो जाती। अब दुर्गके अधिपति त्र्यम्बकरावका क्रोध पहरेदारसे हटकर नवागन्तुक नेताजीकी ओर घूमा। उन्होंने कहा:—

"तुम कौन हो? कहांसे आते हो और इतनी रात गये ऐसे बेढब और संकीर्ण समयमें हमसे क्या चाहते हो?"

नेताजी द्वारा यह चिताये जाने पर कि उनके अधिकृत दुर्ग पर कल प्रातःकाल ही आक्रमण होनेवाला है त्र्यम्बकरावका क्रोध घबराहटसे बदल गया। उन्होंने दुर्गके सम्पूर्ण अफसरोंको शीघ्रतासे इसी समय अपने सामने बुलानेकी आज्ञा दी। होनेवाले आक्रमणसे भयभीत होनेका त्र्यम्बक रावके लिये यथार्थ कारण था। वह कारण यह था कि दो तीन दिन पहले राजमचीं दुर्गमेंसे आधे संरक्षक नीचे कोकनी मैदान पर किसी कार्य्यमें सम्मिलित होनेको बुला लिये गये थे जिसे कि शिवाजी कल्याणनगरके पड़ोस हीमें बीजापुर (१) सैनिकोंके विरुद्ध करनेका मनसूबा

(१) सितारेसे १४० मील अग्निकोणमें बीजापुर अथवा विजयपुर शहर पनाहके अन्दर बसा है। वह किसी समयमें दक्खिनके बादशाहोंकी राजधानी था और फिर दिल्लीके मातहतमें एक सूबा रहा। उस वक्त उसमें ८८४००० घर और १६०० मसजिदोंका रहना बतलाते हैं। यद्यपि यह केवल बढ़ावेकी बात है और कदापि बुद्धिमानोंके मानने योग्य नहीं तथापि उसके आस पास दूर दूरतक खंडहर और मकानोंके निशान जो अबतक मौजूद हैं

कर रहे थे। शिवाजीके पास गये हुए सैनिकोंके अतिरिक्त इस समय दुर्गमें सैनिकोंकी संख्या इतनी कम थी कि दुर्गकी दीवारों पर प्रबंध करनेके लिये भी कठिनतासे मनुष्य पूरे हो सकते थे।

देखनेसे यह साबित होता है कि वहस शहर किसी जमानेमें बहुत बड़ा था। इस शहरका गिर्दनवाह दिल्लीके गिर्दनवाहसे बहुत मिलता है। जैसे वहां शहरके बाहर कुतुब साहब तक हर तरफ खंडहर और मकबरे दिखाई देते हैं उसी तरह विजयपुरके गिर्द भी टूटे फूटे मकान और मकबरे नजर पड़ते हैं। दूरसे उसके गुम्बज और मीनारोंके नजर आने पर यही मालूम होता है कि किसी बहुत बड़े शहरमें पहुंचे; पर दरवाजेके अन्दर कदम रखो तो हर तरफ खंडहरही खंडहर दिखलाई देने लगते हैं। किला टूटा, महल फूटा, मसजिद मकबरे ढहे, दुकान मकान गिरे हुए, दीवारें बेमरम्मत और फाटक सड़े गले हैं, शहरपनाहका घेरा आठ मीलका और दरवाजे सात हैं। मुहम्मदशाहका मकबरा (जिसका गुम्बज १६० फुट बलन्द है और जिसमें आवाज ऐसी गूंजती है कि मानो दूसरा आदमी बोलता है) नौबागकी बावली, जामे मसजिद, इबराहीम आदिलशाहकी मसजिद जो सत्तर लाख रुपये लगकर बनी थी, और मकबरा जिसके गिर्द सारा कुरान इस खुबसूरतीसे खुदा है और उस पर सोनेका काम और रंगामेजी ऐसी की गयी है कि शायद अच्छी अच्छी किताबोंकी लोहपर भी वैसा काम नहीं निकलेगादेखने लायक हैं। बाजार अब भी जो कुछ बाकी रह गया है तीन मील लम्बा पचास फुट चौड़ा और बिलकुल फर्श किया हुआ है। एक जगह जिसे हलाल खोरकी बनायी हुई बतलाते हैं, पत्थरकी ऐसी जञ्जीरें लटकती हैं जो लोहेकी सांकलके तौरपर बनी हुई और जोड़ उनमें एक भी नहीं है। किले पर "मलिकुल मैदान" नामक एक पीतलकी तोप रखी है जिसमें तेंतीस मन तीस सेरका गोला समाता है। हम समझते हैं कि इतनी बड़ी तोप दुनियामें और कहीं न निकलेगी।

तथापि त्र्यम्बक रावको उतनी ही सेनासे जो उनके पास मौजूद है दुर्गरक्षाके लिये यथासाध्य श्रम तथा उद्योग करना कर्त्तव्य है। नेताजीके ऐसे उचित समयमे आकर सूचना देनेके लिये परमेश्वरको धन्यवाद है जिससे त्र्यम्बक रावको पहले हीसे सचेत हो जाने तथा सुसज्जित होनेका अवसर मिल गया। उन्होंने तुरंत ही यह आज्ञा दी कि दुर्ग दीवारके कमजोर मुकामोंको ढूंढकर देख भाल और मरम्मत की जाय।

अभाग्य वश त्र्यम्बक रायमें आलस्य बहुत था और जब उनको बहुत सा समय और मनुष्य काम करनेको मिल जाते तो बस फिर क्या था उनके आलस्यकी मात्रा और भी बढ़ जाती थी! वही बात उन्होंने अब भी की थी। उन्हें पहलेसे तो दुर्गकी दीवारकी कमजोर मौके दुरुस्त करनेकी नहीं सूझी थी, आज इन कामोंकी याद आयी और शीघ्रता पड़ी। रामाने जो कहावत कहनेमें बड़ा दक्ष था त्र्यम्बकरावको एक बहुत ठीक उपमा दी थी। वे उन महा पुरुषोंमें थे जिन्हें बरात घरके दरवाजे पहुंच जाने पर शामियाना लगानेकी सूझती थी या जब चिराग जलानेको तेलकी जरूरत होती तो अपने बैलोंको कोल्हूमें जोतते थे अथवा जब प्यास लगती तो कुआ खोदना प्रारम्भ करते थे। आनेवाली सुबहको दुर्ग पर यवनोंके आक्रमणकी प्रतीक्षा हो रही थी और इतने ही समयमें दीवारोंकी मरम्मत करना था।

अस्तु इतने तङ्ग समयमें जो कुछ किया जा सकता था किया गया या जो कुछ हो सकता था हुआ और भोरके तड़के ही राजमचीका कमजोर छोटा पहाड़ी दुर्ग शत्रुके आक्रमणकी प्रतीक्षा करने लगा। जिस समय ये तय्यारियां हो रही थीं, नेताजीने काशीके पिता दाताजीसे भेंट की। नेताजीने दाताजीसे अपनी पुत्री काशीको लेकर प्रातःकाल होनेसे पहले ही भाग जानेकी ताकीद की। उन्हें यह ध्यान हुआ कि काशी भी कहीं उनकी बहन गङ्गाकी तरह यवनोंके चङ्गुलमें न फंस जाय।

नेताजीने बूढ़े दाताजीसे कहाकि राजमचीका छोटा तथा कमजोर दुर्ग, यवनोंके उग्र आक्रमणके सामने अधिक समय

तक नहीं ठहर सकता। दुर्गको इस संकटसे, शिवाजीने यदि अचानक आकर न छुड़ाया तो शीघ्रही, विवश होकर अपनेको शत्रुके हवाले करदेना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि मैं स्वयं तुमलोगोंके यहांसे भागजानेमें साथ न दे सकूंगा परंतु तुम लोगोंकी रक्षाके लिये रामाको (जिसने अपने स्वामिभक्त तथा प्रत्येक पहाड़ी मार्गसे परिचित होनेका प्रमाण नेताजीको पूरी तरह दे दिया था) साथ दे दूंगा। चौकग्रामकी इस अंतिम भेटके बाद, कुछ क्षणतक नेताजीने अपनी परिचित तथा साथ खेली हुई काशीको देखा। अब वह बचपनकी छोटीसी सुंदर बालिका नहीं थी किन्तु मनोहर तथा तरुण अवस्थाकड़ रमणीय रमणी होगयी थी। नेताजी तथा काशीने, बचपनके उन प्रसन्नतामय घंटोंका स्मरण परस्पर कराया, जबकि वे भीमानदीके किनारे खेला करते थे। प्रशंसा तथा आश्चर्यकी दृष्टिसे काशीने उस ऊंचे योद्धाको देख, जिस पर अब उसे यह विश्वास कठिनतासे हो सकता था कि बीते हुए बर्षोंका साथ खेलने वाला, बाल्य प्रेमी, वही बालक नेताजी है। काशीने, नेताजीको महाराष्ट्रके उद्धारके हेतु अपना जीवन समर्पण करनेके लिये हृदयसे सराहा। दोनों बाल्यावस्थाके प्रेमी, फिर एकबार जुदा हुए। नेताजी दुर्ग दीवारके कमजोर स्थानोंकी मरम्मत करनेमें सहायता देनेको चले और काशीने अपने पिता और रामाके साथ, बीजापुरकी सेनाके आने तथा दुर्ग पर घेरा डालनेके पहले ही, फाटकके बाहर निकलकर कूच कर दिया। अबकी भेटने, नेताजीके काशीकी ओरके बाल्यावस्थाके प्रेममय ध्यानको और भी सुदृढ़ कर दिया। उन्होंने अपने मनमें यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि सिवा काशीके, अन्य स्त्रीसे कदापि विवाह न करूंगा।

यह पर्वत, जिस पर राजमच्छीका दुर्ग बना है, घाटकी प्रधान पर्वत श्रेणीका अङ्ग है। इसी कगारके आर पार, पत्थरकी दृढ़ दीवार सत्रह फुट ऊंची तथा आठ फुट चौड़ी बनायी गयी है। दीवारोंके अन्दरसे बन्दूक चलानेके लिये मोखे तथा तोपोंके लिये बुर्ज थे; परंतु दुर्भाग्यसे, दुर्गमें बन्दूकें थोड़ी थीं

और बुर्जों पर झुकी हुई तीन तोपें इतनी पुरानी थीं तथा उन पर इतनी जंग चढ़ गयी थी, कि शत्रुदलको विशेष क्षति पहुंचानेकी अपेक्षा उनका फट जाना संभव था। और स्थानों पर राजमच्छीका पहाड़ इतना ढालू है कि उसकी रक्षा थोड़े ही रणकला चातुर्यसे कीजानेकी आवश्यकता थी, परंतु उन भागोंमें जहां पर्वत कम ढालू है उसकी सुरक्षा दीवारसे की गयी थी। उसका नाम राजमच्छी राज्यमक्षिकाका अपभ्रंश है। राजमच्छी उस विशाल सुहावने दृश्यके पश्चिम ओर विस्तीर्ण कोकनके मैदान पर अवस्थित है और पूर्व ओर घाटकी अभेद्य कठिन पर्वतश्रेणी पर राजमच्छीका ही अधिकार है। वे पर्वत शृंगसे प्रायः पाव कोस अंतर पर हैं, जिन पर पृथक पृथक किले बने हैं। पूर्व ओर वाले, उच्चतर शृंगस्थ दुर्गका नाम श्रीवर्द्धन है तथा नीचेके शृंग पर बना हुआ कोकनके मैदान पर निगाह डालता हुआ, मनोरंजन कहलाता है। ये दोनों दुर्गम स्थानों द्वारा सुरक्षित थे। तथा इस ढंगसे बने थे जब बाह्य प्रान्तस्थ वह पर्वतीय ऊंची कछार तथा दुर्गके बीचवाली दीवार, जो दुर्गकी प्रथम रक्षा हेतु थी, शत्रुके हस्त गत हो जावे तब वह अपनी रक्षाके लिये चले जायं।

नवम परिच्छेद।

o:o

राजमच्छी पर आक्रमण।

विपदि धैर्य्यमथाभ्युदये क्षमा।
सदसिवाक्पटुता युधि विक्रमः॥
यशसिचाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ।
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥

भर्तृहरि

प्रातःकालके प्रकाशकी प्राथमिक प्रभाके धुंधलेपनमें शत्रु

पाटके किनारेके आगे अपना मार्ग निकालते हुए दिखाई पड़ने लगे। वे आश्चर्यजनक चेष्टासे दुर्गको लेनेकी इच्छा कर रहे थे। इधर दुर्गरक्षकोंने यह निश्चय कर लिया था कि यदि हो सके तो "शठे शाठ्यं समाचरेत" नीतिसे शत्रुओंकी अचानक उमदा मेहमानदारी करके उनकी उस आश्चर्य्यजनक चेष्टाकी दशा परिवर्तित कर दी जाय। त्र्यम्बक रावने अपने मनुष्योंको आज्ञा दी कि वे अपनी बन्दूकें भरकर दीवारके पीछे तय्यार रहें; परंतु वहां अपने रहनेका कुछ भी चिह्न शत्रुओंको प्रकट न होने दें। आक्रमण होनेके भयसे सम्पूर्णतः निश्चिन्त तथा स्वतन्त्र भाव दिखानेको कुछ भेड़, बकरे राजमच्छी दुर्ग दीवारके बाहर चरते रहने दिये गये। जिस समय बीजापुर सेनाध्यक्षने इन जानवरोंको स्वतन्त्रता पूर्वक चरते देख, अपने बहादुरोंमेंसे चुनीदा मनुष्योंको नसेनी लेकर शीघ्रतासे आगे बढ़ने और दुर्गके संरक्षकोंके सचेत होनेसे पहले किलेको दीवारोंको नाप लेनेकी आज्ञा दी।

लगभग पचास बहादुर बीजापुरसे राजमच्छी तकके लम्बे सफरमें थके होने पर भी सेनापतिकी यह आज्ञा सुनते ही आगये। शत्रु दलवाले दुर्ग दीवारसे बीस हाथके अन्तर तक निष्कपटक चले आने दिये गये। जब वे लोग वहां तक बेरोकटोक पहुंच गये तब त्र्यम्बक रावने बाढ़ मारनेका इशारा किया। संकेत होते ही गोली और तीरोंकी बाढ़ आक्रमण करनेवालों पर बरसातके बादलकी तरह बरस गयी और उनके आधे मृतक तथा आहत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। इस आश्चर्य्यसे सचेत होनेके पहले एक और बाढ़ उनपर बरसने लगी। अब तो आक्रमण करने वाले अपने मृतक | तथा आहत साथियोंको अपने दीवारके सामनेकी भूमि पर छट पटाते छोड़कर भाग चले।

राजमच्छीके दुर्ग संरक्षकोंसे इस तीव्र पाठके पढ़नेके पश्चात् यवन सैनिक राजमच्छी दुर्गके समीप पहुंचनेके लिये अधिक सचेत हो गये। अपने मृतक तथा आहत मनुष्योंको वहांसे हटानेकी मोहलत चाहने और हटानेको गये हुए मनुष्योंके साथ उन्हें

सुलहका सफेद झण्डा भेजना पड़ा। दुर्ग संरक्षकोंने उनकी बात स्वीकार कर ली। फिर यवन दलने अपनी तोपें दुर्गकी दीवार तोड़नेकी इच्छासे मोरचे पर जमायी। महाराष्ट्रोंने अपनी पुरानी तथा जङ्ग चढ़ी तोपोंसे उनका जवाब देनेका उद्योग किया, परंतु उनमेंसे दो एक तुरंत ही फट गयी और और शेष दो तोपें भला उन तोपोंके मुकाबलेकी हो सकती थीं जो बीजापुरके प्रसिद्ध कारखानोंमें ढालकर तय्यार की गयीं थीं? कामोंकी इन अभाग्य दशाओंसे दुर्ग सहाय हीन हो रहा था। अब कोई चालाक या शीघ्र रोक नहीं की जा सकती थी और इसमें तनिक सन्देह न था कि बहुत ही थोड़े समयमें दुर्गकी दीवारें शत्रुओंके हस्तगत हो जावेगी।

बीजापुर सेनाके गोलन्दाजोंने कई घण्टे तक सावधानी पूर्वक अपनी तोपोंसे राजमचकी पर गोले बरसाये और बहुत दिन चढ़नेके पहले ही यवन सेना नायकने विचारा कि दीवारका वह भाग जिस पर बाढ़ दागी जा रही थी, एक बार और दृढ़तासे हमला जारी रखनेसे वीरान किया जा सकेगा। इस बीचमें यवन सैनिक आराम कर चुके थे और सफरकी हरारत भी मिटा चुके थे। वे अब एक निश्चित आक्रमण करनेकी योग्य दशामें थे।

इस आक्रमण करनेवाली सेनाका अधिपतित्व भारी डील डौल और विशाल वक्षस्थलवाले एक हबशीके सपुर्द था। वह बीजापुरकी सेनामें सबसे बली समझा जाता था। अपने नीमचेको घुमाता हुआ और एक भारी तथा चौड़ी ढालसे सुरक्षित वह हबशी इस आक्रमणका अगुआ और अधिपति होकर आगे बढ़ा। ज्योंही आक्रमण करनेवालोंका दल शीघ्रतासे दुर्गकी ओर बढ़ा, त्योंही संरक्षोंकी गोली तीर तथा बर्छोंकी मारसे अनेक सैनिक भूतल शायी हो गये। परंतु जो शस्त्र हबशी पर चलाये गये उनमेंसे कई निशाने चूक गये और शेष बिना कुछ क्षति पहुंचाये ही उसकी विस्तृत ढालसे टकराकर नीचे गिर गये। बिना कुछ क्षति उठाये हबशी सेनापति दुर्गकी दीवार खाई तक पहुंच गया जहांके रक्षक इस भयानक कृष्ण वर्ण हबशीके सामनेसे मह चिल्लाकर पीछे

हट गये कि वह व्यक्ति योद्धा नहीं, मनुष्य भक्षी भयङ्कर राक्षस है । परन्तु नेताजीने रक्तकी उस लाल धारको जो हब-शोके काले चमड़े पर बह रही थी अपने साथियोंको दिखा कर जोरसे कहा:—

"देखो वह रावण या कुम्भकर्ण तो है ही नहीं ; जो तुम्हें खा जायगा ; वह हमलोगोंके समान, मांस रक्त तथा अस्थिका बनाहुआ मनुष्य ही है ।"

नेताजीके इन शब्दोंसे लजाकर महाराष्ट्र लोग, खाईकी सुरक्षा-के लिये शूरता पूर्वक खड़े होगये और अपने ऊपर आक्रमण करने वालोंके वेग और रेलेके सामने जम गये जो उस घायल हबशीके अधिपतित्वमें आ रहे थे। अब उक्त दोनों उग्र योद्धाओंमें (हबशी तथा नेताजीमें) युद्ध प्रारंभ हुआ । हबशीका भयानक भीमगदा, नेताजी तक पहुंचनेके पहलेही दो महाराष्ट्रोंके रक्तसे रँग चुका था । उन दोनोंके युद्धके समय भर, दोनों दलवाले आश्चर्य पूरित नेत्रोंसे देखते रहे । उनको लड़ाईपर वे लोग इतने मुग्ध हो रहे कि वे इस युद्धमें किसीका पक्ष लेना भी भूल गये । हबशी अपने डीलडौलके भारसे, प्रत्यक्ष ही अपने शत्रुको गिरा देनेकी आशामें, न रुकने वाले प्रचंड वेगसे आगे दौड़ा । उसके इस प्रचंड आक्रमणके पहले नेताजीको, दो या तीन कदम लाचारीसे किनारे हटना पड़ा ; परंतु ज्योंही हबशी उनके पास आकर रुका, नेताजीने उसके प्रहारसे, शांति पूर्वक अपनी रक्षाकी और अपने शत्रु पर (जिसका न रुकने वाले वेगमें स्वयं ही अपनी ढालसे हट जाना या गिर जाना ही संभव था क्योंकि वह क्रोधमें आग हो रहा था और उसी क्रोधानलमें मस्त होकर पैर पटकते हुए भयानक दुर्वचन बक रहा था) प्रहार करनेके लिये अनुकूल अवसरकी प्रतीक्षा करते रहे । नेताजी शांत तथा स्थिर चित्तसे ठहरे रहे और इस प्रथम युद्धमें (जो उनके देवालयों तथा महाराष्ट्रके उद्धारके लिये था) अपनी सहायता कर-नेके लिये देवताओंसे विनय करते रहे । शीघ्र ही उनका इच्छित अवसर आया । हबशी अपनी क्रोधांध अचेत अवस्थामें अपना

पूर्ण प्रहार नेताजीसे व्यर्थ किया गया देख अपनी रक्षाकी आवश्यकतासे बेपरवा होकर, नीमचेको पवनचक्कीके पंखोंकी तरह लहराने लगा। नेताजीने आगे कदम बढ़ाया और अपने शत्रुके अरक्षित दाहिने बाजू पर अपनी तलवारके भरपूर हाथ लगाया। अपने घावकी परवा न कर हबशीने, नेताजी पर शीघ्रतासे प्रहारोंकी झड़ी बांध दी। नेताजीने अपनी रक्षा उस ढालसे की जो उन्होंने अपने कैदी अयूबखांसे छीन ली थी। नेताजीके सौभाग्यसे ढाल अत्युत्तम थी, नहीं तो महाराष्ट्रके हेतु उनके युद्धका प्रथम दिवस ही अन्तिम हो जाता। कमजोरी और खमसे खून बहते रहनेके कारण हबशीके वार अंतमें कमजोर और सुस्त होने लगे और अब नेताजी आक्रमणकरने वाले उग्र शत्रुका पराभव करनेके योग्य हुए। उत्तम ढालसे सुरक्षित नेताजीने, बहुत ही समीप आकर अपनी तलवार नीची कर दी और खंजर पकड़कर हबशीके हृदयमें भोंक दिया। बीजापुरका सेनाध्यक्ष हबशी, बिना कराहे ही पृथ्वी पर मर कर गिर पड़ा। महाराष्ट्र लोग इस समय विजय लाभकर, आक्रमण करने वालोंको खाईसे नीचे हटा देनेमें सफलीभूत हो गये और यवन सैनिक अपने, वीर असीम बली हबशी अधिपतिकी मृत्युसे ऐसे भयभीत हो गये कि उन लोगोंको दुर्ग पर फिर नये सिरेसे आक्रमण करने;का साहस न हुआ।

दशम परिच्छेद।

—*:*—

राजमचहीसे श्रीवर्द्धन।

बहुधा बहुभिः सार्द्धं चिन्तिताः सुनिरूपिताः।
कर्याञ्चित्र विलीयन्ते विद्भिश्चिन्तिता नयाः॥

पञ्चतन्त्र,

वर्तमान समयमें यवन हरा दिये गये थे; परंतु यह प्रकट था, कि राजमचहीकी सुरक्षा सम्पूर्णतः अधिक समयतक नहीं की जा सकती

थी । शत्रुके भारी दलके सामने, इस जर्जरित दुर्गसे कहांतक लाभ पहुंच सकता था जो इस पिछले आक्रमणमें, पांच या चार संरक्षक खो बैठनेसे और भी अधिक कमजोर हो गया था । शत्रु खाई पार कर, किसी कमजोर मौके परसे दीवारको गिरा देनेमें समर्थ हो सकेंगे और उत्तर, दक्षिण तथा पश्चिमके ढालों पर नसेनी लगाकर चढ़नेका उद्योग तो अवश्यही होगा । ऐसे भारी दलका राजमचीके संरक्षकोंकी उस थोड़ीसी संख्यासे (जिसमें बीससे अधिक मनुष्य नहीं थे) सामना करना कठिन ही नहीं किन्तु असंभव कहा जा सकता था । इसलिये बाहरी दीवारकी सुरक्षा करने और सुदृढ़ सुरक्षित श्रीवर्द्धन शिखर पर लौट चलनेका इरादा किया गया । वह दुर्ग दो सौ गजकी ऊंचाई पर था । उतनी ऊंचाई पर श्रीवर्द्धनमें (जो प्रकृति तथा मनुष्यकी कलासे सुरक्षित किया गया था) किलेके मनुष्योंने जब तक कि रसद पास रहे, शत्रुके आक्रमणसे दुर्ग बचाये रखनेकी आशा की जा सकती है और इस प्रकार स्थान परिवर्तनसे अर्थात् राजमचीसे श्रीवर्द्धन चले जानेसे, इन मनुष्योंकी थोड़ीसी संख्या भी हानिसे लाभकी सूरतमें बदल जावेगी, क्योंकि वहां कुठारोंमें अनाज इकट्ठा किया गया था, जिससे दुर्गमें और अधिक समय तक ठहरे रहनेका सुपास था । श्रीवर्द्धन दुर्गमें, निर्मल जलके झरने थे, जिनका पानी भीतर वाले तालाबोंमें जाकर इकट्ठा होता था, इससे प्याससे कष्ट पानेका भी किसी प्रकारसे भय नहीं था । इसी प्रकार वे लोग रसद चुकनेके अंत तक शिवाजीसे सहायता पानेकी आशामें कई दिन दुर्गमें टिके रह सकते हैं । मगर उन कठिनाइयोंकी (जिनमें राजमचीके स्वामिभक्त अनुयायी इस समय फंस रहे थे) शिवाजीको किस प्रकार सूचना दी जा सकती थी ?

"मुझे जाकर उनकी खोज करने दो" नेताजीने कहा । उन्हें श्रीवर्द्धनकी संकीर्ण सीमामें बन्द रहनेका विचार पसन्द न आया । यद्यपि श्रीवर्द्धनसे कोकनी मैदान तथा प्रभुल और उनके प्रिय मठेरनके घन विभूषित शिखरोंके विशाल तथा सुन्दर दृश्य देख पड़ते थे तोभी उन्हें चुपचाप बैठे रहना पसन्द न था ।

त्र्यम्बक रावने नेताजीकी बात प्रसन्नतासे स्वीकार कर ली। प्रिय पाठक वृन्द! सच पूछिये तो त्र्यम्बक रावको नेताजीसे कुछ कुछ ईर्षा थी; कारण यह कि बीजापुरी सेनाके अत्यन्त बली और प्रसिद्ध योद्धा उरु हबशी पर विजय पानेसे नेताजीने विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी। दुर्गके सम्पूर्ण मनुष्य भलीभांति समझ गये थे कि नेताजी महाराष्ट्रके सुरक्षक हैं और भयके समयमें त्र्यम्बक रावकी अपेक्षा उन पर अधिक भरोसा दिखाने लगे थे। अब आप समझ गये होंगे कि त्र्यम्बक राव नेताजीके वहांसे जानेके लिये क्यों दुखि नहीं थे।

अपनी पराजय और घबराहटसे आक्रमण करनेवालोंके पुनः सचेत होनेके पहले ही राजमच्छीसे श्रीवर्द्धनको स्थान परिवर्तन, बिना किसी प्रकार असुबीताके हो गया। यवन सैनिकोंने राजमच्छीकी दीवारके मुकाबलेमें अपनी तोपें जमायीं। वे लोग इस बातसे बिलकुल बेखबर थे कि राजमच्छीके रक्षक श्रीवर्द्धनको चले गये हैं और इस दुर्गमें अब कोई नहीं है। इस हेतु वे महाराष्ट्रोंके राजमच्छीसे चले आने तथा श्रीवर्द्धनकी दीवारके अन्दर सकुशल पहुंच जानेके पश्चात् भी विशेष समय तक खाली दुर्ग पर गोले चलाते रहे। आगे उन लोगों पर जो कुछ यथार्थ बात थी प्रकट हो गयीं और उन्होंने दीवारको पारकर मनरञ्जन पर अधिकार कर लिया अपने डेरे दोनों पर्वत शिखरोंकी उच्च समभूमि पर लगा दिये। कुछ फौज उस बाहिरी दीवारकी हिफाजतके लिये छोड़ दी गयी जो अब बिना किसी झञ्झटके उनके कब्जेमें थी।

नेताजीने आज ही रातको शत्रुसेनाके पड़ावसे होकर चुपके चुपके निकल जानेका उद्योग करनेका निश्चय किया। विलम्ब होनेसे कुछ भी लाभ होनेकी संभावना नहीं थी। नेताजीकी यह इच्छा थी कि जितना शीघ्र हो सके शिवाजीको उन घटनाओंकी सूचना दे दी जाय जो आजकल राजमच्छीमें हो रही हैं। उन्होंने यह यत्न विचारा था कि अपने कैदी अयूबखांका जिरह बखतर पहनकर शत्रु दलमेंसे निकल आऊंगा। उन्हें यह भी विश्वास पूर्णतया था

कि अंधेरी रात होनेके कारण उनको किसीके द्वारा पहचाने जानेका भय वेष परिवर्तनसे और भी नहीं रहेगा। साथ ही इसके उन्होंने सोचा कि उनका रहासहा भय अयूबखांसे बातचीत करने पर कदाचित दूर हो जाय और उससे शत्रु सेनाध्यक्ष और सेनाके विषयमें सूचना पाजाना उनको उस समयके लिये उपयुक्त हो, जब उन्हें यवन सेनाके किसी सैनिकसे प्रसंगवश बातचीत करनेकी आवश्यकता पड़े। इस हेतु सूर्यास्तके समय नेताजी श्रीवर्द्धनकी उस छोटीसी कोठरीमें गये जहां उनका कैदी अयूबखां बन्द था।

अयूबखां बहुत बदमिजाज हो रहा था। उसने अपना क्रोध, उस बर्ताव पर जो उसके साथ इस कैदमें किया गया था, नहीं छिपाया, कहा;—

"मैं बीजापुरके ताकतवर बादशाह मुहम्मद आदिलशाहका साला यहां कैद हूं। मुझे मोटा अनाज खानेको दिया जाता है और मेरे साथ, मामूली सिपाहीसे बढ़कर बर्ताव नहीं किया जाता है।"

यह नेताजीको रुचिकर तथा लाभदायक समाचार था। यदि अयूबखां अधिकतर दूरदर्शी होता तो इस साधारण रीतिसे अपना भेद न खोलता। आश्चर्यकी बात है जो बीजापुरके ताकतवर बादशाह मुहम्मद आदिलशाहका साला युद्ध नीति तथा साहसमें ऐसा अधूरा हो! अयूबखां श्रीवर्द्धन दुर्गमें उपयोगी बन्दी था, जिसको स्वतंत्रता देनेके बदलेमें एक भारी रकम बुद्धिमानीसे वसूल की जा सकती है। नेताजीने इस संतोष जनक विषयको अपने मनहीमें दबाकर उत्तर दियाः—

"यदि आपकी खातिर आपके मर्तबेके मुआफिक नहीं की जाती है तो मैं प्रसन्नता पूर्वक त्र्यम्बक रावसे कह दूंगा कि आपके साथ यथायोग्य बर्ताव किया जाय और ऐसे आराम जो इस घिरे हुए दुर्गमें आप जैसे कैदीको पहुंचाये जा सकते हैं, दिये जावें।"

मनही मन कुछ विचारकर तथा मुसकुरा कर अयूबखांने जोरसे कहा "अब मैं समझ गया कि शरीफ खान्दान हफीजखां अपने सवारोंको लेकर, राजमचळी और श्रीवर्द्धनके पहाड़ी किलोंमें

रहने वाले तुम मरहट्टे चूहोंके निकाल बाहर करनेको अवश्य ही आन पहुंचेंगे।"

"आप विचार रहे हैं" नेताजीने कहा "कि श्रीवर्द्धन दखल कर लेना तमाशा ही है, श्रीवर्द्धन ऐसे दुर्गको अपने अधिकारमें लानेके लिये, हफीजखांके पास कोई यंत्र बल नहीं हो सकता और दीवारें गिरा देनेके लिये उनके पास कोई युक्ति नहीं होगी।

"हफीजखांके साथ, बीजापुरके अच्छे अच्छे कारखानोंकी बनी निहायत उमदा अजदर तोपें हैं और दीवारको नीचेसे खोदकर सुरंग लगानेवाले मौजूद हैं। जिस वक्त इस किले पर हमले शुरू किये जावेंगे उन हमलोंका अगुआ, सिपहसालार हवशी सीदीहसन है, जिसका शानी, मेरे बहनोई मुहम्मद अदिलशाहकी फौज भरमें मेरे सिवा दूसरा नहीं है।"

नेताजी अयूबखांके इस विचार पर, उसका घमंड और मूर्खता देखकर मनही मन बहुत हंसे। अयूब खां अपनी बातोंसे उस व्यक्ति पर प्रभाव डालना चाहता था, जिसे उसके डरपोकपनका सच्चा-परिचय तथा अनुभव था। उसका घमंडपूर्ण कथन, बिना अपने हृदयका भाव प्रकट किये नेताजीने सुन लिया; वह घृणा जो उनको अयूबखांके इस घमंड पर उत्पन्न हुई मनमें ही दबा रखा। उन्होंने अयूबखांसे यह जान कर अपने मनको संतोष दे लिया कि और कोई ऐसे बहादुर बीजापुर सेनाकी इस चढ़ाईमें सम्मिलित नहीं हैं।

"निःसंदेह" नेताजीने कहा "हफीजखांकी फौज भारी और मजबूत है परंतु युद्धमें विजय अथवा पराजय अद्भुत शक्ति शाली देवताओंकी इच्छा पर आश्रित है। जिस बहादुर सिपहसालारका आप ऐसे बढ़ावेसे बयान कर रहे हैं यदि वह लड़ाईमें हरा दिया गया तो उसके बाद और कोई भी आक्रमण करने वाला शेष वा नहीं रहेगा।"

"वह न तो कोई ऐसा बहादुर अपने पीछे लड़ाई करनेको बाकी रखता है और न कोई दूसरी फौज अपनी मददको चाहता है। अजी, वही अकेला तो दखन भर झाड़ कर साफकर डालेगा और

वे सब किले जो कि चोर शिवाने अपने कबजेमें कर लिये हैं, एक एक करके अपने दखलमें कर लेगा। ऐसी ही एक दूसरी फौज दूसरे महीनेमें कोकन पर उतरने वाली है। वह रास्तेमें उन तमाम बागियोंको, जिन्होंने सिर उठाना शुरू किया है, सजा देती हुई फतहका झंडा उड़ाती कल्यानको चली जायगी।"

यह कुछ उपयोगी सूचना थी। इससे नेताजीको यह निश्चय हो गया कि यदि वे राजमच्छीके घेरा डालने वालोंसे एक बार पार पा गये तो उनके सामने किनारा साफ मिलेगा और कोई अटकाव न रहेगा। फिर उन्होंने वह संकेत शब्द जो हफीजखांकी फौज वाले रात्रिके समय आपसकी पहचानके लिये काममें लाते हैं अयूबखांसे पूछ निकालनेका प्रयत्न किया; परंतु इसमें वे सफल न हुए। यद्यपि अयूबखां अपने घमंडमें किसीको कुछ नहीं गिनता था तथा दूरदर्शी न था तौभी वह ऐसी मोटी अकलका घोंघा न था कि ऐसी बात एकाएक कह बैठता। उनसे इस बातको दिलहीमें रखने और, अपने शत्रुसे प्रकट न करनेकी पूरी समझ थी।

नेताजी त्र्यम्बकरावसे अन्तिम बार भेट करने तथा विदा लेने गये। अपने बन्दीका सम्मान रखने तथा उससे पदानुकूल बर्ताव करने और उसे आराम पहुंचानेके विषयमें, त्र्यम्बकरावसे कहनेको न भूले। भेट होने पर त्र्यम्बकरावने उनसे कहा कि मैंने श्रीवर्द्धन दुर्गके बुखारोंकी रसद नापकर अन्दाज कर लिया है। यदि इस बीचमें दुर्ग पर आक्रमण करनेवाले दीवार गिरानेमें अकृतकार्य रहे, तो वे छः सप्ताह तक और टिके रहकर दुर्गको बचाये रखनेके योग्य रहेंगे। त्र्यम्बकरावको यह आशा करनेका कारण ठीक था कि वे इस समयके भीतर शत्रुओंको सम्पूर्ण आक्रमणोंमें परास्त कर सकेंगे; क्योंकि श्रीवर्द्धनकी दीवारें इतनी ऊंची थीं कि उनको, नीचेवाली उच्च समभूमि पर जमाई हुई तोपोंसे कठिनतासे क्षति पहुंचाई जा सकती है और दृढ़ कठोर तथा काले पत्थरकी ठोस नीवको, सुरंग लगाकर उड़ा देना अगर असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य ही होगा। त्र्यम्बकरावने उनसे अन्तिम बात यह कही कि

शिवाजीको छः सप्ताहके भीतर ही यहां ले आओ; तुम अपना नारंगी पर हरा, औवर्द्धन दुर्गकी चोटी पर उस समय भी उड़ता हुआ पाओगे।

एकादश परिच्छेद।

राजमच्छीसे प्रस्थान।

देशान्तरेषु बहुविध भाषा वेषादि येननज्ञातम्।
भ्रमता धरणी पीठे तस्य फलं जन्मनो व्यर्थम्॥
विद्यां वित्तं शिल्पं तावन्नाप्नोति मानवः सम्यक्।
यावद्व्रजति न भूमौ देशाद्देशान्तरं हृष्टः॥

पञ्चतन्त्र।

इस समय बहुत अंधेरा हो चुका था। नेताजी बिना और विलम्ब किये, अपनी जोखिम पूर्ण चढ़ाई पर रवाना हुए। यवन सैनिकोंके वेषमें उनको निष्कंटक जानेका लाभ था। वेष परिवर्त्तन कर लेनेसे उनको यह विचार करने पर और भी संतोष हो गया कि इस वेषमें उन्हें, अपनी कुशल तथा स्वतंत्रताकी रक्षाके हेतु, भरपूर वार करनेका अवसर बिना पाये मार डाले जाने या गिरफ्तार कर लिये जानेका भय नहीं था

नेताजीने मन ही मन कहा कि अन्तमें प्रत्येक मनुष्यको जो कुछ उसके ललाट पट्टमें लिखा है अवश्य सहनीय है। उनकी पहली कठिनाई, बिना किसीके जाने हुए, चुपचाप दुर्गसे नीचे उस भूमि पर पहुंच जानेकी थी जिस पर यवन सेनाका प्रधानअंग छावनी डाले पड़ा था। एक स्थान पर औवर्द्धन दुर्ग, उस उच्च समभूमिके किनारे इतना पास आ गया था कि यवन सैनिक दुर्ग वालोंके तीरोंके भयसे जल्द उस मार्गसे नहीं निकलते थे। इस

जगह पर्वत पर बहुतसे पेड़ थे जिनकी छायामें नेताजी बिना किसीकी निगाह पड़े नीचे उतर आये। उनको किसीने न देखा; परंतु वे अबभी अपनेको पेड़ोंकी छायामें सावधानीसे छिपाये हुए वहांसे चले और अत्यंत पास वाले यवन शिविरके पास धीरे धीरे आ पहुंचे।

सौभाग्यवश यवन सैनिक अभी अपनी इस नवीन स्थितिमें जमे नहीं थे। वे अपनेको क्रमसे स्थित करने तथा रात्रिके भोजनकी तय्यारीमें ऐसे दत्त चित्त थे कि छावनीके बाहर पहरे पर सिपाही जमाने तककी याद उन्हें न रही। महाराष्ट्र लोग एक कहावत कहते हैं कि भाग्य साहस पर कृपा दृष्टि रखता है। इस दशामें नेताजीने देखा कि साहस ही चतुरताका प्रधान अंग है। वे शत्रु सेनाकी छावनीमें ऐसी लापरवाहीसे चले गये मानो वे उस सेनाके कोई प्रतिष्ठित अधिकारी हों। उनकी साहसमय बुद्धिमत्ता पूर्ण रूपसे सफल हुई। उन बहुतसे सैनिकोंमेंसे, जो तम्बू गाड़ने या मजेदार पुलाव पकानेमें लगे हुए थे, एकने भी उस वीर सैनिक पर ध्यान न किया, जो उन लोगोंके बीचमेंसे ऐसी तेज और लापरवाहीकी चालसे चला जा रहा था मानो वह किसी विशेष गुरुतर तथा आवश्यकीय कार्यको जाता हो। हां, यवनसैनिकोंकी प्रशंसाकी एक क्षणिक दृष्टि उसके सिपाहियाना ठाट उत्तम जिरह बखतर तथा हथियारों पर, सेनापंक्तिमध्यस्थ मार्गसे जाते समय अवश्य आकर्षित हुई।

नेताजी घाटोंकी मुख्य श्रेणी पर जाने वाली कगारके पारवाली प्राकृतिक दीवार तक बिन रोक टोक पहुंच गये। परंतु जिस समय वे इस दीवारके बाहर हुए उनके इच्छितस्थान तक पहुंचनेके पहले एक विचित्र घटना हुई जिसने नया रंग पैदा कर दिया।

नेताजीने यवन शिविरके पास आकर देखा कि चार यवन सैनिक, दो महाराष्ट्र किसानोंको पकड़ावमें लिये जा रहे हैं। वे किसान घासके भारी गट्ठरोंसे लदे थे। यह स्पष्ट देख पड़ता था कि वे महाराष्ट्र कृषक गट्ठरोंके बोझसे, बहुत थक गये थे, परंतु यवन सैनिक, जो उनके पीछे पीछे आ रहे थे, अपने बर्छोंकी नोकोंसे उस समय

उनको छेदते जाते थे, जब कि वे अधिक ग्रसित होनेके कारण अपने सिर पर रखे हुये गट्ठरोंको ठीक करनेके लिये अपनी चाल धीमी करते जान पड़ते थे।

उन किसानोंकी छाती तथा भौंहोंसे टप, टप, पसीना टपक रहा था और बहुत ही नम्र शब्दोंमें वे अपने पर अत्याचार करने वालोंसे दया दिखानेकी प्रार्थना कर रहे थे। पाषाण हृदय, यवन सैनिकोंके हृदयमें दयाका संचार, नहीं नहीं, ध्यान भी न था।

नेताजी, अपने स्वदेशभ्रातृ कृषकों पर इस प्रकार निर्दयता और बुरी तरहसे यवनों द्वारा अत्याचार होना देख न सके। उनके स्वदेश भक्त हृदयसे यह सहन न हो सका। अपनी जान जोखिमका क्षण भर भी विचार किये बिना वे उन यवन सैनिकोंके पास तड़प कर जा पहुंचे और उन लोगोंको ऐसी निर्दयतासे रुकनेका हुक्म दिया।

एक क्षणके लिये, यवन सैनिक नेताजीकी हुकूमताना आवाज और उच्चाधिकार सूचक भावसे, जो उनके बेशकीमत बखतरसे प्रकट होता था, सहम गये; परंतु तुरंत ही उनमेंसे एकने हिम्मत बांधकर उद्दंड तथा कर्कश स्वरसे कहा;—

"यह सिर्फ अपना फर्ज अदाकर रहे हैं और अपने घोड़ोंके लिये लशकरमें घास ला रहे हैं। ये गायको परस्तिश करने वाले हिन्दू सिर्फ बोझ लादनेके जानवर ही हैं। इसके अलावे ये किसी कामके लायक नहीं हैं। ये बड़े सकूार और पाजी हैं, चलनेमें सुस्ती करते हैं, भला बताओ तो सही, फिर हमलोग इन सुस्त बैलोंको तेज चलानेके लिये क्यों न आर लगावें?"

"मैं तुम्हारे ऐसे चाल चलनकी इत्तला हकीमखांसे कर दूंगा और तुम्हारा किसानोंके साथ ऐसा बर्ताव करना ठीक नहीं है। तुम किस बोरहमसे उनके साथ वर्ताव कर रहे हो जिन्हें बीजापुरके बादशाह अपनी रय्यत, अपनी हिफाजत या हिमायतके लायक और प्यारा जानते हैं। तुम ऐसी हरकतोंके लिये सजा पाओगे।"

नेताजीकी बात सुनकर वे उद्दण्ड सिपाही खिलखिलाकर हंस

उठे और उस आदमीने जो उन लोगोंकी तरफसे बोल रहा था कहा।—

"इन सुस्त हिरनोंको हमारे बर्छेकी नोकका मजा चखानेके लिये हफीजखांसे हमारी इत्तिला करनेका ख्याल आप कर रहे हैं। वाह क्या खूब!! अजी क्या कल खुद उन्होंने इन्हीं ऐसे बारह किसानोंको खंडाला गांवमें चाबुक नहीं लगवाये? वजह यह थी कि सीधी तरह ये कभी बतलाने वाले नहीं हैं कि इन लोगोंने अपना अनाज किस जगह रखा है। लश्करमें घोड़ोंको दानेकी जरूरत थी। इसीसे ये लोग पीटे गये। खैर इन बातोंसे क्या मतलब है मगर आप यह तो बतलाइये कि आप हैं कौन जो हमको हुक्म देते हैं? मुझे तो तुम सच्चे दीनदार या बीजापुरकी फौजवालोंकी तरह बात करते नहीं मालूम पड़ते।"

ठीक इसी समय यवन सैनिकोंमेंसे एकने जिसके हाथमें लालटेन थी, हाथ ऊंचाकर नेताजीके चेहरे पर प्रकाश डाला और वह त्रिपुण्डका चिह्न उनके मस्तक पर देख पड़ा जिसे वह वेष परिवर्तनके समय जल्दीमें धोना भूल गये थे।

सोलहो कला पूरी हो गयी। यवन सैनिकोंका पड़ाव! रात्रिके समय अकेलेमें नेताजी और यह अवसर!! त्राहि मधुसूदन!!!

"यह मुसलमान नहीं बल्कि कोई कमबख्त हिन्दू जासूस है" उस यवन सैनिकने चिल्लाकर कहा और अपनी तलवार खींच ली। उसके साथियोंने भी उसीका अनुसरण किया। वे दोनों किसान यद्यपि अपने धन्धे तथा कोमल हृदयके कारण प्रसङ्ग वश इस दशामें फंस गये थे तथा अपने अत्याचारियोंके सामने नम्रताको प्राप्त हो रहे थे; परंतु वास्तवमें डरपोक या कायर नहीं थे। वे दोनों उस वीर युवकको इस भांति अकेला छोड़ कर चले जानेको किसी भांति उद्यत न जान पड़े जिसने उनकी रक्षाके निमित्त ऐसे सङ्कट समयमें वीरता तथा साहससे अपनेको आगे कर दिया था। उन्होंने अपने तथा सिपाहियोंके बीचमें सिर पर रखे हुए घासके गट्ठे फेंक दिये और उनमेंसे एक

लम्बी तथा भारी लाठियां खींच लीं। इस प्रकार तय्यार हो-कर वे दोनों नेताजीके दाहिने तथा बायें हाथ पर खड़े हो गये।

यवन सैनिक यह देखकर सहम गये कि अब उन्हें तीन दृढ़ निश्चित युद्धारूढ़ मनुष्योंका जिनमें एक अजेय योद्धा प्रतीत होता था, सामना करना है। घासके गड्डों परसे निकलकर उन लोगोंके पास जानेके बदले उन्होंने अपने बचावको खड़ा रहने तथा आवाजको पूरी ऊंचाई भर चिल्लाकर सहायताके लिये मनुष्य बुलानेकी सुगमतर बुद्धिमत्ताको अधिक पसन्द किया। उनकी सहायताकी पुकार पर तुरंत उत्तर दिया गया और दीवारके फाटकके अन्दरसे आगे बढ़ने वाले सिपाहियोंके शोर तथा पैरोंकी आहट सुनाई पड़ने लगी।

"साहस रखो" नेताजीने चिल्लाकर कहा और उन दोनों किसानोंको अपने साथ इस युद्धमें सम्मिलित होनेको कहा; परन्तु जो मनुष्य उनके दाहिने हाथ पर खड़ा था उसने उनको पीछेसे पकड़ कर खींचा और जोरसे यह कहा—"मेरे पीछे चले आओ" और वह किसान मुख्य सड़कसे निकल कर बगलसे जाने वाली पगडण्डीसे नीचेके मार्ग पर दौड़ा। दूसरे किसानने उ-सका अनुकरण किया तथा नेताजीने भी क्षणेक आगा पीछा कर-नेके उपरांत यही बात ठीक समझी। यद्यपि उनको भागकर बच जानेका ध्यान पसन्द न था परंतु ठीक उसी विचार पर जैसा कि वे अभी थोड़े समय पहले प्रमाणित कर चुके थे कि साहस समयानुसार चतुरताका श्रेष्ठ अङ्ग है—चलना उचित न जाना। यदि वे जहांके तहां थोड़ी देर और रहते तो निश्चित था कि या तो गिरफ्तार कर लिये जाते या मार ही डाले जाते। महाराष्ट्रके स्वातन्त्र्य हेतु वे संभवतः और अधिक युद्ध न करने पाते और शिवाजीको उस भयका समाचार पहुंचाना वास्तवमें रुक जाता जिसमें उनका एक प्रधान तथा अत्यंत दृढ़ दुर्ग राज-मच्छी ग्रस्त हो रहा था। ये सब बातें नेताजीके मस्तिष्कमें कागजमें लिखे जानेकी अपेक्षा अतीव शीघ्रतासे बिजलीकी

चमककी तरह पलक झपकते ही घूम गयीं और वे भागते हुए किसानोंके पीछे पगडण्डी पर पूरी शीघ्रतासे हवाके समान दौड़े।

बहुतसे यवन सैनिक इन लोगोंके पीछे खोजमें दौड़े। यह सब कुछ हुआ परंतु रात्रि अंधेरी थी और महाराष्ट्रोंकी वही मसल हुई कि "भागने वालेको तो एक मार्ग है, परंतु खोजने वालोंके बारह हैं।" पीछे दौड़नेवाले यवन सैनिक नेताजी तथा दोनों किसानोंको न पासके और वे लोग यह विचार कर और भी डरे कि उन लोगोंकी खोजमें जाते हुए हम अंधेरेमें उस नीचे वाले मार्ग पर चले जानेसे कहीं भयानक कन्दराओंमें न फंस जायं। किसी जंगलमें भूल गये, तो भागने वालोंकी खोज तो दूर रही, हमारा ही पता लगना कठिन हो जायगा और किसी शेर आदिसे कहीं भेंट होगयी तो बस फिर सारी कहानी समाप्त हो जायगी। इसलिये यवन सैनिक या तो मनरंजन शिखरसे नीचे आने वाले मुख्य मार्ग पर दौड़ते रहे या उसकी बगलमें इधर उधर ढूंढते फिरे। वे किसान, उस पहाड़ी जमीनसे चिरपरिचित थे; लग भग दो सौ फुट पहाड़ीकी बगलसे नीचे उतर आये। नेताजी भी उनके पीछे पीछे चले गये। हां, बदन पर बखतर होनेके कारण उन्हें उन किसानोंके बराबर भागनेमें बड़ी कठिनता उपस्थित होती थी। अब वे लोग उस स्थान पर पहुंच कर अधिकतर आरामकी चालसे पूर्वकी ओर घूमे और वहांसे एक छोटीसी पगडंडी पर जाने लगे जो प्रधान मार्गसे समानान्तर जाती थी। आध या एक कोस आगे बढ़नेके पश्चात् तीनों मनुष्य पेड़ोंकी एक कुंजमें आये, जिसमें पहाड़ी तेज हवासे उनको अच्छे प्रकार शरण मिल गयी। उन लोगोंने अपना पीछा करने वालोंको भटका कर उल्लू बनाया था और अब वे भी दौड़ते दौड़ते, पहाड़ोंके ऊबड़ खाबड़ उतार परसे नीचे आनेके कारण श्रमित हो रहे थे। उन्होंने नेताजीको रात भर आराम करनेको कहा। सब, विश्राम करनेके लिये पेड़ोंकी कुंजमें, पृथ्वी पर लेट गये और अपनेको ठंडसे बचानेके लिये सूखे पत्तोंसे ढक लिया।

द्वादश परिच्छेद।

—*※*—

शिवाजी और मोरोबा।

आदौ नवा प्रणयिनां प्रणयी विधेयो।
दत्तोऽथवा प्रति दिनं परिपोषणीयः॥
उत्क्षिप्य यत् क्षिपति तत् प्रकरोति लज्जां।
भूमौ स्थितस्य पतनात् भयमेव नास्ति॥

पञ्चतन्त्र।

जिस समय उन आमके पेड़ों पर, जिनके नीचे नेताजी तथा दो किसानोंको शरण मिली थी, बसेरा करनेवाले पक्षियोंकी चहचहाहटने प्रातःकालके आगमनका समाचार सुनाया, नेताजीकी नींद खुली और उन्होंने अपने साथियोंको जगाया। नेताजीके प्रश्नके उत्तरमें उनलोगोंने कहा कि हमें मालूम नहीं, शिवाजी किस जगह हैं। उन लोगोंने साथ ही यह भी कहा कि जब शिवाजीके विषयमें पिछली बार सुना था तो उस समय पूनाके आस पास किसी जगह उनके रहनेकी अफवाह थी; परंतु उनकी गति और मन्तव्य इतने तेज होते हैं और कभी कभी तो वे इतनी सावधानीसे छिपा रखे जाते हैं कि उनकी खोज मिलना कठिन है। यदि ठीक समाचार पानेकी आप इच्छा करते हैं तो लोहागढ़में (१) जाकर पूछना ठीक होगा, जो इस जगहसे आठ नौ कोससे अधिक दूर नहीं है।

नेताजीने लोहागढ़ जाना ही निश्चय किया। अत्यंत चमकीले तारोंने अभी आकाशमें छिपना प्रारम्भ ही किया था, कि नेताजी दोनों किसान साथियोंके बताये हुए मार्गसे खंडालाकी ओर रवाना हुए। ज्योंही प्रातः कालके प्रकाशने अधिकतासे फैल कर, प्रकृतिको अपने चमकीले रंगोंकी कान्ति तथा सुन्दरता पुनः प्रदानकी, उन्होंने देखा कि वह मार्ग विस्तृत कोकनी मैदानके

१। पूनेसे २५ मील वायुकोनमें लोहागढ़का किला बहुत मजबूत बना है और पानीका उसमें बहुत आराम है।

दृश्यका आनंद अनुभव कराने वाले एक विशाल प्राकृतिक अर्द्धके आगे है। उनके सामने दुरंगी आकृति वाला एक ऊंचा पर्वत शृंग (१) है।

खंडाला पहुंचने पर नेताजी रामाके मित्र उस किसानके घरकी ओर घूमे, जिसके यहां वे अयूबखांके घोड़े अबूजानको छोड़ आये थे। उन्हें घोड़ा पानेकी आधी आशा थी। उनको यह भी सन्देह था कि किसान कहीं उस कीमती घोड़ेको लेकर चम्पत न हो गया हो। उस सम्पति या धनको अपेक्षा जो किसानके पास था, घोड़ा निःसन्देह विशेष मूल्यवान था। नेताजीको उस समय अतीव सन्तोष हुआ जब उन्होंने घोड़ेको आरोग्य दशामें किसानके पास देखा। किसानने उनसे काशी तथा उसके पिताके विषयमें यह मनोरंजक समाचार सुनाया कि उन लोगोंको रामा मेरे झोपड़ेमें लाया था। राजमचीसे अपने जल्दीके सफरकी थकावट दूर करनेके उपरान्त उन लोगोंने वहां रात्रि विश्राम किया और दूसरे दिन प्रातःकाल लोहागढ़ रवाना हो गये।

नेताजीने आराम करने और सफरकी हरारत मिटानेके लिये कुछ देर वहां ठहरनेके बाद किसानको उसके अतिथि सत्कारी स्वभाव तथा ईमानदारीकी प्रशंसा कर यथायोग्य पुरस्कार दिया और फिर घोड़े पर सवार हो लोहागढ़की ओर यात्रा की। दोनों किसान नेताजीसे विदा हो गये थे, परन्तु अब उनको अपना रास्ता पानेमें कोई कठिनाई न थी; क्योंकि उनका मार्ग अब भली भांति जाना बूझा था। वह सड़क पीछे "पेशवाकी सड़क"के नामसे प्रसिद्ध हुई।

नेताजीका अभ्यास घोड़ेकी सवारीमें अभी तक उन छोटे छोटे देशी टट्टुओं पर ही परिमित था जिन पर वे अपनी बाल्यावस्थामें अपने जन्मस्थान चौकग्राममें चढ़ते थे। सदैवसे घोड़ा रखने और

१। यह पर्वत शृङ्ग आजकल Dukes nose "ड्यूक्स नोज"के नामसे पुकारा जाता है परंतु जिस समयका हम वर्णन कर रहे हैं, वह "नागफनी" के नामसे विख्यात था।

सवारी करनेका उन्हें अत्यन्त अनुराग था, परन्तु कुटुम्बीय वित्त-संकोचसे उनको स्वेच्छापूर्वक अपनी रुचि पूरी करनेका अवसर नहीं मिलने पाया। अब एक उत्तम अरबी घोड़े पर अपनेको सवार देख कर नेताजीकी प्रसन्नता, उत्साह तथा मनका ठिकाना न रहा। अबूजान खंडालेके किसानके बाड़ेमें बंधे रहनेकी कैदसे छूट कर ताजा हुआ और ऐसे ढंगसे कूद फांद और जस्त की कि किसी कम चुस्त चालाक सवारको घबराहट हो जाती, परंतु नेताजीने उत्तमतासे अपनेको घोड़ेकी सब हरकतोंके मुआफिक कर दिया और उसकी ऊंची हिम्मत और चिन्ह देख कर परम प्रसन्न और उत्साहित हुए। साधारण पहाड़ी टट्टूकी अपेक्षा इस अरबी घोड़ेका बदन मुलायम, मखमलका बना जान पड़ता था और जीन तो उन्हें ऐसा सुखदायक जान पड़ा मानो उत्तम गद्दी है। नेताजी उस नखरेदार घोड़े पर सवार होकर युवावस्थाके गर्व, बल तथा उत्साहमें अत्यन्त प्रसन्न होते हुए अपने मार्ग पर रवाना हुए।

यहांसे रवाना होने पर बहुत समय नहीं बीता था कि उन्हें लोहागढ़का बाहरी प्रांत जो "बिच्छूडंक" कहलाता है, निर्मल आकाशमें निकला दिखाई पड़ा। वे उस बहुत प्राचीन दुर्गके पास थे जो दक्षिणके पहाड़ी दुर्गोंमें अत्यंत दृढ़ है। उसी क्षण सड़कके बगलवाले पेड़ोंके घने झुंडसे अकस्मात् एक मनुष्य तेजीसे निकल कर आगे बढ़ा और उसने नेताजीके घोड़ेकी बाग पकड़ कर ऊंची आवाजसे कहा ;—

"वीर मनुष्य! यदि संत्रस्तोंको कष्टसे छुड़ानेके लिये, तुम्हारे हृदयमें कुछ भी दया हो तो परमेश्वरके लिये हमारी सहायता करो"

अपनेसे फरियाद करनेवालेके चेहरेमें रामाकी सूरत पहचान कर नेताजीके आश्चर्य्यका ठिकाना न रहा। एक क्षण तक कुछ सोचनेके उपरांत उन्होंने जोरसे कहा ;—

"तुम मुझसे सहायता करनेके लिये कह रहे हो? तुमने कामी तथा उसके पिताको कहां छोड़ा? किसने तुम्हारे ऊपर अत्याचार किया है?

रामाने नेताजीको पहचान लिया और जो कुछ घटना हुई थी बयान की। उसने कहा कि हमलोगोंको एक लुटेरोंके झुण्डने लूट लिया और वही दादाजी तथा काशीको गिरफ्तार कर एक पास वाली कन्दरामें ले गया है। मैं उनकी कैदसे किसी प्रकार बचकर निकल आया और डरके मारे एक झाड़ीमें छिप रहा।

काशी और उसके पिताके डाकुओंके हाथमें फंस जानेकी खबरसे नेताजीके हृदय पर भयानक आघात पहुंचा। इस समय उन्हें यह जान पड़ा कि जिस दुर्भाग्यने बचपनमें उन पर अपना विषम प्रहार किया था, वह अबभी उनके पीछे लगा घूमता है।

"लुटेरोंके दलमें" रामाने सूचित किया "सौ मनुष्य हैं"। इतने आदमियोंके मुकाबलेमें, रामाकी सहायता होने पर भी नेताजी करही क्या सकते थे? यद्यपि यह अवसर, निराशा पूर्ण, देखपड़ता था, तथापि कुछ न कुछ प्रयत्न करना ही आवश्यक था। इसलिये उन्होंने रामाको हुक्म दिया कि तुम मुझे सीधे लुटेरोंकी कन्दरामें ले चलो।

नेताजी और रामा बहुत दूर आगे नहीं बढ़े थे कि अचानक इन्हें दो व्यक्ति दृष्टि पड़े जो सड़कको बगलमें, एक आमके पेड़की छायामें शांत भावसे बातें कर रहे थे। उन दोनों मनुष्योंमें एक बूढ़ा गोसाईं था जो पेड़की जड़के पास पालथी मारे बैठा था। दूसरा व्यक्ति एक तरुण हिन्दु योद्धा था जो बूढ़ गोसाईंके सामने, अपने हाथमें, उस देशी प्रसिद्ध "भीमथरी" नसलके घोड़ेकी बाग थामे खड़ा था जो अपने स्वदेश, दक्षिणके, ऊंचे नीचे पथरीले मार्ग और जंगलकी पगडंडियों पर, इच्छानुसार प्रवास तथा श्रम सहनेकी शक्ति संपन्न देख पड़ता था। वह तरुण योद्धा विशेष भारी डील डौलका तो न था, परंतु चीतेकी तरह चुस्त और फुर्तीला था। उसकी नाक कुछ उभरी हुई थी। आंखें वर्णनीय रीतिसे चमकदार थीं और दाढ़ी राजपूती ढंग या तराशकी थी। उसके चहरेसे चालाकी और फुर्ती बरसती थी। प्रथम ही दृष्टिमें नेताजीने अपने मनको उस व्यक्तिकी ओर किसी गुप्त, चुम्बकीय आकर्षण शक्तिसे खिंचते पाया।

नेताजीको ही पहले बोलना पड़ा।

"तुम कौन हो?" नेताजीने कहा "किसको मैं सड़ककी बगलमें, इस पृथ्वीपर जो न्याय रहित कृत्योंसे कलङ्कित हो रही है तथा अत्याचारके भारसे नत है, इसप्रकार शांतभावसे बातें करते देखता हूं?"

"हम मनुष्य नहीं देवता हैं," उस वृद्ध गोसाईंने कहा "नेताजी पालकार! तुम यह बात निश्चय जान लो कि मैं चिंचावदका मोरोबा हूं जिसके नाशवान शरीरमें विघ्नोंका नाश करनेवाले प्रथम पूज्य श्रीगणपति निवास करते हैं तथा जिसके वंशमें उन्होंने सात पीढ़ी पर्य्यन्त वास करनेका वरप्रदान किया है। यह भी तुमको जानना आवश्यक है कि मेरा साथी और भी अधिक शक्तिमान, भूत-भावन, भूतनाथ, भगवान सदाशिवका अंश अवतार है जिसने महाराष्ट्रकी शोचनीय दशा पर दया कर उसके मनुष्योंको विषम अत्याचारोंसे छुड़ानेके लिये मनुष्य देह धारण की है। तुम्हारे सामने तुम्हारे राजा शिवाजी खड़े हैं जो कि सूर्य्योदयसे इस समय पर्य्यन्त तुम्हारे आनेकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। जगद्धात्री भवानीने उनको तुम्हारे आनेकी सूचना दी और यह कहा कि मठेरन शिखर पर व्याघ्र कन्दरामें रहने वाले योगिराजके शिष्य नेताजी पालकारकी सहायता बिना तुम अपने देश महाराष्ट्रका उद्धार नहीं कर सकते।"

नेताजी उस वृद्धसे जिसको अब मोरोबा कहना उचित है, पूर्व परिचितकी तरह जाने जाकर आश्चर्य्यके समुद्रमें डूबने उतराने लगे। वास्तवमें मोरोबा अमानुषिक बल या दैवी-शक्तिसंपन्न जान पड़ा। इसी भांति उसके पूर्वजोंकी भी प्रशंसा थी। इस भेदको और भी अधिक प्रकाशमें लानेके लिये, पूछनेके भावसे नेताजी शिवाजीकी ओर घूमे।

शिवाजीने उनके मनका भाव जानकर कहा "मोरोबाने जो कुछ अपने विषयमें कहा है वह निःसन्देह सत्य है। उन्होंने विघ्नहारी गणपतिकी उपासना ऐसी श्रद्धा तथा भक्तिसे की, कि महान् शक्तिशाली गजाननने उन पर प्रसन्न होकर अनुभव तथा चमत्कार दिखाया और उसमें तथा सात पीढ़ी पर्य्यंत उनके वंशमें

निवास करनेका वर दिया। तभीसे वे अद्भुत शक्ति सम्पन्न हो गये हैं। उनकी शक्तिका साक्षी स्वयं मैं ही हूं। उन्होंने मेरी नेत्र दृष्टिको बिना औषधि अथवा रसकी सहायताके आरोग्य कर दिया। मेरे विषयमें यह बात है कि मुझे रात्रिमें विचित्र स्वप्न होते हैं और दिनको ध्यानमें अनुभव होता है कि देवगण मुझे पथ प्रदर्शन करते हैं। कल रात्रिको भवानीने मुझे दर्शन दिया और कहा कि मैं इस स्थान पर ठहर कर एक योद्धेकी प्रतीक्षा करूं जो खंडालेसे आ रहा है तथा उसके साथ तोरना जाऊं। कभी कभी सचमुच मुझे प्रत्यक्ष हो जान पड़ता है कि मेरे हृदयमें निवास करनेवाले किसी देवतासे मुझ पर प्रभाव डाला जा रहा है। वह हो वा न हो, परंतु महाराष्ट्रकी स्वतन्त्रताके लिये जीवित रहना वा कदाचित मरना निःसन्देह मेरे भाग्यमें है।

नेताजीने उत्तर दिया कि स्वयं मैंने भी अपना तन मन इसी हेतु समर्पण कर दिया है और ऐसा कहकर शिवाजीका सम्मान करनेको वे पृथ्वी पर नीचे गिरे और अपना लघुत्व भाव (शिवाजीको महत्व देकर) प्रकट किया। शिवाजीने उनको पृथ्वी परसे उठाया और एक ही विशाल हेतु महाराष्ट्रके उद्धार पर भक्ति तथा आज दिनको मित्रता स्मरण रखनेके लिये नेताजीसे अपनी पगड़ी बदली।

परस्पर पगड़ी बदलनेके पश्चात् नेताजीने, जो कुछ राजमच्छीकी दशा थी और वहां जोकुछ घटनाएं हुई थीं शिवाजीसे वर्णन कीं, साथ ही इसके काशी तथा उसके पिता दाताजीके एक लुटेरोंके झुंड द्वारा गिरफ्तार किये जानेकी सूचना दी। इन समाचारोंसे शिवाजीको गंभीर चिन्ता हुई। राजमच्छी उनके अत्यंत दृढ़ दुर्गोंमेंसे था और उसके एक ओर भोर घाटी तथा दूसरी ओर बीजापुरके इस प्रान्तस्थ प्रधान स्थान कल्याणकी सड़क पर उनका अधिकार रहनेसे वह उनके लिये अतीव उपयोगी था। काशीके पिता अपने धन तथा बलसे उनके सच्चे तथा शक्तिशाली सहायक थे। दोनोंको ही छुड़ाना अवश्य कर्त्तव्य था।

"मुझे अब क्या करना आवश्यक है" शिवाजीने कुछ स्वयं और कुछ नेताजीसे पूछनेके भावसे कहा "मेरी अधिकृत सम्पूर्ण फौजें नीचे कोकनमें हैं और इस समय मेरे दुर्गोंकी दीवारोंका प्रबन्ध करनेको, मेरे पास कठिनता पूर्वक मनुष्य पूरे हो सकते हैं। हां कुछ थोड़े हैं तो अवश्य परन्तु मेरे पास उनके शस्त्र और भोजन संग्रह करने तथा उनके अधिकांशको अपने झंडेके नीचे भरती करनेके लिये धन नहीं है। धनकी अधिष्ठात्री लक्ष्मी देवी, किसी न किसी दिन अवश्य ही मुझ पर कृपा करेंगी। किन्तु आज यदि मेरे अधिकारमें केवल कुछ लाख रुपये भी होते तो नीरासे (१)कृष्णा तक मेरा स्वदेश शीघ्र ही स्वतंत्र तथा सुखी हो जाता। परंतु जो कार्य्य मैं करनेवाला हूं उसमें नया झगड़ा क्यों पैदा करूं? भवानी मुझे तोरना जानेकी आज्ञा करती है और वहीं जाना मुझे आवश्यक है (आप ही आप)हे जगद्धात्री भवानी! भूत भविष्य और वर्त्तमान कालमें सम्पूर्ण कठिनाइयोंके समय तुमने पथ प्रदर्शन कर मेरा सङ्कट दूर किया है, भी करती हो और करोगी।

नहीं। पहले मुझे इन टिड्डियोंके घोंसलेको उजाड़ फेकना आवश्यक है जिन्होंने लोहागढ़की निगाहके सामने ही अपना अड्डा जमानेका साहस किया है और अब मेरे मित्र दाताजी तथा उनकी पुत्री काशीपर अपना उद्दण्ड हाथ डाला है।"

फिर नेताजीकी ओर विशेष लक्ष्य कर शिवाजीने कहा,—"जिन लुटेरोंने हमारी मित्रमण्डलीको अपने चंगुलमें फंसा लिया है वे व्यङ्कट बाघके दलके हैं। व्यङ्कट बाघने अपना अड्डा 'भजको' (२) प्राचीन बौद्ध कन्दराओंमें जमा लिया है और उसी

(१) नीरा नदी वही है जिसके तटस्थ होइन गांवमें मल्हार राव हुल्कर उत्पन्न हुए थे।

(२) पूनेसे ३० मील वायुकोनमें उत्तरको झुकता कारली गांवके पास पहाड़ काटकर बौद्ध मतके जो मन्दिर बने है वे देखने लायक हैं। बड़ा मन्दिर १२६ फुट लम्बा और ४६ फुट चौड़ा है, उसमें बुद्धकी मूरतें और स्त्री पुरुष तथा हाथियोंकी मूरतें तरह तरहकी खुदी हैं। इसीके कुछ दक्षिणमें 'भज'की कन्दरा है।

स्थानसे वह पूनेको आने जाने वाले पथिकोंपर धावा किया करता है। उसके पास भयङ्कर लुटेरोंका भारी झुंड है। यदि मेरे पास केवल उनको शस्त्र तथा भोजन देनें भरको रुपया होता तो वही झुंड महाराष्ट्रकी स्वतंत्रताके लिये मेरे झण्डेके नीचे युद्ध करनेको उपस्थित होता।

इस जगह वृद्ध गोसाईं मैरोबाने इन लोगोंकी बात बीच हीमें यह कहकर रोक दी कि 'भज' की कन्दराओंके समीपही मैं उन लोगोंके इरादे और रक्षाके द्वारोंके विषयमें यथातथ्य हाल जानकर तथा फकीरानी घोड़ोंके पास (जो उस स्थानके स्मारक हैं और जहां मुसलमान फकीर शेख उमर लोहागढ़ तथा विसापुरको मिलाने वाली कगारपर अपने घोड़ेसे नीचे उतरे थे) ठहर कर शिवाजीकी प्रतीक्षा करता रहूंगा।

त्रयोदश परिच्छेद ।

———०:०———

काशीकी गिरफ्तरी।

क्षते प्रहारा निपतन्त्य भीक्ष्णम्
अन्नक्षये वर्द्धति जाठराग्निः ।
आपत्सु वैराणि समुद्भवन्ति
वामे विधौ सर्वमिदं नराणाम् ॥

स्फुट ।

दादाजीने, रामाकी सुरक्षामें, बहुत रात बीत जाने पर राजमच्छीको छोड़ा और खंडाला जानेवाले प्रधान मार्ग पर कुछ दूर तक आगे बढ़े चले गये। बीजपुरी सैनिकोंके डरसे, जो कि राजमच्छी पर कब्जा करनेके लिये आगे बढ़ रहे थे, वे प्रधान सड़कसे एक ओर घूमे और उन किसानी झोपड़ोंके किसी एकमें, जिसकी

निस्तब्धता रात्रिके इस भयानक समयमें जीव तथा धनकी अरक्षित दशाका प्रमाण दे रही थी, शेष रात्रि बितानेके लिये ठहरे। प्रातः काल तड़के ही, बीजापुरकी सेनाका वहांसे निकल जाना निश्चय कर वे प्रधान मार्ग पर लौट आये और खंडालेकी ओर रवाना हुए। वहां पहुंच कर इन लोगोंने उस किसानके घरमें निवास किया, जिसकी सपुर्दगीमें नेताजी अफ़ूवखांसे छीना हुआ घोड़ा छोड़ आये थे। उसने इनको आदर पूर्वक ठहराया और अपने स्थानमें दूसरे दिन प्रातः काल तक ठहर कर विश्राम करनेको आग्रह किया। लम्बे प्रवासकी थकावट होनेके कारण इन लोगोंने प्रसन्नता पूर्वक किसानके इस कृपा युक्त सत्कारको स्वीकार कर अपनेको भी लाभ पहुंचाया तथा उसे भी हर्षित किया। रामाके लोहे समान, हाथ पैर भी, राजमचीसे इतनी दूर तककी यात्राके पश्चात् विश्राम चाहते थे।

दूसरे दिन भोरको, वे भारतवर्षीय पथिकोंकी प्रणालीके अनुसार-नहीं नहीं अभ्यासानुसार सूर्य्योदयके एक घण्टेसे भी अधिक पहले लोहागढ़की सड़क पर आगे बढ़े। लोनाउलीके जंगलमेंसे बिना किसी गहरी घटनाका सामना हुए, दाताजी, काशी तथा रामा पार हो गये और वहांसे वह स्थान बायीं ओर छूट गया जहां आज कल ग्रेट इंडिया पेनिनशुला रेलवेका स्टेशन है और पूना जाने वाली लेवेल सड़क, और हैदराबाद तथा मदरासके रास्ते पर दौड़ने वाले हलके एंजिन बदल कर, भोर घाट चढ़नेके लिये भारी लाकोमोटिव काममें लाये जाते हैं।

अभी लोहागढ़ दूरसे देख ही पड़ा था कि रास्तेकी बायीं ओर वाली चट्टानसे बढ़ती हुई एक कड़ी आवाज सुनाई दी, जिसने उन्हें ठहरनेका हुक्म दिया। दृष्टि घुमा कर देखने पर, एक ऊंचा पूरा दृढ़ तथा भाले और तलवारसे सुसज्जित मनुष्य देख पड़ा। उसी क्षण उन्हें मैले तथा पुराने कपड़े पहने हुए डाकुओंके एक झुण्डने घेर लिया। डाकू दलके कुछ मनुष्योंके हाथमें तलवारें थीं, कुछके पास बर्छे और किसी किसीके पास मजबूत लाठियोंको छोड़ और कोई भयानक शस्त्र न था।

डाकू दलसे, किसी ढंगसे भाग जाना या किसी प्रकार उनका सामना करना कठिन ही नहीं, किन्तु एक प्रकार असम्भव ही जान पड़ा। चारों ओर विस्तृत मानस नभोमंडलमें निराशाके मेघ दौड़ने लगे। कोई ढंग अपनी रक्षाका न देख दाताजीने, लुटेरों पर कोमल शब्दोंका प्रभाव डालनेका प्रयत्न किया। दलके मुखियासे जो पहले चट्टान पर स्थित था और अब फलाङ्ग मारकर इनके पास आ पहुंचा था, दाताजीने कहाः—

"हमको बाधा मत दो, अपनी राह चलेजाने दो। परमेश्वरका नाम लेता हूं। यदि परमेश्वरका भय न रखते हो तो शिवाजीके भयसे, हमको दिक मत करो। शिवाजीके मित्रोंके साथ, यदि कुछ भी बुराई कीजावेगी तो वह अच्छी तरह बदला देवेगा और"—

"मैं न तो देवताओंकी परवा करताहूं और न शिवाजीका मुझे लेश मात्र भय है। मुझे उसकी कुछ चिन्ता नहीं है। शिवाजी अपनेको देवांश समझ कर गर्वित है। मुझे उसका भय क्या होगा? मैं उसे तिनकेकी बराबर भी नहीं समझता। उसके इन बहानोंकी ही तुच्छता दिखानेको और घृणा प्रकट करनेको, मैंने अपना गढ़ उसके दुर्ग लोहगढ़के सामने-जिसे उसने बीजापुर वालोंसे धोखेसे छीन लिया है—स्थापित कर डेराडाला है। मेरा देवता तो मेरा यह भाला ही है जो मुझे और मेरे अनुगामी मनुष्योंको मांस मदिरा तथा वस्त्र देता है और भरण पोषण करता है।"

रामा जो बड़ा ठठोल था, लुटेरोंके सरदारकी बात सुनकर तथा उसके दलवालोंके वस्त्र देखकर, मन ही मन खूब हंसा और यह कह उठा कि "मेरा देवता अच्छा स्वामी नहीं है जो पूरी तरहसे कपड़े भी पहननेको नहीं देता है।"

रामाने व्यङ्ग कह कर अपने मनको संतोष दे लिया। उसने यह विचारा कि हमलोग डाकुओंमें तो फँसे हैं ही यदि व्यङ्ग न कह कर प्रत्यक्ष ही ठठोली की जाय तो कोई नवीन आपत्ति उत्पन्न हो जाना सम्भव है। उसकी इच्छा ठठोलीको बढ़ानेकी न थी। इतने ही में दो लुटेरोंने आकर उसके हाथ बांध दिये। दाताजी बूढ़े थे और काशी स्त्री थी इस हेतु उनका बांधना आवश्यक न

समझा गया। वे दोनों भाग नहीं सकते थे। हां, उनके टट्टुओंकी बाग, दो डाकुओंने थाम ली और वे सड़क छोड़ कर उस पगडंडी पर घूमे जो जंगलमें होती हुई, व्यङ्कटवाघके गढ़को गयी थी। लुटेरोंका सरदार, दाताजीके बाजूसे चला और उसने प्रश्न किया कि तुम कौन हो और कहां जा रहे थे।

इच्छित विषयका उत्तर पाकर उसने दाताजीसे कहा ;—

"तुम धनवान हो और हमलोगोंको अपने छुटकारेके बदले अच्छी रकम दे सकते हो। परन्तु मैं तुमसे कुछ द्रव्य नहीं मांगता ; केवल इतना चाहता हूं कि मुझे इस स्वरूपवती स्त्रीको मेरी स्त्री होनेके लिये दे दो ; बस फिर स्वतन्त्रता पूर्वक तुम्हें यहांसे चले जानेमें किसी प्रकारकी बाधा या अड़चन न होगी।"

दाताजी डाकुओंके सरदारकी यह बात सुनकर अपना क्रोध न दबा सके और अपने भभकते हुए क्रोधमें उत्तर दिया कि एक बिना घर द्वारके आवारे डाकूकी स्त्री होनेकी अपेक्षा मैं अपनी पुत्रीको मृत देखना श्रेष्ठ समझता हूं।

"बूढ़े मनुष्य ! ऐसी मूर्खता और घमंडका ध्यान मत करो। (आप ही आप हंसकर) देखो, बूढ़ेकी बातें! सच ही बूढ़ोंकी बुद्धि सठिया जाती है। मैं उसे अपना माननीय ससुर बनानेकी इच्छा कर रहा हूं परन्तु उसे कुछ भी विचार नहीं है" "यदि आज मैं डाकुओंका सरदार हूं तो कल राजा अवश्य ही हो जाऊंगा। आजकल सारा दक्षिण उलट पुलट हो रहा है, राईसे पहाड़ हो जाता है और भिखमङ्गा राजा हो जाता है। फिर मैं तो मैं ही हूं। लोग कहते हैं कि शिवाजी जो पहिले लुटेरोंका ही मुखिया था, अब ऐसा भारी राजा ठहराया जाता है, जैसा पहिले विक्रमादित्य हुआ था। अब आप स्वयं इस बातको विचार सकते हैं कि उसी महत्वको पहुंचनेकी आकांक्षा मैं क्यों न रखूं ?" व्यङ्कटवाघने कहा।

"क्या तुम" दाताजीने उत्तर दिया "देवताओंके कृपा पात्र उदयपुरके राणाओंके वंशज, शिवाजीसे अपनी तुलना करनेका साहस कर सकते हो ?"

"देखो मैं शिवाजीकी अपेक्षा अधिक हृष्ट पुष्ट तथा बलवान हूं। जो आप उसके राजपूत वंशज होनेकी बात कह रहे हैं उसका यथार्थ कारण यह है कि उसके मित्र वर्गोंने उसका गौरव तथा प्रतिष्ठा बढ़ानेके हेतु इन विचित्र बातोंका आविष्कार कर लिया है। और देवता लोग, यदि कदाचित होते भी हों तो उनको कृपा भी ऐसे ही साहसी मनुष्यों पर होती है जो अपनी सहायता आप करते हैं। सिवा इसके (तुच्छता सूचक हंसी हंस कर) मैं आपसे ऐसी वस्तुके लिये कहता हूं जिसे मैं ले सकता हूं, क्योंकि आपकी इच्छा वा अनिच्छासे यह लड़की मेरी दुलहिन अवश्य होगी।"

दाताजीसे यह बातें करनेके उपरान्त वह काशीके टट्टूके बाजूमें गया और कहा:—

"सुंदरी काशी" तेरे—'सौन्दर्य्य कुसुम—'की सुगन्ध सम्पूर्ण महाराष्ट्रमें फैल रही है। निस्संदेह मेरा परम सौभाग्य है कि मैंने तुझे इस प्रकार अचानक यहां पा लिया और अब विवाह करनेके लिये ले जा रहा हूं। मैं भी ठीक उसी मार्ग पर चलता हूं जिससे प्राचीन चलते और वही काम करता हूं जिसे पूर्व समयमें वीर लोग किया करते थे और आज दिन भी कभी कभी उन लोगोंका अनुसरण किया जाता है। तू मेरे इस साहससे कदापि अप्रसन्न न होगी और मेरी उद्दंडताको अवश्य ही क्षमा करेगी। इसके लिये स्वयं तेरा सौन्दर्य ही साक्षी, उत्तर दाता तथा प्रमाण है, कहनेकी आवश्यकता नहीं है। देख तू एक ऐसे, साहसी व्यक्तिकी प्रेमपात्री तथा प्रिय गृहिणी होगी, जो न ईश्वरसे डरता है और न मनुष्यसे।

इस भयानक दशामें काशीने हिम्मत न हारी। उसनें देखा कि इस अवसर पर घृणा (जो वास्तवमें उसके हृदयसे उत्पन्न हो कर बाहर निकलना चाहती थी) प्रकट करना केवल मूर्खता ही न होगी, वरञ्च ऐसा करनेसे और भी अधिक आपत्तिग्रस्त होनेकी संभावना है। इस समय केवल मीठे शब्दों हीसे काम निकाला जा सकता है और कुछ छल

प्रयोग करके जिससे सम्पूर्ण देश और कालमें, बलवान् पुरुषोंके भीषण तथा अनुचित अत्याचारोंसे बलहीन अबलाओंकी रक्षा हुई है, यह अवसर साधना अवश्य है। इस लिये उसने उत्तर दिया ;—

"बचपन हीसे, मैंने किसी ऐसे व्यक्तिसे, जिसने महाराष्ट्रके उद्धार करनेमें, अपना जीवन, तन तथा मन समर्पण न किया हो या न करे, विवाह न करनेकी सौगंध कर ली है। बीजापुर राज्यकी परतन्त्रतासे महाराष्ट्रकी इन पहाड़ियों तथा तराइयोंका उद्धार करनेके प्रयत्नमें यदि तुम भी सम्मिलित हो जाओ और मेरी सौगंधके अनुकूल हो कर वैसा ही करो तो तुम्हारे वीरतामय युद्ध श्रमके बदले, कदाचित, मेरे पिता मुझे तुमसे विवाह देनेके योग्य विचारें। यदि वास्तवमें यह तुम्हारे उन श्रमोंका कुछ भी पलटा हो सके और तुम चाहो तो—"

"मैं चाहता अवश्य हूं; परंतु तू सोच रही है कि व्यङ्कटवाघ शिवाजीके झंडेके नीचे उसके मातहतके समान युद्ध करेगा? नहीं, नहीं! कदापि नहीं!! यह तो कभी हो ही नहीं सकता कि व्यङ्कटवाघ शिवाजी ऐसे गीदड़की मातहती करे। वह भी तो मेरे समान लुटेरोंका सरदार ही है, सो भी डोल डौल, बल तथा साहसमें मेरे समान नहीं। तू ही बता, उसमें कौनसी बात मुझसे विशेष है? इस ध्यानको अपने चित्तसे निकाल दे। परंतु हां यह दूसरी बात है, कि यदि तेरी ऐसी ही इच्छा है, तो तेरे कारण, अपनी प्रियाके कारण, मैं स्वयं ही महाराष्ट्रके उद्धार करनेको अगुआ बनूं और भजकी कन्दराके लुटेरोंका सरदार तेरे प्रेमकी मन्त्र शक्तिसे, देशके राजाकी सूरतमें बदल जावेगा।"

व्यङ्कट वाघ दाताजीके पास लौटा और अपनी प्रेमकी बातचीतका दाताजीसे वर्णन किया। वे समझ गये कि काशीने उसे यह उत्तेजना दी होगी। इस हेतु उन्होंने भी व्यङ्कट वाघसे कहा कि मैं भी, तुम्हारी जीवन प्रणाली सुधरने तथा महाराष्ट्रमें स्वतन्त्रताकी पताका फहराने और अपनेको काशी जैसी दुलहिनके योग्य वर बनानेका वृत्तांत सुनकर प्रसन्न हूं।"

कुछ देरके पीछे फिर दाताजीने कहा;—

"मुझे तुम्हारे मुंहसे यह बात सुन कर परम प्रसन्नता हुई कि तुम अपना जीवन और चाल ढाल सुधारनेका इरादा करते हो। यह बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि मै अपनी पुत्रीका विवाह एक भयंकर डाकूसे करने पर कदापि राजी न होता। तुम्हारे सुधरे हुए आचरणका प्रथम प्रमाण यह होना चाहिये, कि तुम हमलोगोंको,—जिन्हें तुमने अनुचित रीतिसे गिरफ्तार कर लिया है—स्वतन्त्रतासे चले जाने दो।"

दाताजीकी यह बात सुनकर डाकूराज व्यङ्कट खाध खिल खिला कर खूब हंसा। उसने कहा:—

वाह वाह! यदि मैं तुमको छोड़ दूंगा तो तुम शीघ्र ही लोहागढ़ पहुंच कर शिवाजीसे मिल जाओगे। क्या आप अभी तक स्वप्न ही देख रहे हैं? मैं अपने हाथमें पड़े हुए हीरेको मूर्खों या कादरोंकी तरह इस प्रकार नहीं फेकने वाला हूं, और यदि फेक भी दूं तो शिवाजीको उसे बिना ही परिश्रम उठा लेने दूंगा? नहीं, नहीं, कभी नहीं। तुमको हमारा मिहमान बनकर हमारे साथ भजको चलना होगा और वहां पर ही हम सुख पूर्वक विवाहकी तय्यारी करेंगे।"

इस बोचमें रामाने एक लुटेरेसे, जिसका नाम गोपाल था और जो उसके बाजूसे जा रहा था धीरेसे कहा—"यदि तुम मुझे किसी प्रकार भागकर बच जानेमें सहायता करो तो जो कुछ तुम अपने सरदारकी उदारतासे पानेकी प्रतीक्षा कर सकते हो, मेरे छुटकारेके लिये, उससे अधिक पुरस्कार तुम धनवान् दाताजीसे पा सकोगे।"

"हां!" रामाके उत्तरमें गोपालने बहुत ही धीरेसे कहा "ठीक है, यदि मैं तुमको भाग कर बच जाने दूं, तो इसी क्षण पास वाले वृक्ष पर लटका दिया जाऊं और गीधोंका भोजन बनूं।"

"अजी भाई, जो कुछ मैं तुमसे चाहता हूं, वह केवल इतनीसी बात है कि जब हम उस सामने वाले जंगलमेंसे जाने लगें तब तुम उस कपड़ेको जो मेरी बांई भुजासे बंधा है और जिसे तुम पकड़े

हो ढीला कर देना। भाई, हम तुम तो लंगोटिये यार हैं, देखो एकका काम—"

उस लुटेरेने रामाकी बातका मुंहसे कुछ उत्तर न देकर, चुपचाप, सिर हिला दिया, जिससे यह मतलब निकाला जा सकता था कि वह इस पर राजी है। गोपाल रामाका पुराना मित्र था, और उन मनुष्योंमेंसे था जो अपने मित्रके हितके लिये, किसी अवसर पर, अच्छे प्रकार अपनी मित्रता अदा करनेको उद्यत रहते हैं। साथही इसके रामाके छोड़नेसे वह अपनेको भी लाभ पहुंचा सकता था। उसने सोचा कि दाताजी धनवान और उदार चित्त हैं और जो कोई उन्हें तथा उनकी पुत्रीको स्वतंत्रता पानेमें सहायता करेगा उसको वे खुश कर देंगे।

इसलिये जिस समय वे उस जंगलमेंसे जा रहे थे, गोपालने उस कपड़ेको, जिससे रामाका डंड बंधा था और वह कपड़ा था, ढीला कर दिया। रामाने दिखानेके लिये जोरसे झटका देकर अपनेको स्वतन्त्र कर लिया और अपने प्राण बचानेके लिये भागा। दौड़नेके समय उसने अपने हाथोंको उस रस्सीसे, जिससे कि वे बंधे थे, छुड़ा लिया। कुछ तीर उसके पीछे छोड़े गये, परंतु वह उस तंग रास्तेमेंसे भर पूर तेजीसे उड़ा जा रहा था जिसमें वृक्षों और झाड़ी झंखाड़ियोंसे उसका आधा बदन छिप गया था, ऐसे प्रसंगमें उसे तीरका, निशाना बनाना सहज काम न था। लुटेरे जो उसके पीछे दौड़े, उसको न पा सके और उन लोगोंने शीघ्र ही उसका पीछा करना भी छोड़ दिया। जब वह अच्छे प्रकार उन लोगोंकी दृष्टिके बाहर हो गया उसे झाड़ियोंके गुंजान झुंडमें, छिपनेको एक जगह मिल गयी। वह वहीं छिपा रहा। उसने सोचा कि कदाचित् लुटेरोंमेंसे कुछ, झाड़ीके किनारे उसकी ताकमें लगे हों और निकलने पर कहीं फिर गिरफ्तार न करलें। उसने अपना शरण स्थान छोड़नेका साहस तब तक नहीं किया जब तक कि अपने छिपनेकी जगहसे झांक कर, घोड़े पर सवार नेताजीको सड़क पर आगे बढ़ते नहीं देखा।

चतुर्दश परिच्छेद।

—✻✻—

भजकी कन्दरा।

जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तत्राप्यधो गच्छतां।
शीलं शैलतटात्पतत्त्व भिजनः सन्दह्यतां वह्निना॥
शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्त्वर्थोऽस्तु नः केवलं।
येनैकेन विना गुणास्तृणलव प्रायाः समस्ताइमे॥

भर्तृहरि।

इसी समयान्तरमें, दाताजी और काशीको सुरक्षामें ले जाते हुए लुटेरे एक पहाड़ीकी अलंग पर चढ़ चुके थे जो लग भग चार सौ फुट ऊंची थी। उन्होंने अपने सामने बहुतसी प्राचीन बौद्ध गुफाएं, जिनका मुंह पश्चिमकी ओर था देखी। वे उनमेंसे नौ दस गुफाओंके बीचसे निकले। फिर वे एक अधिकतर बड़ी गुफामें आये जो विक्रम संवत प्रारंभके,—प्रथम शताब्दीमें, बौद्ध भिक्षुओंकी पूजा या प्रार्थनाका स्थानोंमें थी; परंतु आजकल उसमें, लुटेरे रहते थे। जहां कोमल हृदय बौद्ध भिक्षुक पहले अपने भजन गाया करते थे, वहीं अब भयानक डाकू उस लूटका माल बांटा करते थे, जिसे वे ऐसे लोगोंके हाथ कान या नाकसे नोच लेते थे जो इनके हाथमें पड़नेके लिये दुर्भाग्यसे आ जाते थे। यह गुफा बीस गज लम्बी और दस गज चौड़ी थी और उसकी छत खंभोंकी दुहरी कतारके सहारे थी, जिससे वह दो पंक्तियोंमें विभक्त थी। खंभोंकी दुहरी कतारके सिरे पर यानी जिस जगह खंभोंका अन्त होता था एक गुम्बज चार हाथ ऊंचा था जिसके ऊपर एक टूटा संदूक पड़ा था। उसमें कदाचित् किसी अर्हन्तकी अस्थि (१)

---

(१) इसी भांति बनारससे डेढ़ कोस पर सारनाथ महादेवके पास बौद्ध मतवालोंके बनाये हुए कुछ मकान टूटे फूटे अब तक भी

अथवा स्वयं बुद्धदेव हीके भिक्षा पात्रके टुकड़े या नाखून अथवा अस्थि रही हो।

भगवान मरीचिमालीको भी अब अपने रथमें बैठे हुए आकाशमें प्रवास करते लगभग एक प्रहर बीत चुका था और उस चट्टानके नीचे जिसे काट कर छत या दालान बनायी गयी थी, ऐसी धूपमें लम्बा सफर करनेके बाद विश्राम करना अतीव सुखदायक था। लुटेरोंका सरदार उस गुम्बजके सामने एक गद्दी पर बैठ गया। एक नौकरने उसकी कमरसे लगी हुई तलवार खोल कर रख दी। दूसरेने खुबसूरत हुक्का पेचवान लगाकर सामने रख दिया और गर्म दूधका कटोरा

बाकी हैं, जिन्हें वहां वाले सारनाथकी धमेख कहते हैं और देखनेमें एक बहुत बड़ा ठोस गुम्बज औंधी हांडीकी सूरतका है। पर इतना पुराना है कि उसके पत्थर बुढ़ियाके दांतोंकी तरह गिरते चले आते हैं। यथार्थमें वह बौद्ध लोगोंका देह गोप अर्थात् उनके महा पुरुषोंमेंसे किसीकी समाधि और पूजाकी वस्तु है। साहब लोगोंकी जांचसे मालूम होता है कि सन् ईस्वीसे ५४३ बरस पहिले शाक्य मुनिके मरने पर, उस समय हरेक बौद्ध राजाने यही चाहा कि उनकी लाशको अपने इलाकेमें उठा ले जावें और सबके सब उसके वास्ते युद्ध करनेको उपस्थित हुए। तब उनके चेलोंने उनकी लाश जला कर थोड़ी थोड़ी हड्डी और राख सबको बांट दी और लड़नेसे रोका। निदान राजाओंने उस हड्डी और राखको अपने अपने इलाके पर धरतीमें गाड़ कर गुम्बज बना दिये और उन सबकी पूजा करने लगे। भिलसा, मानिकमाला इत्यादि स्थानोंमें कई जगह अब भी ये गुम्बज मौजूद हैं और ब्रह्म, सिंहल, तिब्बत, चीन इत्यादि देशोंके बौद्धमतावलम्बी आजतक इन गुम्बजोंकी नकल धातु पत्थर अथवा मट्टीकी बना कर चितासम्बन्धी होनेके कारण चैत्यके नामसे पूजते हैं। यहां भी पुराने मन्दिरों अथवा खंडहरोंमें अकसर ये चैत्य निकलते हैं। इसी प्रकार राजगृहमें गर्म्म कुंडके पास ही एक गुफा, जैसी बराबरके पहाड़में है, पत्थर काट कर भिक्षुओंके रहनेके लिये बनी है।

जिसमें शक्कर डाली गयी थी अपने सरदारके लिये तय्यार किया। ऐसे ही कटोरे काशी तथा उसके पिताको दिये गये, जिनकी गद्दियां व्यङ्कट बाघकी दाहिनी ओर ठीक की गयी थीं। अपने अतिथि या कैदियोंका इस प्रकार सत्कार करनेके पश्चात् उतनी सभ्यता और मिलनसारीसे जितनी कि अपनी उद्दण्ड जीवन प्रणाली और भावसे वह कर सकता था, व्यङ्कटबाघने काशी तथा उसके पितासे कहा ;—

"तुम लोगोंके लिये पासवाली कन्दरामें एक पृथक स्थान ठीक किया गया है।"

इस दूसरी गुफामें ये लोग उचित सम्मानपूर्वक एक डाकू द्वारा पहुंचाये गये जिसे गुप्त रीतिसे यह समझा दिया गया था कि वह इस बात पर ध्यान रखे कि इन लोगोंको भागनेका अवसर किसी दशामें भी न मिलने पावे। इसके पीछे उन लोगोंको दूध, भोजन तथा दूसरे पदार्थ जो लुटेरोंके भाण्डारमें थे दिये गये।

इसी समय लुटेरे सबसे बड़ी कन्दरामें दावत मनाने लगे।

लुटेरोंके दलमें भिन्न भिन्न जाति तथा धर्म्मके मनुष्य सम्मिलित थे। उस दलके कुछ मनुष्य यद्यपि मानुषिक तथा ईश्वरीय नीतिके विरुद्ध थे तौ भी, जाति पांतिके, नियमके कट्टर पक्षपाती या अनुयायी थे। एक छोटीसी मंडली जिसमें मुसलमान थे अलग बैठी हुई उन अपवित्र पदार्थोंसे दावत मना रही थी जो कि हिन्दुओंके लिये वर्जित और अभक्ष्य हैं। उनमें बहुतसे ऐसे हिन्दू भी थे जिन्होंने जातिबन्धनके उपद्रवको बहुत दिनोंसे प्रणाम कर लिया था। वे अपनी रुचिके अनुकूल स्वादिष्ट भोजन जो उनके हाथ चढ़ जाता था बिना किसी प्रकारकी शङ्का या सन्देहके खाते पीते थे। उनका सरदार व्यङ्कटबाघ भी इसी निर्द्वन्द सम्प्रदायमें था। यद्यपि उसे अब भी इस बातका गर्व था कि मैं भी एक समय ब्राह्मण था तथापि वह मांस खाता था तथा उस मदिरा देवीकी आराधना करता था जो पुर्त्तगीज सौदागरोंके जहाजोंमें युरोपसे बम्बई लायी गयी थी।

डेढ़ पहर दिन चढ़नेके उपरान्त एक बूढ़ा मनुष्य "भजके"

लुटेरोंके पास आया । उसने उस बड़ी गुफाके सामने, जिसमें अभी दावत हुई थी, आमके पेड़की छायामें अपना आसन बिछाया और बैठ गया । यह व्यक्ति उस झुंडके बहुतसे मनुष्योंमें गोसाईं मोरोबाके नामसे परिचित था । उसमें गणपतिने अपना विश्वास किया था । बहुतसे उसे प्रणाम करने, भोजन आदि देने तथा भेंट करने आये । उन्हीं लोगोंमें मिला जुला रामाका मित्र गोपाल भी था जिसने कि रामाको भागकर बचा देनेमें सहायता की थी ।

पहले मोरोबाने उन लोगोंके प्रणाम तथा भेंट आदिपर तनिक ध्यान न दिया और एकटक अपने सामने देखता रहा, मानों वह किसी गम्भीर ध्यानमें सम्पूर्णतः निमग्न था । मोरोबा कुछ देर मौन था फिर क्रोधकी आवाजमें उसने जोरसे चिल्लाकर कहाः—"तुम लोग मेरे पास जो कि गणपतिका कृपापात्र अनुचर है, किस लिये आते हो ? तुम्हारा सरदार क्या देवनिन्दक नहीं है ? क्या उसने मीर गांवके मन्दिरको अधर्म्मसे नहीं लूटा ? खूब याद रखना, वे मनुष्य जो ऐसे काम करते हैं, अधिक समय तक नहीं जीते रहते और जो ऐसोंकी सहायता और चाकरी करते हैं, वे प्रतिहिंसा वा दण्डके समय कभी नाशसे भागकर न बचने पावेंगे ।

सुनने वालोंके चेहरों पर भयकी कंपकंपी छा गयी । फिर रामाके मित्र गोपालने कहा "बूढ़े तपस्वी बाबा ! आपही बताओ कि अब हमें क्या करना चाहिये ? क्या जिसका नमक हमने खाया है उससे विश्वासघात करना हमको योग्य है ?"

ठीक इसी क्षण उनके सरदार व्यङ्कट चापकी आवाज, गुफाके दरवाजेसे उन लोगोंको पुकारती सुनाई दी आवाज यह थी:—

"तुमलोग किससे बातें कर रहे हो ? यह व्यक्ति कौन है ? मेरे दुर्गके आस पास इस गोसाईंका टोह लेनेके लिये घूमना, मैं नहीं पसन्द करता । अगर वह अपने बदनको खाल साबित रखना चाहता है तो उससे कह दो कि वह अभी यहांसे चल दे ।"

"सुनो, सुनो, वह अधर्मी दुष्ट क्या कह रहा है ?" मोरोबाने उन

लुटेरोंसे जो उसके आस पास घेरे खड़े थे, कहा "और किस प्रकार ईश्वरके दीन भक्तको अतिक्रम कर धमका रहा है! ऐसे पापिष्ठको छोड़ देनेमें कोई पाप नहीं हैं, तजे पिता प्रहलाद, बिभीषण बंधु, भरत महतरी—" मैं अब यहीं ठहरूंगा, वह मुझ पर इच्छानुसार अत्याचार कर, अपने अन्यायका कटोरा लबालब कर ले"

लुटेरोंने मोरोबाको वहांसे शांति पूर्वक चले आनेके लिये गिड़-गिड़ा कर बिनती की और यह कहा कि हमारा सरदार क्रूर तथा उद्दण्ड प्रकृतिका मनुष्य है और जब वह फरंगियोंकी उग्र मदिराके आवेशमें होता है, उस समय किसी प्रकारका अत्याचार या अन्याय कर बैठना उसके लिये आश्चर्य नहीं है।

लुटेरे कुछ गिड़गिड़ाये, बिनती की, ऊंच नीच समझाया, परंतु मोरोबा टलने वाले जीव नहीं थे। वे उस स्थानसे एक तिल भी न खसके और न लुटेरोंकी बात सुनकर उन्होंने कुछ अपने मनका भाव प्रकट किया। वे उसी तरह निश्चल तथा गंभीर भावसे बैठे रहे। फिर बोले,

"उसे जो कुछ बुराई करना हो, मेरे साथ कर लेने दो। गणपति, जैसे सदैवसे अपने भक्तकी रक्षा करते आये हैं, इस समय भी करेंगे। हम भी देखना चाहते हैं कि कौन विशेष बलवान् है, मनुष्य या देवता?"

लुटेरोंका सरदार अब यहीं आ पहुंचा और गोपालको हुक्म दिया कि "मोरोबाको डंडोंसे पीटकर भगा दो। यदि इतना कहनेसे भी वह उस जगहसे नहीं हटे तो उसको अच्छी तरह पीटो।"

गोपाल अपने सरदारके सामने पृथ्वी पर झुक गया और नम्रतासे बोला:—"स्वामी! आप मेरे मालिक हैं, यह देह आपके अन्नसे पलती है, शरीरकी हड्डी हड्डीमें आपका नमक है। आप मुझे मार डालें तौभी कुछ चिन्ता नहीं, परन्तु गणपतिके इस कृपापात्र सेवक पर तो मेरा हाथ नहीं उठता। स्वयं आप ही विचारें कि ऐसे व्यक्ति पर हाथ उठानेमें कौनसी वीरता है। गोसाईंके मारनेसे क्या लाभ होगा? यह वीरोचित कृत्य नहीं है।"

गोपालकी बात काम कर गयी। उसकी नम्र तथा असर करने

बातों बातोंसे व्यंकट बाघ, जो इस समय क्रोधसे सच मुच बाघ ही हो रहा था, कुछ ठंडा हुआ। इतने पर भी गोसाईं मोरोबा अपने आसन पर पूर्ववत् गंभीर भाव धारण किये बैठे थे, मानो उनके लेखे कुछ हुआ ही नहीं, वे ध्यान मग्न थे ! बाह्य ज्ञान शून्य थे !! अथवा बधिर थे !!!

मोरोबाको तनिक भी विचलित न देखकर व्यंकट बाघका क्रोधानल फिर प्रचंड हुआ। उसने अपनी सिरोही निकाल कर भय दिखानेके लिये, गोपालके मोढ़े पर लगा दी, जिससे हलका सा घाव हो गया।

इस समयान्तरमें लुटेरोंका सारा झुंड इकट्ठा हो गया था, पाठक जानते हैं कि लुटेरोंमेंके अधिकांश हिन्दू थे और वे लूट खसोट और अत्याचार भी किया करते थे। परंतु एक गोसाईं-के साथ, इस प्रकार कुव्यवहार किया जाना वे लोग न देख सके। क्रोधकी मूर्ति दिखाई पड़ने लगी, साथ ही आपसमें बातचीतकी कुछ भन भनाहट भी सुन पड़ी।

अकूट बाघको इन लक्षणोंके देखनेसे गोसाईं मोरोबाका अपमान करनेका साहस न हुआ। वह मन ही मन कुछ ऊंच नीच सोच समझ, गोसाईंको आमके नीचे अपने निश्चल अभंग तथा स्वतंत्र आसन पर उसी जगह बैठे छोड़ कर, गुफाको लौट गया। मोरोबा उन डाकुओंसे बातचीत करते रहे, जिनको उस जगह आकर उनसे बोलनेका साहस हुआ।

गोसाईं मोरोबा अपना अवसर और मन्तव्य भूले नहीं थे; उन्होंने उन डाकुओं पर जिन्होंने उनके पास जाकर बात चीत की उनके पद, योग्यता तथा स्वभावके अनुकूल अधिकतर ऊंच नीच कारणों पर बुद्धिमानी पूर्वक विचार करनेको सम्बो-धन कर अपनी सम्पूर्ण प्रबोध शक्तिसे उनपर विजय पानेका उद्योग किया। जो बेहतर विचारके मनुष्य जान पड़े, उन्हें अपने स्वदेश महाराष्ट्रका हित तथा कर्त्तव्य स्मरण कराकर, चिताया जिस पर विचार करनेसे उनको अपने इस अधर्मी अगुआको छोड़कर देश हितैषी बीर शिवाजीसे जा मिलना आवश्यक जान पड़ा।

और दूसरे जो न्यून विचार वाले और अल्प बुद्धि थे उन्हें यह बतलाया कि यदि वे अपने उपद्रवी सरदारकी अधीनता छोड़ देंगे, तो कैदसे मुक्त करनेके लिये धनवान दाताओंसे यथायोग्य पुरस्कार पावेंगे। मोरोबाने साथ ही इसके यह भी कहा कि शिवाजीका अनुगामी होनेसे उन लोगोंको बहुमूल्य लूट भी बांटी जावेगी, जिसे उनका अधर्मी सरदार व्यङ्कट बाघ अनुचित रीतिसे उन लोगोंको भाग न देकर आप ही रख लेता था। मोरोबाने डाकुओंको यह कहकर दबाया कि यदि देवताओं तथा उनके अनुगृहीत शिवाजीके प्रतिकूल कृत्योंमें तुम लोग स्थिर रहे तो निश्चय ही तुम्हारा पराभव होगा।

इस सांसारिक तथा आत्मिक वादानुवादने उन सब लुटेरों पर जिनसे वह किया गया था बड़ा गरिष्ठ प्रभाव डाला। मोरोबा अपने सुननेवालोंकी चाल ढाल तथा स्वभावकी जांच लेनेमें ऐसे पटु थे कि उन्होंने किसी ऐसे व्यक्तिको फुसलानेका प्रयत्न नहीं किया जिससे उनकी बातोंकी सूचना सरदार व्यङ्कट बाघको मिल जानेकी सम्भावना हो।

किसी पर अधिक और किसी पर न्यून,—मोरोबाकी बातोंका प्रभाव सब पर कुछ न कुछ अवश्य ही पड़ा। मोरोबाको अपने प्रयत्नको सफलता प्राप्त करनेमें कदाचित् अधिक कठिनाई होती यदि लुटेरोंका सरदार व्यङ्कट बाघ वहां मौजूद होता; परन्तु उसे इन बातोंकी कुछ खबर नहीं हुई और न किसीने उससे कुछ कहा। फरङ्गी मदिरा उसने अत्यन्त अधिकतासे पी ली थी; उसीके आवेगसे उत्पन्न हुई उन्मत्तता अथवा नींदके वश होकर बहुत पहिले ही लुटेरोंका सरदार व्यङ्कट बाघ अपनी गद्दी पर पैर फैलाये बेसुधकी दशामें पौढ़ा हो गया था।

पञ्चदश परिच्छेद।

——०:०——

लुटेरोंका सरदार

अहो सहन्ते कतमो परोदयं
निसर्गतो ऽन्तर्मलिनाह्य साधवः ॥

स्फुट

मदिराकी उन्मत्ततामें व्यकूट बाघ दिनकी दोपहर तक सोता रहा। जिस समय सूर्य्य मध्यान्ह रेखाको पार कर चुके और सुनहरी धूप भजकी गुफाओंके मुंह पर गिरकर चमकने लगी उस समय व्यकूट बाघको एक दूतने जगाकर सूचना दी कि हथियार बन्द मनुष्योंका एक भारी दल लोहागढ़से निकल कर इस ओर बढ़ा आ रहा है।

लुटेरोंके सरदारका चेहरा तमतमा रहा था और उसका सिर उग्र मदिराके आवेशके कारण भारी हो रहा था। वह अपनी मड़ी परसे चौंक कर उठा। अपने आदमियोंमेंसे एकको सिर और गर्दन पर एक घड़ा पानी डालनेको कहा। ऐसा करनेसे कुछ चैतन्य हुआ और उसका सिर मदिराके प्रचण्ड आवेशसे कुछ हलका हुआ। व्यकूट बाघ युद्धके लिये तय्यार हुआ। गुफामें आनेका मार्ग वृक्षोंकी डालियों तथा छातो तक ऊंचा पत्थरोंका परकोटा बनाकर रोक दिया गया था जिससे शत्रुओंको गुफामें आगे बढ़नेके लिये निःसन्देह बड़ी कठिनता उपस्थित थी। दूसरी बात एक और यह थी कि गुफाके पीछे या बगलसे निकलनेको कोई द्वार न था, जिससे उस ओर रक्षा करनेकी कुछ भी आवश्यकता न थी। गुफाके रक्षक यदि किसी प्रकारसे शत्रुके दावमें फंस जाते तो उनके निकल कर भाग जाने या बचनेका कोई अवसर भी न था। यदि वे अपने आक्रमण करनेवालोंको "भज"से मार कर

हटा देनेमें समर्थ न हो सके तो या तो वे शत्रुओंसे मार ही डाले आवेंगे या गिरफ्तार कर लिये जावेंगे ; इसमें कुछ भी सन्देह न था। इन बातोंको विचार कर उनके सरदार ब्लुट बाघको तनिक भी पछतावा न था ; बरन्तु वह मन ही मन परम प्रसन्न था। उसे अपने दलवालों पर सन्देह होनेका यथेष्ट कारण था। वह भलीभांति जानता था कि उनमेंसे बहुतेरे अपने प्राण बचानेके लिये या किसी दूसरे लाभसे साथ छोड़कर भाग जानेको उद्यत हो आवेंगे या धोखा देंगे। इस हेतु वह और भी विशेष प्रसन्न था कि वे लुटेरे एक ऐसे स्थानमें थे जहांसे उनको अपनी इच्छा पूरी करनेका सम्भवतः बहुत कम अवसर मिलने पावेगा। क्योंकि यदि वे लोग उसकी ओरसे नहीं लड़ेंगे, तौभी उनको अपनी प्राण रक्षाके लिये अवश्य ही शत्रुओंसे लड़ना होगा। सामनेका मार्ग पेड़ों तथा पत्थरोंकी दीवार या परकोटेसे रोक दिया गया था और पीछे तथा बाजूसे निकलनेका मार्ग गुफामें था ही नहीं, जिसमेंसे डाकुओंके निकल कर भाग जानेकी आशंका की जाती। मन ही मन इन बातोंको विचार कर उसने, अपने दलको, भजको सुरक्षाके लिये, तय्यार होनेका हुकम दिया और हथियार लगा कर, उन आक्रमण करने वालोंको मार भगानेको कहा।

अब ब्लुट बाघको अपने कैदियोंकी याद आयी। उनको वह प्रधान गुफामें ले आया। उसने उन लोगोंको, गढ़ बन्धीके लिये बनायी हुई दीवारके समीप ही पीछे, गुफाके दरवाजेमें स्थान देकर बिठाया और काशीसे कहाः—

"प्यारी काशी! तुम इस स्थान पर बैठ कर स्वयं अपनी आंखोंसे देख लोगी कि किस साहससे तुम्हरा प्रेमी योद्धा, उस दलसे अपने गढ़की रक्षा करता है जिसने भज पर आक्रमण करनेका साहस किया है।"

"निश्चय ही तुम्हारे साहसमें किसी भांति संदेह नहीं है और तुम" काशीने उत्तर दिया, जिसका मन इन घटनाओंसे कुछ भी विचलित न हुआ था और जो अपनी मानसिक शक्तियों पर अब भी पूर्ववत स्थिर थी "उस स्त्रीको—जिसे तुम प्रिया कह

कर पुकारते हो, और प्यार करते हो—और उसके पिताको, शत्रु-दलके, तीर, बर्छे या गोलीसे मारे जानेके जोखिममें न डालोगे। यदि हम लोगोंको उस तरफ वाले कोनेमें बैठा दो तो हम तुम्हारा युद्ध भी देख सकेंगे और शत्रुओंके किसी शस्त्रके लगनेका विशेष भय या जोखिम भी नहीं रहेगा।"

"हृदयकी स्वामिनी!" व्यङ्कट वाघने उत्तर दिया "तुमने बहुत ही उत्तम कहा। सुनो, यदि एक तिनका भी भूलसे, तुम्हें छू गया तो फिर व्यङ्कट वाघको शत्रुओं पर विजय पाने ही से क्या लाभ होगा?"

उसने काशी तथा दाताजीको गुफाके कुशलतर स्थानमें बिठा दिया और उस दूतसे मिलनेको रवाना हुआ, जो शत्रुकी ओरसे उसके साथ बातचीत करने आया था। व्यङ्कट वाघने सदर्प उससे पूछा "कि तू क्या कहना चाहता है?"

दूतने उत्तर दिया,—"मैं बलवान राजा शिवाजीके पाससे आया हूं, जिसे यह समाचार सुनकर अतीव क्रोध हुआ है कि उनके मित्र दाताजी अपनी पुत्री सहित 'भज' नामक स्थानके डाकुओं द्वारा रोक रखे गये हैं (अपनी बात पूरी न करके तथा खूब ऊंची आवाजसे जिससे सरदार व्यङ्कट वाघ ही नहीं, उसके सम्पूर्ण अनुगामी भी भली भांति सुनलें) राजा शिवाजी, अपने मित्र दाताजीको पुत्री सहित सकुशल छोड़ देनेकी आज्ञा देते हैं तथा भजकी गुफाको अपना कह कर मांगते हैं और उसको छोड़-कर तुम लोगोंको चले जानेका हुक्म देते हैं। इस दशामें तुम और तुम्हारे अनुगामी या तो हमारे स्वामीकी सेनामें भरती हो सकते हैं या जहां इच्छा हो बिना किसी प्रकारकी रोक टोकके चले जा सकते हैं।"

"और यदि" व्यङ्कट वाघने कहा "हम अपने कैदियोंके छोड़नेसे इनकार करें?"

"तो" दूतने उत्तर दिया "तुम, बल पूर्वक भजसे निकाल बाहर कर दिये जाओगे और तुम्हारे अनुगामी, जो आक्रमणमें युद्धसे जीते बचेंगे, वे उन लोगोंको चेतावनी देनेके लिये इस

अत्यंत समीपी वृक्षोंपर मारकर लटका दिये जावेंगे जो बलवान राजा शिवाजीकी इच्छाके विरुद्धाचरण साहस करते हैं ।"

"तो मेरा उत्तर तुम अपने राजाके पास ले जाओ" व्यङ्कट वाघने गर्ज कर कहा "उससे कह देना कि काशी मेरी बरेही दुलहिन हो चुकी है और उसके पिता दाताजीने उसका विवाह मेरे साथ कर देना स्वीकार कर लिया है। शिवाजीको जता देना कि मैं भी उसकी बराबरीका लुटेरा हूं और बलमें तो उससे भी अधिक हूं। यदि वह मेरे गढ़ 'भज' की कन्दराके अन्दर आनेका साहस कर सका तो कहनेको कुछ आवश्यकता नहीं है, उसे स्वयं यह बात विदित हो जावेगी। (कुछ ठहर कर) हां उससे इतना और भी कह देना, कि काशी और दाताजी दोनों ही, गुफाके द्वारके मध्यमें बैठे हैं और आक्रमणके समय भर वहीं बैठे रहेंगे। तुमको आक्रमणका साहस हो तो करना। यदि घटना चक्र वश वे लोग तुम्हारे दल वालोंमेंसे किसीके भाले, तीर या गोलीसे मारे गये तो उनका खून तुम लोगोंके सिर पर लगेगा। एक बात और है; परन्तु वह तुम्हारे लिये ही है। तुम्हारे संदेशेको विशेष ऊंची आवाजमें कहनेके लिये—जिससे कदाचित तुम्हारा यह तात्पर्य होगा कि मेरे दलके मनुष्य, तुम्हारे राजाकी ललचाने वाली बातें सुनलें—मुझे उसका पुरस्कार तुमको देना योग्य है।"

अपनी बात पूरी करनेके साथ ही व्यङ्कट वाघने, अपनी म्यानमें बन्द तलवार दूतके सिर पर मारी और उसको वहांसे चले जानेका हुक्म दिया। वह मनुष्य कूद कर अपने घोड़ेपर सवार हुआ और उसे सरपट दौड़ाया, ; परंतु कुछ लुटेरोंने, जो पास खड़े थे तथा अपने सरदार और शिवाजीके दूतकी बातचीत सुन रहे थे उस पर घोड़ा दौड़ानेके साथ ही, पत्थरोंकी एक बाढ़ बरसा दी।

षोड़श परिच्छेद।

———०:०———

पूर्व जन्मजनितं पुरा विदः कर्म दैव मिति सम्प्रचक्षते ।
उद्यमेन तदुपार्जितं चिराद्दैव मुद्यमवशं न तत्कथम् ॥

स्फुट ।

जिस समय शिवाजीने अपने दूतसे, लुटेरोंके सरदार व्यङ्कट बाघका उत्तर सुन लिया, उन्होंने नेताजी और अपने दो सेनाध्यक्षोंको लोहगढ़ दुर्गसे बुलाकर, युद्ध सम्मति पूछने तथा यह निर्णय करनेको एक खास सभा की कि काशी तथा दाताजी गुफाके द्वारके मध्यमें, पत्थरोंको छाती तक ऊंची दीवारके ठीक पीछे ही बिठाये गये हैं, ऐसे मौके पर क्या करना चाहिये। काशी तथा दाताजीको आक्रमण करनेवालोंके तीर, बर्छे या गोली लग जानेके भयसे "भजके" डाकुओंकी गिरफ्तारी, असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य हो गयी। समस्या वास्तवमें कठिन थी। उधर तो वेलोग जान जोखिममें थे और इधर, नेताजीके दलवाले, जिस समय गुफा पर आक्रमण करेंगे काशी तथा दाताजीके कारण द्वारमें गोली या तीर चलानेका साहस नहीं कर सकेंगे और व्यङ्कट बाघके दलवाले इन पर बेधड़क गोली और तीर बरसावेंगे,। उससे ये लोग अरक्षित तथा दोहरे भयमें फंसेंगे; परन्तु इतनी हानिकी शङ्का तथा भय होने पर भी बिना विलम्ब आक्रमण करना निश्चय किया गया।

शिवाजी तथा नेताजीने, आक्रमणके लिये जो प्रयत्न, सभामें निश्चय किया था, वह इस प्रकार था—

आक्रमण करने वाली संपूर्ण सेना तीन दलोंमें बांटी जाय। उनमेंसे एक दलको तोड़ेदार बन्दूक और तीर कमानोंसे सुसज्जित हो कर भजकी गुफा पर सामनेसे आक्रमणकी झूठ मूठ चेष्टा करनेको कहा गया! शेष दोनों दलोंको जिनके मनुष्य नजदीकी लड़ाईके लिये तय्यार किये गये थे अपनी गति सावधानी पूर्वक व्यङ्कट बाघके दलसे छिपा कर और लंबा चक्कर मार कर

गुफाको दाहिने बांयेसे घेर लेनेका काम सौंपा गया। उन लोगोंको उस पगडंडी पर होकर आना था जो गुफाके पाससे होकर जाती थी। और एक एक करके उत्तर तथा दक्षिणसे, चुपचाप तब तक आगे बढ़े चले जाना आवश्यक था जब तक वे आक्रमणके लिये, गुफाके दोनों बाजूके बहुत ही समीप ठीक समय पर पहुंच जायं। शिवाजी ! जो प्रधान तथा मध्यवर्ती दलके साथ रहनेवाले थे। जिस समय झंडा हिलाकर संकेत करें, उसी समय तीनों दल एक साथही गुफा पर आक्रमण कर दें। इस चातुर्यमय व्यवस्थासे, डाकू तथा उनका अत्याचारी सरदार व्यङ्कट बाघ, काशी तथा दाताजीको उन मित्र वर्गोंके, तीर, बर्छे या गोलीसे मारे जानेकी धमकी और जोखिमसे थोड़ा लाभ पा सकेंगे जो उन्हें (काशी तथा दाताजीको) छुड़ानेको जा रहे थे। इसीके अनुसार व्यवस्था हुई।

दूतके लौट आने पर लगभग आधे घंटेके पीछे शिवाजीने अपने दलवालोंको इस प्रकार चेष्टा करनेकी आज्ञा दी कि मानो वे लोग बहुत शीघ्र ही गुफा पर आक्रमण करने वाले हैं। ऐसा करनेसे लुटेरोंका ध्यान एक ही ओर आकर्षित रहा ; उन लोगोंने किसी दूसरी ओरसे आक्रमण होनेका भय न विचारा। अंतमें दोनों दलके मनुष्य उत्तर तथा दक्षिणसे बढ़ कर पहाड़की एक अलंग पर चढ़ गये और डाकुओंके बिना जाने, गुफाके दोनों बाजुओं पर एका एकी और चुपचाप पहुंच गये।

झंडा हिलाया गया और शिवाजीने अपने मनुष्योंको गुफा पर आक्रमण करनेको बढ़ाया। वे लोग पहाड़की अलंग पर बन्दरोंके समान चपलतासे चढ़ गये और उसी समय दूसरे दोनों दल उस गढ़ बन्धी दीवारके दाहिने बायें तेजीसे झपटे। नेताजी जो दाहिनी ओर वाले दलमें थे, अपने हाथमें एक भारी फरसा लिये सिरके आस पास घुमाते चले आ रहे थे। उस फरसेसे उन्होंने गढ़ बन्धीकी ऊंची छाती तक दीवारकी मुंडेर पर खड़े हुए पेड़ोंके ठुंड तथा डालियोंको काट कर रास्ता कर लिया। गुफाके संरक्षक डाकू नेताजीके सुस्थिर आक्रमणके सामनेसे हट गये और वे उस दीवारकी मुंडेर पर उछल कर जा पहुंचे। वहां पहुंचने पर उन्होंने

गर्ज कर कहा कि "वे मनुष्य जो शिवाजीकी प्रतिहिंसा अथवा दण्डसे बचना चाहते हैं, गुफाका दरवाजा छोड़ कर भीतरी भागमें चले जायं। इस जगहको छोड़ कर बिलकुल हट जायं।" नेताजी अपने फरसेसे उन मनुष्योंपर आक्रमण करते हुए आगे बढ़े जिन्होंने रास्तेमें उनके सामने ठहर कर मुकाबला करनेका साहस किया। लुटेरोंमेंसे अधिक कमजोर दिलवाले या धार्मिक मनुष्योंने जोरसे यह पुकार कर कि "सर्वनाश हो गया" नेताजीके कहनेका अनुसरण किया और अवशिष्ट पवित्र बौद्ध अस्थिद्रव्याधार शिखरके पीछे गुप्त स्थानमें शरण लेनेके लिये जा छिपे। उस समय काशी भी गुफाके कोनेसे झपट कर ऊपर आयी और अपने पिताका हाथ पकड़ कर गुफाके उस एकान्त स्थानमें, जिसमें कुछ लुटेरे जा छिपे थे, ले गयी।

इस समयान्तरमें लुटेरोंका सरदार व्यङ्कट वाघ इस बातका प्रमाण दे रहा था कि यद्यपि वह अहङ्कारी था, परंतु कादर न था। वह गुफाके दाहिनी ओर वाले मार्ग पर खड़ा उसकी रक्षा कर रहा था। वहां वह इस कारणसे भी खड़ा था कि काशीके समीप रहे और उसे अपनी शूरता दिखानेका अवसर प्राप्त हो। आक्रमण करने वालोंमेंसे दो अत्यंत साहसी लड़ाके उसके खड्गके नीचे कट कर गिर चुके थे। ठीक इसी क्षण उसे अपने पीछे ओर गुल सुन पड़ा और ज्योंही उसने पीछे घूम कर देखा तो विदित हुआ कि शत्रु दलका एक व्यक्ति उस दीवार पर चढ़ आया है और बल पूर्वक रास्ता करता हुआ, गुफामें बढ़ा चला आ रहा है। यह देख कर व्यङ्कट वाघ तेजीसे बिजलीकी तरह चमक कर अपने शत्रु पर दौड़ा।

नेताजीकी स्थिति इस समय बड़ी नाज़ुक थी। उनके दल के वाले उस दीवारके पास अभी तक नहीं पहुंचे थे जिस पर वे खड़े थे। इस क्षण नेताजी दीवार पर अकेले तथा सहायहीन थे। लुटेरोंके सरदारनेने ताजीका सामना किया। नेताजीके आस पास डाकू लोग खड़े थे। वे उनके लम्बे तथा भारी फरसेसे अपने जिसे वे सिरके चारों ओर घुमा रहे थे, डर कर

उनके पास नहीं जाते थे। व्यङ्कटवाघने अपने खड्गसे नेताजीके सिर पर एक प्रचंड प्रहार किया। नेताजीने उस प्रहारको अपने फरसे से रोका परंतु उस प्रहारका ऐसा उग्र वेग था कि व्यङ्कटवाघकी तलवार उनके फरसेकी लकड़ीके दस्तेको काट कर निकल गयी और वह भारी फरसा, गुफाके पथरीले फर्श पर झनकार मार कर नीचे गिर पड़ा।

नेताजी इस समय ऐसे कठिन दबावमें फँस गये थे कि उनको अपनी तलवार, जो कमरमें लगी थी, म्यानसे बाहर खींचनेका समय न मिला। जितनी उत्तमतासे हो सका उन्होंने फरसेके दस्तेसे उस शत्रु दलके घेरेसे अपनी रक्षा की। फरसेका दस्ता तलवारके सामने कहां तक काम कर सकता है सो समझनेकी बात है। एक क्षण ही में उनके पैरों तथा भुजाओंमें अनेक घाव हो गये। शत्रु मंडल, डाकू दल चारों ओर था और नेताजी अकेले सो भी शस्त्रहीन और शस्त्र भी था सो क्या? तलवार न बर्छी, फरसेका दस्ता! केवल फरसेका दस्ता!!

उनके सौभाग्यवश डाकुओंके सरदार व्यङ्कटवाघकी तलवार भी नेताजीके फरसेके दस्तेमें लग कर प्रचंड प्रहारके कारण टूट गयी थी; परन्तु उसने तुरंत एक दूसरी तलवार जो उसको बांयी बगलमें कमरसे लगी थी, खींच ली। नेताजी आक्रमण करने वाले बहुतेरे दूसरे डाकुओंके घेरेमें थे और अपनी सुरक्षा करनेमें बहुत ही उलझे हुए थे। इस समय वे अपने शत्रु व्यङ्कटवाघका सामना करनेके योग्य थे वा नहीं सो हमारे पाठक स्वयं विचार सकते हैं। इसी क्षण व्यंकट वाघकी तलवार, नेताजीके सिर पर दूसरा प्रचंड प्रहार करनेको ऊपर उठी।

कालचक्र।

रामस्य व्रजनं बलेर्नियमनं पाण्डोः सुतानां वनम्
वृष्णीनां निधनं नलस्य नृपते राज्यात् परिभ्रंशनम्।
नाट्याचार्यकमर्जुनस्य पतनं संचिन्त्य लङ्केश्वरे
सर्वं कालवशाज्जनोऽत्र सहते कः कं परित्रायते॥

स्फुट।

जिस समय अब्दुट बाघकी तलवार नेताजीका काम तमाम करना चाहती थी ठीक उसी समय शिवाजी वहां पहुंच गये और उन्होंने अब्दुटबाघकी बगलमें अपनी तलवार भोंक दी। वह प्राणहीन होकर गुफाकी पथरीली सतह पर गिर कर मर गया। अधिपतिको मरते देखकर शेष डाकुओंने सामना करना छोड़ दिया और पृथ्वी पर गिर कर "शरण" "दया"की पुकार करने लगे।

इस प्रकार सजके डाकुओंका अड्डा शिवाजीने अपने अधिकारमें कर लिया। प्रायः सम्पूर्ण दलने शिवाजीकी नौकरी करना स्वीकार कर लिया। डाकूराज अब्दुट बाघके सन्दूकमें बहुत सोना चांदी मिली जो उसने इकट्ठा कर रख छोड़ी थी। शिवाजीको विदित था कि अब्दुटबाघने मोरगांवके मन्दिरकी गणपती मूर्त्ति लूटी थी और यह सोना उसीका था। इस कारण वह सम्पूर्ण सोना उदार हृदय वीर शिवाजीने वृद्ध मोरोबाको दे दिया और चांदीका अधिकांश उन्होंने अपने अनुयायी पुरुषोंकी बाकी तनखाह चुका कर व्यय कर दिया। नवीन अशिक्षित मनुष्योंको भी उसमें भाग मिला। गोपालको उचित पुरस्कार तथा मान प्राप्त हुआ। नवीन मनुष्योंको यह सूचना दी गयी कि वे लोग विश्वास तथा श्रमपूर्वक काम करेंगे तो भलीभांति अपना निर्वाह उनके (शिवाजीके) दलमें कर सकेंगे।

दाताजी तथा काशी भी गुफाके बाहर लाये गये ; सबको परम आनन्द हुआ। उस दिन वहीं मुकाम कर रसोई इत्यादिका प्रबन्ध किया गया। स्नान तथा भोजनसे निश्चिन्त हो शिवाजी, नेताजी, दाताजी, मोरोबा तथा गोपाल एक जगह बैठ कर बात चीत करने लगे।

बहुत देर तक बात चीत होनेके उपरान्त दोपहरको दो घंटे आराम कर यहांसे चलनेका निश्चय किया गया। सब लोग उठ कर आराम करने गये।

नेताजी अपने साथ खेली हुई काशीको देख कर परम प्रसन्न हुए। काशी भी मन ही मन आनन्दित हो रही थी। बात चीत करनेकी यदि आवश्यकता भी थी तो अवसर न था। प्रिय पाठको! इस उत्सुकता और आनन्दका वर्णन करनेमें हम असमर्थ हैं।

कालचक्रकी भी गति विचित्र है। इसका रहस्य कौन जान सकता है? देखिये नेताजीने ही इसके हाथों कैसी कैसी आपत्ति उठायी, कैसे कैसे दुःख सहे, किस प्रकार छिपे छिपे घूमते रहे और और किन किन कठिनाइयोंका सामना किया।

आह, संसार भी कालचक्रकी ही तरह अलबेला है। दोनों मिल कर जो दृश्य उत्पन्न तथा लय विलय करते रहते हैं वह और भी विचित्र है। क्षण भरमें एक दूसरेकी सहायतासे ऐसा रंग बदलता है कि जिसका वर्णन करना कठिन है। अनेक प्रपंच अनेक आडम्बर तथा छल पूर्ण घटनाएं घटित होती हैं। बड़े बड़े बुद्धिमान भी इसके षड़यन्त्रमें फंस कर भोंदे हो जाते हैं ; उनकी बुद्धि उड़ जाती है।

अनेक यत्न करने पर भी उलझाहट नहीं सुलझती ; अनेक विचार करने पर भी इस पाशकी ग्रन्थि नहीं समझ पड़ती ; अनेक यत्न करने पर भी इसमेंसे नहीं निकलते बनता। कदाचित इसी कारण लोग कहते हैं कि "कालस्य कुटिला गतिः"।

जिसको देखिये वह अपनी ही धुनमें है। कोई किसीको अपनेसे बढ़ कर नहीं समझता ; सब अपना ही रंग जमाना चाहते

हैं ; अपनी अपनी डफली अपना अपना राग गाते हैं, पर होता कुछ और नहीं है। कालचक्रमें पड़ कर बड़े बड़े स्थायी विषय भी भ्रमसे घूमते जान पड़ते हैं। अनेक अनहोनी बातें हो जाती हैं। वास्तवमें अथवा भ्रमसे ? नहीं नहीं हम ही भ्रममें हैं। यह सब कालचक्र—प्रबल कालचक्रकी गति है जिसके कारण अनहोनी बातें भी संभव होती जान पड़ती हैं। धन्य कालचक्र ! धन्य तेरी गति !!

सौन्दर्य्य कुसुम ।

वा

महाराष्ट्रका उदय

द्वितीय खण्ड ।

प्रथम परिच्छेद ।

लोहागढ़

कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनाम् ।
मूर्ध्नि वा सर्व लोकस्य शीर्यते वन एव वा ॥

नीति शतक ।

प्रिय पाठको! आप सुगमता पूर्वक विचार सकते हैं कि दाताजी तथा काशीको उस बन्धनसे छूटने पर कैसा आनन्द प्राप्त हुआ होगा! उस बन्धनसे एक अधिक हार्दिक दुःख उनको और भी था। वह दुःख कदाचित आपको स्मरण न रहा हो, इस लिये हम ही बताये देते हैं। व्यङ्कट बाघको नियत काशीके विषयमें ठीक नहीं थी। प्रथम स्वयं काशी ही ऐसे उद्दण्ड-प्रकृति भ्रष्टाचार तथा स्वार्थ तत्पर व्यक्तिको प्रेमकी दृष्टिसे तो दूर रहा वैसे भी देखना नहीं चाहती थी; दूसरे दाताजी भी अपनी कन्याका डाकुओंके सरदारसे विवाह करना नहीं चाहते थे। व्यङ्कट बाघसे बात चीत होने पर उन्होंने यह स्पष्ट ही कह दिया था कि एक न्याय हीन बिना घर द्वार उद्दण्ड डाकूसे विवाह करनेकी अपेक्षामें अपनी कन्याको मृतक देखना मैं श्रेष्ठ समझता हूं।

काशी तथा दाताजीका हृदय प्रसन्नतासे भर रहा था,

साथ ही वे अपनेको डाकुओंके बन्धनसे छुड़ाने वालोंके इतने कृतज्ञ थे कि अकथनीय है। केवल उनका हृदय ही इस विषयको भली भांति जानता था। व्यङ्कट बाघके शिवाजीके हाथसे मारे जानेके पश्चात् लड़ाई बन्द हो गयी और ये लोग उचित आदर पूर्वक एक सिपाहियोंके झुण्डकी रक्षामें लोहागढ़ रवाना हुए। दाताजी एक टट्टू पर सवार हुए और काशीके लिये अच्छे डोलेका प्रबन्ध किया गया। धूपके बचावके लिये डोली पर आमकी डालियां छा दी गयीं जिनसे अच्छी छाया हो गयी। उन लोगोंका मार्ग लोहागढ़ तथा शिवपुरके बीचवाली उस कगारके ऊपर होकर जाता था जहां शेष उधरके घोड़ोंके पास सिपाह मोरोबा उस सेनाके लौटनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसे लेकर राजा शिवाजी काशी तथा दाताजीको लुटेरोंका सरदार व्यङ्कट बाघके चङ्गुलसे छुटानेके लिये लोहागढ़से "भजको" कन्दराको गये थे। मोरोबाके ही सब भेद बतानेसे शिवाजीने व्यङ्कट बाघ पर विजय पायी, नहीं तो उस डाकुओंके सरदारको परास्त करना सुगम कार्य नहीं था। इस जगहसे वे लोग पश्चिमकी ओर घूमे और शीघ्रही "हनुमन्त फाटक" पर पहुंच गये जिसमेंसे होकर आज दिनभी लोहागढ़ दुर्गके भीतर जाना होता है। पिछले जो तीन फाटक और हैं वे उस समयके नहीं हैं, किन्तु वे नाना फडनवीसके समयके बनाये हुए हैं।

लोहागढ़में पहुंचने पर शिवाजीने काशी तथा दाताजीके निवासके लिये सब भांतिके सुपासमय स्थानका प्रबन्ध कर दिया। सन्ध्याके समय शिवाजी नेताजीसे आवश्यकीय विषयों पर बहुत समय तक निश्चित भावसे बात चीत करते रहे। वे इस समय भी हृदयकी संकीर्णताके कारण उत्पन्न अपने हृदयकी वेदनाको नेताजीसे प्रकट कर रहे थे, जो इतनी प्रबल थी कि उन्होंने जो जो प्रयत्न तथा कठिनसे कठिन उद्योग अपने देशके उद्धारके लिये किये थे और कर रहे थे, सबको छोड़ योगी होकर शेष जीवन ईश्वराराधनमें व्यतीत करनेको उनका मन इतनासे झुक रहा था।

शिवाजीने कहा,—"अभी चालीस सहस्र मावली ऐसे हैं जो प्रसन्नता पूर्वक मेरे हेतु तथा अपने देशके लिये तलवार लेकर युद्ध करनेको उद्यत हो जायं, यदि मैं उनकी दृढ़ता तथा देशोद्धारका उद्योग करने वाली उत्सुक भुजाओंको केवल तलवार दे सकूं। इस समय भी वे लोग मेरे कहने मात्र हीसे उठ खड़े होंगे तथा जो मैं कहूं उसे करनेको उद्यत हो जायंगे, परंतु बीजापुर तथा दिल्लीके बन्दूक और जिरह बखतरोंसे सजे फौजी जवानोंके आफतसे तथा लाठियोंसे वे लोग कहां तक सामना कर सकते हैं? उनके मुकाबले इनका ठहरना किस प्रकार सम्भव है? यह वास्तवमें ठीक है कि परमेश्वरकी कृपासे मैंने उन पहाड़ी दुर्गोंको जो दक्षिण तथा कोंकनमें शिरमौर हैं अपने अधिकारमें कर लिया है, परंतु उनकी दीवारें बहुत समयसे बेमरम्मत होनेके कारण दिन पर दिन हीनदशामें होती जाती हैं और द्रव्यकी उस सहायताके अतिरिक्त जो मुझे अपने मित्र दादाजी तथा दूसरे देशानुरागी पुरुषोंने स्वच्छन्दता पूर्वक दी है, मैं कारीगरोंको उनकी मरम्मत करनेके लिये कैसे द्रव्य देनेके योग्य हो सकता हूं? हां जगन्माता भवानीने अपने इच्छित विषय तक तो मुझे अभी तक नहीं पहुंचाया है, परंतु कठिन कठिन समयमें मेरी सहायता अवश्य की है; मुझे अपने नवीन मित्र नेताजीके साथ तोरना जाना अवश्य है जिसकी दीवारोंको कुछ कुछ मरम्मत की जा रही है। कौन जाने भवानीकी क्या इच्छा है? कदाचित वहीं जानेसे मेरा कुछ हित हो? नेताजीसे यदि मेरा इच्छित विषय पूर्ण न हुआ तो तुम शीघ्र ही इस समाचारके सुननेकी प्रतीक्षा करते रहो कि शिवाजी योगी हो गये और अपने देशके उद्धारका भार किसी अधिकतर भाग्यशाली नेता, कदाचित नेताजीके हाथमें छोड़ गये।

"नहीं" नेताजीने शिवाजीकी बात बीच हीमें रोक कर कहा,—प्रधानत्व और भार आप हीको शोभित होता है और मेरा धर्म्म आपका अनुसरण करना है, मरण पर्य्यंत इसी भावसे अनुसरण करना ही मेरा कर्त्तव्य है। यदि आपकी सेवामें मेरे प्राण भी,...............

पश्चात् नेताजीने उनसे वे भविष्य ध्यान कहे जिनका वर्णन उनके गुरु महात्मा योगिराजने मठेरन शिखर पर किया था। उनको ध्यान पूर्वक सुन कर शिवाजी बोले ;—

"अब मैं ऐसे व्यक्तिको और क्या भेंट कर सकता हूं या पारितोषिक दे सकता हूं जो इस महत्कार्य्यमें मेरा दक्षिण हाथ होनेको महात्मा योगिराज द्वारा उत्साहित किया गया है।"

"श्रीमान् मुझे और किसी पारितोषिक या भेटकी आकांक्षा नहीं है ; यदि है तो केवल आपकी अनुग्रह दृष्टि तथा अपने कर्तव्यमें उद्योग करनेकी रुचि ! इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ इच्छा नहीं है। हां ठहरिये, एक पारितोषिक आवश्यक है जो देश सेवा करनेके लिये मेरे उत्साह तथा मुझसे बहुत ही सम्बन्ध रखता है। बाल्यावस्थाके दिनों दाताजीकी पुत्री काशी और मैं जब धीरी नदीके किनारे खेला करते थे तब महाराष्ट्रका उद्धार करनेके स्वप्नसमान ध्यानोंमें वह मुझे उत्तेजित किया करती थी। उससे सम्बन्धित होनेका सौभाग्य मुझे देवगण यदि प्रदान करें तो मेरा बल तथा उत्साह निस्संदेह द्विगुण हो जायेगा। परंतु जो कदाचित मैं उस विषयको पानेके योग्य न जान पड़ूं, और यह महत् पारितोषक मुझे न दिया जा सके, तौभी आप मनमेंयह न विचारियेगा कि मेरे कर्तव्यमें कुछ अन्तर आ जावेगा। मैं आपकी तथा देशकी सेवा प्राण जाने तक इसी भावसे करते रहनेको उद्यत रहूंगा तथा श्रद्धापूर्वक करता रहूंगा।

"मेरे गुरु महात्मा योगिराजने, मुझे अनेक उत्तम उपदेश तथा शिक्षा दी है जिससे मैं सांसारिक सुखोंकी अभिलाषाकी अपेक्षा देवताओंके इच्छित कार्य देश उद्धारको उत्तम समझता हूं। मुझे सांसारिक सुखकी विशेष अभिलाषा नहीं हैं। "

शिवाजीने तुरंत इस बातका इकरार करलिया कि अपनी शक्ती भर वे, दाताजीको काशीका विवाह नेताजीसे कर देनेके लिये कहेंगे। वृद्ध दाताजीने, शिवाजीके कहने पर प्रथम तो इस विषयमें यह कारण बताकर टाल टूल की, कि उनके तथा नेताजीके घरानेकी बराबरी नहीं है। यह दाताजीकी बात एक हिसाबसे ठीकही थी।

नेताजी कुलीन थे इसमें कुछ भी संदेह नहीं, परंतु वे दाताजीके समान धनी नहीं थे। दाताजीकी गिनती धुरंधर धनियोंमें थी। नेताजीका घराना भी आदरणीय तथा गौरवशाली था, यह बात किसीसे—अप्रकट नहीं थी। परंतु वृद्ध दाताजी, दूरदर्शी भी भारी थे; उन्होंने, कुछ तो नेताजीके कार्योंकी कृतज्ञतासे और विशेषकर शिवाजीको अपना कृतज्ञ बनाने लिये और साथ ही अपनी एक मात्र पुत्री काशीके सुखको विचारकर शिवाजीका कहनेका मान-लिया। प्रत्यक्षतः काशीका प्रेम नेताजी पर बाल्यावस्था हीसे अधिक था और भयंकटवाघके बन्धनसे मुक्त करनेके कारण बहुत बढ़ गया था। दोनोंका विवाह होनेमें बहुत विलम्ब या अटकाव नहीं विचारा जा सकता था। काशीका "सौंदर्य कुसुम," थोड़े ही दिनोंमें अपने बाल्यावस्थाके प्रेमी नेताजीके उत्साह तथा देशहित कामनापूर्ण वक्षस्थल पर सुशोभित होने वाला है। सौभाग्यवश नेताजी तथा काशीको एकान्तमें एकबार और बातचीत करनेका अवसर प्राप्त हुआ। दोनों प्रेमी और प्रेमिका, इस समयान्तरमें, अपनी व्यतीत घटनाओं तथा उस समयकी भविष्य आशाओंकी बात चीत करते रहे। नेताजीने अपनी उस हार्दिक अवस्थाका वर्णन काशीसे किया जो उनको रामासे दाताजी तथा उसकी गिरफ्तारीका हाल सुनकर हुई थी।

काशीने कहा,—"हां परन्तु मुझे सम्पूर्ण रूपसे यह विश्वास था कि किसी न किसी भांति तुम मुझे तथा पिताको उस दुष्ट व्यंकट वाघके बन्धनसे छुड़ाने अवश्य आओगे। आह, उस समय, मेरे चित्तमें क्या क्या तरंगें उठ रहीं थीं जब तुम्हारा फरसा टूट गया था और तुम पत्थरोंकी गढ़कन्दीकी दीवार पर खड़े थे। आह! उस समय कैसी भयंकर लीला हो रही थी! डाकू लोग चारों तरफसे तुम्हें घेरे खड़े थे! और तुम उसी फरसेके डंडेसे अपना बचाव कर रहे थे!! निस्संदेह उस समय जानकी ही जोखिम थी। जिस समय डाकुओंका सरदार, तलवार हाथमें लिये तुम्हारी ओर भरपूर तेजीसे दौड़ा, मेरा कलेजा कांप उठा, मैं नहीं कह सकती कि मेरा मन उस समय कैसा हो रहा था।

मेरे मनमें उस समय ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि मैं अपने शरण स्थानसे, जहां मैं तथा पिता थे, दौड़ कर व्यंकट वाघ और तुम्हारे बीचमें आ पहुंचूं; परन्तु उसी समय एक ध्यान और उत्पन्न हुआ कि तुम अवश्य ही विजय प्राप्त करोगे। देवगण अपने कृपापात्र सेवकको व्यंकट वाघ जैसे अत्याचारीके हाथसे कदापि मरने न देंगे। यदि मैं व्यंकटवाघके बीचमें आ पहुंचती तो भी क्या होता? वैसे भयानक दृश्यमें, एक निर्बल स्त्री क्या कर सकती थी?

इसी भांति नेताजी तथा काशीमें बहुत समय तक बातचीत होती रही। वे दोनों लोहागढ़के सबसे ऊंचे बुर्ज पर सूर्यास्तके मनोहर समयमें टहलते रहे तथा उन पर्वतोंको देखकर मन बहलाते रहे जो उसके चारों ओर स्थित हैं। उत्तरमें, इन्द्रायनी खड़कलाकी ओर बह रही थी; पूर्व ओर विसापुरके पर्वतका दृश्य था, जिसका शिखर युद्धके लिये अत्यंत सुरक्षित था; दक्षिणकी ओर टौंगीको दुर्ग छटा दीख पड़ती थी, जिसके कुछ दूर आगे हटकर टिकौना पर्वत शृंग है। सूर्य भगवान अस्ताचलके शिखर पर पहुंच गये थे। घाटोंके विशाल पर्वत इस समय बीचमें आ पड़नेके कारण, नेताजी तथा काशी अपनी बाल्यवस्थाके स्थान या जन्मभूमि चौक तथा मठेरनको नहीं देख सकते थे। भले ही उनकी दृष्टि वहां न जा सकती हो परन्तु दोनोंहीके मन उस विशाल पर्वतीय बीचको पार कर, भलीभांति पूर्व परिचित मठेरन पर्वत तथा तराईमें स्थित चौक ग्राममें पहुंच गये थे। अहा, जन्मभूमि पर सबहीका कैसा अनुराग होता है! ज्योंहीं मन जन्मभूमिमें जा पहुंचा, इन्हें अपनी बाल्यावस्थाका स्मरण हो आया। साथही अपने साथ खेलने वाली (परन्तु अब लापता) गंगाका ध्यान आ गया। उनकी इस अकथनीय प्रसन्नतामें गंभीर शोक मिश्रित हो गया। वे गंगाके उदासीन भाग्य पर रंज करते रहे। उनके मनमें कभी कभी यह विचार उठता था, कि यद्यपि दुर्भाग्यने गंगाको उनसे पृथक कर दिया था तथापि वह जीवित हो तो क्या आश्चर्य? यदि गंगा इस समय होती तो वह उन दोनोंको देखकर कितनी प्रसन्न होती तथा वे तीनों एक दूसरेके साथ रहकर आह्लादित होते।

अहा, संसारमें सुखी कौन है,? सभीको कोई न कोई शोक है। परन्तु किसी किसीको तो इस बहुरूपिये संसारने अपने विचित्र चक्रमें इस भांति उलझाकर भ्रमाया है कि कुछ पारावार नहीं। कोई चिन्ता नहीं, सुखके अनन्तर दुख तथा दुखके पीछे सुख है। संसारके चक्रकी गति ही इस भांति है। किसी न किसी तरह मुसीबतके दिन तो कट ही जाते हैं परन्तु उससे कई गूढ़ विषयोंकी भली भांति परीक्षा हो जाती है। विचारवान् गंभीर हृदय आपत्ति कालको सुखके समयसे बहुत ही अच्छा जानते हैं। कोई कोई यह कहकर अपने चित्तको समझाते रहते हैं कि "अभी समय तुम्हारे विपरीत है इसको किसी तरह बिताओ।" यह बात मध्यम श्रेणीके पुरुषोंकी है। जो दृढ़ प्रतिज्ञ हैं वे अटल भावसे यही कहते हैं कि "चाहे प्राण रहे, या न रहे सुख मिले वा दुख, परंतु हम अपनी मर्यादासे लेश मात्र भी विचलित न होंगे।"

द्वितीय परिच्छेद।

---o:o---

भवानीका दर्शन।

मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥

स्फुट।

नेताजीको काशीके साथ प्रेमकी आनन्दमयी बातें करनेका विशेष अवसर नहीं था। शिवाजीके साथ भवानीकी आज्ञानुकूल, उन्हें दूसरे दिन प्रातः काल ही तोरना जाना था। वर्तमान समयमें राजमच्छी तथा श्री वर्द्धनमें शत्रुदलसे घिरी हुई त्र्यम्बकरावकी छोटीसी वीरमंडलीको यवनोंके चंगुलसे छुड़ानेका कोई प्रयत्न नहीं किया जा सकता था। शिवाजीने सम्पूर्ण दुर्गोंके (जो दक्षिणमें उनके अधिकारमें थे) अधिकांश मनुष्योंको कल्याण नगर लेनेके लिये

दृढ़ सेनामें संकलितकर कोकनमें उतार दिया था, क्योंकि कल्याणसे बीजापुरको खजाना भेजा जानेवाला था जिसका पता शिवाजीको किसी भांति मिल गया था। उसी कोषकी प्रतीक्षा वह सेना कर रही थी, जिसे शिवाजीने कल्याण नगरकी ओर भेजा था। चुनीदा तथा अधिकांश मनुष्य वहीं चले गये थे, इसलिये इस समय शिवाजी बीजापुरकी उस सेनाका सामना करनेके लिये, जो राज-मचलीको घेरे पड़ी थी, कोई ठीक प्रबन्ध नहीं कर सकते थे। दुर्गमें शेष मनुष्य, एक तो शीघ्रता पूर्वक एकत्रित नहीं किये जा सकते थे और दूसरे अन्य कई गंभीर कारण उपस्थित हो गये थे, जिनका वर्णन करनेकी आवश्यकता हमें इस समय नहीं जान पड़ती, हां, समय पर आने अपने आप हमारे प्रियपाठक, जान लेंगे। तीसरे अभी अस्त्रशस्त्रको रसदकी भी कमी नहीं थी, जो कि युद्धके समयमें प्रधान तथा अत्यंत आवश्यकीय बात है तथा जिसके बिना किसी भांति काम नहीं चल सकता।

सूर्योदयके बहुत पहलेही शिवाजी तथा नेताजी, दोनों मित्र, मशालके उजालेमें, लोहागढ़के फाटकसे बाहर हो गये। नेताजी अश्वजान पर सवार थे और शिवाजी एक दक्षिणी टट्टू पर जिसने इस ऊबड़ खाबड़ रास्तेसे अपना अभ्यस्त होना प्रकट किया तथा सवारको उस चालाक टट्टूके चलानेके लिये तनिक भी परिश्रम करनेकी आवश्यकता न हुई। पांच कोस तक चले जानेके पश्चात् उनका पहला मुकाम गौरीगढ़ हुआ, जोकि शिवाजीके नवीन प्राप्त दुर्गोंमेंसे था तथा जिसका अधिकार अम्बावनी घाटी पर था। अम्बावनी घाटी भोरे घाटके लगभग दस कोस दक्षिण है। थोड़े समय तक वहां विश्राम करनेके उपरान्त ये लोग फिर रवाना हुए। विश्राम करनेके अतिरिक्त उस समयान्तरमें शिवाजीने दुर्गकी सुरक्षाके स्थानोंकी जांच और वहांकी अधिष्ठात्री गौरी देवीकी पूजा की। दोपहर होते होते वे मुलशी नामक ग्राममें पहुंच गये जहां दोपहर बिताने तथा सफरकी हरारत मिटानेको इन लोगोंने दो घंटे विश्राम करनेकी इच्छा की और घोड़ोंको बाग डोरके सहारे चरनेको छोड़ दिया।

तोरनाके रास्तेका आधेसे अधिक भाग ये लोग तय कर चुके थे; परंतु अबभी सामने दस कोस रास्ता तय करनेको बाकी था। इस हेतु दोपहर होनेके थोड़े समय उपरान्त ही भोजन इत्यादिसे फुरसत पाकर वे पुनः घोड़ों पर सवार हुए और तेजीसे वहां तक चले गये जहांसे उनको तोरनाके ऊंचे ऊंचे बुर्ज दीख पड़े। फाटक तक पहुंचनेके लिये पहाड़का हाल ऐसा बेढब था, कि उनको घोड़ोंसे उतरना पड़ा और एक मार्गसे जो सीढ़ीकी तरह चट्टानोंका कुदरती बना था, जाना पड़ा। इसको देख कर नेताजीको मठेरन पर्वतकी प्राकृतिक पाषाण निर्मित सीढ़ीकी याद आ गयी। अंतमें उस कठिन चढ़ाईको तय करनेके पश्चात् वे कोनेकी ओर घूमे और एकाएक फाटक पर आ पहुंचे जो एक भारी चट्टानके नीचे था। उस स्थानके लोगोंने ऊंची आवाजसे "जय शिवाजी महाराजकी जय" पुकार कर उनका स्वागत किया और पर्वत शिखरस्थ सुपास मय स्थान पर उन्हें ले गये।

जिस समय शिवाजी तथा नेताजी, सफरकी हरारत मिटाने तथा आवश्यकीय बातोंसे निबटनेके पश्चात् उस मकानके बरामदेमें बैठे थे, दो आदमी आये और उन्होंने शिवाजीसे मिलनेकी इच्छा प्रकट की। उनमेंसे पहला व्यक्ति, उन कारीगरोंका मुखिया था जो तोरना दुर्गमें युद्धके मौके तथा जर्जर दीवारकी मरम्मत कर रहे थे। उसने प्रेम सूचक विनीत भावसे शिवाजीको झुक कर जुहार किया; फिर यह बात कहनी प्रारंभ की;—

"ऐश्वर्यशाली" राजा! मेरे कारीगर दुर्गकी मरम्मत बहुत दिनोंसे कठिन परिश्रमसे कर रहे हैं; सो श्रीमानके दृष्टि गोचर ही है। वे लोग चिल्लाते हैं कि उनके तनमें प्राण नहीं रहेंगे, क्योंकि उनको भलीभांति भोजन नहीं मिलता। पत्थरोंको कांटना तथा उठाकर एक जगहसे दूसरी जगहमें जमाना बिना बलके नहीं हो सकता। निर्बल अवस्थामें किस प्रकार वे यह कठिन कार्य्य करनेको समर्थ हो सकते हैं? मुझे जान पड़ता है कि बिना खर्च पाये वे लोग अब और अधिक समय तक काम नहीं कर सकेंगे और अच्छी मजदूरी जहां उनको

मिलेगी धीरे धीरे उधर ही सबके सब खिसक जायंगे। बेमरम्मत स्थान और वह भाग जिसको मरम्मत बहुत कुछ हो चुकी है उसी भांति अधूरे रह जावेंगे। वीर * नरेश! मेरे विषयमें यह समझिये कि मैं आपको सेवामें उस समय तक प्रस्तुत रहूंगा जबतक कि परिश्रमसे क्लांत होकर यह देह गिर न पड़े। बिना किसी पारितोषकी आशाके मैं सदैव तन मनसे आपका सेवक हूं परन्तु उन गरीब आदमियोंसे आप क्या प्रतीक्षा कर सकते हैं जो नित्यके भोजनके लिये परिश्रम करते हैं? रोजके परिश्रमसे जो पैसे उनको प्राप्त होते हैं उन्हींसे उनकी स्त्री तथा बालबच्चोंका पालन पोषण होता है। यही उन लोगोंकी आजीविका है। प्रति दिन मैं यही देखता रहता हूं कि कहीं वे लोग चले तो नहीं गये।"

शिवाजीने अपने मित्र नेताजीकी ओर घूम कर धीरेसे कहा;—

"देखो भारीसे भारी दूरदर्शिता, बुद्धिमानी तथा हित इत्यादिके सभी कार्य सोना, चांदी प्रभृति धातुओं पर ही निर्भर हैं।"

फिर उन्होंने कारीगरोंके मुखियासे जोरसे कहा—"मेरे अच्छे मित्र! तुम्हारी हितकामनामें तनिक भी सन्देह नहीं है। मेरे खजानेके सन्दूक खाली हो रहे हैं और मुझे कुछ नहीं जान पड़ता कि मैं क्या यत्न करूं सिवा इसके कि जगद्धात्री भवानीसे विनय करूं कि वह मेरी इस समय सहायता करे।"

"श्रीमान्" कारीगरोंके मुखियाने उत्तर दिया "आप पर हम जैसे लोग तथा दीन दुखिया जीवोंकी विशेष आशायुक्त दृष्टि रहती है। आपहीसे हम अपने महाराष्ट्रके उद्धारकी आशा करते हैं। मेरे कारीगरोंको कुछ ही सहस्र रुपये दे दीजिये; इससे हमलोग तोरनाकी दीवारें पुनः बना डालेंगे ताकि वे बीजापुरके राजा तथा भारी मुगलोंके आक्रमणको तुच्छ कर सकें। उतने हम बहुत कुछ कर डालेंगे। उस पर नाज भरनेके कुठार तथा आपके रहने योग्य प्रासाद भी बना देंगे।"

इतना कह कर कारीगरोंका मुखिया प्रेम तथा विनीत भावसे जुहार कर विदा हुआ और दूसरे व्यक्तिको जो शिवाजीसे भेट

करनेकी विशेष उत्सुक था पेशीमें आनेका अवसर मिला। नवागन्तुक व्यक्तिकी सूरत नेताजीको बहुत ही विचित्र जान पड़ी। उसका चेहरा इतना श्वेत था कि उसे देख कर नेताजीके मनमें यह कल्पना होने लगी कि कदाचित वह किसी भांतिके कुष्टरोगसे पीड़ित है, पायजामा वह निस्सन्देह पहने था, परन्तु वह दिल्ली या बीजापुरवालोंके पहिरावेसे बिल्कुल भिन्न था; उसका काला कोट तो नेताजीको और भी विचित्र जान पड़ा। सबसे अद्भुत बात नेताजीको यह जान पड़ी कि वह शिवाजी जैसे राजाके सामने जूते पहने तथा नङ्गे सिर आया जो कि हिन्दुस्थानके रिवाजमें बहुत ही बुरा (अपमान तथा शोकसूचक) समझा जाता है। वह अपने हाथमें एक चीज लिये था जो न तो पगड़ी ही कही जा सकती थी और न जिरहबख्तरका टोप ही; परन्तु वह अवश्य विचारा जा सकता था कि वह वस्तु सिर पर लगानेकी ही थी। क्षण भरके लिये नेताजी उस विचित्र नवागन्तुकके विषयमें कुछ भी निश्चय न कर सके। अन्तमें एकाएक इस विचित्र दृश्यका अर्थ नेताजीके मनमें बिजलीकी तरह चमक उठा। उन्होंने जान लिया कि उनके सामने स्थित व्यक्ति बम्बईसे आया हुआ कोई फिरंगी है। वह उनलोगोंमेंका था जो सहस्रों कोस समुद्र पारकर यूरोपके बने हुए शिल्प पदार्थोंको एशियाकी उपज तथा सुवर्णसे बदल कर अपनेको धनवान करनेकी इच्छासे आये थे।

वास्तवमें वह एक पुर्तगीज व्यापारी था और मराठी या हिन्दी अधिक नहीं जानता था। इसलिये वह शिवाजीसे बात करने तथा अपनी जतानेके लिये एक दुभाषियेको साथ लाया था।

उसने शिवाजीसे (दुभाषिये द्वारा) कहा;—

मैं पुर्तगालके व्यापारियोंकी एक कोठीका साझेदार हूं। हम लोगोंके जहाज यूरोपकी दूसरी दस्तकारीकी चीजोंके साथ ही बढ़िया हथियारोंका अच्छा संग्रह कर लाये हैं। उसमें टोलेडोसे आयी हुई दस हजार उमदा फौलादी तलवारें, पांच हजार लोहेकी ढालें, एक हजार बन्दूकें, बारह पीतलकी तोपें और लड़ाईका बहुतसा बहुतसा सामान है। हमलोगोंने यह सब सामान अपने किले

थानामें इकट्ठाकर रखा है। मुगल बादशाह या बीजापुरके राजाके हाथ हथियार बेचनेके इरादेसे मैं बीजापुरके सूबेदारसे कल्याणमें तथा मुगलोंके सिपहसालारसे जुनारमें मिला। परन्तु अभीतक कहीं कुछ ठीक नहीं हुआ। जगह जगह सफर करनेसे मुझे तुम्हारीही कीर्ति तथा साहसका बहुत कुछ हाल मालूम हो चुका है। सम्पूर्ण हिन्दू छोटे बड़े योधा तथा किसान ब्राह्मण प्रभु तथा पुजारी जिनसे मुझे बातचीत करनेका प्रसङ्ग पड़ा, सभी तुम्हारेही विशाल भाग्यका वर्णन करते हैं। वे लोग कहते हैं "तनिक ठहरो ; जिस समय राजा शिवाजी बलपूर्वक उठेंगे तब आप देखेंगे कि मुगल और बीजापुरकी सेना पश्चिमी भारतके बाहर इस प्रकार उड़ जावेगी जैसे कि आंधीके सामने सूखे पत्ते। यह सब तुम्हारे विषयमें ठीक है परन्तु मैंने देखा है कि तुम्हारे अनुयायी मनुष्योंमें ऐसे बहुत कम हैं जिनके पास किसी प्रकारके शस्त्र हैं। बिना शस्त्रके अत्यन्त साहसी सैनिक भी क्या कर सकते हैं? इसी निमित्त मैं आपसे मिलनेकी आशामें पूनेसे यहां आया हूं। आप उस पदको, जिसके प्राप्त होनेके विषयमें भविष्यद्वाणीकी तरह चारो ओर खबर फैल रही है, बिना शस्त्रोंके किस प्रकार पा सकेंगे सो मैं ठीक निश्चय नहीं कर सकता। क्या आप अपने विरोधियोंको दण्ड देने तथा शत्रुओंको परास्त करनेके लिये वे युद्धके पदार्थ जो एक प्रकारसे आपके हाथहीमें हैं याने थानाके किलेमें रखे हैं मोल लेंगे?

शिवाजीके मनमें वास्तवमें ही व्यापारीके शब्दोंको सुनकर असह्य वेदना हुई; परन्तु उन्होंने अपने मनके भावको मन हीमें दबाकर मामला तय करनेके ढंगसे पूछा कि उन शस्त्रोंको तुम क्या कीमत चाहते हो?

सौदागरने उत्तर दिया कि उन सबकी कीमत डेढ़ लाख रुपये है।

शिवाजीने व्यापारीसे कहा कि मैं इस विषयको विचार कर अपना मन्तव्य कल प्रकाशित करूंगा। व्यापारीने सलाम किया और चला गया। व्यापारीके चले जाने पर शिवाजीकी

मानसिक वेदना बहुत बढ़ी, और वे अपने चित्तको शान्त करनेके लिये बरामदेमें इधर उधर टहलने लगे।

अब शिवाजीने नेताजीसे कहा कि यह मुझे स्पष्ट जान पड़ता है कि हमारी रक्षक भवानीकी यही इच्छा है कि इस फरङ्गीका "युद्धका सामान" मुझे मिले। निःसन्देह वह मेरा होगा परन्तु किस भांति? सो मैं नहीं जानता। मुझे अपने खजानेसे इतना द्रव्य नहीं मिल सकता है कि मैं उसे मोल ले सकूँ। इस हेतु जो शस्त्र मेरे हाथमें आ फंसे हैं उनको अपने कबजेमें लानेके लिये क्या मैं किसी भांति चूकूंगा? यदि द्रव्यसे मैं वह न पा सका तो बलसे अवश्य ही पाऊंगा। मेरे साहसी मावली लोगोंमेंसे एक सहस्र थानाके किलेकी दीवारको फांद जावेंगे और उनका अगुआ नेताजी! तुम्हींको होना पड़ेगा। निश्चय हो तुम्हारे साथ मुझे तोरना भेजनेमें भवानीने यही लाभ विचारा था। मेरे विश्वासी मित्र! इस युद्ध सामग्रीको अपने अधिकारमें करना तुमको अत्यन्त आवश्यक है। जिस समय मेरे वीर मावली अस्त्रोंसे सुसज्जित होकर यवनोंसे युद्ध करनेको उपस्थित होंगे निःसन्देह भवानीकी कृपासे हम विजय लाभ करेंगे। यह यत्न भयान्वित तथा दुर्धर्ष तो जान पड़ता है परन्तु दुर्धर्ष लोगोंके लिये दुर्धर्ष औषधियोंकी आवश्यकता होती है यथा "कण्टके नैव कण्टकम्" कांटेसे ही कांटा निकाला जाता है। जबतक मैं युद्ध सामग्री मोल लेनेके लिये धनकी प्रतीक्षामें चुपचाप बैठा रहूंगा तबतक श्रीवर्द्धन हाथसे निकल जावेगा। महाराष्ट्रकी मनोहर भूमि अत्याचारियोंके पैरोंसे रौंद डाली जायगी तथा उस पवित्र भूमि पर स्थित देवालय यवनोंसे अपवित्र और भ्रष्ट हो जावेंगे।

ज्योंही शिवाजीने ये शब्द कहे उत्तेजित धार्मिक विचारोंने उनके मन पर अधिकार कर लिया और वे महाराष्ट्रके उद्धारकी अपनी धुंधली आशाको विचार कर कातर हो अश्रुपात करने लगे। वे अश्रु उनकी असीम हृदय वेदना के थे। अश्रुपात होनेके पश्चात् उनका चित्त कुछ सावधान हुआ। फिर वे

नेताजीको उसी बरामदेमें बैठा छोड़ पासवाले भवानीके मन्दिरमें प्रार्थनाको चले गये ।

जिस समय शिवाजी मन्दिरमें जगज्जननी भवानीसे अपने कष्ट निवारणकी प्रार्थना कर रहे थे नेता बरामदेमें बैठे बैठे अबतक अच्छी तरहसे याद आनेवाली अतीत घटनाओं तथा अज्ञात भविष्य पर विचार कर रहे थे। घोड़े पर लम्बा तथा कठिन सफर करनेसे वे थक भी गये थे, कारण कि घोड़ेकी सवारीमें वे शिवाजीके समान अभ्यस्त नहीं थे। उनकी इच्छा अब सोनेकी थी, परन्तु अपने विचारमें वे ऐसे उलझ रहे थे कि सोनेकी इच्छा रहने पर भी वे सो न सके। नींद भी बड़ी प्रबल होती है। इतना होने पर भी कभी कभी वह अपना अधिकार जमानेका उद्योग करने लगती थी। जगानेवाले विचार तथा स्वप्न घबराहटसे एक दूसरेके बाद लगातार नेताजीके मनमें घूमते रहे। उधर नींद भी अपना चमत्कार दिखानेका यत्न करने लगी। नेताजी चैतन्य तो थे परन्तु मानसिक विषयोंके अतिरिक्त उनका चित्त किसी बाह्य विषयमें न था। इससे वे न तो पूर्णतया जागते ही कहे जा सकते थे, न सोते।

"उन्हें उस समय देख पड़ा कि चन्द्रमा निकला और चांदनी उस सम्पूर्ण दृश्य पर फैल गयी, जिससे उनके आसपासकी आधी टूटी फूटी इमारतोंकी सफेद दीवारें सङ्गमरमरको तरह चमक उठीं। उनकी दृष्टि एक छोटेसे मन्दिर पर पड़ी जिसके एक छेदमेंसे एक कृष्ण सर्प बाहर निकला और उसने अपना फन उठाया। परन्तु वास्तवमें क्या वह कृष्ण सर्प था? ज्योंही नेताजीने उस पर दृष्टि जमा कर ध्यानसे देखा तो उन्हें विदित हुआ कि वह कृष्ण सर्प नहीं था किन्तु एक मनोहर हाथ था जो अगणित रत्नोंसे अलङ्कृत था तथा चन्द्रमाके निर्मल प्रकाशमें चमचमा रहा था। वह हाथ उनको अपनी तरफ आनेका संकेत कर रहा था। तुरंत ही उनके सामने जगद्धात्री भवानीकी अष्टभुजी मूर्त्ति प्रकट हो गयी, उसके सिर पर अतीव सुन्दर मुक्ता गुंफित अलंकार सुशोभित थे, छाती पर रत्नोंके हार थे और

मस्तक पर रक्तवर्ण तिलक था। भवानी दृष्टि जमाकर नेताजीको देख रही थी मानो वह उनके हृदयके सम्पूर्ण मर्म्मको (उस मर्म्मको जो उनके गंभीर हृदयकी तलीमें स्थित था) न झपकनेवाली दृष्टिसे अपने विशाल नेत्रों द्वाराप्रत्यक्ष देख ही रही थी।

भवानीने कहा ;—

"मैं भलीभांति जानती हूं कि यद्यपि तू एक मामूली मनुष्य ही है तथापि महाराष्ट्रके उद्धारके महत्कार्य्यमें, शिवाजीके साथ सम्मिलित होनेके योग्य है। तुम्हारा मित्र मेरे मन्दिरमें यह प्रार्थना कर रहा है कि मैं इस कठिन समयमें उसकी सहायता करूं। मैं अवश्य उसकी सहायता करूंगी। कल मुझे बलिदान देकर अपना कार्य्य प्रारम्भ करो और फिर इस मन्दिरके सभा मण्डपके नीचे गड्ढा खोदो जो तुमको प्राप्य होगा अवश्य मिल जायेगा।"

इतना कह कर भवानी अदृश्य हो गयीं। नेताजी उठे और अपनी आंखें मलने लगे। वे बड़ा आश्चर्य्य कर रहे थे कि यह उन्होंने जाग्रत अवस्थामें देखा या स्वप्नकी दशामें ? वे विचारते थे कि यह उन्होंने ध्यानमें देखा था या प्रत्यक्ष। वह मन्दिर जिसके बिलसे कृष्ण सर्प निकला था अब भी उनकी आंखोंके सामने था, बिल भी ज्योंका त्यों था।

इतने हीमें शिवाजी मन्दिरके भीतरसे भवानीकी प्रार्थना करनेके पश्चात् बाहर निकले और उन्होंने नेताजीसे कहा,—

प्रार्थनाके समय भवानीने मुझे आशा देकर मेरे चित्तको धैर्य्य तथा सन्तोष तो दिया परन्तु इसके अतिरिक्त कोई स्पष्ट उत्तर न मिला। तुम्हीं मेरे दुःखको किसी भांति छुड़ाओगे। निश्चय ही भवानीकी यह इच्छा है कि तुम पुर्तगीजोंके किला थाना पर आक्रमण करो और वहांसे मेरे वीर मावली लोगोंके लिये शस्त्र प्राप्त करो। यदि तुम इस कार्य्यके सम्पादनको बद्धकटि होते हो तो मैं अपने पांचसौ अनुयायी तुम्हारे अधिकारमें देता हूं। कहो तुम्हारी इच्छा क्या है ?

"मेरा कहना यही है कि मैं सदैव आपकी आज्ञाको देवाज्ञाकी तरह मानूंगा परन्तु उस समय जबकि आप मन्दिरमें विनय कर

रहे थे तब एक चमत्कार हुआ, पहले उसे सुन लीजिये।" यह कहकर नेताजीने भगवतीका दर्शन वृतान्त आद्योपान्त सुनाया। शिवाजी उसे उत्सुकता तथा ध्यान पूर्वक सुनते रहे। जब वे सम्पूर्ण वृतान्त सुन चुके उन्होंने जोरसे कहा;

"न जाने प्रातःकाल कब होगा? मेरा अधैर्य्य एक एक क्षण वर्ष भरका कर देगा और प्रातः कालकी पहिली प्रभा उदय होने पर हम लोगोंको भवानीको बलि दान भेट करनेका अवसर मिलेगा। भवानीकी आज्ञाका अनुसरण हमको पग पग पर करना चाहिये। अच्छा, अब जय विश्वनाथकी, जाओ, यदि तुम्हें निद्रा आ सकती हो तो सोओो। मुझको किसी प्रकार नींद आना असम्भव है।"

तृतीय परिच्छेद।

—*:*—

"गुप्तकोष"

प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो देवोऽपि तं लङ्घयितुं न शक्तः।
तस्मान्न शोचामि न विस्मयोमे यदस्मदीयं नहितत्परेषां॥
पञ्चतन्त्र॥

प्रातःकाल तड़केही एक भैंसा और बकरा भवानीको बलिदान चढ़ाया गया। बलिदान समाप्त होनेके पश्चात् ही शिवाजीने उन मजदूरोंमेंसे, जोकि दुर्गकी मरम्मत करनेमें लगे हुए थे कुछ आदमियोंको अपने साथ चलनेका हुक्म दिया। सब लोग उसी मंदिरमें गये जिसका वर्णन नेताजीने किया था। जब ये लोग उसे देखते हुए वहां स्थित थे एक विशाल कृष्ण सर्प मंदिरके एक छिद्रसे निकल कर बाहर आया तथा क्रोधका कोई चिह्न प्रकट किये बिना शांत

भावसे धीरे धीरे एक ओर चला गया। यह उत्तम शकुन विचारा गया।

शिवाजीने अपने मित्र नेताजीके कानमें धीरेसे कहा, "कदाचित् यह कृष्ण सर्प भवानी ही हों तो क्या आश्चर्य ?

मजूदर लोग बताये हुए स्थान पर खोदने लगे और बहुत समय तक वे लोग बिना किसी परिणामके खोदते रहे। उन लोगोंने कई हाथ गहरा गड्ढा खोद डाला परन्तु मिट्टीके अतिरिक्त और कुछ न पाया। अंतमें एक मजदूरका फावड़ा किसी कड़ी और ठोस चीजसे टकराया। कारीगरोंके मुखियाने शिवाजीसे कहा:—

"आगे खोदनेका प्रयत्न करना व्यर्थ ही है, कारण मट्टीकी तह सारी खोद डाली गयी और अब पहाड़के ठोस पत्थर निकल आया। विशेष काम तब तक नहीं चल सकता जब तक कि पत्थर सुरंग लगा कर बारूदसे न उड़ा डाला जावे।"

ठीक इसी क्षण मजदूरोंमेंसे (जो गड्ढेमें खोद रहे थे) एकने जोरसे पुकार कर कहा, कि यहां केवल पत्थर ही नहीं किन्तु लोहा भी है। इतना कह कर उसने फावड़ेसे जो चोट लगायी तो साफ तौर पर किसी धातुमें लगनेकी ध्वनि हुई। देखने पर जान पड़ा कि वहां एक लोहेकी कड़ी है। तली साफ करने पर साफ देख पड़ा कि वह पहाड़का पत्थर नहीं मरमर पत्थरकी भारी चौकोर पटिया है! कड़ी वास्तवमें उस पटियेके उठानेके अभिप्रायसे लगायी गयी थी। इसलिये उस कड़ीमें लोहेकी दृढ़ सांकल बांधी गयी तथा बीस ताकतवर मजदूरोंने गड्ढेके ऊपरसे उसे खींचना प्रारंभ किया। पटिया धीरे धीरे ऊपर उठी। उसके नीचे एक छोटी कोठरी दिखाई पड़ी, इस कोठरीमें लग भग बारह घड़े रखे थे। जिस समय मजदूरोंने आगे बढ़ कर बरतन उठाये उनके वजनने यह बता दिया कि वे खाली नहीं हैं। उसी कोठरीसे चांदीकी एक निहायत खूबसूरत संदूकची भी निकली जिस पर निहायत उम्दा नक्काशी की गयी थी। ऊपर और चारों ओर भी बहुत बढ़िया काम था जो कारीगरकी मिहनत और कलादीका पता दे रहा था। उसकी सजधजसे यह जाहिर होता

था कि वह हिंदुस्थानके पुराने मुसलमान बादशाहोंके जमानेकी बनी हुई थी। इसमें कोई शक नहीं कि वह संदूकची बादशाही महलके आरामयके सामानमेंसे थी।

शिवाजीने उन बरतनों और उस सन्दूकचीको अपने खास कमरेमें ले आनेका हुक्म दिया जहां वे और नेताजी उनकी जांच करनेको आगे बढ़े। बरतन गिनने पर ग्यारह निकले। उनमें मुंहसे ले कर तली तक सिक्के भरे थे। उन सिक्कों पर पुराने बादशाहोंका नाम खुदा था जो दिल्लीमें बाबरसे (जिन्होंने हिन्दुस्थानमें विख्यात मुगल राज्यकी नीव जमायी थी) पहले राज्य कर चुके थे बरतनोंमेंसे छःमें तो रुपये थे, शेष और पांचमें अशर्फियां मुंहतक भरी थीं। चांदीकी खूबसूरत सन्दूकचीमें अनमोल जवाहिर थे। उसमें हीरेकी एक बहुत बढ़िया कलगी बड़े बड़े मोतियोंकी एक माला और बहुतसे बिना जड़े और बेतराशे हुए जवाहिर थे। शिवाजी तथा नेताजीने इस सम्पूर्ण कोषको देखा। लालचकी दृष्टिसे नहीं, परन्तु शुद्ध हृदयके सरल भावसे।

आह, सुवर्ण तथा रत्नको देखकर बड़े बड़ोंके मुंहमें पानी आ जाता है, नीयत बदल जाती है। देखना तो दूर है, सुन कर ही दिल लोट पोट कर कबूतर बन जाता है। इतना कोष दृष्टिगत हो और हाथमें हो तो फिर क्या कहना है? प्रिय पाठक गण! हमारी जननी भारत वसुंधरामें अनेकानेक ऐसे धीर रत्न तथा निश्चल वृत्ति व्यक्ति हो गये हैं तथा अब भी हैं जिनकी वृत्ति कैसी भी कठिन परीक्षा हो कभी विचलित नहीं हुई। निस्संदेह ऐसे ही मनुष्य हैं, उनका ही जन्म लेना सार्थक है।

शिवाजीने कहा,—"क्या तुम यह विचार रहे हो कि इन बरतनोंमें जो सोना चांदी तथा रत्न इत्यादि हैं वह कुछ कम है? नहीं, नहीं कदापि नहीं; जो कुछ उनमें हैं वे बहुत मूल्यवान् हैं। मेरे साहसी मावली लोगोंके लिये शस्त्र देने तथा पर्वतीय दुर्गोंकी मरम्मत करनेको ही नहीं, उन बरतनोंमें जो कोष है वह "महाराष्ट्रके उद्धार" के लिये किसी भांति कम नहीं है।

शिवाजीने तब अपने पास एक जौहरीको बुलवाया जो दुर्गमें

रहता था तथा जवाहिरोंकी कीमत जांचनेमें अत्यंत प्रवीण था। वहां आने पर वह सुवर्ण तथा रौप्य कोषको आश्चर्य्यकी दृष्टिसे देखता रहा। परन्तु जिस समय उसे जवाहिरोंकी संदूकची दिखायी गयी वह क्षण भर मुग्धावस्थामें पाषाणवत् हो गया। उसकी आंखें उन जवाहिरोंको देखकर चकरा गयीं, वाक्‌शक्ति स्तम्भितसी होती जान पड़ी। अन्तमें वह अपनी वाक्‌शक्तिपर पुनः अधिकृत हुआ और उसने कहा :—

"यह हीरेकी कलगी दिल्लीके बादशाहके सरपेचको आरास्ता करती रही होगी और यह बेशक़ीमत मोतियोंकी माला निश्चय ही बादशाहने अपनी अत्यन्त प्रिय बेगमोंमेंसे किसीके लिये तय्यार करायी थी"

शिवाजीने, इसकी कीमत जांचनेको कहा तथा सम्पूर्ण कोषकी कीमत भी पूछी। जौहरीनेअत्यन्त सावधानी पूर्वक मामलेके ढङ्गसे काम करना प्रारम्भ किया। उसने रकमों तथा बेतराशे और बे जड़े हुए जवाहिरोंकी कीमत चमड़ेकी वसलीपर चढ़ाकर जोड़ लगाया। मोतियोंकी माला तथा हीरेकी कलगी इत्यादि प्रत्येक वस्तुका मूल्य उसने एक लाख रुपयेसे ऊंचा बतलाया और सुवर्ण तथा रौप्य मुद्रा सहित सम्पूर्ण कोषके दस लाखसे ऊपरका कहा।

कोषकी कीमतकी जांच कराकर शिवाजीने जौहरीको उचित पुरस्कार दे विदा किया तथा पुर्तगीज सौदागरको बुलानेका हुक्म दिया। एम० डि सौजाने जिस तीव्र दृष्टि तथा रुचिसे हीरेकी कलगी तथा मोतियोंकी मालाको हाथमें लेकर जांच की और उस चांदीकी सन्दूकचीके दूसरे पदार्थोंको देखा, उससे स्पष्ट जान पड़ा कि वह भी जवाहिरोंकी जांचमें बड़ा पटु था। शिवाजीने उससे अपना मन्तव्य प्रकट किया कि जिन वस्तुओंकी उसने बहुत प्रशंसा की है, यदि वे वैसे ही होंगे तो मैं उनको मोल ले लूंगा। उन्होंने पूछा कि उनके बदलेमें तुम नक़द रुपये चाहते हो या जवाहिर? दोनोंमेंसे जिसमें तुम कीमत पाना पसन्द करते हो वही तुम्हें दिया जाय? डिसौजाने उत्तर दिया कि मैं हीरेकी कलगीको आधे लाख रुपयेको एवजमें दे दूंगा। परन्तु जब उसने देखा

कि शिवाजी उस वस्तुके यथार्थ मूल्यसे भलीभांति परिचित हैं तब बहुत देरतक उसी कीमतपर जमे रहकर अन्तमें वह एक लाखमें ले लेनेको राजी हो गया। उसने यह भी कहा कि यदि आपको और अधिक शस्त्रोंकी आवश्यकता हो तो हमारी कम्पनीका एक दूसरा जहाज दो तीन महीनेमें आने वाला है, जिसके शस्त्रोंको मैं उस मोतियोंकी मालासे बदल लेनेको राजी हूं।

चतुर्थ परिच्छेद।

---o:o---

तोरनासे यात्रा।

शत्रोत्साह समान्धो यत्रालस्य विहीनता।
नय विक्रम संयोगस्तत्र श्रीरचला ध्रुवम्॥

राजनीति।

इन सब बातोंका उचित प्रबन्ध कर शिवाजीने गम्भीरतासे जो उनमें स्वाभाविक थी, तुरन्त ही तोरनासे रवाना होनेका इरादा किया। शिवाजी उद्योग तथा यत्न सदैव अपने अनुयायी मावली लोगोंके उत्साह बढ़ानेमें होता था। अपने समाजको सुधारना ही उनका कर्त्तव्य था। धन, बल, परिश्रम, साहस तथा प्रेम जहां जो उन्हें मावलियोंका उत्साह बढ़ानेको उपयोगी जान पड़ता था वहां वे उसका उपयोग करते थे। निस्सन्देह सबके सुधारसे अपना सुधार है। सबके कल्याणसे अपना कल्याण है तथा सबके हितसे अपना भी हित है, यही शिवाजीका मूलमन्त्र था। इस विषय पर विशेष समय तक न ठहरकर हमको अपने प्रबन्धके प्रवाह पर लौटना आवश्यक है।

जो मावली लोग उनके लिये प्राण तक तृण प्राय समझते थे, उनकी आज्ञा वेद वाक्यके समान मानते थे और उनकी ओरसे युद्धके लिये सदैव उत्सुक तथा बद्ध कटि रहते थे, उनको ही शस्त्रोंसे सुसज्जित करनेको शिवाजी धाना ले जानेकी इच्छा कर रहे थे । लौटते समय कल्याण होते हुए थाना तथा त्र्यम्बकराव और उन मनुष्योंको-जो श्रीवर्द्धनमें घिर रहे थे शीघ्र ही छुड़ाना था । ऐसी बातें शिवाजीके मनमें घूम रही थीं ।

तोरना छोड़नेके पहले उन्होंने कारीगरोंको मुखियाके बुलावाया तथा कारीगरोंकी सब मजदूरी चुका दी ; साथ ही एक महीनेकी उन लोगोंको पेशगी दे दी गयी । उन लोगोंको पास वाले मोरबदके पर्वतको दृढ़ता पूर्वक भली भांति सुरक्षित करनेकी आज्ञा दी गयी जो कि इस समयसे राजगढ़ नामसे पुकारा जाने तथा उनका प्रधाननगर अर्थात् राजस्थान होनेको था ।

सब कार्य निबटानेके पश्चात् शिवाजी तथा नेताजी छिसौजाको साथ ले कर पहाड़ परसे उतरे और अपनी यात्रा पर जितना शीघ्र हो सका, आगे बढ़े । उनको अपने साथी पोर्तगीज सौदागरके कारण घोड़ोंकी चाल धीमी रखनी पड़ी, क्योंकि वह रत्नोंकी परीक्षा करनेमें जैसा प्रवीण था वैसा घोड़ेको सवारीमें नहीं था और सदैव अपनी जानकी जोखिम समझता था । उस समय जबकि वे लम्बे लम्बे पहाड़ी ढालोंको उतरते थे, छिसौजाके प्राण जीवन तथा मरणके मध्य भागमें लटक रहे थे । संकीर्ण मार्गोंमें, पहाड़ी लोग उसे डोलीमें सवार कराकर ले चलते थे और ऐसा करनेसे यात्रामें भी विलम्ब नहीं होता था और छिसौजाको भी आराम करनेका समय मिल जाता था । कहीं कहीं ऐसा मार्ग भी आ पड़ता था जहां घोड़ेकी सवारीके अतिरिक्त दूसरा यत्न ही न था । यात्राके प्रारम्भमें, उनको मुलशी होकर गौरीगढ़को लौट उसी मार्गसे होकर जाना पड़ा जिससे कि वे यहां आये थे । फिर वे बायीं ओर नीचे अम्बावनी घाटीमें घूमे और कुछ दूरतक ऊबड़ खाबड़ रास्ते और खेतोंमें होते हुए उस समय तक चले गये

जब तक बम्बईसे पूना जानेवाली सड़कपर, जिसके किनारे ही चौक ग्राम स्थित है, न पहुंच गये ।

यह सड़क तथा चौकग्राम हमारे पाठकोंसे अपरिचित नहीं है। नेताजीको अपनी बाल्यावस्थाका संपूर्ण दृश्य मानो वह कलहीकी बात हो, स्मरणहो आया और क्षणभरमें नेत्रोंके सामने—ध्यानके नेत्रोंके सामने घूम गया। यह वही स्थान है जहां उनकी बाल्यावस्था का मनोहर समय व्यतीत हुआ था। यहींसे वे गङ्गाके साथ गये थे और उनके विषम समयका प्रारम्भ हुआ था।

जन्मभूमिका प्रेम किसको नहीं होता? मनुष्य तो मनुष्य है, पशु पक्षी भी जन्मभूमि पर अतुल स्नेह रखते हैं। राजा प्रजा, धनी निर्धन, सुखी दुखी सभीका अपनी जन्मभूमि पर स्नेह होता है। जन्मभूमि नेत्रोंमें कैसी सुन्दर और चित्तको कैसी सुखद तथा आल्हादकारी होती है, सो सब जानते हैं। जन्मभूमिका स्मरण होते ही रोमाञ्च हो जाता है; कण्ठ गद्गद हो जाता है तथा स्नेहके ठण्डे अश्रु नेत्रोंसे टपकने लगते हैं। लोग जन्मभूमिसे कैसा प्रेम करते हैं सो हम अपनी लेखनीसे लिखनेमें असमर्थ हैं। यदि कोई सुखद पदार्थ या विषय पृथ्वीपर है तो जन्मभूमि ही है।

नेताजी जन्मभूमिमें पहुंचकर अपने पिताके यहां एक रात्रि ठहरनेका आनन्द प्राप्तकर सके और एक बार पुनः आधी रात्रि उनको अपने माता पितासे वह वृत्तान्त कहते बीत गयी जो उन्होंने (माता पिता)से और घाटके ऊपर राजमच्छी पहुंचनेके लिये पुलकित हृदयसे विदा होनेके उपरान्त देखा था। शिवाजीकी नेताजी पर अतीव सहानुभूति देखकर (नेताजीके) वृद्ध माता पिताके हृदय प्रेमसे गद्गद हो गये। शिवाजी पर उनका अतीव स्नेह तथा अनुराग बढ़ा, कारण उनके पुत्रका उत्तम भविष्य शिवाजीने एक प्रकारसे कह ही दिया था। शिवाजीने अपने दलमें नेताजीके बचपनके उन साथियोंको भी भरती कर लिया जो उस उद्धारके कार्य्य में सम्मिलित होनेको उत्सुक थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल वे चौकसे पानवेलको रवाना हुए। वाफ

मैदानमें छः कोस तक चले जाने और थोड़ी देर ठहरनेके पश्चात् थानाकी खाड़ी पार करनेको नाव पर सवार होकर आगे बढ़े। दोपहर होनेके पहले ये वहां पहुंच गये। गौरीगढ़से इधर चलनेके पहले शिवाजीने अपने जासूसोंको महाराष्ट्रीय युद्ध संकेत "हर, हर, महादेव, डोंगरास लविला दिवा" कह कर चारों ओर भेज दिया था। यह संकेत दावानलकी तरह चारों ओर फैल गया। तमाम मावलोंमें (घाटोंकी तराइयां मावल नामसे पुकारी जाती हैं) वहांके वे बहादुर, परन्तु सीधे किसान चेताये गये जिन्होंने "मावलो" नामको भारतवर्षके इतिहासमें अपने साहस तथा स्वामिभक्तिसे प्रसिद्ध तथा अङ्कित कर दिया। ज्योंही संदेशा एकसे दूसरी तराईमें फैला त्योंहीं प्रत्येकने अपने पड़ोसीसे कहा कि शिवाजी पानवेल होते हुए चौकसे थानाको आ रहे हैं और वे सब लोग जो उनके दलमें सम्मिलित होनेको उत्सुक थे हथियार सहित या खाली हाथ जैसे बन पड़ा मार्गमें अथवा थानासे लगभग डेढ़ कोस परशिकके टूटे किलेमें (जो कल्याण नदीके मुहाने पर है) उनसे मिलनेकी प्रतीक्षा करने लगे। शिवाजीके दलमें सम्मिलित होनेका मावली लोगोंको इतना उत्साह तथा अनुराग था कि बहुत लोग सुबह होनेके भारी समय तककी अपेक्षा नहीं कर सके। वे उसी अंधेरी रात्रिमें चौककी ओर तुरन्त ही चल दिये कि जिससे जितना शीघ्र हो सके अपने उस वीर हितेच्छुक व्यक्तिसे मिल जावें जिसे वे अतुल श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे और प्रेम करते थे। शिवाजी भी उन नेताओंमें थे जो अपने हानि लाभ धन तथा प्राण तकको भी कुछ न समझ कर अपने देशवासियोंके हित करनेहीको अपना कर्त्तव्य समझते थे। यही कारण था कि सब लोग उनकी आज्ञाको वेदवाक्य समझ कर पालन करनेको सदैव उद्यत रहते थे।

वे मावली जो चौकमें शिवाजीके साथ होनेको न पहुंच सके या नहीं पहुंच सकते थे, या उनके चौकसे थानाको जाते समय मार्गमें सम्मिलित नहीं हो सकते थे, दूसरे दिन परशिकके किलेमें पहुंचनेको तय्यार हुए। वहां तीन सौ अश्वारोही भी उपस्थित थे जो "बारगीर" के नामसे प्रसिद्ध थे। ये लोग तीन सौ बढ़िया

घोड़ों पर सवार थे जिन्हें शिवाजीने कुछ समय पहले सूपाके किलेसे पाया था। इन लोगोंको शिवाजीने युरोपसे आये हुए नवीन शस्त्र देने और पिछली चढ़ाईमें सम्मिलित होनेको वहां बुलाया था। मावली लोगोंकी अपेक्षा ये लोग कई बातोंमें बढ़ चढ़े थे। वे गलेमें चांदी सोनेकी जंजीरें, उंगलियोंमें अंगूठियां तथा कानोंमें बालियां पहने हुए थे। बारगीर हाथोंमें लम्बे बर्छे लिये हुए थे और रकाबोंमें पैर जमाये घोड़ों पर बैठे बहुत ही भले जान पड़ते थे।

मावलियोंके झुंडको जो चौकमें ही एकत्र हो गया था, उस खाड़ीके पूर्व किनारे छोड़ तथा यह हुक्म देकर कि वे लोग परबिकके किलेको चले जावें, शिवाजी बीस आदमी रक्षाके लिये लेकर नेताजीके साथ डिसौजा द्वारा नावमें बिठाये गये जिसने खाड़ी पार कर उन सबको थाना पहुंचा दिया। नेताजीने इस समयसे पहले कभी कालसिटके टापू पर पैर नहीं रखा था। उन्होंने पुर्तगीज शासनाधीन इस नगरकी क्रमशः उन्नतिशाली दशाकी प्रशंसा की। हिन्दुओंके मन्दिरों, तथा मुसलमानोंकी बहुतसे आदमियोंसे भरी मसजिदोंके सिवा वहां पहले पहल ईसाइयोंके गिरजे देखे जिनके शिखर आकाशमें उठ रहे थे।

ये लोग सीधे किलेको चले गये जो "रेइस मेगस" के नामसे पुकारा जाता था तथा जिसमें डिसौजाने अपना सामान जमा कर रखा था।

शिवाजीने सावधानीसे उस सामानकी जांच की और उसे वैसा ही उत्तम पाया जैसा डिसौजाने कहा था। उसके बाद बहुत देर तक कीमतकी कमी बेशी पर बहस होती रही जो उतने बड़े मामलेमें होना चाहिये थी। शिवाजी दाम कुछ घटाते थे और डिसौजा बढ़ाता था। इस रद्दोबदलका केवल यही एक परिणाम हो सकता था कि या तो शिवाजी डिसौजाके कहे हुए मूल्य पर राजी हो जाते या वही इनके कहने पर जमता। कभी कभी शिवाजी चाहे जितना मूल्य डिसौजा मांगता देने पर उद्यत हो जाते वे जानते थे कि कई सहस्र मावली सुबह खाड़ी

के दूसरी ओर उनके आनेकी प्रतीक्षा करते होंगे। शिवाजी नहीं चाहते थे कि उन लोगोंके दाहिने हाथमें बढ़िया तलवार और बायेंमें मजबूत ढालें देकर और भलीभांति शस्त्रोंसे सुसज्जित कर अपने देशके लिये वे जो कुछ कर दिखा सकते थे उसे दिखानेका अवसर बिना दिये आनेके समयकी तरह खाली हाथों वे तराइयोंमें लौटजाने पावें। प्रत्येक मूल्य पर वे उन शस्त्रोंके प्राप्त करनेके इच्छुक थे। यदि चालाक डिसौजाको शिवाजीके भारी मन्तव्यका पता लग जाता तो कदाचित वह पहले कहे हुए मूल्यका दुगुना मांगता और पा भी जाता। उसने कम्पनीके लिये वह हीरेकी कलगी और बीस बिना तराशे जवाहिर लेकर अपने सामानके अच्छे दाम पा लिये शेष शस्त्र जो दो तीन महीनेके समयमें जहाज द्वारा आनेवाले थे उन्हें वह मोतियोंकी मालासे बदलने पर राजी था। उसने कहा कि मैं शीघ्र ही उस सामानके युरोपसे आनेकी प्रतीक्षा करता हूं।

सौदा ठीक हो जानेपर डिसौजा और फौर्ट रेइस मेगसके कप्तान, शिवाजी तथा नेताजीको शहरका सैर कराने ले गये। उन्होंने केथीड्रल सेण्ट जानका गिर्जा और जैसूट आगस्टाइन केपूशिन तथा डोमिनिकेन कन्वेंट (मठ) देखीं। फिर वे रेशम तथा कपासके करघोंको देखकर लकड़ीके सामानके कारखाने देखने गये जहां आबनूसकी बनी हुई मेजों तथा चौकियों पर हाथीदांतका काम बहुत खूबसूरती तथा कारीगरीसे किया गया था। नगरके बाहर उनको शस्य पूर्ण स्थल देख पड़ा। उन्होंने बहुत सी हवेलियां देखीं, जिनमें वहां खेती करनेवाले करारोच लोग रहते थे। वहां चारों ओर धन और उन्नति तथा सुडौल कामके अच्छे चिन्ह प्रकट हो रहे थे जैसा कि उन्होंने अपने आपत्ति ग्रस्त देशमें कभी नहीं देखा था। पश्चात् वे उस मकानमें पहुंच गये जो उनके स्वागतके लिये ठीक किया गया था। वहां शिवाजी और नेताजी दोनों मित्र एकांतमें थे। शिवाजीने अपने मित्रसे कहा :—

"अहा, यह धनसे भरा हुआ उत्तम नगर विशेष दृढ़ता

पूर्वक सुरक्षित भी नहीं है। मुझे पश्चात्ताप होता है कि मैं अपने प्रथम विचारको पूरा न कर सका कि तुमको मावलियोंके साथ भेजकर इसे ले लेता। उस दशामें हमको बिना दाम केवल यश ही नहीं किन्तु इस नगरकी भारी लूट हाथ लगती।"

नेताजीने उत्तर दिया—"परन्तु यदि हम एक ऐसे नगर पर बिना कारण आक्रमण करते जिसके निवासियोंने हमें कुछ भी कष्ट नहीं पहुंचाया तो हमारे ऊपर क्या परमात्मा अप्रसन्न न होता? क्या हमको इसका बदला नहीं मिलता?

"ऐसे संकीर्ण विचार हमारे महत् कार्यकी पूर्ति न होने तक न आना ही अच्छा है। किन्तु ऐसे विचार मुझे इस स्थान पर आक्रमण करनेसे रोक नहीं सकते। यदि मेरी अधिष्ठात्री भवानी मेरे चित्तमें ऐसे विचार भर देती तौभी मैं ऐसे कामसे न रुकता। सुनो, जो कोई विषय महाराष्ट्रके लिये उपयोगी तथा हित कारक है वही हमको कर्तव्य है। "शिवाजीने उत्तर दिया।

नेताजीने कहा कि मेरे गुरु मठेरन शिखरस्थ योगिराजकी इय शिक्षा नहीं है। उनका वाक्य यह है "सत्य तथा न्यायके सदैव एक सा रहनेवाले अटल नियमोंको जो भङ्ग करता है उससे महान् शक्तिशाली देव गणोंकी सेवा कदापि होना सम्भव नहीं है। वे विषय जिनकी नीव असत्य तथा अन्याय पर आश्रित है कदापि बहुत कालतक स्थिर नहीं रह सकते। कारण इसीसे बीजापुर तथा मुगल साम्राज्यका धन तथा बल उनको विनाशसे न बचा सकेगा। शीघ्र ही उनका नाश होगा।

शिवाजीने कहा;—"ठीक है मैंने भी ऐसी ही शिक्षाप्रद बातें श्रीस्वामी रामदास तथा अन्य महात्माओंके मुखसे सुनी हैं परन्तु महाराष्ट्र तथा उसके देवताओंके उद्धारके हेतु मेरी आत्मा उत्साहसे कभी कभी ऐसी प्रज्वलित होजाती है कि सम्पूर्ण दूसरे भाव उसमें गिरकर भस्म हो जाते हैं। उस महत् परिणामको प्राप्त करनेके लिये मैं अपने तथा स्नेह और सम्बन्ध युक्त स्वजनोंके जीवनको लगा देनेमें कुछ भी नहीं हिचकता। उस विषयको देखनेपर

तो वह सब कुछ नहीं है। यदि आवश्यकता आ पड़े तो मानुषिक तथा अलौकिक सभी विचारोंको उस कार्य सम्पादनके लिये भंग करनेमें मुझे तनिक संकोच न होगा।"

"परन्तु किस प्रकार?" नेताजीने पूछा "क्या देवगण उन अटल नियमोंके भङ्ग करनेसे सन्तुष्ट हो सकते हैं जिनको उन्होंने स्पष्ट भावसे सम्पूर्ण मनुष्योंके हृदयों पर अङ्कित कर दिया है?"

"मैं तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर नहीं दे सकता" शिवाजीने हँसकर कहा "परन्तु यदि प्रसङ्ग वश तुम उस उग्र अङ्कशसे उत्तेजित किये जाते जिससे मेरी आत्मा की जाती है तो तुम भी मेरी ही तरह विचारते, कहते तथा अनुभव करते। अस्तु (विशेष नम्र स्वरसे) मैं तुमको तथा तुम्हारे विचारोंको मानकी दृष्टिसे देखता हूं और सदैव उनका आदर करता हूं; यदि तुमको अपने भावमें नहीं ला सकूंगा तो कभी ऐसा काम करनेको न कहूंगा जो तुम्हारे गुरु महात्मा योगिराजकी आज्ञाके विरुद्ध होगा।"

इतनी बात चीत होनेके पश्चात् रात्रिके विश्रामके हेतु दोनों मित्र पृथक हुए।

पञ्चम परिच्छेद।

———०:०———

"बीजापुरका खजाना।"

यस्य यस्य हियो भावस्तेन तेन समाचरेत्।
अनु प्रविश्य मेधावी क्षिप्रमात्म वशं नयेत्॥
राजनीति।

दूसरे दिन तड़के ही मरहठोंकी सेना घाटीके पार मढ़ुंकाली गयी, जहां लगभग नौ दस हजार आवली और तीन सौ कास्मीर

परखिकके किलेमें इकट्ठे थे और जिन्हें शिवाजीने ठहरनेकी आज्ञा दी थी। इन लोगोंका बदन नाटा था परन्तु ये मज-बूत थे और इनकी भरी हुई पिण्डलियां यह प्रकट कर रही थीं कि उनको अपने जीवन समयमें लम्बे लम्बे पहाड़ी ढाल चढ़नेका सदैव अभ्यास रहा है। इन लोगोंने हर्षकी घनघोर ध्वनिसे शिवाजी तथा नेताजीका स्वागत किया। नेताजीको भी ये लोग विशेष आदर तथा स्नेहकी दृष्टिसे देखते थे। उसका कारण यह था कि नेताजी और यवन सेनापति भयानक हबशीसे जो तुमुल युद्ध हुआ था वह वृत्तांत मुहामुंह घःटोंमें ऊपर तथा नीचे चारों ओर फैल गया था। दूर दूर तक उनकी कीर्ति पताका फहरा चुकी थी। नेताजीने उस भारी समूहमें अपने पुराने परिचित मित्र रामाको पहचाना तथा उसे पाकर बहुत ही प्रसन्न हुए। रामाने उनके प्रधान सहचर होनेकी प्रार्थना की जो बिना किसी प्रकारके अटकावके स्वीकार कर ली गयी।

अब प्रत्येक मावली तथा बारगीरको एक लोहेकी ढाल और एक एक बढ़िया फौलादी तलवार प्राप्त हो गयी और वे अपनी तलवारें ढालों पर मारने लगे तो प्रसन्नताके मारे चिल्ला उठे। मानो वे यह प्रकट कर रहे थे कि युद्ध करनेको उनका उत्साह असीम है। और भी अधिक आह्लाद उन चुनीदा चुनीदा लोगोंको था जिन्हें बन्दूकें मिली थीं। वे लोग बन्दूकवालोंकी एक पल्टन बन गये।

"फोर्टरेस मेगस"को (वाचटावर) चौकीके बुर्जपर खड़े हुए सन्त-रीने खाड़ीके दूसरी ओर इस भारी सेनाको युद्ध करनेके लिये उत्सा-हित देखा; उसका चेहरा भयसे पीला हो गया और वह दुर्गके कमाण्डरके पास सूचना देनेको दौड़ा। कमाण्डर भी इस सहसा आक्रमणको देखकर सहमा और उसने अपने थोड़ेसे आदमियोंको हथियार लगाकर तय्यार रहनेका हुक्म दिया।

पीतलकी तोपें मय युद्धके सामान और गोलोंके परखिकके किलेके पास नावपर चढ़ायी गयीं, जो कल्याणसे परे बहनेवाली इरहाब नदीके मुहानेपर है। कुछ मावली लोगोंको तोपें सौंपी

गयीं और उनको बहावको ओर ले जानेका हुक्म दिया गया। साथ ही इसके उन लोगोंको उस भारी तथा प्रधान नगरसे, जो कि उत्तरीय कोकनमें बीजापुरके सूबेदारके रहनेका स्थान था तथा जिसपर आक्रमण करनेका शिवाजी प्रत्यक्ष ही विचार कर रहे थे। तोपें वहांसे कुछ कोस दूर किनारे लगानेको कहा गया। कल्याणको पहले हीसे आपत्ति आच्छादन कर रही थी, कारण कि एक महाराष्ट्र सेना जिसके अधिपति एक योग्य ब्राह्मण आबाजी सोनदेव थ, घेरा डाले पड़ी थी। यद्यपि इस सेनासे वे नगर पर आक्रमण करनेके लिये भलीभाँति दृढ़ नहीं थे तथापि सूबेदार तथा बीजापुरके बादशाहकी बीचवाली खबरोंको रोक कर ही अपने मनको सन्तोष दे लेते थे। सचमुच कल्याणमें घिरे मनुष्य बहुत कम थे परन्तु आबाजी सोनदेवकी अधिकृत सेनाकी अपेक्षा वे हथियारोंसे अच्छी तरह सुसज्जित थे। यदि ये दोनों सेनाएं खुले मैदानमें मिलतीं तो बीजापुर वाले, उस महाराष्ट्र सेनासे जो उसे घेरे थी निःसन्देह प्रबल होते। इस हेतु आबाजी सोनदेवने अपने लशकरके डेरे कलगांवमें लगाये थे जो कल्याण और भोरघाटके बीच वाली सड़कके किनारे स्थित है। वहींसे वे उस प्रदेशके लोगोंको लूटते पीटते और धमकाया करते थे, जो बीजापुरके विरुद्ध उपद्रव मचानेसे निषेध करते थे या मुसलमान तहसीलदारोंको महसूल देते थे। शिवाजीकी इच्छा आबाजी सोनसे सम्मिलित होकर कल्याण पर उग्र आक्रमण करनेको थी। इस हेतु उन्होंने अपनी नवीन सङ्कलित सेनाको "परसिक"से "भोपार"को जो उल्हासके बाँये किनारे तीन कोस उत्तर पर है ले जाकर डेरा डाल दिया। सेनाका प्रधान अङ्ग यहीं ठहरनेको था क्योंकि वे नावें जिनमें तोपें थीं यहीं किनारे घाट पर लगनेवाली थीं। शिवाजी तथा नेताजी तीन सौ बारगीर और पांच सौ पैदलोंको अपने साथ ले प्रधान अङ्गको उसी जगह छोड़ कल्याणवालोंकी निगाहसे बचनेकी नीयतसे चक्कर देकर कलगांवमें आबाजी सोनदेवके लशकरके समीप पहुंचनेको रवाना हुए।

जब वे बाबा मलंग पर्वतके पास पहुंचे तो उन्हें कुछ किसान

मिले जो लकड़ी काट रहे थे। उनसे इन लोगोंने शत्रुका हालचाल जाननेकी चेष्टा की। किसान लोग कल्याणमें जो हो रहा था उसके विषयमें कुछ नहीं जानते थे सो उन लोगोंसे पूछताछ करने पर वहांका हाल मालूम न हुआ। उन लोगोंने कहा कि हम और कुछ अधिक वृत्तान्त नहीं जानते परन्तु तीन घण्टे पहले एक मुसलमानोंका दल, जिसमें लगभग पांच सौ सवार थे अवश्य इधरसे निकला था। उनके साथ कुछ खच्चर भी थे जिन पर बहुत कुछ माल लदा था। शिवाजी तुरन्त ही ताड़ गये कि निःसन्देह वह खजाना ही था जो बाबा मलंगकी बगलसे होता हुआ पानवेलसे चौकको खापोली और भोरघाटमेंसे प्रधान मार्ग पर पहुंच जानेके लिये भेजा गया था। इतना चक्कर देकर जानेका कारण यह था कि उन्हें उधरसे शत्रुकी निगाहमें पड़नेका कुछ भय न था परन्तु सीधे मार्गसे जानेमें उनको आबाजी सोनदेवकी शङ्का था जो बीच हीमें अपना लशकर डाले पड़े थे।

"इस खजानेको बीजापुर तक कभी न पहुंचने देना चाहिये" शिवाजीने जोरसे कहा "नेताजी! तुम इसके पीछे तीन सौ बारगीर लेकर रवाना होओ। मैं तुम्हारे पीछे ही जितना शीघ्र मेरे मावली दौड़ सकते हैं अपने साथ लेकर आता हूं और हम लोग तुमसे बहुत पीछे न रहेंगे।"

क्षण भर भी विलम्ब न कर नेताजी उन बारगीरोंको साथ लेकर रवाना हुए। रामा उनकी बायीं ओर दक्षिणी टट्टू पर सवार था और अपने स्वामीको रास्ता बताता जा रहा था। दोपहरके सूर्य्यकी उग्र धूपमें कठिन दौड़ करने पर पीछा करनेवालोंको आगे जानेवाले सवार दृष्टि पड़ने लगे। पीछा किये जानेवाले तथा पीछा करनेवालोंने ज्योंहीं एक दूसरेको देखा अपनी अपनी चाल तेज की। चौक ग्रामसे तितर बितर होकर नेताजीके सवार जितने उनके थके हुए घोड़े दौड़ सके उतनी शीघ्रतासे आगे बढ़े। अपने शत्रुके निशानोंको देखते हुए ये लोग बढ़े जा रहे थे। इस समय नेताजीको क्षण भर भी अवकाश न था कि वे घोड़े परसे उतर कर अपने मातापितासे मिल सकें। कार्य्य तत्परता उनसे

हृदयपर विशेष रूपसे अधिकार किये हुई थी। साथ ही इसके वे भलीभांति जानते थे कि उनका एक एक पल अनमोल है। आगे जानेवाले बहुत नहीं बढ़ने पाये थे क्योंकि भारी वजनसे लदे हुए खच्चर सवारोंके बराबर तेज नहीं जा सकते थे।

नेताजी अब भलीभांति देख सके कि खजानेकी हिफाजतको साथ जानेवाले हथियारोंसे अच्छी तरह सजे हुए सवार चार सौसे कम नहीं हैं। नेताजी अपने बारगीरोंको लेकर जितने समूह पर आक्रमण करनेका अनुमान कर सकते थे उससे यह विशेष बड़ा था। उन्होंने आक्रमण करनेका विचार थोड़े समय तक रोक देना उचित समझा। नेताजी जैसे साहसी थे वैसे ही बुद्धिमान भी थे। उन्होंने देखा कि तीन सौ बारगीर जो न अच्छी तरह हथियारोंसे सुसज्जित है न सुशिक्षित, बीजापुरके लड़ाके, बीसियों लड़ाई देखे हुए सवारोंके सामने बहुत देर तक नहीं ठहर सकते थे। यदि वे ठहर भी सकते तो बीजापुरके सवारों पर आक्रमण कर उनको वश कर लेना यदि असम्भव न कहा जाय तो कठिन अवश्य था। यदि नेताजीको कार्य्य साधनकी अपेक्षा अपनी कीर्ति प्राप्त करनेकी इच्छा प्रबल होती तो उन्होंने अपने न्यून दलसे शत्रु समूह पर बिना विचारे विजय पानेके उत्साहमें एक दम आक्रमण कर दिया होता। परन्तु उनको अपनी कीर्त्तिकी अपेक्षा अपने देश हितकारी कार्य्यके साधनका अधिक ध्यान था। वे भली भांति जानते थे कि शिवाजी मावली लोगोंको साथ लिये हुए शीघ्र ही इस दृश्यमें आ उपस्थित होंगे तब विजय प्राप्त होना और भी निश्चित हो जायगा और अपने आदमी भी बहुत कम खेत रहेंगे। इस लिये उन्होंने वर्त्तमान समयमें शत्रुके पास न पहुंचनेके लिये आक्रमणको रोक दिया और उनको आगे बढ़नेसे रोक कर देर करनेकी चेष्टा की।

अपने विचारको मनहीमें दबा कर बारगीरोंको झूठ मूठ आक्रमण करनेकी चेष्टा करनेका हुक्म दिया; परन्तु यह भी चेता दिया कि शत्रु दलसे मुठभेड़ न होने पावे। बारगीरोंने अपने घोड़ोंको भागनेवालोंके पीछे कुछ दूर भरपूर तेजीसे उड़ाया परन्तु जब वे

इनकी ओर पीछे लौटे तब ये एक बगल हो गये। शत्रुसे तलवारसे निबटनेकी इच्छा इनकी न थी और अपने बर्छेकी मारकी दूरीसे ये लोग बाहर रहते थे। अपने घोड़ोंको मोड़ कर फिर ये लोग दूर हो गये और शत्रुको बार बार तङ्ग करनेका प्रयत्न करने लगे। इन झूठे आक्रमणोंकी रोकके लिये बीजापुरके रिसालेको बार बार झटकना पड़ा। कई बार उनको लगातार घूमना पड़ा। इससे उनको आगे बढ़नेको चाल न घटी क्योंकि खच्चर आगे बढ़े चले गये और जब बारगीर लौटे तब बीजापुरवाले फिर उनसे जा मिले। वास्तवमें बारगीर उन पर आक्रमण करनेका साहस किसी अवस्थामें कर भो न सकते थे।

नेताजीकी बुद्धि बड़ी विलक्षण थी। उन्होंने इन लोगोंकी चाल रोकने और देर करनेके लिये एक और उपयोगी यत्न विचारा। चौकमें घुसनेसे पहले ही उन्होंने रामासे, जो उनके बायीं ओर घोड़े पर सवार था कहा ;—

"पिछली बार जब मैं इस मार्गसे होकर निकला था तब मेरा ध्यान विशेष कर एक संकीर्ण घाटी पर आकर्षित हुआ था जो खलापुरके ठीक नीचे ही है। खलापुर हमारे सामनेके रास्तेसे ठीक तीन कोस है। हमारे दाहिनो ओर जो पहाड़ है जिस पर मैं अपनी बाल्यावस्थामें जिन दिनों मातापिताके घर पर रहता था चढ़ा करता था। यदि तुम बारगीरोंमेंसे सौ चुनीदा जवान लेकर उस पहाड़की बगलमें होकर शीघ्र चले जाओ तो शत्रुकी निगाह बिना पड़े खलापुर बहुत पहले पहुंच जाओगे और इस घाटीवाले रास्तेको जिसमेंसे बीजापुरवाले आ रहे हैं उधरसे रोक दोगे जिससे सवार और लदे हुए खच्चर घाटीसे निकलकर आगे न आने पावेंगे।"

रामाने कहा कि मैं उस मार्गको भलीभांति जानता हूं। वह उन सौ सवारोंको साथ लेकर जो उसको दिये गये थे, पहाड़की बगलसे जानेको दाहिनी ओर घूमा। वे लोग बीजापुरके सवारोंके पहुंचनेके बहुत पहले उस मार्ग द्वारा खलापुर पहुंच गये। रामाने गांवके आदमियोंको तुरन्त ही बाहर आने तथा घाटीका रास्ता रोकनेमें सहायता देनेके लिये कहा।

रामाने उच्च स्वरसे कहा ;—"शिवाजी बीजापुरके एक सैनिक समूहका पीछा कर रहे हैं जिनकी चाल इस घाटी पर रोकी जाना आवश्यक है। यदि तुम उसविशाल राजाका अनुग्रह प्राप्त करना चाहते हो तो हमारी सहायता करो। शिवाजी अपने मित्रोंको पारितोषिक तथा शत्रुओंको दण्ड देना भली भांति जानते हैं। यदि तुम लोगोंने सहायता देनेसे इनकार किया तो निश्चय जानो वे तुम्हारे गांवको जला कर राख कर डालेंगे।"

पारितोषिककी प्रतिज्ञाके प्रभावसे धमकियोंमें और विशेष कर अपने धर्म तथा देशका हित चिन्तनकरनेवाले वीर शिवाजी पर सहानुभूति होनेसे गांवके अधिकांश अपने हाथोंमें कुल्हाड़ियां लेकर निकले और रामा तथा उसके साथियोंसे घाटीके रोकनेमें सहायता देनेको सम्मिलित हो गये। घाटीमें एक दृढ़ दीवार पत्थर तथा वृक्षोंको काट कर बनायी जानेके थोड़े समय पश्चात् बीजापुरके सवारोंका दल रास्ते पर अतीव शीघ्रतासे बढ़ता हुआ दिखाई दिया जिसके थोड़े ही अन्तरसे पीछे उसका पीछा करनेवाले भी भरपूर बेगसे दौड़ते चले आ रहे थे। जब वे गांवके पास पहुंचे, तो बीजापुरके सैनिक उस कठिन दीवारको देख कर चौंक उठे। अब उनका आगे बढ़ना उस दीवारसे बिलकुल ही रोक दिया गया था उसके ऊपरसे सवारोंका जाना असम्भव था।

घाटीके दोनों तरफ पहाड़ी ढाल बहुत ऊंचे और पथरीले थे जिन पर दाहिने या बायें घूमकर आगे सड़क पर पहुंचना और घाटीमेंसे निकल जाना, सवारोंके लिये किसी भांति साध्य न था। उस दीवारके पास पहुंचनेके समय तक पीछा करनेवालोंसे घिर जानेके भयसे बीजापुरके सेनापतिने अपने सवारोंको बारगीरों पर लौट पड़ने और आक्रमण कर उनको चौंक भगा देनेका हुक्म दिया। नेताजी पहलेहीसे इस समस्याके उपस्थित होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और इस आक्रमणके सम्हालनेको चैतन्य तथा सावधान थे। नेताजीके सवार चक्कर देकर सड़क पर घूम गये और आरामसे पीछे लौटे। बीजापुरके सवार बहुत दूर तक उनका पीछा करनेका साहस न कर सके क्योंकि वे खजा-

नेसे लदे खच्चरोंको अपने पीछे बहुत दूर अरक्षित नहीं छोड़ सकते थे। इसलिये उनको तुरन्त ही ठहरना तथा अपने खच्चरोंकी रखवालीको लौटना पड़ा। साथ ही नेताजी तथा उनके बारगीर भी घूमे और शत्रुके पीछे पीछे चले।

षष्ठ परिच्छेद।

खलापुरका युद्ध।

दुरधिगमः परभागो यावत् पुरुषेण पौरुषं न कृतम्।
जयति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलद पटलानि॥

पञ्चतन्त्र।

इस समयान्तरमें जो दर्शक गांवसे लड़ाई देखनेको इकट्ठे हो गये थे, वे अब मुसलमानी फौजकी सहायहीन स्थिति साफ साफ पहचान गये। बाज लोगोंने यही दृढ़ निश्चय कर लिया जो दल प्रबल होगा उसीमें हमभी जा मिलेंगे। शीघ्र ही दो या तीन सौ मनुष्योंका एक झुंड गांवसे निकला। जिसके मनुष्य तीर कमान या बर्छियोंसे सुसज्जित थे। उन लोगोंने उस लकड़ी या पत्थरोंकी बनी दीवार पर आदमियोंका प्रबन्ध किया जो घाटीका रास्ता रोकनेके लिये तय्यार की गयी थी। बीजापुरकी सेनाको केवल तीरोंकी तीखी मारकाही कष्ट न उठाना पड़ा; उस घाटीके दोनों ओर जो ऊंचे पहाड़ी ढाल थे वहांसे भारी भारी चट्टानें लुढ़कायी जा रही थीं, इससे यवन दलमें और विषम आपत्ति फैल रही थी। यवन सेनापतिको लाचार होकर एक दूत महाराष्ट्र सेनापतिके पास यह कहलाकर भेजना पड़ा कि "हम आपसे मुलाकात करना चाहते

हैं।" नेताजी इस प्रस्ताव पर तुरन्त ही राजी हो गये और यवन सेनापतिसे भेट करनेके लिये दोनों सेनाओंके मध्य समान दूरी पर कुशलतर स्थानमें स्थित हुए।

बीजापुरके सेनापतिका शरीर दृढ़ था। घनी काली डाढ़ी तथा बड़ी बड़ी मूछें थीं। जवानीका जोश भर रहा था। वह नेताजीके समान ऊंचा तो न था परन्तु उसका चौड़ा सीना उसकी ताकतका अन्दाज बता रहा था। चेहरे पर जख्मके दो निशान यह बता रहे थे कि वह घनघोर युद्धोंमें सम्मिलित हो चुका था। उसने नेताजी पर तुच्छताकी दृष्टि डाल कर कहा;—"तुम डरपोक गीदड़ किसान लोग उन शेरोंको पोछा क्यों कर रहे हो जिनका सामना करनेकी तुम हिम्मत नहीं कर सकते हो?"

"और तुम बहादुर शेर, जैसा तुम अपने आपको कह रहे हो" नेताजीने उत्तर दिया "उन डरपोक गीदड़ोंके आगे दुम दबाये क्यों भागे जा रहे हो? मगर इन बातोंसे कुछ काम नहीं निकलता। महाराष्ट्र मनुष्य भी वैसे ही हैं जैसे बीजापुरके मनुष्य। हां एक बात अवश्य है कि हमारे मनुष्योंकी तुम्हारे सुसज्जित सैनिकोंसे तुलना नहीं की जा सकती। तो भी हम तुमसे युद्ध करनेमें हिचकते नहीं हैं। यदि मुझसे आप इसी कारण भेट करने आये हों कि बातोंहीसे अपनी बुद्धि तथा बलका परिचय दें तो बस हमारी बातचीतका यहींसे अन्त हो। व्यर्थ बातोंसे कुछ लाभ नहीं।"

"मेरा आपसे मुलाकात करनेमें कोई भारी मामिला है" मुसलमान सिपह सालारने जवाब दिया "और यह मैं अभी आपसे जाहिर किये देता हूं। जैसा तुम यकीनन जानते हो, हम लोग कल्याणसे बीजापुरको बहुत खजाना साथ ले जा रहे हैं। तुम उसको हमसे जबरदस्ती छीन लेनेके लिये काफी मजबूत नहीं हो। हां यह बात मुमकिन है कि हमको रास्तेमें घाट पर आते वक्त तुम लोग बहुत तकलीफ पहुंचा सकते हो। बेहतर होगा कि तुम अपने इस लुटेरे झुंडको चौककी तरफ वापिस

ले जाओ ; तुमको बीजापुरमें मुहम्मद आदिलशाहके खजानेसे पांच हजार रुपये इनाम दे दिया जावेगा। अपनी जानको आफतमें फसाने और उस भारी राजाके गुस्से में अपनेको डालनेकी बनिस्बत यह सूरत बहुत अच्छी है। साथ ही इसके यह भी जानते हो कि तुम्हारे डरपोक साथी हम लोगोंसे वह खजाना जो हमारी सपुर्दगीमें है जबरदस्ती कभी नहीं छीन सकते।"

नेताजीका क्रोध उसकी सगर्व बातें सुनकर भभक उठा। उन्होंने कहा कि तुम लोग किस तरह इस दगाबाजी और अनुचित कामको हमारे सिर मढ़ते हो? हम लोग डाकू नहीं हैं किन्तु उस वीर शिवाजीके अनुगामी हैं जो अब महाराष्ट्रको तुम्हारे राजाके अन्यायकी बेड़ीसे स्वतन्त्र करनेको कटिबद्ध हैं। इन बेढंगी बातोंका उत्तर, जो तुमने मुझसे कहा है, देनेके लिये मेरी यह इच्छा होती है कि तलवार निकाल कर तुम्हारा सिर उतार लूं।

इतना कहकर नेताजीने अपना हाथ तलवारके कबजे पर डाला। यवन सेनापतिने भी तलवार निकाल कर कहा :—

"बहुतसे लड़ाकोंने मुझे लड़ाईमें और अकेले लड़कर कतल करनेकी कोशिश की ; मगर अभीतक कोई कामयाब नहीं हुआ। तुम अपनी तलवार मुझे कतल करनेको खींच रहे हो; देखना कहीं खुद तुम्हीं न उससे कतल हो जाओ। अगर तुमको लड़नेका ही शौक है और सिर्फ हमारी फौजकी ज्यादा तादादसे डरते हो तो पांच पांच आदमी दोनों तरफके आकर मैदानमें अपना जौहर दिखलावें। तब यह खुद जाहिर हो जावेगा कि मुसलमान मर्दे मैदान हैं या मरहठे?"

नेताजी वास्तवमें शत्रु पर बार बार झूठा आक्रमण करने तथा वापिस आ जानेसे घबरा उठे थे ; उनको यह बात अच्छी नहीं मालूम होती थी। उन्हें यह अवसर शत्रुसे युद्ध करनेका प्राप्त हुआ जिसे उन्होंने तुरन्त ही स्वीकार कर लिया। विशेषतः यह विचार कर कि इस तरहकी लड़ाईमें निःसन्देह कुछ समय व्यतीत होगा जो कि उनको अतीव उपयोगी है।

उनकी इच्छा यवन दलको वर्त्तमान स्थान पर तबतक रोके रहनेकी थी जबतक शिवाजी अपने मावलियोंको लेकर इस दृश्यमें आ उपस्थित हों।

पहला प्रश्न जो उठा वह यह था कि लड़ाई पैदल होनी चाहिये या घोड़ों पर सवार होकर? यवन सेनापतिने अपने मतलबके लिये यह कारण दिखाकर लड़ाई पैदल होनेको कहा कि उस तङ्ग घाटीमें घोड़ों पर सवार होकर लड़नेके लिये मुश्किलसे जगह हो सकती है। इस पर नेताजीने कहा कि युद्ध करनेवाले घोड़ों पर सवार हैं; सो सिवा घोड़ोंकी लड़ाईके पैदल लड़नेके लिये उनसे नहीं कहा जा सकता। उन्होंने अपनी बात इतने आग्रह पूर्वक कही कि उनके शत्रुको मानना पड़ा। नेताजीने तब यह कहा कि मेरे दलवाले मलङ्गसे खलापुर तक दौड़ धूप करनेसे थक गये हैं; इसी वक्त वे युद्ध न कर सकेंगे। इसलिये उनको आराम करने तथा खाने पीनेके लिये दो तीन घंटेका अवकाश मिलना आवश्यक है। यह बात भी मंजूर कर ली गयी और यवन तथा महाराष्ट्र सेनापति अपने अपने दलवालोंको यह प्रकट करनेको लौटे कि इस भेंट तथा बातचीतका क्या परिणाम हुआ।

महाराष्ट्र दलके बारगीर शत्रुओं पर दिल खोलकर युद्ध भूमिमें वार करने तथा सहनेका अवसर शीघ्र ही पानेकी खबरसे परम प्रसन्न हुए। वे बार बार झूठे आक्रमणोंका खेल खेलते खेलते थक गये थे जिसमें युद्ध करनेके लिये न रुककर शीघ्र ही लौट आना पड़ता था। कारण इनको शत्रुसे युद्ध करनेकी आज्ञा तो थी ही नहीं, केवल उनको मार्गमें अटका कर देर करनेकी थी। अब एक कठिनाई और उपस्थित हो गयी थी। महाराष्ट्र दलके इतने आदमी लड़नेको जानेके लिये उद्यत थे कि पांचका उतने मनुष्योंमेंसे चुनकर निकालना कठिन जान पड़ता था। उन लोगोंने नेताजीसे कहा कि आपके बहुमूल्य जीवनको ऐसे क्षुद्र युद्धके समय भयमें डालनेकी आवश्यकता नहीं है। उन लोगोंके बहुत आग्रह करने पर नेताजीने

कहा कि सेनापतिका पद मुझको यह खास हक देता है कि अब आदरके कार्य्योंमें मैं प्रथम पद ग्रहण करता हूं तो भयमें भी मुझे वही पद लेना उचित है। दूसरे चार शूरोंको चुननेके लिये मैं सब लोगोंको अनुमति देता हूं। जिनको सब पसन्द करेंगे वेही मेरे साथ युद्ध करनेको जा सकेंगे। चार मनुष्य चुने गये जिनके नाम पुकारे जाने पर दलमें प्रसन्नता सूचक ध्वनि गूंज उठी। उस चारोंमेंसे जिस किसीका जिरह बखतर कमजोर या कोई वस्तु कम जान पड़ी उसे बदलकर अधिकतर उत्तम पदार्थ दे दिये गये। जो लोग युद्ध करनेको न जाने पाये उन्होंने युद्धमें जानेवाले अपने सौभाग्यशाली साथियोंको बखतर या अन्य वस्तु देकर अपने चित्तको संतोष दे लिया। उन्होंने विचारा कि हमको खड़े रहकर युद्ध क्रीड़ा देखनेके अतिरिक्त मैदानमें जुटनेका अवसर आज नहीं प्राप्त हो सकेगा। फिर उस तीन घंटेकी मुहलतके बाद, जो आराम करने तथा भोजन इत्यादिसे छुट्टी पानेके लिये मिली थी, तुरही बजा कर इशारा किया गया और दोनों दलसे पांच पांच बहादुर निकल कर मैदानमें आ गये।

नेताजी मुसलमान सेनापतिसे मध्यमें मिले अर्थात दो दो आदमी उनकी दाहिनी तथा बायीं ओर थे। प्रत्येक बारगीरने अपना जोड़ीदार चुन लिया। ज्योंही वे योद्धा आपसमें जुटे, बीजापुरकी सम्पूर्ण सेना "दीन दीन या मुहम्मद" और "अल्ला हो अकबर" चिल्लाती हुई एक दम मैदानमें आ मौजूद हुई। अब नेताजीके मनमें सारी धोखेबाजी और प्रपञ्च जो सेनापतिने रचा था क्षण भरमें भासित हो गया। वे समझ गये कि यवन सेनापतिने उनका तथा उनके साथियोंका ध्यान युद्धमें उलझा देना विचारा था जिसमेंसे एकाएकी सुलझना कठिन था। (क्योंकि उसी समय बीजापुरका सम्पूर्ण उपस्थित दल एकदम आक्रमण कर बैठता और सम्भवतः विजय उसके हाथ आती।) नेताजीके शरीर तथा हृदयमें क्रोधके प्रचण्ड वेगसे भीमके समान युद्धका असीम उत्साह और बल उत्पन्न हो गया। इस

उत्साहके विचारमें उन्हें जान पड़ा कि भवानीने उनके शरीरमें दस मनुष्योंका जोर उत्पन्न कर दिया है। उन्होंने उग्र स्वरसे महाराष्ट्र युद्ध ध्वनि "हर, हर, महादेव"का उच्चारण किया और अपने दलवालोंकी इस युद्धमें सम्मिलित होनेकी प्रतीक्षा किये बिना घोड़ेको उग्रवेगसे यवन दलमें बढ़ाया। यवन सेनापतिको नेताजीके इस प्रकार अचानक बढ़नेसे एक प्रचंड धक्का लगा जिससे वह घोड़ेसे गिर कर पृथ्वी पर लुढ़कने लगा और अपने दलके सवारोंहीके घोड़ोंकी टापोंसे कुचल कर मृतक हो गया। क्षण भर भी न ठहर कर नेताजीने शत्रु दलके मध्यमें आक्रमण किया। स्वयं अपनी देहकी रक्षाका तनिक भी ध्यान न कर वे बीचमें पहुंच गये और निशान बर्दार तथा झण्डेको काट कर गिरा दिया। सम्पूर्ण यवन दलके आश्चर्यका पार न रहा। वे लोग ऐसे भयङ्कर तथा उग्र आक्रमण करनेवालेका सामना करनेकी हिम्मत न कर सके। शत्रु दलमें घुसनेके समय नेताजी पर दाहिने बायें तथा तथा पीछेसे जो वार हुए वे उस बढ़िया जिरह बखतरको न काट सके जो उन्होंने अयूबखांसे पाया था। इस भांति वे रास्ता साफ करते हुए शत्रु दलके दूसरे छोर तक जा निकले और रामा और उन सौ मनुष्योंसे आ मिले जो घाटीका रास्ता रोक देनेको दूसरे अप्रकट मार्गसे भेजे गये थे। वे लोग उस लकड़ी तथा पत्थरकी दीवारसे एक एक करके पार हो युद्धमें सम्मिलित होनेको उधर आ रहे थे। नेताजी अब उन लोगोंको साथ लेकर घूमे और शत्रु पर इधरसे आक्रमण करनेको बढ़े। यवन दल अब दोनों ओरसे फंस रहा था; क्योंकि जब नेताजीके दलके बारगीरोंने देखा कि मुसलमानोंने भारी धोखा दिया, तो वे चुप न रहे, तुरन्त ही अपनी बर्छियोंको, जो जमीनमें गड़ी थीं, उखाड़ कर अपने सेनापतिकी सहायता करनेको वायुवेगसे दौड़े।

साथ ही इसके एक बात और थी। यद्यपि यवन सेनापति मर चुका था तथापि उसकी सेना महाराष्ट्र दलसे बड़ी तथा भली भांति सुशिक्षित होनेके कारण जीत गयी होती परन्तु एक विचित्र

रक्त उत्पन्न करनेके लिये उनके अभाग्यका नक्षत्र रणभूमिमें उदय हुआ। ठीक उसी समय लड़ाके युद्धभूमिमें आ उपस्थित हुए। ये लोग वे ही मावली पैदल थे जिन्हें स्वयं शिवाजी ले आ रहे थे। शिवाजी बिना किसीके जाने वहां उसी समय आ पहुंचे थे जब कि दोनो दल लड़ाईकी तय्यारी कर रहे थे। जब दोनो ओरके पांच पांच बहादुर जुटे और सम्पूर्ण यवनदल रणभूमिमें जा डटा उसी समय शिवाजी उस द्वन्द युद्धमें आ पहुंचे।

बीजापुरकी सेना अब सम्पूर्णतः वशमें कर ली गयी। उसके बहुतसे सिपाही तो पहले ही खेत हो चुके थे और शेषको निश्चित नाशसे बचनेका केवल एक ही प्रत्यक्ष उपाय था कि वे चूं तक न कर अपनेको महाराष्ट्रोंके हवाले कर दें। नेताजी बिलकुल थक गये थे। वास्तवमें उन्होंने अपने वास्तविक बलको अपेक्षा बहुत कुछ कर दिखाया। वे शिवाजीकी भुजाओंमें गिर कर मूर्छित हो गये। जब उन्हें मूर्छासे चैतन्य हुआ तो शिवाजीने कृपा तथा सहानुभूतिसे उनकी चोटोंका वृत्तान्त पूछा और सरगर्मीसे उनको उस भारी सेवाके लिये धन्यवाद दिया जिसे उन्होंने आज महाराष्ट्रके लिये किया था। विजयी तथा पराजित दोनो दल पासवाले गांव खलापुरमें रात्रि विश्राम करनेके लिये ठहरे। दूसरे दिन शिवाजीने शत्रुओं पर वह कृपा दिखायी जो विजयके पश्चात् पराजितों पर दिखाना उनका स्वभाव था।

उन लोगोंके हथियार तथा घोड़े छीन लिये गये परन्तु प्राण छोड़ दिये गये। बीजापुर तक पहुंचनेके लिये उनको भोजन इत्यादिका उचित द्रव्य दिया गया। शिवाजी यह देख कर कि नेताजी अपनी थकावट मिटा चुके हैं, उनसे बोले ;—

"सबसे आवश्यक तथा प्रथम काम जो करनेको है वह यह है कि इस नवीन प्राप्त हुए कोषको जितना शीघ्र हो सके राजगढ़ ले जायं। इसको वहां पहुंचानेका भार मैं लेता हूं ; मैं इन बारगीरोंको हिफाजतके लिये अपने साथ लेता जाऊंगा जो

कल युद्धमें तुम्हारे अधिपतित्वमें अपना काम बहुत अच्छी तरह दिखा चुके हैं। मित्र नेताजी! जैसा मैं जानता हूं अपनी दृढ़ भुजाओंसे तुम अभी महाराष्ट्रके लिये अधिकतर वार करनेको उत्सुक हो। अतएव तुम्हें मावलियोंको साथ लेकर कल्याणकी ओर वापस जाना और वहां आबाजी सोनदेवको उनकी सम्पूर्ण कारर-वाईमें जहांतक हो सके सहायता करना आवश्यक है।"

इतनी बातचीत होनेके पश्चात् वे दोनों मित्र गले लग कर एक दूसरेसे विदा हुए। शिवाजी बारगीरोंको लेकर राजगढ़की ओर और नेताजी मावलियोंको लेकर कल गांवमें स्थित आबाजी सोनदेवके लशकरकी ओर रवाना हुए।

प्रिय पाठको! शिवाजीकी चित्तवृत्ति पर तनिक विचार कीजिये। अहा! निष्कपट मनुष्यका हृदय कैसा सरल होता है। सरल हृदयके मनुष्य किसीके हित चिन्तवनके अतिरिक्त कदापि बुराई नहीं करते न करना विचारते हैं। ऐसे घृणित निर्दय तथा निन्दित विचार उनके सरल हृदयमें उत्पन्न नहीं होते। धन्य वीर शिवाजी! वीर माताके वीर पुत्र शिवाजी! तुम्हारी निष्कलङ्क वीरता धन्य है।

शिवाजीका हृदय कैसा था इसका परिचय आप लोग उनके उस वर्तावसे पा गये जो उन्होंने बीजापुरकी परास्त सेनाके [illegible] किया। सच्चे वीरोंका यही काम है। सच्चे वीर पराजित शत्रुकी खोपड़ी खिलौनोंकी तरह उड़ाकर अपना मन नहीं बहलाते।

सप्तम परिच्छेद।

---o:o---

कल्याणका पतन।

शूरोऽर्थ शास्त्र निपुणः कृत शास्त्र कर्म्मः
संग्राम केलि चतुश्च तुरङ्ग युक्तः।
भर्तुर्निदेशवशगोऽभिमतश्च तस्वे
सेनापतिर्नरपति विजया गमाय॥

नीति।

जिस समय नेताजी तथा उनके अधिकारमें सौंपे हुए मावली लम्बा सफर तय करनेके कलगांव पहुंचे उस समय उन्हें मालूम हुआ कि आबाजी सोनदेव अपना लशकर लेकर वहांसे अम्बरनाथ गांवको बढ़ गये हैं जो कल्याणसे लगभग दो कोस पर है। तुरन्त ही नेताजीने अम्बरनाथ पहुंचकर उनसे भेंट की तथा उनके शामिल हो गये। उन्होंने आबाजीको यह सूचना दी कि शिवाजी दक्षिणको चले गये हैं और उन्होंने अपनी कोकनमें रहनेवाली सेनाका प्रबन्ध आपके हाथमें देकर आपको प्रधान सेनापति बनाया है तथा यह कहा है कि "कल्याणका पतन करनेके लिये प्रत्येक प्रयत्न किया जाय और यदि हो सके राजमच्ची अम्बकरावसे शत्रुके हाथमें चले जानेके पहले वहांके दुर्गमें घिरे हुए मनुष्योंको सहायता की जाय।"

आबाजी सोनदेव उस विश्वाससे जो शिवाजीने उनपर किया था, परम प्रसन्न हुए। उन्होंने पहलेहीसे उस दृढ़ तथा भलीभांति सुसज्जित सेनासे जिसे शिवाजी भोपारको ले गये थे, मेलकर रखा था। पीतलकी तोपोंकी नावें भी किनारे आ लगी थीं और सेनाके अत्यन्त बुद्धिमान मनुष्योंको एक पुर्तगीज गोलन्दाज द्वारा, जो उन लोगोंके साथ इसी कामके लिये आया था, तोपोंके चलानेका ढंग सिखलाया जाता था। अच्छे लक्षण देख कर विश्वास किया जाता था कि यूरोपसे आयी हुई ये नवीन

उत्तम तोपें उन पुराने ढंगकी तोपोंसे निःसन्देह बढ़कर हैं जो कल्याणके बुर्जों पर चढ़ी थीं।

कल्याण नगर चीन प्रवासी ह्यूनत्सांगकेके वर्णन अनुसार किसी समय महाराष्ट्रकी राजधानी था; वह उल्हास नदीके दाहिने किनारे पर है। वह दीवारसे सुरक्षित था जिसमें ७० एकड़से अधिक जमीन नहीं घिरी थी। नगरकी दीवारके वायु कोनमें ऊंची पृथ्वी पर, जहांसे नदी देख पड़ती है दुर्ग स्थित था जो नगरकी दीवारसे बीचमें खाईसे पृथक कर दिया गया था। दुर्ग दृढ़तासे सुरक्षित किया गया था, विशेष कर नदीकी ओर सब भांतिसे; परन्तु शहरकी दीवारें नीची तथा कमजोर थीं। नगर निवासियोंकी सुन्दर इमारतें थीं जो कई मंजिल ऊंची चली गयी थीं। मसजिद तथा मन्दिर भी बहुत खूबसूरत थे; परन्तु सबसे सुन्दर वह सहूमूसाकी मसजिद थी जो कुछ बरस पहले शीनेल झीलके किनारे नगरकी दीवारके बाहर बनायी गयी थी। बाहर प्रान्तमें नगरके उत्तर तथा पूर्वमें घना जङ्गल था जो नगरकी दीवारों तक चला गया था। नगरके भीतर सुन्दर मौलसिरी तथा दूसरे उत्तम छायादार वृक्ष तालाबोंके किनारे लगे थे जो इमारतोंको ग्रीष्मके सूर्यके प्रचण्ड उत्तापसे बचाते थे। इस रक्षाकी अतीव आवश्यकता होती थी क्योंकि जेठके उष्ण मासमें वे वृक्ष मनोरञ्जक तथा विशेष सुखदायक थे।

नेताजीके लौटनेके पश्चात् आबाजी सोनदेवने अपना लशकर शीघ्र ही कोन नामक स्थानको पहुंचाया और नदीके किनारे पश्चिम ओर अपनी पीतली तोपोंका मोरचा दुर्गके सामने जमाया। इस जगहसे कई दिन तक प्रातःकाल तथा दो पहरके बाद पुर्तगीज़ गोलन्दाज तथा उसके सिखाये हुए मावली (जो अब तोप चलानेमें होशियार हो गये थे) दुर्ग तथा नगरके वायुकोनमें लगातार गोले बरसाते रहे। महाराष्ट्र सेनाने सम्पूर्ण रसद और व्यापारिक पदार्थोंकी आमद जो नदीके द्वारा नगरकी पश्चिमी दीवारके मध्यवाले घाट पर होती थी, रोक दी।

घिरे हुए मनुष्योंके प्रधान भागका मुकाम या तो सदैव दुर्गमें

रहता था या पश्चिमी दीवारके पीछे। नगरकी दूसरी ओरकी दीवारोंकी चौकसी विशेष सावधानीसे नहीं की जाती थी। ज्योंही तोपखाना गोले बन्दकर नित्य प्रति दोपहरको विशेष समय तक ठहराया जाता था, मुसलमान लोग अपने उद्योग तथा परिश्रमके पश्चात् धूपसे शरण पाने तथा आराम करनेके लिये दुर्गमें लौट पड़ते थे।

इस बातको बुद्धिमान आबाजी सोनदेवने पहलेसे विचार रखा था। और इसी पर नगरको अधिकारमें लानेके प्रयत्नोंको नीव स्थित थी। एक दिन प्रातःकाल जब तोपखाना नित्यप्रतिकी भांति गोले बरसा रहा था उन्होंने नेताजीको दो या तीन हजार मावली साथ देकर नदीके किनारे उत्तर पश्चिम इतनी दूर भेजा जहांसे उन पर दुर्गके बुर्जों पर घूमनेवाले चौकीदारोंकी निगाह नहीं पड़ सकती थी। लशकरके तीन कोस पर नावें तय्यार रखी गयी थीं वहींसे इन लोगोंने नदीको पार किया। इस स्थानसे ये लोग वृक्षोंकी छांहमें नगरके उत्तरको ओर बढ़े। यह जङ्गल आज दिन भी उसी तरह दीवार तक मौजूद है।

उन लोगोंको किसीसे देखे जानेका भय बहुत ही कम विचारा जा सकता था। कारण यह कि उस दिन धूप बहुत ही तेज थी तथा यह पहलेहीसे निश्चय किया जा चुका था कि ये लोग दीवारके पास उस समय पहुंचें जब कि सूर्य्य ठीक सिर पर हो। ऐसे समयमें कौन ऐसा होगा जो अपनी इच्छासे सूर्य्यकी प्रचण्ड धूपमें दुर्गके बुर्जों पर आवेगा। पहरेदार भी उस समयकी प्रचंड धूपसे घबरा रहे थे तथा किसी ऐसे कोनेमें घुसते फिरते थे जहां उनको धूपमें शरण मिलती थी वे लोग ऊंघ ऊंघ कर इस तरह अपना समय बिता रहे थे मानो अभीतक इस भागमें सुरक्षित तथा स्वच्छन्दता पूर्वक हैं। उसी प्रकार दुर्गवाले विचारते थे कि हम सदैव निर्विघ्न रहेंगे। अकस्मात् वे लोग अपनी तन्द्राकी अवस्थामें चौंक उठे। मावली लोग धड़धड़ाते हुए वहां भर गये। यह और भी कठिनता हुई कि उस समय जब कि दीवारोंके सिरे पर नसेनियां जमायी गयीं तथा शत्रुदल फांद कर

झुंडके झुंड भीतर चले आये; उन पहरेदारोंको चिल्लाने तकका अवसर न मिला। नगर बिना एक आघात या प्रहार किये ही उनके अधिकारमें आ गया। नेताजी अपने मनुष्योंको सीधे दुर्गकी ओर ले चले। कई शत्रु उनके सामनेसे भाग गये; कुछने बाधा दी; उनको मारकर बलपूर्वक मार्ग किया गया। शेष अस्त्र डाल देनेको लाचार किये गये।

यद्यपि नगर ले लिया गया था, तथापि मौलाना अहमदने जो बीजापुरकी ओरसे उस स्थानके अधिपति थे, दुर्गको अपने शत्रुके हवाले करनेसे इनकार किया। इसलिये आबाजी सोनदेव अपनी पीतलकी तोपें नदीकी दूसरी ओरसे घुमा कर लाये और नगरकी दीवारके वायुकोनके पासवाले ऊंचे भाग पर, जहांसे दुर्ग समीप था, मोरचा जमाया।

इस नवीन स्थानसे पुर्तगीज़ गोलन्दाजने फिर गोले बरसाना प्रारम्भ किया। गोले ठीक उसी तरह गिर रहे थे जैसे कि उल्हास नदीके पारसे पहले चला करते थे। कोई कोई कारण देखते हुए महाराष्ट्रोंकी यह नवीन स्थिति विशेष लाभदायक तथा अनुकूल जान पड़ती थी। अब उनकी तोपें निशानेके बहुत पास थीं तथा दुर्गकी दीवारें नदीकी अपेक्षा नगरकी ओर अधिक कमजोर थीं।

बहुत समय व्यतीत न हुआ था कि परिश्रम तथा प्रयत्नसे दीवारमें सूराख कर लिया गया और यह भी प्रबन्ध कर लिया गया कि यदि आवश्यक हो तो क्षण भर भी विलम्ब लगाये बिना आक्रमण कर दिया जाय। आक्रमण करनेके पहले आबाजी सोनदेवने दुर्गके हाकिम मौलाना अहमदको किलाके देनेको कहला भेजा। वे भलीभांति जानते थे कि शिवाजी मामलेको विशेष बढ़ाना नहीं चाहते; इसलिये मौलाना अहमदके अनुकूल कुछ शर्तें स्वीकार कर ली गयीं। मौलाना अहमदसे बहुत आदरका बरताव किया गया और वे बीजापुर वापस भेज दिये गये। परन्तु वहां पहुंचने पर प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्राण्ट डफके कथनानुसार उन्हें फिर कभी विश्वास या लाभकी जगह न सौंपी गयी।

अष्टम परिच्छेद ।

—०:०—

राजमच्छीके उद्धारका भार ।

मृतैः सम्प्राप्यते स्वर्गो जीवद्भिः कीर्तिरुत्तमा ।

तदुभावपि शूराणां गुणावेतौ सुदुर्लभौ ॥

स्फुट ।

इस भारी विजय प्राप्त होनेकी प्रसन्नतामें आबाजी सोनदेवने दुर्गमें महत् भोज किया । भवानीको बहुतसे बकरोंका बलिदान दिया गया । उनके मांसको महाराष्ट्रोंने जुआरकी रोटीके साथ खा लिया । इन लोगोंमें कुछ दूर उच्च वर्ण ब्राह्मणोंकी पंक्ति बैठी थी जो थाली इत्यादिके बादले केलेके पत्तों पर मिठाई चावल तथा दाल, जो उनके जाति वाले रसोइयोंने तय्यार की थी, रखकर खा रहे थे ।

भोजके उपरांत उन लोगोंने, तथा तलवार चलानेवालोंने जो घोड़े पर चढ़नेमें अत्यंत प्रवीण थे, अपने चातुर्य्यको प्रकट करना आरम्भ किया । पटे चलानेवालोंने अपने साथियोंके हाथमें नीबू दे दिया और पैंतरे बदलकर एक ही हाथमें नीबूके दो टुकड़े कर दिये और उसके हाथमें तनिक भी क्षति न हुई । सवारोंने पूरी तेजीसे दौड़ते हुए घोड़ों पर जाते समय निशानों पर बर्छी लगायी । फिर उन लोगोंने एक और काम करना प्रारम्भ किया जिसे "वृथाटा" कहते हैं । वे लोग खजानेका पीछा करनेमें पहले ही इस अभ्यासका अच्छा प्रमाण दिखा चुके थे । उसे हमारे पाठक गण जान चुके हैं । इसीके लगातार अभ्यास करनेका परिणाम था कि महाराष्ट्र अपनेसे बली तथा सुसज्जित दलको परास्त करनेमें समर्थ हुए । वैसे खुले मैदानमें उनका विजय प्राप्त करना यदि असम्भव न कहा जाय तो कठिन अवश्य था । तीर चलानेवालोंने भी अपनी खूबी दिखलायी और बन्दूकवालोंके नवीन संकलित दलने पुर्तगाली बन्दूकोंसे जो उन्नति अबतक की थी, वह दिखायी ।

पान सुपारी होनेके पश्चात् उस जलसेकी समाप्ति हुई। जिन लोगोंने अच्छे अच्छे काम हथियारकी सफाईके दिखाये थे उनको पगड़ी दुपट्टे पारितोषक दिये गये। नेताजीको भी बेश कीमत वस्त्र भेंट किये गये। पुर्तगीज गोलन्दाज तथा नये सीखे मनुष्योंको भी पुरस्कार दिया गया। थोड़ी ही देरमें जलसेके लोग जाने वाले थे और उन लोगों पर गुलाब पाशसे गुलाब और केवड़ा छिड़का जा रहा था कि इतनेमें एक आदमीने आबाजी सोनदेवको सूचना दी कि एक दूत किसी भारी कामके लिये आपसे भेट करना चाहता है। आबाजीने उस व्यक्तिको तुरन्त ही वहां लानेका हुक्म दिया।

नवीन आगन्तुक बहुत ही थका हुआ जान पड़ता था; उसके कपड़ोंपर पैदल सफर करनेके कारण धूल चढ़ रही थी। वह शराब पिये हुए मनुष्यकी तरह लड़खड़ाता हुआ वहां आया। कुछ क्षण तक वह बोलनेमें असमर्थ रहा। अन्तमें उसने अपने आनेका कारण कहना प्रारम्भ किया;—

"तीन दिन हुए त्र्यम्बकरावने मुझे इस ओर भेजा। मैं कठिनता पूर्वक घेरा डालनेवाले लशकरकी निगाह बचाकर राजमच्छीकी पश्चिमी दीवारसे छिपकर आनेको समर्थ हुआ। रात्रिके अनुग्रहसे मैं दीवार पर बिना किसीकी दृष्टि पड़े चढ़ गया और दूसरी ओर उतर गया। मैदानमें बहुत दूर नहीं बढ़ने पाया था कि मुझे भयङ्कर ज्वरने एकाएक ग्रस लिया। उसके बेगसे मैं बेसुध हो गया। नहीं जानता कि उस बेसुधीकी दशामें मैं कितनी देरतक रहा। जब मुझे कुछ चेत हुआ तो मैंने नीरलके पास एक लकड़ी काटनेवालेकी झोपड़ीमें अपनेको लेटा पाया।"

निःसन्देह नवागन्तुकका चित्त विकल हो रहा था। कुछ देर ठहरनेके बाद वह फिर कहने लगा "अब मुझे केवल इतना ही स्मरण है कि त्र्यम्बकराव तथा उनके अनुगामी बहुत ही कठिन दशामें हैं। (मानो कोई बात अचानक स्मरण आ गयी) कदाचित उस चिट्ठीसे, जो मेरे पास है यह वृत्तांत भलीभांति स्पष्ट हो सकेगा।"

इतना कहकर उसने अपनी अस्टीसे एक चिट्ठी निकाली जो सेनाके अधिपतिके नाम थी। अपने पाठकोंके लिये हम उस चिट्ठीकी नकल नीचे देते हैं। उसमें यह लिखा था;—

"हमें भलीभांति आशा थी कि श्रीवर्द्धन दुर्गकी दृढ़ताके बल तथा ईश्वरकी कृपासे हम लोग, जबतक हमारे पास रसद रहेगी, टिके रह सकेंगे। परन्तु शत्रु लोग सुरङ्ग खोदनेमें सफल हो गये हैं। वह जबपूरी तरहसे तय्यार हो चुकेगी तब दक्षिणी दीवारमें निःसन्देह भारी दराज कर देगी। इस सुरङ्गका खोदना बन्द करनेमें हम असमर्थ हैं। यह भलीभांति निश्चित है कि आजसे पांचवें दिन यह सुरङ्ग तय्यार हो जायगी। पांच दिनके पहले ही यदि हमारी सहायता नहीं की जायगी तो लाचार होकर हमको दुर्ग शत्रुके हवाले कर देना पड़ेगा। हमारी अवस्था भयानक है। आजसे चौथी रात्रिको चन्द्रमा डेढ़ प्रहर रात्रि व्यतीत हो जाने पर निकलेगा। उस समय ज्योंही चन्द्रमा उदय हो, आप लोग शत्रु दल पर, जो हमें घेरे हुए हैं, आक्रमण करें। हम भी श्रीवर्द्धनसे आ पहुंचेंगे। शत्रुओंकी संख्या जैसी मुझे सूचना दी गयी है, एक सहस्र है। उनकी आधी सेना विसापुर तथा लोहागढ़ पर आक्रमण करनेके लिये दक्षिणकी ओर कूच कर गयी है। मैं आपकी मित्रतासे भलीभांति परिचित हूं तथा मुझे यह विश्वास है कि आप हम लोगोंकी रक्षाके लिये कोई प्रयत्न शेष नहीं छोड़ेंगे।"

आबाजीने चिट्ठी पढ़ कर नेताजीके हाथमें दे दी तथा कुछ देर तक गम्भीर चिन्तामें निमग्न जान पड़े। नेताजी भी कुछ विचार रहे थे। चिट्ठीकी लिखावटके ढङ्गसे भी यह प्रतीत होता था कि वह जल्दीमें लिखी गयी थी और लिखनेवाला घबराहटमें था।

महाराष्ट्रमें ही क्या वरन सम्पूर्ण भारतवर्षमें पुराने समयमें यह प्रथा थी कि जब किसी भारी मुहिम पर दल भेजनेके लिये योग्य अधिपतिकी आवश्यकता होती थी तब पान बना कर सभामें रखा जाता था और कहा जाता था कि अमुक कार्य्य करना आवश्यक

है। उपस्थित पुरुषोंमें जो उसके करनेका भार ग्रहण करता वह उस पानके बीड़ेको उठा लेता।

इस हेतु आबाजी सोनदेवने प्रस्तुत सभामें राजमच्छीके उद्धारका कार्य विशेष गुरुतर विचारकर पान फर्शपर रखवा दिया। उस समय वहां अनेक पुरुष ऐसे उपस्थित थे जो अपनी सुकीर्ति तथा देशके लिये बड़े बड़े कार्य कर दिखानेको उत्सुक थे और बड़ी बड़ी आशाएं रखते थे। परन्तु इस कार्यको कठिन सोचकर सब चुप बैठे रहे। अन्तमें नेताजी (जो अभीतक यह विचार कर रुक रहे थे कि कदाचित इस कार्यके करनेको कोई अधिक प्रवीण, समयका उतार चढ़ाव देखा हुआ अनुभवी पुरुष आवश्यक हो) उठे और आगे बढ़े। पानको उठाकर उन्होंने अपनी पगड़ीमें खोंस लिया तथा आबाजी सोनदेवको प्रणाम कर अपने स्थान पर आबैठे। प्रशंसा तथा हर्षकी ध्वनि सभा भरमें गूंज उठी। सबोंने कहा कि राजमच्छीकी जैसी जान जोखिमवाली तथा उपयोगी मुहिमके लिये अधिकतर योग्य तथा साहसी नेता नेताजीके अतिरिक्त और नहीं पाया जा सकता है।

आबाजीने नेताजीकी प्रशंसा उनकी वीरता तथा साहस परकी और पूछा कि "कितने मनुष्य आप अपने साथ लेजाना पसंद करते हैं?"

"मुझे एक सहस्र मावली आप दीजिये" नेताजीने उत्तर दिया "प्रति यवन सैनिकके लिये एक मावली साथ जाना उचित है। यदि एक बार हम लोग दुर्गके भीतर घुस सके तो निःसंदेह जी खोल कर प्रयत्न करेंगे और दृढ़ आशा है कि शिवाजीके हाथमें कोकनकी चाभी (भोरघाट पर जो दक्षिण तथा कोकनके बीचमें अत्यन्त उपयोगी मार्ग है, राजमच्छी 'कोकनकी चाभी' के नामसे पुकारी जाती थी) एक बार पुनः दे देंगे।"

इतनी बात चीत होनेके उपरान्त सभा विसर्जित हुई। सब लोग अपने अपने मुकाम पर गये। केवल नेताजी तथा आबाजी सोनदेव वहां रह गये।

दोनों अधिपतियोंमें बहुत समय तक धीरे धीरे न मालूम क्या बात चीत हुई। प्रिय पाठको! उनकी बात चीत जाननेकी

अभी हमें भी कुछ आवश्यकता जान नहीं पड़ती। समय पर वह आपसे आप प्रकट हो जावेंगी।

नवम परिच्छेद ।

---0:0---

दुष्टोंका दमन ।

शस्त्रैर्हता नहिहता रिपवो भवन्ति
प्रज्ञा हतास्तु रिपवः सुहता भवन्ति ।
शस्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकम्
प्रज्ञा कुलञ्च विभवञ्च यशश्च हन्ति ॥

राजनीति ।

राजमल्लीको शत्रुदलके चंगुलसे छुड़ानेके लिये परले सिरेका श्रम तथा साहस करना आवश्यक था। कल रात्रिको चंद्रमा डेढ़ पहर व्यतीत होने पर उदय होगा। यह भय होरहा था कि यदि एक दिनकी भी देर होजाय तो श्रीवर्द्धन पर शत्रु अधिकार कर लेंगे और राजमल्ली तथा श्रीवर्द्धनको पुनः अधिकारमें लानेके लिये द्विगुण कठिनता हो जावेगी।

इसका सम्पूर्ण भार नेताजीके हाथ सौंप दिया गया। नेताजी समयकी संकीर्णतासे भली भांति परिचित थे। जमानेके उलट पलट, चढ़ाव उतारको वे खूब देख चुके थे और पहचानते थे। उनपरही कुटिल समयके अनेक प्रचंड प्रहार हो चुके थे। इससे उन्होंने क्षणभरभी बिलम्ब न किया; तुरन्तही रामाको बुलवाया और राजमल्लीका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुना कर पूछा;—

"रामा! कल किसी तरह रात्रिको तुम राजमल्ली दुर्गमें पहुंच सकते हो?" रामाने कहा "मैं यथाशक्ति उद्योग करूंगा और दृढ़

आशा रखता हूं कि ईश्वरकी कृपासे अवश्य सफल होऊंगा। आपके प्रयत्नोंकी पूर्तिके हेतु दुर्गमें मुझे शस्त्र सहित पहुंचना होगा अथवा खाली ही ?

नेताजी—नहीं, मैं केवल यही चाहता हूं कि एक दृढ़ रस्सी तुम अपने हाथ लेते जाओ।

रामा—तब तो मुझे और भी सुगमता होजायगी। प्रत्येक दिन गांवके लोग मुसलमानी फौजके घोड़ोंके लिये घासके गट्ठे किलेमें ले जाते हैं। घासके गट्ठेसे मुझे राजमच्छीमें पहुंचना कुछभी कठिन न होगा। गट्ठे पर मैं लम्बी रस्सीको बांध लूंगा या अन्दर छिपा दूंगा जो घासके बीचमें होनेसे किसीकी निगाहमें न आवेगी। हां तो जब मैं दुर्गके अन्दर पहुंच जाऊं तब मुझे उस रस्सीसे क्या करना होगा ?

नेताजी—राजमच्छीके पूर्वी ओर पहाड़की चट्टानें बहुत ऊंची तथा ढालू हैं। इसी कारण वहां सुरक्षाके लिये दीवार नहीं है। उस ओरसे वह भली भांति स्वयं सुरक्षित है। अब कदाचित तुम मेरा अभिप्राय समझ गये होगे ?

रामा—यही कि रस्सी वहांसे बाहरकी ओर फेंक दी जाय और.........

नेताजी—और हम लोग उसके लिये नीचे, दुर्गकी बाहरी ओर प्रतीक्षा करते रहेंगे। फिर अपने काममें हमें कुछ कठिनता न होगी। ज्योंहीं चन्द्रमा अपनी चन्द्रिका फैलाना प्रारंभ करेगा त्योंहीं हम लोग चढ़ जावेंगे।

रामा—यदि मैं सफल न होऊं तो ?

नेताजी—सफल न होओ तो क्या ? निराश होनेकी कोई बात नहीं है। प्रथम तो कोई ऐसी बात नहीं है कि मनुष्य उद्योग करे और वह सफल न हो। और यदि तुम सफल न हुए तो दुर्गमें पहुंचनेके लिये हम कुछ और प्रयत्न तथा उद्योग करेंगे। हां देखो एक एक क्षण बहुमूल्य है। तुम इसी समय यहांसे रवाना हो जाओ। मैं अपना अबूजान तुम्हें देता हूं मगर (कुछ विचार कर) मेरी समझमें तुम्हारा

दक्षिणी टट्टही ऊबड़ खाबड़ मार्गोंका विशेष अभ्यस्त है, इसलिये अबूजानकी अपेक्षा उसको ही लेजाना ठीक होगा। अच्छा जाओ—

उत्तरमें रामाने " बहुत अच्छा " कहा और वहांसे जानेको मुंह फेरा ही था कि पीछेसे नेताजीने फिर आवाज देकर बुलाया और कहा:—

" मेरी प्रधान चिन्ता यह है कि हमारे इरादे या काररवाईका शत्रुको तनिक भी पता न लगना चाहिये। जिस समय आबाजी सोनदेवने फर्शपर बीड़ा रखा था वहां बहुतसे मनुष्य उपस्थित थे। उस समयके मनुष्योंमें यदि कुछ ऐसे रहे हों जो बीजापुरसे तनखाह इधरके हाल चाल देनेके लिये पाते हों और हमारे अभिप्रायको शत्रु से जाकर कह दें तो सारा काम चौपट हो जायगा। हमको ऐसी दगाबाजीकी खोजसे सावधान रहना चाहिये। मैं तुम्हारे साथ दुर्गके फाटक तक पहुंचाने चलूंगा और तुमको रवाना कर लौट आऊंगा।"

रामाने शीघ्रता पूर्वक अपने मित्र गोपालकी सहायतासे सफरकी तय्यारी कर ली। गोपालको हमारे पाठक गण भूले न होंगे। पहले वह "भज" के डाकुओंके दलमें था और अब शिवाजीके बारगीरोंमें विश्वास पात्र था तथा होशियारीसे नौकरी करता था। जब रामा और नेताजी फाटक पर पहुंचे तब पूछने पर संतरीने कहा कि " अभी कुछ ही देर पहले दो सवार वहांसे निकल कर बाहर गये हैं।"

नेताजी यह सुन कर चौंक उठे और उन्होंने रामाके कानमें धीरेसे कहा—देखो जो मैं सोचता था वही हुआ। यह बहुत ही संभव है कि तुम्हारे यहांसे रवाना होनेके पहले जो मनुष्य बाहर गये हैं वे हफीजखांको हमारे कामोंकी सूचना देदें। परन्तु दो मनुष्योंको एक ठीक नहीं कर सकता। क्या तुम्हारा मित्र गोपाल तुम्हारे साथ जा सकता है और तुम उस पर भलीभांति विश्वास करते हो?

"वह फौलादकी तरह हमारे पक्षपर मजबूत और ईमानदार है" रामाने उत्तर दिया।

"तो वह भी अपने घोड़ेको तैयार करे" नेताजीने कहा "और दो कमानें (एक अपने और एक तुम्हारे लिये) और कुछ तीर साथ लेता आवे। तुम उन जासूस सवारोंका यदि कुछ और इरादा पाना तो दूरहीसे निशाना बनाना।"

गोपाल अपने घोड़ेको तय्यार करनेको वापस गया और थोड़े समयके पश्चात् रामाकी तरह एक पोटली, जिसमें घोड़ेका दाना था दो कमान और बारह तीर लेकर आ पहुंचा।

रामा और गोपाल अपने घोड़ों पर सवार होकर कल्याणके पूर्वी फाटकसे राजमच्छीको रवाना हुए। उन अज्ञात सवारोंका पीछा करनेको वे तेजीसे बढ़े जा रहे थे जो उनके पहले निकल कर आगे जा चुके थे। वे बहुत दूर जाने न पाये होंगे कि उन्हें एक पहाड़को घूम कर आनेके पश्चात् वे सवार मैदानमें लगभग डेढ़ कोस आगे जाते देख पड़े। इन लोगोंने तुरन्त ही अपने घोड़ोंकी चाल तेज की। जांच करने पर जान पड़ा कि उन जानेवालोंकी अपेक्षा इनके घोड़े तेज न थे। कई कोस तक लगातार यह खदेड़ जारी रही; परन्तु उतनाही अन्तर भागने तथा पीछा करनेवालोंमें रहा।

इसी समय इन लोगोंको अपने पीछे एक दूसरे घोड़ेके टापोंका आवाज सुनाई दी जो प्रत्यक्ष ही बहुत समीप आता जाता था। उसके सवार नेताजी थे जो रामा तथा गोपालके वहांसे चलनेके पश्चात् इधर रवाना हुए थे। उनका सन्देह उन सवारों पर और बढ़ा। इसलिये स्वयं उन्होंने इस खदेड़में जाना निश्चय किया और अपने साईसको अबूजानके तय्यार करनेका हुक्म दिया। जिरह बख्तर पहननेके बाद नेताजीने आज्ञा दी कि एक सहस्र मावली जो राजमच्छीको छुड़ानेके लिये चुने गये हैं यहांसे चल कर नीरल पहुंचें और आज रातको वहीं विश्राम करें। यह हुक्म देनेके पश्चात् वे घोड़े पर सवार हुए और फाटकके बाहर होते ही रामा और गोपालके पीछे तेजीसे बढ़े।

कठिन दौड़ और श्रमने नेताजीको लगभग तीन कोस पर उन लोगोंके समीप पहुंचा दिया। रामा तथ गोपालसे अपने आनेका कारण कहनेके लिये उन्होंने घोड़ोंको चाल कुछ देरके लिये धीमी

की ओर फिर घोड़ेको एड़ लगा दोनों भागते हुए सवारोंके पीछे तेजीसे रवाना हुए। उन्होंने समझ लिया कि यदि मैं अपने घोड़ेको (जो इस ऊबड़ खाबड़ मार्गकी अपेक्षा सड़क पर चलनेका विशेष अभ्यस्त था) सीधे ले जानेमें ठोकर खाकर गिरनेसे बचा सका तो शीघ्र ही उन सवारोंको जा पकड़ूंगा। सावधानीसे रास्तेमें गड्ढे तथा पत्थरोंको देखते हुए उन्होंने धीरे धीरे चलकर कुछ समयके पश्चात् सवारोंको जा लिया। अन्तमें जब उन सवारोंने देखा कि वे अपने घोड़ोंकी तेजीसे नहीं बच सकते हैं तो उन्होंने उस अकेले मनुष्यसे जो पीछा कर रहा था, अपना पीछा बलपूर्वक छुड़ाना चाहा। उन्होंने यह निश्चय किया कि पीछे आनेवाले सवारोंके यहां पहुंचनेसे पहले ही इसका प्रबन्ध हो जाना आवश्यक है नहीं तो तीनसे सामना करनेमें आपत्ति होगी। इसलिये वे दोनों घूमकर खड़े हो गये और तलवार निकाल कर अपना बचाव करनेको तय्यार हुए। नेताजीने आक्रमण करनेसे पहले उनसे पूछा—तुम लोग कौन हो और कहां किस लिये जा रहे हो?

"इस बातका तुमसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है" उनमेंसे एकने कहा "और जो तुम यह जानना ही चाहते हो कि हमारा काम क्या है तो इस समय तुमको हमारा पीछा करनेसे रोकना ही हमारा प्रधान काम है।"

इतना कहकर उन लोगोंने नेताजी पर आक्रमण किया जो शान्त भावसे उनके वार करनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे दोनों घोड़ोंके कंधोंके साथ कंधे और गर्दनके साथ गर्दन मिलाये हुए नेताजीकी ओर बढ़े। नेताजी उनके आक्रमणसे बचनेके लिये बायीं ओर इसलिये घूमे कि वे पहले केवल उस शत्रुसे मुकाबला कर सकें जो उनके दाहिने था। उससे ही पहले तलवारसे निबटेरा होना प्रारम्भ हुआ; दूसरा सवार नेताजीके न रुकनेवाले उग्र प्रहारोंसे बचनेके लिये बीस हाथ दूर जा खड़ा हुआ। नेताजीने थोड़े समयमें ही अपने शत्रुका काम एक भरपूर वार सिर पर लगाकर तमाम कर दिया। तलवार उसकी पगड़ी काटकर खोपड़ीके दो टुकड़े करती हुई निकल गयी और वह

घोड़ेसे नीचे गिरकर पृथ्वी पर सदैवके लिये सो गया। फिर नेताजी दूसरेकी ओर घूमे, जो अपने साथीकी सहायता करनेको आ रहा था परन्तु जिस समय उसने नेताजीकी अपने साथीके रक्तसे रंगी हुई तलवार देखी उसके होश उड़ गये और कलेजा दहल उठा। वह उसी रास्ते पर लौटकर भागा जिधरसे अभी ये लोग इधर आ रहे थे। वह भयकी दशामें यह बिलकुल भूल गया कि असलमें पीछा करनेका काम जिन्हें सौंपा गया था वे पीछे ही थे और अब पास ही आ पहुंचे हैं। अन्तमें जब उसने रामा तथा गोपालको देखा तो अपने घोड़ेको सड़क परसे जङ्गलकी ओर घुमाया और सरपट चालसे बढ़ाना प्रारम्भ किया। वह कदाचित इस समय बच भी जाता परन्तु वे तीर और कमानें जिन्हें दूरदर्शी नेताजीने रामा तथा गोपालको साथ लेजानेको कहा था, उसके लिये काल हो गयीं। उन लोगोंने अपनी कमानों पर जिनको उन्होंने पहलेहीसे काममें लानेको तय्यार किया था, तुरन्त ही तीर चढ़ाये और ऐसा निशाना लगाया कि एक तीर घोड़ेके कन्धेमें तथा दूसरा सवारके दाहिने पैरमें घुस गया। जखमी घोड़ा जमीन पर गिरा और सवार भी धूलमें लुढ़कने लगा। वह उठ कर बैठा परन्तु जखमकी वजहसे भाग न सका। रामा और गोपालने उसे गिरिफ्तार कर लिया। जब नेताजी वहां आये तो उस मनुष्यने अपने छल और विश्वासघातको स्वीकार कर लिया और क्षमा किये जानेकी आशासे यह भेद भी खोल दिया कि उसे कल्याणनगर निवासी एक व्यक्तिने भेजा था, जो ऊपरसे तो शिवाजी पर अतीव श्रद्धा रखता है परन्तु वास्तवमें बीजापुरसे इधरका हाल चाल देनेके लिये तनखाह पाता है।

वह कैद करके एक अफसरके सपुर्द कर दिया गया। उस अफसरको आबाजी सोनदेवने उस छोटी सी सेनाका अधिपति बनाया था जो कलगांवके समीप पड़ी थी। रामा और गोपाल राजमच्छीकी ओर अपने रास्ते पर बढ़े। नेताजी बहुत धीरे धीरे आरामसे नीरल गये जहां वे तुरन्त ही अपनी मावली सेनासे सम्मिलित हो गये। उन्हें यह भली भांति आशा थी कि वह अपनी वर्त्तमान कठिन

मुहिममें (राजमच्छीमें) अवश्य सफल होंगे ; कारण यह कि अब विश्वासघात या छलसे अपने भेदके प्रकट होनेका किसी प्रकारसे भय नहीं रहा था ; विश्वासघाती अपने कर्मका फल भोग चुके थे ।

दशम परिच्छेद ।

—*:*—

राजमच्छीका उद्धार ।

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहाय कृत ॥

सुभाषित रत्न भांडागार ।

रामा तथा गोपाल अपनी यात्रा पर आगे बढ़े चले गये और रात्रि होनेके पहले भोर घाटके नीचे जा पहुंचे । चांदनी होनेके कारण ये लोग रात हीमें घाटीपर चढ़ गये और आधी रातके कुछ समय उपरान्त रामाने अपने मित्र खंडाले वाले किसानको सोतेसे जगाया जिसका परिचय हम अपने पाठकोंको पहले किसी जगह करा चुके हैं । उसको भलीभांति विश्वासी जानकर इन लोगोंने अपना काम उससे कह दिया और सलाह की कि किस भांति यह कार्य अच्छे प्रकार सम्पादन किया जा सकता है । किसान भी इन लोगोंकी इस युक्तिसे सहमत हो गया कि दुर्गके भीतर पहुंचनेका अतीव निश्चित उपाय घासके गट्ठोंमें रस्सी छिपाकर ले जानेसे भिन्न और कोई नहीं हो सकता है । बीजापुरके दलवाले अपने खाने तथा घोड़ोंकी रसदके लिये सदैव अनाज तथा घासकी तङ्गी उठाया करते थे और प्रसन्नता पूर्वक उन सम्पूर्ण मनुष्योंका स्वागत करते थे जो उनके तथा घोड़ोंके

लिये रसद लाते थे। स्वयं उसने कहा कि मैं प्रसन्नता पूर्वक तुम्हारे साथ दुर्गमें चलूंगा। किसानने कहा कि ऐसा करनेसे मैं एक पत्थरसे दो चिड़िये गिराऊंगा। एक तो मेरे यहां घास बहुत है जिसके लिये मुझे उदारता पूर्वक दाम मिलेंगे, दूसरे तुम्हारा साथ भी दूंगा कारण कि दुगुने चौगुने दाम देकर मुसलमान लोग अपनेको नाज तथा घास पहुंचानेके लिये किसानोंको ललचाया करते हैं। साथ ही इसके मैं सम्पूर्णतः यह भी पसन्द करता हूं कि शत्रुको इस प्रान्तसे भगानेमें जहांतक हो सके मैं भी सहायता करूं।

तड़के ही रामा, गोपाल और किसान अपने साथ तीन नौकरों (जो किसानके यहां खेतीके काममें रहते थे) पर घासके भारी गट्ठे रखाकर और अनाजसे भरे दो बैल लेकर राजमच्छीको रवाना हुए। जब ये लोग उस संकीर्ण स्थलके समीप आये जो राजमच्छी और घाटकी पर्वत श्रेणीको परस्पर संकलित करता है तब इन्होंने नौकरोंको वापस जानेको कह दिया और घासके गट्ठोंको स्वयं अपने सिर पर रख लिया। इस वेषमें आगे दोनो बैलोंको हांकते हुए ये लोग दीवारके बीचवाले फाटक पर आये जहांसे राजमच्छीमें जाना होता है। तुरन्त ही इन लोगोंको भीतर जानेकी परवानगी दे दी गयी और किसान शीघ्र ही उस अफसरसे घास तथा अनाजकी कीमत तय करनेके लिये सरगर्मीसे मशगूल हुआ जिसकी सपुर्दगीमें फौजकी रसदके सरंजामका कारोबार था। जब दाम चुका दिये गये तब उसने रात्रिको वहां आप और अपने साथियोंके ठहरनेके लिये इजाजत मांगी; क्योंकि सन्ध्या होनेवाली थी और अब इन लोगोंका जाना नहीं हो सकता था। यह स्वीकार किये जानेके पश्चात् किसान, रामा तथा गोपाल अपने बैलोंको लिये हुए उस ब्राह्मणके घर पहुंचे जो किलेकी दीवारके भीतरी ओर सटे हुए देवीके छोटेसे मन्दिरका पुजारी था और सन्ध्याकी आरती करनेके लिये वहां रात्रि होनेके कुछ समय पीछे तक ठहरा रहता था।

जब अन्धेरेने संसारमें अपना अधिकार पूरी तरहसे फैलाया

ये लोग एक बहुत ऊंचे तथा ढालू स्थान पर आ पहुंचे जहांसे नेताजीने चढ़नेका निश्चय किया था। बैलोंकी रस्सियां जिनसे पांवके बट्टे बांधे गये थे खोल कर एक दूसरीसे जोड़ी गयीं। जिस समय सब एकमें जोड़ी जा चुकीं तब एक बहुत लम्बी रस्सी हो गयी। सौभाग्यसे यह स्थान बहुत ही सुनसान रहता था कारण कि मुसलमान लोग समझते थे, इस उत्कट स्थानसे किसी प्रकारके भय या क्षति होनेकी सम्भावना नहीं है। इस हेतु इस स्थानकी अपेक्षा वे शीवर्द्धनकी चौकसीकी ओर सावधानी रखनेकी प्रत्यक्ष ही विशेष झुके रहते थे।

यह ढालू ऐसा ऊंचा तथा बेहड़ था कि यहां किसी प्रकारके भयका विचार कर सुरक्षाके लिये दीवार भी नहीं बनायी गयी थी। ढालूके सिरे पर इसी ओर सागौनका एक विशाल तथा भारी वृक्ष था। उससे उन्होंने उस लम्बी रस्सीका एक छोर बांध दिया (जो कई जोड़ कर बनायी गयी थी) और दूसरे सिरे पर एक पत्थर बांध कर ढालके ऊपरसे उस ओर नीचे अंधेरी गहरी खाईंमें फेंक दिया। फिर ये लोग वहीं पासवाली झाड़ियोंमें छिप कर बैठ गये और प्रतीक्षा करने लगे कि देखें चन्द्रमाके उदय होने पर क्या होता है।

इसी समयान्तरमें नेताजी और उनके दलके मावली राजमचीके समीप आ पहुंचे थे। नेताजीने एक सहस्र मावलियोंमेंसे अत्यन्त साहसी और फुरतीले सौ मनुष्य चुन लिये। इनको साथ लेकर वे ढालके नीचे (पद प्रान्तमें) उस जगह गये जहां पर रस्सी ऊपरसे लटकायी जानेवाली थी। शेष मनुष्य दुर्गके पूर्वी फाटकके समीप ही किसी जगह ठहरनेको भेजे गये और उन्हें यह हुक्म दे दिया गया कि ज्योंही चन्द्रमा उगे त्योंही वे बलपूर्वक फाटकसे या दीवारोंपरसे नसेनी लगाकर अन्दर कूद जावें।

जिस समय संसारको प्रकाशित करनेवाले मरीचिमाली अस्ताचल शिखरके अवलम्बी हो चुके थे और उनके अस्त होनेके पश्चात् थोड़ी देर ठहरनेवाला प्रकाश भी रात्रिके डरके मारे शीघ्रता पूर्वक गुम हो रहा था, उसी समय नेताजी अंधेरेमें चि-

न्वित भावसे रस्सीके ऊपरसे नीचे फेंके जानेकी आशामें ताक रहे थे। उनके मनमें इस क्षण यह बात घूम रही थी कि कदाचित रामाको अपना काम ठीक करनेमें अनेक बाधाएं उपस्थित हुई होंगी। यदि रस्सी आते न देख पड़ी तो निश्चय ही किसी अन्य उपायका अवलम्बन करना होगा। चाहे कैसे भी हो श्रीवर्द्धनको तुरन्त उड़ाये जानेके पहले ही राजमच्छो पर आक्रमण करना आवश्यक है।

अन्तमें उनका संकल्प विकल्प आच्छादित मन किसी पत्थरके पहाड़से टकरानेका शब्द कानमें पहुंचनेसे आकर्षित हुआ और एक रस्सी ढालके इस ओर आती दिखाई पड़ी। नेताजी आशा कर रहे थे कि शीघ्र ही उसको अपने हाथोंमें पकड़ लूंगा परन्तु ग्रास वाला हाथ मुंह तक पहुंचते पहुंचते न मालूम कितनी बाधाएं उत्पन्न होती हैं। यह देखकर नेताजीकी घबराहटका ठिकाना न रहा कि कुछ देरके पश्चात् रस्सीके सिरेमें बंधा हुआ पत्थर सिरसे बहुत ऊपर ही स्थित हो गया। उनके तथा रस्सीके बीच लगभग चौदह हाथका अन्तर था और पहाड़ इस ओर ऐसा सीधा तथा बेढब था कि सम्भवतः उस पर किसी प्रकार चढ़ा नहीं जा सकता था। इस भांति नेताजी आशाके ऊंचे शिखरसे एका क्षण हीमें निराशा कूपकी तलीमें जा गिरे। उनके भलीभांति विचारे हुए सम्पूर्ण प्रयत्न तथा मनोरथ, रस्सी तथा उनके बीच इस चौदह हाथके अन्तरसे मानो भङ्ग होते हुए जान पड़े।

उन्होंने कुछ मावलियोंको अपने पास बुलाया और उपस्थित कठिनाई उनको दिखाकर कहा—

"यहां अब और कुछ नहीं किया जा सकता है जबतक कि इस सीधे पर्वत पर जिस पर कि बन्दरको भी पैर रखनेकी जगह नहीं है, तुम चढ़ न जाओ। हम लोगोंको यह स्थान छोड़ना तथा दुर्गके पूर्वीय ओर प्रधान अङ्गमें सम्मिलित होना आवश्यक है, क्योंकि रस्सी तक पहुंचे बिना........"

"शीघ्रही हम इस कठिनाईसे पार निकल सकते हैं" प्रस्तुत मावलियोंमेंसे एकने बीचहीमें कहा। इतना कहकर उसने अपने साथि-

योंमें से तीनको उस सीधे पहाड़के नीचे बुलाया और आप चट्टानसे दोनों हाथ लगाकर कुछ झुककर खड़ा हो गया। उनमें से एक उसके ऊपर चढ़कर उसके कन्धों पर खड़ा हो गया। एक और इन दोनों पर चढ़के दूसरेके कन्धों पर जा खड़ा हुआ। चौथा जो रह गया था पहले तीनोंके ऊपर चढ़कर तीसरेके कन्धों पर खड़ा हो गया और सुगमता पूर्वक रस्सी तक पहुंच गया। इस भांति आदमियोंकी उस बनी सीढ़ी परसे, जो रस्सी तक पहुंच गयी थी, चढ़कर राजमच्छीमें जाना था।

नेताजीने देखा कि उपस्थित अतीव कठिनाई प्रत्यक्ष ही मिट गयी। उन्होंने आल्हाद पूर्वक मावलियोंको बुलाकर इकट्ठा किया और चढ़नेकी तय्यारी की। कारण कि घाटके पर्वतोंके ऊपर पूर्वकी ओर स्थित बादल पर कुछ धीमा प्रकाश सा होता देख पड़ता था जिससे यह प्रकट हो रहा था कि चन्द्रमा शीघ्र ही उदय होने वाला है। नेताजी भय तथा जोखिममें अगुआ रहनेकी अपनी प्रथाके अनुसार सबसे पहले ऊपर चढ़े। दूसरे भी एकके पीछे एक करके चढ़ते चले गये। जिस समय चन्द्र बिम्बने आकाशमें निकलकर अपना सुन्दर मुख दिखाया तथा पहली किरण प्रकट हुई उस समय अन्तिम मावली पहाड़के छोर पर खड़ा था।

सब ओरसे एक साथ आक्रमण करनेका नियत समय आ पहुंचा था। अन्तिम मावलीने अपनी चढ़ाईके पश्चात् पहाड़के छोर पर ठहर कर अभी कठिनतासे सांस ली होगी कि नेताजी, रामा, गोपाल तथा उनके अनुयायी स्थानकी सङ्कीर्णताके कारण एक दूसरेसे गुथे हुए पृथ्वीके उस सङ्कीर्ण भागपर जिस पर, सुरक्षाकी दीवार थी तथा जहांसे राजमच्छीमें पहुंचनेका एकमात्र द्वार पूर्वीय ओरसे था, आक्रमण करनेके लिये वेगसे बढ़े। प्राय: इसी समय मावली दलके प्रधान भागने दीवार पर बाहरसे आक्रमण किया। त्र्यम्बक राव चन्द्रमाकी उदयकी प्रतीक्षा किस अधैर्य भावसे कर रहे थे यह पाठक गण स्वयं समझ सकते हैं। यह आक्रमण उनको तथा उनके अधिपतित्वमें शत्रु से घिरे हुए तथा आपत्ति ग्रस्त मनुष्योंको विशेष सुखप्रद था, क्योंकि

दूसरे दिन प्रातःकाल ही उनके जीवन शत्रुकी इच्छा पर आश्रित विचारे जा सकते थे। यही त्र्यम्बक राव तथा उनके दलवाले विचार रहे थे। बड़ी प्रसन्नतासे त्र्यम्बकरावके उत्सुक कानोंने वेगसे बढ़ते हुए मावली दलके पैरोंकी आवाज सुनी। तुरन्त ही उन्होंने अपने मनुष्योंको श्रीवर्द्धनके बाहर निकल कर शत्रु पर धावा करने तथा अपने छुड़ानेवालोंकी सहायता करनेकी आज्ञा दी। स्थानकी सङ्कीर्णताके कारण बहुत ही पास पास रहनेसे इन लोगोंने घेरा डालनेवाले यवन दल पर जो (श्रीवर्द्धनके) फाटकके सामने थे उग्र आक्रमण किया और उनको वहांसे लगभग दो सौ हाथ हटा दिया।

यवन सैनिकोंके आश्चर्यकी सीमा न थी। इधर तो श्रीवर्द्धन-पर ये आक्रमण कर रहे थे और उधर बाहरसे मावलियोंका प्रधान दल। दीवारके रक्षक वशमें कर लिये गये और राजमच्छीका फाटक तोड़ डाला गया। बाहरसे मावली पानीके प्रवाहके समान भीतर पहुंच गये। इस समय लड़ाईके ढोल यवन दलमें पर्वत पर चारों ओर बजाये जा रहे थे। बीजापुरके सैनिक मशालोंके उजालेमें जल्दी जल्दी हथियार लगा रहे थे तथा कतार बांध रहे थे। अंधाधुन्धीका अद्भुत दृश्य हो रहा था। यवन दलमें चारों ओर खलबली मच रही थी। एक दूसरेसे सैनिक पूछते थे कि शत्रु किधर हैं। दलके बहुतसे सैनिक अपने सेनापतिके उपस्थित न होनेके कारण इधर उधर उटपटांग दौड़ते फिरते थे। थोड़े थोड़े आदमियोंके झुण्डोंमें बंट कर उन लोगोंने जैसा मौका मिला नेताजीके मावली दलके विरुद्ध जो श्रीवर्द्धनकी ओर सीधा बढ़ा चला जा रहा था, रोक की; परन्तु फल कुछ न हुआ। त्र्यम्बकराव तथा अपने छोटेसे दलके साथ इस समयान्तरमें श्रीवर्द्धनके फाटकसे बाहर तो निकल आये थे परन्तु शत्रु दलमें चारों ओरसे बेढब घिर रहे थे जो संख्यामें इनसे बहुत ही अधिक होनेके कारण इनको श्रीवर्द्धनके फाटककी ओर हटानेमें समर्थ हो गये थे। निस्सन्देह त्र्यम्बकरावका दल जानजोखिममें फंस रहा था। वे वास्तवमें घबरा गये थे। और उद्दण्डता तथा शीघ्रता करके अपनी रक्षा करने तथा छुड़ा-

नेताजीके वहां पहुंचनेके पहले ही श्रीवर्द्धनको छोड़कर बाहर निकल आये थे। निस्सन्देह अम्बक रावने जल्दी और भारी भूल की। जिस समय नेताजी अपने दल सहित इस दृश्यमें आकर उपस्थित हुए उस समय बीजापुरके सवार अम्बक रावके दलको चारों ओरसे घेरे हुए थे। ज्यों ही नेताजीका दल इधर बढ़ा त्योंही उनमेंसे बहुतेरे लौटकर पहाड़ पर श्रीवर्द्धनकी ओर भागे और फाटक खुलवा कर अन्दर घुस गये तथा जानेके साथ ही भीतरसे फाटक बन्द कर दिया।

सिवाय उन दो सौ आदमियोंके जो शरण पानेके लिये श्रीवर्द्धनमें घुस गये थे, बीजापुरका शेष दल थोड़ी देर और रोक कर सका। उनमेंसे बहुतेरोंने हथियार डाल दिये। कुछ मावलियों द्वारा मारे गये और कितने ही भयकी अवस्थामें पागलोंकी तरह पहाड़के ढालपर अंधाधुंध दौड़े चले आनेसे नीचे गिरकर चूरचूर हो गये। इस प्रकार भाग्यके विचित्र परिवर्त्तनसे दोनों ओरके कामोंकी दशा बिलकुल बदल गयी। मुसलमान श्रीवर्द्धनमें जा पहुंचे और महाराष्ट्र राजमच्छीके अधिकारी हो गये। यह विचित्र परिवर्त्तन कदाचित बहुत समय तक जारी रहता, क्योंकि श्रीवर्द्धनकी दृढ़ता सम्पूर्ण प्रकारके आक्रमणको तुच्छ कर सकती थी (जैसा कि त्र्यम्बक रावने यवनोंके आक्रमणको सुगमता पूर्वक तुच्छ करनेमें स्वयं प्रमाण दिखाया था) किन्तु घटनाक्रम कुछ और ही हुआ। मावलियोंने अपनी पहली विजयके उत्साहमें जो उन्होंने राजमच्छीके फाटक पर प्राप्त की थी, श्रीवर्द्धनके फाटकको बलपूर्वक उखाड़नेका प्रयत्न किया। परन्तु इन लोगोंको वहांसे हानि उठाकर पीछे हटना पड़ा। स्वयं नेताजीका पैर एक बर्छीसे जखमी हो गया जो फाटकके ऊपरवाली खिड़कीसे किसी यवन सैनिक द्वारा फेंकी गयी थी। नेताजीने देखा कि दीवारपरसे नसेनी लगाकर फांद जाने या फाटक तोड़कर अन्दर घुसनेका बहुत ही कम अवसर है। उन्होंने विचारा कि श्रीवर्द्धन उस समय तक उनके अधिकारमें न आवेगा, जब तक अन्दर घुसे हुए यवन रसद न पानेके का-

केवल भूखसे तंग होकर स्वयं ही दुर्ग छोड़नेको लाचार नहीं हो जावेंगे।

अकस्मात उनको उस कारणका स्मरण हो आया, जिसने श्री-वर्द्धनमें महाराष्ट्र संरक्षकोंको व्यग्रता, निराशा तथा नाशके पास तक पहुंचा दिया था। उन्होंने त्र्यम्बक रावको बुलाकर पूछा कि यह स्थान कहां है जहांपर बीजापुरवालोंने श्रीवर्द्धनके नीचे सुरंग खोदकर तय्यार की थी। वहां जाकर जांच करनेपर विदित हुआ कि सुरंगकी तय्यारी—जितनी त्र्यम्बक राव (जिस समय वह श्रीवर्द्धनमें थे) होना विचार रहे थे, उससे कहीं अधिक होगयी थी। वास्तवमें सुरंग पूरी हो चुकी थी और बारूद भी जमायी जा चुकी थी। हफीज खांने सुबहको ही इसके उड़ानेका इरादा किया था। यदि नेताजी केवल चार पहर ही देरकरके आते तो निस्सन्देह वे श्रीवर्द्धनको पहले हीसे शत्रुके अधिकारमें पाते।

नेताजीने बीजापुरके उन सवारोंको, जो श्रीवर्द्धनमें थे सुलह करनेको कहलाया और अपना विचार प्रकट किया कि यदि वे लोग अपने प्राणोंको बचाना चाहते हैं तो तुरन्त ही दुर्गको हमारे हवाले कर दें। यह भी कह दिया गया कि यदि तुम अपना हित अहित न समझ कर काम करोगे तो दीवारके नीचे वाली सुरङ्गमें बिना बिलम्ब आग लगा दी जावेगी। यवन लोग काहेको माननेवाले थे। वे उस सफलता पर जो उन्हें फाटकसे त्र्यम्बकरावके दलको हटाकर भीतर घुसनेसे प्राप्त हुई थी, इतने फूल रहे थे कि उन्होंने इस सन्देशेकी कुछ परवा न की। इन तर्क वितर्कोंका उन्हें कुछ ध्यान न हुआ।

इसलिये नेताजीने आज्ञा दी और सुरङ्गमें आग लगा दी गयी। एक उग्र शब्द होनेके साथ ही दुर्गकी दीवारके टुकड़े तथा उस चट्टानके भारी खण्ड जिस पर दीवार बनी थी, वायुमें ऊंचे उड़कर गिरने लगे। बहुतसे सैनिक उन टुकड़ोंके नीचे दबकर मर गये। भीतरवाले बीजापुरके सैनिकोंके इस धड़ाकेसे चैतन्य होनेके पहले मावली दल दीवारके खंडहरसे

धड़धड़ाता हुआ दुर्गमें जा पहुंचा। रोक करनेवाले यवन सैनिकोंको उसने बध कर डाला तथा शेषको कैद कर लिया।

इस प्रकार एक बार पुनः राजमच्छी सम्पूर्णतः महाराष्ट्रोंके अधिकारमें आ गयी।

एकादश परिच्छेद।

—※※—

जावलीका सन्देश।

साकारोनिस्पृहोवाग्मी नानाशास्त्रविचक्षणः।
परचित्तावगन्ताच राज्ञो दूतः सदृष्यते॥

नीति।

कल्याणकी विजय पाने तथा राजमच्छीको बीजापुरके उग्र दलके चङ्गुलसे छुड़ाने पर शिवाजीको उत्तरीय कोकन तथा दक्षिणके अधिकांश स्थान नीरा तथा कृष्णाके बीचके भाग पर पूर्णतया अधिकार प्राप्त हो गया। तोरनामें प्राप्त हुए कोष तथा खलापुरमें छीने हुए बीजापुरके धनसे उन्होंने राजगढ़ दुर्गको भलीभांति दृढ़ता पूर्वक सुरक्षित किया तथा पैदलोंकी एक फौज और सवारोंका रिसाला तनख़ाह पर भरती कर लिया। शिवाजी इसके पीछे कुछ दिनों तक चुपचाप रहे। किसी प्रकारकी छेड़छाड़ उन्होंने किसीसे न की।

दक्षिण तथा कोकनमें शान्ति अपना प्रभाव फैलाती जा रही थी। इस अवसरमें नेताजीका विवाह काशीसे हो गया। काशीका "सौन्दर्य्य कुसुम" नेताजीके चिरकालसे उत्सुक वक्षस्थल पर धारण हो गया रहा। दाताजीको अब इस सम्बन्धमें कुछ

सङ्कोच न था। नेताजीके माता पिताके आनन्दकी सीमा न थी। दाताजीने अपनी एकमात्र पुत्रीका विवाह उत्साह पूर्वक किया। प्रिय पाठक गण ! हम विवाहकी सविस्तर कहानी लिखकर आपका अमूल्य समय नष्ट करना नहीं चाहते ; केवल यही कहना काफी है कि शिवाजीके अभिन्नहृदय मित्र नेताजीका विवाह असामान्य धूम तथा आनन्दसे हुआ। विवाह होनेके पश्चात् नेताजी अपनी जन्म भूमि कोकनमें सुख तथा शान्ति पूर्वक अपने माता पिताके साथ रहने लगे। तबसे अबतक तीन वर्ष उनको गृहस्थीका सुख और शान्ति अनुभव करते बीत चुके हैं। वे अब सम्पूर्ण प्रकारसे सुखी हैं। ईश्वरकी कृपासे काशीकी गोद भी भर गयी है। एक पुत्र उसके हुआ, जो इस समय लग भगडेढ़ वर्षका है और घरमें इधर उधर घुटनोंसे चलता है। नेताजीके वृद्ध माता पिता बुढ़ापेमें पोतेको गोदमें लेकर परम प्रसन्न होते हैं। काशी जैसी आज्ञा पालन करनेवाली बहू नेताजीसा वीर तथा साहसी पुत्र और सुन्दर पोतेका मुंह देखकर वे अतीव सुखी हैं और सब पुराने दुःखोंको भूल गये हैं।

इधर नेताजी गृहस्थाश्रमका सुख प्राप्त करते हैं। अब हमको शिवाजीकी ओर चलकर उधरका हाल चाल देखना आवश्यक है। देखना है कि वे क्यों चुपचाप बैठे हैं।

शिवाजी जैसे उद्योगी पुरुषका इस प्रकार शान्त रहनेका कारण साधारण नहीं हो सकता है। बीजापुरसे उन्होंने छेड़छाड़ इस हेतु नहीं की कि उनके पिता शाहजी बीजापुरमें नजरकैद थे और वे उन सब उपद्रवोंके उत्तरदाता समझे जाते थे जो शिवाजी दक्षिण तथा कोकनमें कर रहे थे। इस विलक्षण चुप्पीका यही कारण था। यदि वे हालमें कोई और आक्रमण बीजापुर राज्यकी परिधिमें करें तो निस्सन्देह उनके पिता निर्दयतापूर्वक वध कर डाले जावेंगे, यही भय शिवाजीको था। इसलिये नीति कुशल शिवाजी मुगल सम्राटके सहारे अपने पिताको बीजापुरवालोंके चङ्गुलसे छुड़ानेका प्रबन्ध कर रहे थे। उनका उद्योग कुछ कुछ सफल

भी होता जाता था मुगल सम्राट भी इस बात पर बीजापुर वालोंको दबा रहे थे कि शाहजी बन्धनसे मुक्त कर दिये जायं और उनके साथ उद्दण्डताका बर्ताव न किया जाय।

इन दिनों वे अपने दलके सजानेमें दत्तचित्त थे तथा उन हिन्दू राजाओंसे लड़ते भगड़ते थे जो इनको किसी भांति सहायता देनेसे अब भी अलग थे और महाराष्ट्रके महत्कार्य्यमें सम्मिलित होनेकी इच्छा नहीं करते थे जिसके सम्पादनके लिये उन्होंने अपने जीवन, सम्पूर्ण नीति कुशलता तथा युद्धचातुर्य्यको अर्पण कर दिया था।

उस प्रान्तसे आगे हुए ठीक दक्षिणहीमें जिस पर अब शिवाजीका अधिकार था, चन्द्रराव मोरे राज्य करते थे। उनका प्रधान नगर महाबलेश्वरसे ईशान कोणकी ओर लगभग डेढ़ कोस था। चन्द्रराव भी महाराष्ट्रके अत्यन्त बली राजाओंमेंसे थे। उनकी सेना भी मावलियोंकी ही थी। जैसा शिवाजीका दल मावलियोंका था इनका दल भी ठीक वैसा ही था। शिवाजीने विचारा कि यदि बलवान राजा चन्द्रराव मेरे साथ मेल कर लें तथा महाराष्ट्रके उद्धारमें सम्मिलित हो जावें तो बीजापुर राज्यकी सीमा दक्षिणकी ओर बहुत दूर हट जावेगी। परन्तु वह राजवंश जिससे चन्द्रराव सम्बन्धयुक्त थे बीजापुर राज्यकी ओर बहुत दिनोंसे अपनी नमकहलाली और परोपकेके लिये प्रसिद्ध था। वर्त्तमान राजा चन्द्रराव भी उस पुरानी प्रणालीको जो उनके बापदादोंकी बात पुरतसे चली आ रही थी तोड़नेकी इच्छा नहीं करते थे।

शिवाजीने यदि मेलसे हो तो ठीक, नहीं तो उस राज्य पर बलपूर्वक अधिकार करनेका दृढ़ निश्चय किया। इस अभिप्रायकी सिद्धिके लिये उन्होंने अपनी सहायतामें नेताजीको बुला भेजा जो तीन बरस तक अपनी जन्मभूमि चौकमें रह कर गृहस्थीका शान्ति सुख प्राप्त कर चुके थे। नेताजी यद्यपि चौकमें ही रहते थे, क्योंकि इन दिनों कोई आवश्यक कार्य न था, तथापि अवसर आनेपर महाराष्ट्रके उद्धारके लिये शिवाजीकी सहायता करनेको सदैव उद्यत तथा बद्धकटि रहते थे। यह निश्चित ही था कि कायो,

जिसका हृदय नेताजीके समान उत्साहसे पूर्ण था बृहस्थीके सुखके कारण अपने पतिको प्रशंसा तथा स्वदेशहितके कार्यसे कदापि न रोकेगी। जिस समय शिवाजीका सन्देशा उनके पास चौक पहुंचा वे पुनर्वार अपनेको शस्त्रोंमें सुसज्जित कर तथा अबूजान पर सवार होकर अपने सुखमय घरसे शिवाजीको ओर रवाना हुए। वे उस कामके करनेकी चिन्तामें उस ओर चले जिसे उनके राजा उन पर सौंपनेकी इच्छा करते थे।

काशी यद्यपि उनके जानेसे कुछ उदास थी परन्तु उसने उनको न रोका। वह जानती थी कि यह जाना किसी युद्धके लिये नहीं है, किन्तु जावलीके राजाके यहां शान्तिमय संदेशा पहुंचाना ही है। शिवाजी सोचते थे कि नेताजीने राजमच्छी तथा कल्याणमें जो प्रशंसा प्राप्त की है, युद्धके कामोंकी वह सफलता इस विषयके प्रबन्धमें भी लाभ करें तो कुछ आश्चर्य नहीं है।

नेताजीका राजगढ़ पहुंचनेपर बड़े आदरसे स्वागत किया गया। नेताजी सच्चे देशसेवी थे, इस कारण उन पर शिवाजीका अतुल स्नेह रहता था। उन्होंने तुरन्त ही जावलीके राजा चन्द्ररावके पास शिवाजीका सन्देशा ले जाना स्वीकार कर लिया। नेताजीसे यह कहा गया कि वे राजाको देशहित तथा धर्म्मकार्य्यमें सम्मिलित होनेको उत्तेजित करें तथा बीजापुरके विरुद्ध उभारें, क्योंकि चन्द्ररावके सम्मिलित हो जानेसे द्विगुण बल हो जावेगा तथा कार्य्यमें विशेष सुगमता होगी। उनको राजाके कान तक यह बात भी पहुंचानी थी कि उनकी पुत्रीसे शिवाजीका ब्याह होनेसे दोनों राज्य परस्पर सम्बन्धित हो जावेंगे। उपर्युक्त बातोंकी सूचना पाकर बहुतसे बहुमूल्य पदार्थ राजाकी सौगातके लिये तथा पचीस सवार साथ लेकर नेताजी जावलीकी ओर रवाना हुए।

राजा चन्द्ररावने नेताजीका स्वागत बड़े धूमधड़ाके तथा उदारतासे किया। आनेके पश्चात् भोजन इत्यादिसे छुट्टी पानेके उपरान्त नेताजी दीवान आममें पहुंचाये गये जोकि लम्बा चौड़ा था तथा बहुतही खूबसूरतीसे सजाया गया था। आजकलको कुर्सियोंके बदले वहां गद्दियां बिछी थीं जिन पर इन्द्रधनुषके रङ्गकी

बेशकीमती रेशमी चादरें पड़ी थीं। खूबसूरत खम्भोंके कंगूरे मूंगोंकी माला तथा फूलोंसे सजाये गये थे। कमरेके सिरे पर दूसरी ओर ऊंची गद्दी पर राजा चन्द्रदेव बैठे थे। उनके सिरके ऊपर रेशमका निहायत उम्दा छत्र था जिस पर सुनहरे रुपहरे कलाबत्तूसे सिंह तथा तोते इत्यादि बनाये गये थे। उनकी बगलमें उनके भाई, दो पुत्र, उनके मन्त्री हिम्मतराव तथा काली और भद्दी सूरतके बाजी श्यामराज बैठे थे जो बीजापुरके दरबारकी ओरसे इधरका हाल चाल देनेके लिये तनखाह पाते थे। नेताजीके स्वागतके लिये तवायफोंका एक झुण्ड बुलवाया गया जो कि दूरदराज सफर तै करके यहां आयी थीं। उपस्थित सरदारों तथा आये हुए मेहमानोंके स्वागतके लिये इन लोगोंका मुजरा होना हुआ। ताल सुरसे गाना होने लगा। आम मजलिसमें नेताजीका स्वागत किया गया था इस हेतु उन्हें शिवाजीके भेजे हुए बहुमूल्य पदार्थोंको भेंट करने तथा शिवाजीकी क्षेम कुशल उनसे कहनेका अवसर न प्राप्त हो सका।

राजा चन्द्ररावसे एकान्तमें मुलाकात करके बातचीत करना सहज काम न था। नेताजीने यह कई बार कहा कि उनको राजा साहबसे एकान्तमें बातचीत करनेकी परवानगी मिले परन्तु उनकी इच्छानुसार बिना साफ इनकार किये कई दिन टाल मटोलहीमें निकल गये। इस समयान्तरमें उनको भलीभांति प्रसन्न रखनेका यत्न किया गया। नेताजीको ये लोग पासवाले पहाड़ महाबलेश्वर पर कृष्णाबाईका मन्दिर दिखानेको ले गये जहां पर्वतके छिद्रोंमेंसे पांच नदियां कृष्णा, कोयना, येना, गायत्री तथा सावित्री बहुत पतली धार होकर निकली हैं। नेताजी बहुत दूर दूर तक कभी अकेले और कभी राजा चन्द्ररावके पुत्रोंके सङ्ग सैर करनेको गये और इन उत्तम सुहावने दृश्योंको आश्चर्यकी दृष्टिसे देखते रहे। हमारे पाठकगण कहीं यह कल्पना न करें लें कि पश्चिमी भारतके निवासी पर्वतीय तथा तराइयोंके सौन्दर्य और वैभवसे अनभिज्ञ हैं। इसके विरुद्ध भारी प्रमाण राजमच्छी (राजमक्षिका) मनरञ्जन और मकरन्दगढ़ इत्यादि नामोंसे उनकी पर्व-

न, तराई तथा वनके सौन्दर्य्यकी जानकारी भलीभांति प्रकट होती है। नेताजी सोलशीकी तराईको अतीव प्रसन्नताकी दृष्टिसे देखते रहे जो नीले कुहरेमें सायंकाल तथा भोरको आधी छिपी रहती है तथा जिसे उस सौन्दर्य्यके कारण अब अङ्गरेज लोग (Blue Valley) नीली तराईके नामसे पुकारते हैं। नेताजीने उस ऊंची पहाड़ी पर चढ़ कर जो अब आर्थर्स सीट (Arthur's Seat) नामसे प्रसिद्ध है तोरना तथा राजगढ़के शिखरोंको स्नेहमय दृष्टिसे देखा तथा चार हजार फुट नीचे सावित्रीकी तराई पर निगाह की।

महाबलेश्वरका ऊपरी भाग रमणीय वनसे सुशोभित है और मठेरनके बनसे कुछ मिलता जुलता है जिसे एक प्रकारसे उसकी विस्तृत रूप छटा कह सकते हैं। कहीं कहीं यह बन मठेरनके बनसे बिलकुल मिलता है परन्तु नेताजीको अपनी जमन्भूमि पर अधिक प्रेम था। यद्यपि उनका मन महाबलेश्वरके वैभव तथा रमणीयतामें मोहित हो गया तथापि वहांके अतीव सुन्दर दृश्य मठेरनके बन-सौन्दर्य्यके समान नहीं जंचे।

द्वादश परिच्छेद।

---0:0---

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं च गूहति गुणान्प्रकटी करोति।
आपद्गतं न जहाति ददाति काले,
सन्मित्र लक्षण मिदं प्रवदन्ति सन्त: ॥

भर्तृहरि ॥

नेताजीका मन बहलानेके लिये अनेक प्रकारके यत्न किये गये जिससे कि उनका मन वहां रहनेसे उकता न जावे। इसीलिये

चीते, शेर, रीछ तथा अन्य वन्य पशुओंका शिकार करनेमें, जो महाबलेश्वरके जङ्गलमें उन दिनों बहुतायतसे थे, उनका चित्त आकर्षित किया गया। राजमच्चीके पुनरुद्धारसे इस समय तक लम्बे अवकाशमें बेकार बैठे रहने पर अब उन्हें अपने शारीरिक बल, दृष्टिकी तीव्रता तथा शस्त्र चलानेके बहुत दिनोंके छूटे हुए अभ्यासकी परीक्षा करनेका अवसर प्राप्त हुआ। कई बार उन्होंने चीते आदिका शिकार कर आसपासवाले गांवोंके दीन किसानोंको कृतज्ञ कर लिया, क्योंकि वे वन्य पशु उन किसानोंके बैल भेड़ तथा बकरोंको खा जाया करते थे। बहुधा नेताजी अकेलेही बर्छा हाथमें लिये पहाड़ों पर घूमा करते थे। बर्छा उनके केवल अपने बचावका शस्त्र ही न था, उससे उन्हें पहाड़ी ढालोंके चढ़ने उतरनेमें भी विशेष सहायता मिलती थी।

एक दिन वे इसी भांति अकेले घूम रहे थे। कमरमें तलवार लटकी हुई थी; हाथमें वही लम्बा बर्छा था। महाबलेश्वर पर्वतके दक्षिण ओर वे इधर उधर इस खोजमें घूम रहे थे कि कदाचित कोई वन्य पशु मिल जाय तो शिकार करें और इस बदलते हुए मनोरञ्जक दृश्यका आनन्द भी लेते रहें। अकस्मात् उनकी दृष्टि एक पुजारी पर पड़ी। तत्काल ही उनको स्मरण हो गया कि उसको उन्होंने महाबलेश्वरमें कृष्णाबाईके मन्दिरके पुजारियोंमें देखा था।

"आप इधर कैसे निश्चिन्त तथा सुस्त घूम रहे हैं? आपके प्रिय तथा सुहृद राजा शिवाजी मृत्यु बन्धनके भयमें पड़े हुए हैं।"

"किस भांति और कब आपको यह बात विदित हुई?" नेताजीने शीघ्रतासे पूछा "और यदि आपका यह कहना सही हो तो मैं इस दूरस्थानसे अपने मित्र राजा शिवाजीकी उनके कठिन समयमें किस प्रकार सहायता कर सकता हूं?"

"आपको इस बातके इस समय जाननेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि मुझे यह बात कैसे विदित हुई" पुजारीजीने उत्तर दिया "इसका क्षण भरका भी विलम्ब न करना चाहिये। यथा सम्भव शीघ्रतासे पारघाटी पर पहुंचना आवश्यक है, क्योंकि भय विशेष स-

मीप है। जब हम वहां पहुंच जायंगे और अवकाश मिलेगा तो मैं जो कुछ मुझे इस विषयमें विदित हुआ है सम्पूर्ण आपसे कह दूंगा।"

ऐसा कह कर पुजारीजो पर्वतके पश्चिमी ओर मार्ग पर नेताजीके आगे चल दिये। उनकी चाल बहुत ही तेज थी। नेताजीने यह विचार कर पुजारीसे धीरे चलनेको कहा कि एक तो वे इतनी दूरसे चले आने पर मार्गश्रमसे थक गये थे और अभी बहुत चलना था; दूसरे उन्होंने यह भी विचारा कि कृष्णाबाईके मन्दिरमें आरामसे रहनेवाले पुजारीको निःसन्देह विशेष श्रम हुआ होगा। मार्ग चलनेका उनको क्या काम पड़ता होगा? पुजारीने नेताजीका कहना स्वीकार न किया। उन्होंने कहा कि चाहे कुछ भी क्यों न हो इस समय मैं किसी भांति ठहरना नहीं चाहता। इसी भांति लगभग एक कोस दौड़ादौड़ चले जाने पर वे पारघाटी पर पहुंच गये। वहींसे महाबलेश्वरसे कोकन जानेका मार्ग है। वह रास्ता अब उस स्थानसे होकर जाता है जो बम्बई पाइयटके(Bombay Point) नामसे प्रसिद्ध है। यही रास्ता प्रतापगढ़के पर्वत पर बहुत घूमघुमौआ तथा चक्कर खाता हुआ नीचे उतरता है।

पूछने पर उनको एक किसान द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि लगभग तीस शस्त्र-सुसज्जित मनुष्योंका समूह उनके आनेके प्रायः एक घण्टे पहले घाटीमें गया था। सड़ककी बगलकी एक चट्टानकी आड़से नेताजीने उस घुमौए रास्ते पर निगाह डाली, परन्तु ऐसा कोई समूह देखनेमें न आया जैसा कि किसानने वर्णन किया था।

वे लोग घाटीके किसी दर्रेमें छिपे होंगे "ब्राह्मणने कहा" उधर परे वाली झाड़ीमें (कुछ रुक कर और हाथसे इशारा कर) ओहो! वह देखिये राजा शिवाजी तथा उनके साथी अपने मुकाम मददसे घाटीकी ओर बढ़े चले आ रहे हैं। यदि मेरी दृष्टि धोखा नहीं खाती है तो अवश्य वेही हैं। यदि हम उन्हें शीघ्र सूचना नहीं देते हैं तो उनकी जान जोखिम ही है।

तुरन्त ही चट्टानकी आड़से निकल कर ये लोग घाटीके नीचे बढ़े। जितनी सावधानी तथा शीघ्रता पूर्वक हो सका ये लोग

ही निगाहसे बचते गये, परन्तु इस पर भी इनको वहां तक आनेमें देर होती और सारा रङ्ग बदल जाता; यदि एक आकस्मिक घटनासे शिवाजीको उस जङ्गलमेंसे इधर आनेमें कुछ देर न हो जाती तो निःसन्देह काम चौपट हो गया होता। शिवाजी उस स्थानतक न आने पाये थे जहांसे उन पर आक्रमण होनेवाला था। प्रियपाठको! आपको व्यर्थ उलझनमें न डालकर हमको इस घटनाका वर्णन करना इस समय आवश्यकीय जान पड़ता है जिससे शिवाजीके आनेमें विलम्ब हुआ। जिस रास्तेसे शिवाजी और उनके साथी आ रहे थे उसके पास एक बालक और बालिका खेल रहे थे। अल्पवयस्का बालिका दौड़कर रास्तेमें आ गयी और अश्वारोहीका धक्का लगनेसे धूलमें गिर पड़ी और रोने लगी। कोमल हृदय वीर शिवाजीसे यह न देखा गया। घोड़ेसे कूद कर उन्होंने बालिकाको तुरन्त ही अपनी गोदमें उठा लिया और उसके आश्वासन देनेका प्रयत्न करने लगे। रोती हुई बालिका चोट पहुंचनेकी अपेक्षा गोदमें ले लेने पर अधिकतर भयभीत जान पड़ी। गोदमें ले लेने पर भी वह उग्र शब्दसे चिल्ला रही थी। अनेक भांति बहलाने पर भी वह चुप न होती थी शिवाजीने उसका मन बहलाकर रोना बन्द करनेके लिये अपनी नीमास्तीनसे एक सोनेका जड़ाऊ तथा सुन्दर बटन निकाल कर उसके हाथमें दे दिया। बटनके हाथमें आनेसे अबोध बालिकाके रोते हुए मुख पर हंसीकी झलक दिखाई पड़ी। शिवाजी दोनों बालक बालिकाको कुछ मोहरें देकर वहांसे रवाना हो गये। परन्तु इस थोड़े ही विलम्बके कारण वे जान जोखिमसे बच गये, क्योंकि यदि यहां न ठहरते तो नेताजी तथा पुजारीके इस जङ्गलमें पहुंचनेके पहले ही वे पार घाटीमें पहुंच गये होते और आश्चर्य्य नहीं कि दुष्टोंका चक्र उन पर चल जाता! नेताजी तथा ब्राह्मण इनके घाटीमें उतरनेके कुछ ही क्षण पहले ऊपर आ पहुंचे।

ब्राह्मणके साथ साथ वृक्षोंकी आड़में धीरे धीरे नीचे बढ़कर नेताजीने मावलियोंका एक झुंड देखा जो, रास्तेके समीप ही

कमलवाली झाड़ीमें दबका हुआ बैठा था। उस झुंडके सम्पूर्ण मनुष्य तीर कमानोंसे सुसज्जित थे और उनके तीर कमानोंसे खिंचे हुए रौदे (प्रत्यञ्चा) पर चढ़ कर छूटनेको तय्यार थे। झुंडके बीचमें बाजी श्यामराज स्थित थे जो प्रत्यक्ष ही इस झुंडके प्रधान अगुआ जान पड़े। पास ही झाड़ीके कांटे पर उलझा हुआ बन्दूकका तोड़ा सुलग रहा था। उनके अनुयायी इस कामके कारण जिसका भार उन्होंने अपने हाथमें लिया था मनमें झिझक रहे थे तथा उनके हृदय धड़क रहे थे। वे जानते थे कि हम इस स्थान पर शिवाजीको बध या बन्दी करनेके लिये श्यामराज द्वारा लाये गये हैं। पश्चिमीय भारतके सम्पूर्ण मनुष्य शिवाजीको देशका उद्धारकर्त्ता समझ कर उनको भक्तिकी दृष्टिसे देखते थे और कुछ कुछ यह भी विश्वास करते थे कि वे शिवजीके अंशावतार हैं। इसी कारण उनके हृदय कांप रहे थे और कमानोंके तीर रौदे परसे गिरे पड़ते थे। बाजी श्यामराज व्यर्थ ही उन लोगों पर अपने मनोरथका प्रभाव डालनेकी चेष्टा कर रहे थे।

"देखो, वह शिवाजी अपने समूहके आगे आगे चला आ रहा है" बाजी श्यामराजने कहा "हम देखते हैं कि ईश्वरांशका सिर हमारी बन्दूकसे छूटी हुई गोलीको रोक सकता है कि नहीं'।"

इतना कहकर गोली छोड़नेकी इच्छासे उन्होंने अपनी बन्दूकका लक्ष्य बांधा और अपने मनुष्योंको आज्ञा दी कि यदि शिवाजी गोली लगने पर भी जीता रहा तो साथ ही वे लोग अपने तीर छोड़ें और एक साथ निकल कर उसे गिरफ़ार कर लें। श्यामराजके मुंहसे यह शब्द निकलनेके साथ ही अथवा कहना चाहिये कि अपना मनोरथ पूरा करनेके पहले ही भारी बर्छी उनकी जांघ फाड़कर निकल गयी और वे मृतक होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। पाठक गण! आपको स्मरण होगा कि नेताजी बर्छेके चलानेकी वह चतुराई नहीं भूले थे जो उन्होंने मठेरन पर्वतके शिखर पर महात्मा मोरगिराजसे सीखी थी। वही चातुर्य्य उनको इस समय उपयोग करनेकी आवश्यकता हुई।

जिस समय उस समूहके अगुआ बाजी श्यामराज किसी गुप्त शत्रु द्वारा फेंकी हुई बर्छीके लगनेसे मरकर गिर पड़े उनके अनुयायी भयसे चिल्लाते हुए आस पासवाले जङ्गलमें इधर उधर भाग गये। उनको अपने भड़कते विचारोंमें यह जान पड़ा कि बाजी श्यामराजके अनुचित तथा अपवित्र शब्दोंने ही (जो उन्होंने शिवाजीके विषयमें व्यवहार किये थे) उनके सिर पर भवानीका वा ईश्वरांशावतार शिवाजीका कोप पटका ; वह बर्छी जिससे उनके प्राण गये, अस्थि मांस निर्मित किसी मानुषिक हाथ द्वारा नहीं फेंकी जा सकती थी।

नेताजी और पुजारी भाड़ीसे बाहर निकलकर शिवाजीका स्वागत करने लगा जो षड़यन्त्र शत्रुओं द्वारा निर्मित किया गया था उसे कहनेको चले। अब पुजारीजीने नेताजीको यह समभानेका अवकाश पाया कि किस प्रकार उन्हें बाजी श्यामराजके कपट चक्रका पता लगा और वे उसकी उन्हें सूचना देनेके योग्य हुए।

पुजारीजीने कहना प्रारम्भ किया :—

"बहुत समयसे मैं उस जातीय दलमें गुप्त रीतिसे सम्मिलित था जो जावलीमें शिवाजीका राजासे मेल करानेके लिये स्थापित किया गया था। मुझे बाजी श्यामराज पर इसका अतीव संदेह था कि वे बीजापुरकी ओरके जासूस हैं। बाजी श्यामराज जैसे लालची तथा स्वार्थपर पुरुषसे उचित तथा अनुचित सभी प्रकारके कार्योंकी सम्भावना थी। मेरा सन्देह निश्चयकी सीमा तक बढ़ गया। इस हेतु मैं एक दिन उनके पीछे चुपचाप लगा रहा कि उनमें तथा राजाके एक विश्वासी मावली सैनिकमें जो बातचीत हो सुनूं। मेरी आशा पूरी हुई। मैं ठीक उसी समय पहुंचा जब कि वे अपने षड़यन्त्रका उस मावली सैनिकसे वर्णन कर रहे थे। उससे बाजी श्यामराजकी बहुत बातचीत हुआ करती थी।

मैंने आज ही दो पहरके बाद उस मावलीको जब कि वह मन्दिरमें पूजा करनेको आया, देवताओंके कोपसे यह कहकर डराया कि यदि तू तुरन्त ही न बतला देगा कि उस गुप्त

संबन्धमें तेरी बाजी श्यामराजसे क्या बातचीत हुई थी सो ठीक न होगा। धर्मके भयसे विचलित होकर उसने इस भेदको प्रकट कर दिया।

शिवाजी जो कोंकनके महद नामक नगरमें बहुधा रहा करते थे आज दो पहरके बाद पारघाटीमेंसे निकलनेवाले थे। बाजी श्यामराजने इसलिये उन्हें रास्तेहीमें आ पकड़ना निश्चय किया। अपना अभिप्राय सिद्ध करनेके लिये उन्होंने अपने ही समान कलुषित हृदय तीन मावली जावलीके राजासे मांग लिये। श्यामराजको अपने अभिप्राय सिद्ध होनेका निश्चय था, और वे बीजापुरके राजासे इकरार भी कर आये थे कि उचित अवसर पाने पर अवश्य शिवाजीको बध या बन्दी करेंगे।

मुझे जिस समय यह कपट प्रबन्ध विदित हुआ मेरे हृदय पर सैकड़ों बिच्छुओंके डंकके समान वेदना हुई। मेरे मनमें यह विचार उत्पन्न हुआ कि देखो सुवर्णके लोभसे मनुष्य स्वार्थपरतावश कैसा नीचसे नीच कर्म करनेको उद्यत हो जाता है। आज उन्हीं वीर शिवाजीके प्राण लेनेके लिये यत्न किया जा रहा है जो महाराष्ट्रके लिये अपना तन मन धन समर्पण किये हुए हैं। यद्यपि हम लोग ब्राह्मण हैं और राजकीय विषयोंसे हमारा कुछ विशेष सम्बन्ध नहीं है तथापि ऐसा अनुचित कार्य कदापि हमसे सहन नहीं"

इतनेमें शिवाजीने नेताजीको आकर गले लगाया और प्राण बचानेके हेतु उनको धन्यवाद दिया।

"इस समय" शिवाजीने कहा "तुमको जावलीको वापिस जाना है तथा ऐसा गम्भीर भाव धारण करना योग्य है मानों कुछ भी संघटित नहीं हुआ। वर्त्तमान विषयोंको देखते हुए मुझे यह उचित नहीं जान पड़ता कि मैं राजासे अभी खुल्लम खुल्ला लड़ाई प्रारम्भ करूं। कदाचित वह समय शीघ्र ही आनेवाला है जब मैं राजाको उन शस्त्रोंकी अपेक्षा अधिक चातुर्य्यसे दण्ड दे सकूंगा जिन्हें उन्होंने मेरे प्राण लेनेके लिये उपयोग किये थे परन्तु अभी शान्ति बनाये रखना ही उचित है।"

"मैं डरता हूं" नेताजीने उत्तर दिया "कि मुझे अपने गुप्त

भावको अविचलित तथा गम्भीर बनाये रखनेके लिये हार्दिक विचारों पर अधिकार नहीं है। मुझे राजाको देखते ही उसकी विश्वासघातकता स्मरण हो आवेगी और........”

“हां, मेरे मित्र” शिवाजीने नेताजीकी बात बीच हीमें रोक कर कहा “सो मैं भलीभांति जानता हूं। निश्चय ही तुम बहुत ही उदारचित्त, स्वच्छ हृदय तथा दृढ़प्रतिज्ञ हो। राजाका छल और विश्वासघात तुमसे सहन नहीं हो सकता। अबलक (नखदार) शेर अपने ताकतवर पञ्जेके एक ही थप्पड़से शत्रुका बध कर सकता है, परन्तु कपट प्रबन्धके युक्ति पूर्वक रचे हुए पेचीदा मकड़ीके जाले बनाने तथा उसके समझनेमें वह असमर्थ है। अब मैं तुम्हें युद्धमें ही केवल अपनी दक्षिण भुजा जानूंगा; अन्य राजकीय अवसरों पर जहां चापलूसी तथा—शठे शाठ्यं समाचरेत्” की आवश्यकता उपस्थित होगी वहां तुमको न भेजा करूंगा। केवल कुछही दिनों तक अपने क्रोधमय भावोंको छिपाये रहो। जितना शीघ्र सम्भव है मैं तुमको वहांसे बुला लूंगा और तुम्हारे स्थानमें वैसा ही चापलूस और प्रपञ्च वेत्ता व्यक्ति भेजूंगा जैसा कि चन्द्रदेव मोरे या उसका मंत्री हिम्मतराव है।

इतनी बातचीत करनेके पश्चात् शिवाजी नेताजीको पुनः धन्यवाद देकर अपने रास्ते पर रवाना हो गये।

त्रयोदश परिच्छेद

—*⁂*—

सम्पदो महतामेव महतामेव चापदः ।

वर्धते क्षीयते चन्द्रो नतु तारागणः क्वचित् ॥

स्फुट ।

शिवाजी अपने इकरारको न भूले । कुछही दिनोंमें राजगढ़से राघव बल्लाल नामक एक ब्राह्मण जावलीको भेजा गया और उसने आकर नेताजीकी जगह ले ली तथा यह सूचना दी कि शिवाजी नेताजीको किसी अन्य कार्यका भार सौंपना चाहते हैं। अभी हाल ही उनको लौटना आवश्यक है। इस हेतु नेताजी अश्वजान पर सवार हो अकेले ही वहांसे रवाना हो गये। उन्होंने साथ आये हुए पचीस सवारोंको यह आज्ञा दी कि वे मेरे स्थान पर नियुक्त हुए प्रतिनिधि राघव बल्लालकी रक्षाके हेतु जावलीमें ही रहें ।

यह बात नेताजीकी प्रकृतिके अनुकूल कुछ उद्दण्ड कही जा सकती है कि बिना किसीको साथ लिये जावलीसे अकेले चल दिये। वे प्रान्त निःसन्देह उनके लिये भयङ्कर था कारण वहांका राजा जिससे शिवाजीका शत्रु तथा बीजापुरके राजाका मित्र था। यद्यपि उन मावली लोगोंने, जिन्होंने शिवाजीको वध करनेका प्रयत्न किया था, श्यामराजकी मृत्यु विषयक मनमानी अद्भुत कहानी फैलायी थी— कहा था कि एक विचित्र अमानुषिक बलसे शिवाजी शत्रुओंके चङ्गुलसे निकल कर बच गये—परन्तु उस घटनाका वास्तविक मर्म बाजी श्यामराजके नायकको भलीभांति विदित हो गया था। उसने अपने मालिकके कामको पूरा करने तथा उनकी मृत्युका बदला चुकानेका निश्चय किया। नेताजीको वध या बांध कर श्यामराजकी मृत्युका पलटा चुकानेकी इच्छा उसके हृदयमें प्रबल हुई। द्रव्यकी उदार सहायतासे जो उसे बीजापुर राज्यसे मिला करती थी उसे

दुष्टकर्म्मका सम्पादन करनेके लिये अपने ही सरीखे कलुषित हृदय छः मनुष्योंको सम्मिलित करनेका पुनः साहस हुआ। जिस समय उसने, यह सुना कि नेताजी बिना किसीको साथ लिये अकेले ही जावलोसे चल दिये हैं उसने अपने कपट यन्त्रको सिद्ध करनेका निश्चय किया।

जावली तथा महाबलेश्वरसे तोन प्रधान रास्ते हैं। आप पूर्व की ओर वहांसे "वै" नामक स्थान या सितारेको जा सकते हैं और इसी भांति दक्षिणकी उच्चभूमि पर पूनाको। कोकनमें अथवा, आप उसी 'पार' नामक घाटोमेंसे उतर कर आ सकते हैं जिसमें शिवाजीपर आक्रमण हुआ था। "वै" बीजापुरके मकासदारके (प्रधानके) मुख्य स्थानोंमेंसे था, जिसकी हुकूमतमें कमलगढ़ और दूसरे आसपास वाले दुर्ग थे। नेताजीने शत्रुके वाससे निकल कर जाना बुद्धि विपरीत विचार, उस मार्गसे न जाना ही निश्चय किया। इससे भो वैचव सितारे होकर जाना था क्योंकि सिवा सोधे मार्गकी अपेक्षा केवल बहुत दूर ही न था किन्तु बीजापुरकी सूबेदारीका एक उपयोगी तथा प्रधान नगर था। वहांसे समीप ही एक दुर्ग भी था, जो शाही जेलखानेके काममें लाया जाता था। इस हेतु नेताजीने यही अत्युत्तम समझा कि पश्चिम ओर जाकर "पार" घाटीसे उतरना ठीक है।

वह छः मनुष्य जो बाजी श्यामराजके नायककी तनख्वाहमें थे, नेताजीके पीछे पीछे पहाड़के नीचे तब तक साथ चले आये जब-तक कि वे (नेताजी) दो पहरको विश्राम करनेके लिये एक ग्रामकी कुंजमें आकर ठहरे। अपने घोड़ेको दाना खिलाये और पानी पिलानेके पश्चात् उन्होंने भोजन निकाल कर खाना प्रारम्भ किया। जिस समय वे पहाड़मेंसे गिरकर बहते हुए पानीको पीनेके लिये झुके उन छः दुष्टोंको अपने अभिप्राय सिद्ध करनेका अवसर प्राप्त हुआ। ये लोग जिस समय नेताजी भोजन कर रहे थे, पेड़ोंकी आड़में पास ही छिपे हुए थे। पानी पीनेके समय अवसर पाकर वे अकस्मात् नेताजीपर टूट पड़े। नेताजीको अपनी तलवार मियानसे निकालनेका भी समय न मिला। उनकी भुजाएं बांध ली

गयीं। बल तथा उद्योगसे नेताजी अपनेको उन लोगोंसे छुटा-कर स्वतन्त्र न कर सके। उनके शस्त्र शीघ्र ही छीन लिये गये, हाथ पीठकी ओर कसकर बांध दिये गये और वे घोड़े पर सवार कराये गये। वहांसे वे लोग नेताजीको महाबलेश्वर पर्वतका चक्कर देते और अपरिचित मार्गसे होते हुए सितारेकी ओर चले। उन्होंने विचारा कि जहां तक सम्भव हो नेताजीकी गिरफ्तारीकी खबर शिवाजी तक न पहुंचने पावे। नेताजी पर इस विचित्र आक्रमण होनेके दृश्यका कोई भी साक्षी न था और उनके गिरि-फ्तार करनेवालोंने डर और लोभके कारण ऐसी चौकसी रखी कि अपनी जीभों पर भी नेताजीका एकाएकी गायब हो जाना बहुत समय तक गोरखधन्धेकीसी उलझन बना रहा। शिवाजी विचा-रते थे कि नेताजी जावलीसे अकेले चल दिये थे, परन्तु यह उन्हें विदित न था कि वे जीवित थे अथवा मृत ?

सितारे आने पर नेताजीका मुख पर कपड़ेसे बांध दिया गया जिससे उनको कोई पहचान न सके और वे उस दुर्गमें पहुंचाये गये जो नगरके दक्षिण ओर लगभग एक सहस्र फुट ऊंची पहाड़ी पर बना है। जैसे बीजापुर राज्यके विरुद्ध विद्रोह करनेवाले रखे जाते थे उसी भांति वे भी रखे गये। कई मास तक वे कारा-गारकी संकीर्ण सीमामें बाहरी संसारी अन्य विषयोंसे अज्ञात बन्द रखे गये। उस पर पहरा रखनेवालोंको कारागाराध्यक्षने कठिन आज्ञा दे दी थी कि कोई बाहरी समाचार न पहुंचाया जाय। इसी कारण उनके कानों तक जावलीकी विचित्र घटना न पहुंच सकी। जावलीमें राघव बलालने जो नेताजीके पद पर शिवाजी द्वारा नियत करके भेजे गये थे एकान्तमें बात करते समय राजाके हृदयमें तलवार भोंक दी और साथ ही इसके सेनापति सम्भाजी कावजीने राजाके भाईको वध कर डाला। शिवाजीने (जो रा-जाको विश्वासघातकी चालके लिये दण्ड देनेको उत्सुक हो रहे थे) पहले हीसे महाबलेश्वरमें भारी सेना इकट्ठी कर रखी थी तुरन्त ही जावली पर आक्रमण कर दिया तथा राजाके पुत्रों और मन्त्री हिम्मतरावको अपने अधीन कर लिया। इस भांति शिवाजीने

जावली पर अधिकार प्राप्त कर लिया जिससे वे चालीस सहस्रके लगभग मावली जो चन्द्ररावके हाथमें थे अब इनकी सेनामें सम्मिलित हो गये थे तथा इनका बल द्विगुण हो गया था। अपने इस नवीन प्राप्तस्थानकी सुरक्षा तथा दृढ़ताके लिये उन्होंने अपने मन्त्री मोरो त्र्यम्बक पिंगलेको पारघाटीके बगलवाले पर्वत पर एक दुर्ग बनानेकी आज्ञा दी। इस दुर्गका नाम प्रतापगढ़ रखा गया। यह नाम उस विचित्र षड़यन्त्रका अब तक स्मारक है जो चन्द्रराव मोरेने शिवाजीका प्राण लेनेके लिये रचा था तथा जिस पर वीर-शिरोमणि नीतिविलक्षण शिवाजीने चातुर्य, बुद्धिबल तथा प्रतापसे विजय प्राप्त की।

यद्यपि नेताजीका चित्त बेकार रहनेसे खिन्न रहता था, परन्तु कारागारमें रहने परभी उनका स्वास्थ्य पहलेका जैसाही था। उनको सुबह शाम एक घंटे बुर्जों पर घूमने तथा हवा खानेको परवानगी थी तथा उस छोटीसी कोठरीमें जिसमें कि वे रहते नहीं, बन्दी हो-कर रहते थे—वे दण्ड मुगदर भलीभांति कर सकते थे जिसको कर-के उन्होंने अपने गुरु महात्मा योगिराजके अध्यापन कालमें मटेरन पर्वतकी शिखर पर अपना शारीरिक बल सम्पादन किया था। कारागार भी सौभाग्यवश रमणीय स्थान पर स्थित था। सितारेकी आबहवा इस ऊंचे भागमें जो समुद्रके धरातलसे दो हजार तीन सौ फुट ऊंचा है ठण्डी तथा निरोग करनेवाली पर्वत पर है। पासवाले स्थित दुर्ग एक सहस्र फुट समुद्रकी धरातलसे ऊंचा है। वह डहड-हानेवाली मन्द मन्द और शीतल वायु जो उनकी भौंहोंपर उस समय लगती थी जब वे दुर्गके बुर्जों पर अपने नैमित्तिक भ्रमणके हेतु जाया करते थे उनकी निराशाको दूर करती थी। यद्यपि उनका मन अपनी स्त्री तथा बालकके ध्यानसे उद्विग्न था ही परन्तु विशेषकर उनकी चिन्ता यह विचार कर और बढ़ जाती थी कि अब अधिक तर स्वातन्त्र्यके विशाल सुखदायी झगड़ेमें वे सम्मिलित नहीं हो सकते।

नेताजीके साथ जिस सहानुभूतिका बर्त्ताव किया जाता था वह वास्तविक न थी, किन्तु उनकी निज देशहितैषिता तथा स्वामिभक्तिसे

हटा कर फुसलानेके लिये ही यह माया रची जाती थी। दुर्गाधिपति नेताजीके साथ बहुधा उस समय ही जाया करते थे जब वे बुर्जों पर घूमनेके लिये जाया करते थे। उसी समयान्तरमें दुर्गाधिपति उनसे बीजापुरके धन, बल तथा वैभवका बहुत बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किया करते थे, साथ ही यह भी कहा करते थे कि हमारे राजा अपने सुरक्षित राजाओंसे चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, उदारता पूर्वक समभावसे बर्ताव करते हैं। नेताजी यह विचार कर ध्यान तथा रुचि पूर्वक उनकी बातें सुना करते थे कि सम्भवतः जहां तक मिल सके उतनी सूचना वे बीजापुरकी राज्य सत्ता तथा कौशलके विषयमें पा लें। उस यवन राज्यकी नीति प्रणाली जाननेका नेताजीके मनमें बहुत ही उत्साह था जो दक्षिणमें बहुत कालसे अपनी वैभवशाली राजधानीको स्थापित कर महाराष्ट्रके अधिकांश पर शासन कर रहा था।

घूमने जानेके समय नेताजी अकेले रहते थे; केवल दुर्गाधिपति उनके साथ हो जाया करते थे। दुर्गाधिपतिकी बातें बहुत ही लच्छेदार होती थीं। बातचीत करनेमें वे बहुत ही प्रवीण थे। इस बातचीतसे नेताजीको कारागारमें रहनेका समय भारी न जान पड़ा। दुर्गाधिपतिने उचित अवसर पाकर अपने अभिप्रायको नेताजीसे प्रकट किया; परन्तु उन्होंने दृढ़ता पूर्वक अस्वीकार कर दिया। कुछ दिनोंके पश्चात् फिर वही बात कही गयी। नेताजीने फिर उसी भांति अस्वीकार किया। जब दुर्गाधिपतिने तीसरी बार उनसे कहा तो नेताजीने कड़क कर यह उत्तर दिया;—

"मेरे प्राण भी चले जायं तो कुछ चिन्ताकी बात नहीं है परन्तु मैं अपने देश पर अत्याचार करनेवालोंमें सम्मिलित कदापि नहीं होऊंगा। उनमें सम्मिलित होनेकी अपेक्षा प्राण चला जाना करोड़ गुना अच्छा है। मैं आपसे दो बार पहले कह चुका हूं और अब फिर तीसरी बार सौबातकी एक यह कहे देता हूं

कि मर्दके मुंहकी एक बात होती है। जो बात एक बार मुंहसे निकल चुकी चाहे कुछ भी क्यों न हो वह कदापि नहीं पलट सकती। अब आप इसीको मेरा अन्तिम उत्तर जानकर बार बार मेरे पास आनेका कष्ट न करें।"

दुर्गाधिपतिने उस स्वरसे जिससे नेताजीने अस्वीकार किया था यह भलीभांति समझ लिया कि नेताजो जैसे दृढ़प्रतिज्ञ तथा हठी व्यक्तिको धन तथा बलकी लच्छेदार बातोंमें भुलाकर फुसलाना सम्पूर्णतः असम्भव है। इस हेतु उन्होंने बनावटी सभ्यता तथा सहानुभूतिकी चादर, जिसे वे अभीतक ओढ़े हुए थे उतार कर अलग रख दी तथा तुच्छता सूचक भावसे कहा ;—

"ऐसी बातें मुंहसे कहनेमें तो कुछ मुश्किल नहीं जान पड़ती हैं मगर मौका आने पर उनके मुताबिक काम करना कहनेकी तरह आसान नहीं है। बेशक तुमने मैदाने जङ्गमें अकसर मौतका मुकाबला किया है; उस वक्त तुम्हारा दिल जङ्गके जोशमें भर रहा था मगर जल्द ही हमको यह देखनेका मौका मिलेगा कि अब भी तुम मौतका मुकाबला उसी मुस्तैदीसे करते हो कि नहीं। मौत तुम पर चुपचाप आ पहुंचेगी और तुम उसके आनेसे आगाह होने पर भी अपने बचावके लिये एक बार भी न करने पाओगे। तुमने मेरी मिहरबानीकी जैसी बेकदरी की है उसी तरह मेरे गुस्सेका मजा चखोगे।"

इतना कहकर गुस्सेमें भभकते हुए वे वहांसे चल दिये। उस भयावनी उपाधिका प्रारम्भ जो दुर्गाधिपतिने कही थी दूसरे दिन प्रातःकालसे प्रत्यक्ष ही चला। सुबहको कुछ दिन चढ़ने पर कारागाराध्यक्ष मामूली कामोंसे फुरसत पाने पर नेताजीको बुर्जी पर घुमानेके लिये नित्य प्रति ले जाया करता था। आज दुर्गाधिपति अपने साथ छः आदमी लिये हुए इस ओर आते दिखाई दिये। उन्होंने नेताजीको काराध्यक्षसे लेकर एक सङ्कीर्ण कैदखानेमें पहुंचाया जो पृथ्वीमें आधा दबा था। उसमें जानेका रास्ता दीवारमें होकर एक छोटेसे दरवाजेसे थी। यह दरवाजा भी बहुत बड़ा न था जिससे उजेला भी विशेषकर

अन्दर न पहुंचने पाता था। खिड़की दुर्गकी पृथ्वीके धरातल पर थी तथा कैदखाना जैसा हमारे पाठक पहले जान चुके हैं पृथ्वीके नीचे दबा था। कैदखानेका भीतरी फर्श ऊपरके धरातलसे बहुत ही नीचा था। नेताजी सिपाहियों द्वारा उसमें उद्दण्डता पूर्वक धक्का देकर भीतर कर दिये गये। यदि वे कसरती तथा फुर्तीले न होते तो कैदखानेके नीचे फर्श पर अचानक उतरनेमें अपने हाथ या टांग तोड़ बैठते।

दो चालाक खिलावट कैदखानेकी खिड़की चुन देनेके लिये लगाये गये। जिस समय कारीगरोंने एक भागको ईंटोंसे चुनना प्रारम्भ किया, दुर्गाधिपतिने ऊंचे स्वरमें नेताजीसे कहा:—

"इस कैदखानेमें तुम उस समय तक रखे जाओगे जब तक तुम हमारे राजाके हुक्मको न मान लोगे और इस तरफ न मिल जाओगे। मैंने तुमको तीन बार कुछ दिनोंकी मुहलत देकर कहा मगर तुमने न माना। अगर आजसे नवें दिन तक भी तुम अपनी जिद रखोगे तो बस दिनकी आखिरी रोशनी तुमको उसी दिन सवेरे तक देखनेको नसीब होगी। इसका सबब यह समझो कि अन्दर हवा आनेके लिये इस कैदखानेके खुले हुए नौ हिस्सोंमेंसे हर एक रोज ईंटोंसे बन्द किया जावेगा। अगर तुम अपनी बाकी तबीयतको आजसे नौ दिनोंके भीतर काबूमें न ला सके तो जिस तरह तुम्हारी जान जायगी उसे तुम्हीं अच्छी तरह सोच सकते हो।"

नेताजीने इस भयानक धमकीको भी उसी भांति चुपचाप सुन लिया और वैसा ही शान्तिमय गम्भीर भाव धारण किये रहे जैसा कि उन्होंने पहले (जब कि दुर्गाधिपतिने उनको फुसलाने तथा डरानेकी चेष्टा की थी) धारण किया था।

उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि अब देवताओंकी शरण ही प्रधान बल है; सिवा उसके अन्य कोई सहाय नहीं है। साथ ही इसके वे यह भी भलीभांति जानते थे कि क्या कर्त्तव्य तथा उचित है। इसको भलीभांति जाननेसे ही नेताजी उस भयानक कारागारमें भूखे प्यासे रहकर भी मृत्युका सामना ठीक उसी

प्रकार निश्चित भावसे करनेको उद्यत थे जैसा कि वे युद्ध भूमिमें शत्रुसे युद्ध करते समय कर सकते थे।

"यदि मेरे भाग्यमें यही लिखा है" नेताजीने आप ही आप कहा "कि मैं अपने देशके हेतु मरूं तो क्या चिन्ताकी बात है कि मृत्यु मुझ पर यहां इस अंधेरे तथा भयानक कारागारमें अथवा कहीं खुले युद्धस्थलमें शत्रु अथवा देरसे आवे। सहस्त्रों वीर योद्धा ऐसे हैं जिन्होंने अब देशके लिये असि कोष से निकाल ली है। ऐसे अवसरमें एक आदमीके मरनेसे कुछ विशेष हानि अथवा कार्य्यमें बाधा न होगी। मैं अपनी मृत्युसे नहीं डरता हूं; किन्तु, काशी, मेरी प्रिय स्त्री मेरी मृत्युसे अतीव दुःखित होगी। प्रत्येक देशमें विधवाका भाग्य उदासीन है। विधवाको सुख स्वप्नमें भी प्राप्त नहीं हो सकता।"

इस भांति नेताजी अपने आप कहते कहते चुप हो गये और देर तक न जाने क्या विचारा। अन्तमें निद्रा देवीकी सवारी आयी। उसने चिन्ता मेघाच्छादित नेताजी पर अपना अधिकार कर लिया।

आनेवाले सुबहको यह स्पष्ट हो गया कि दुर्गाधिपतिके शब्द केवल धमकी ही न थे। सूर्योदयके एक घण्टेके पश्चात् वे अपने साथ दो सिलावटोंको लेकर पुनः आये और उनकी चुनाई देखते रहे। जिस समय वे उन नौ भागोंमेंसे एकको चुनते रहे दुर्गाधिपति वहीं मौजूद रहे। नेताजीको दिन भरके लिये भोजन तथा जल दूसरे खुले भागोंमें रख दिया गया। नेताजीने कुछ उत्तर न दिया और चुपचाप रहे परन्तु उन्होंने भोजन तथा जल न लेनेको तुच्छता प्रकट न की। यद्यपि वे अपने देशके लिये प्राणतक देनेको उद्यत थे, तथापि उन्होंने विचारा कि प्राणोंको भूख प्याससे नाश कर देनेसे देवताओंकी आज्ञा भङ्ग होती है। जबतक जीवन है तबतक मनुष्यको धैर्य न त्याग करना चाहिये। एक गुप्त शब्द उनके हृदयमें यह कह रहा था कि "तुम इस अंधेरे जिसमें चूहोंको

तरह बन्द होकर न मरने पाओगे; तुम्हारा भाग्य ऐसा नहीं है"

इसी तरह दिन पर दिन बीत गये और प्रति दिन बन्दी नेताजीकी दृष्टिसे नव भागोंमेंसे एक भाग ईटोंसे चुने जाने पर प्रकाश घटता ही गया। अन्तमें चार ऐसे भाग और शेष रह गये जो ईटोंसे नहीं चुने गये थे; परन्तु ज्योंही सन्ध्या होने पर अन्धकार बढ़ा उनके ध्यानमें स्पष्ट रीतिसे यह जान पड़ा कि मानो जगद्धात्री भवानी यह कह रही हैं—"तुम अपना साहस न त्यागो मैं तुम्हारी सहायक हूं।" नेताजी भी धैर्य पूर्वक यह देखनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि जिन देवताओंकी सेवामें अपना तन मन उन्होंने समर्पण किया है वे उनको इस कठिन समयमें अपनी विचित्र शक्ति द्वारा किस प्रकार सहायता कर बन्धनसे छुड़ाते हैं।

चतुर्दश परिच्छेद।

———0:0———

अचानक सहायता।

मृत्योर्बिभेषि किं बाल न स भीतं विमुञ्चति।
अद्य वाब्द शतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवः॥

सुभाषितः।

नेताजीके बन्दीगृहमें जानेके कुछ ही देर बाद एक युवती सितारेके दुर्गमें आयी। उसके साथ दो बालक तथा रक्षाके लिये कुछ मनुष्य थे। यह बीजापुरके एक उच्च पदाधिकारीकी स्त्री थी। इसका पति यहांके उस दुर्गाधिपतिके पद पर नियुक्त होकर आनेवाला था जिसने नेताजीको कारागारमें बन्द किया था। अन्य किसी आवश्यकीय कारण उपस्थित हो जानेसे उसको रुकना

पड़ा इस हेतु उसने अपने स्त्री तथा बच्चोंको यह कह कर कि मैं तुम लोगोंके वहां पहुंचनेके एक दो दिन पीछे किनारे आ पहुंचूंगा आगे भेज दिया ।

जिस दिन वह स्त्री आयी उसी दिन सन्ध्या समय वह अपनी नौकरनीके साथ बुर्ज पर बैठी हुई थी और उस विस्तीर्ण तथा मनोहर दृश्यको जो सामने स्थित था उत्सुकता पूर्वक देख रही थी और मन्द मन्द शीतल वायुका (जो मुंह पर लगती थी) आनन्द ले रही थी। वह अपनी टहलनीसे कुछ कहनेको घूमी उसी समय उसको अपने पीछे कैदखानेका वह खुला स्थान जिसमें नेताजी कैद थे देख पड़ा ।

उस स्त्रीने कहा—"क्या यह खिड़की ईंटोंसे आधी ही चुनी गयी है ?

टहलनीने कहा कि यह उस कैदखानेका दरवाजा है जिसमें एक प्रसिद्ध हिन्दू राजविद्रोही बन्द है। और पांच दिन बीतने पर यह खिड़की ऊपर तक पूरी तरहसे बन्द हो जावेगी और कैदी दिनके उजालेको फिर कभी न देख सकेगा ।

यह सुन कर उस स्त्रीको आंखोंमें आंसू आ गये। उसको कैदीके दुर्भाग्यका वृत्तान्त सुन कर अतीव दया उत्पन्न हुई। यद्यपि वह मुसलमानकी स्त्री थी तथापि उसका कोमल हृदय उस कैदी पर सहानुभूति करने लगा।

"क्या उसके बचानेका कोई यत्न नहीं किया जा सकता है ?" उसने आपही आप कहा—"यदि उसकी मृत्यु ही निश्चित है तो इस भांति भयङ्कर यातनामें झुला झुला कर तो उसको नहीं मारना चाहिये। कदाचित किसी अतीव नीच कार्य अथवा विश्वासघात करनेके कारण वह इस भांति दण्डित हुआ है, परन्तु कैसा ही अपराध क्यों न हो, कठिनसे कठिन दुष्कर्म्म क्यों न हो, ऐसी यातना देना उचित नहीं ।

टहलनीने उत्तर दिया कि उस कैदीका केवल अपराध यही है कि वह भारी योद्धा है तथा उसने शिवाजीकी ओरसे बीजापुरकी सेनाके विरुद्ध युद्ध किया था ।

उस स्त्रीके नेत्रोंमें सम्पूर्ण रात्रि निद्रा देवीका अनेक आक्रमण करने पर भी अधिकार न हुआ। वह उसी भांति न जाने क्या क्या विचारती, निर्निमेष लोचनसे रात्रि भर जागती रही। उसके ध्यानमें कैदीका दुर्भाग्य घूम रहा था और वह उसके प्राण बचाने अथवा कमसे कम उसकी यातना घटानेका यत्न करनेको उत्सुक हो रही थी। प्रातःकाल उस स्त्रीने अपनेको कैदखानेकी तरफ किसी गुप्त शक्तिसे आकर्षित होते पाया। उस कैदखानेके देखनेसे उसके हृदयकी वेदना और भी बढ़ी। वहां उसने दो कारीगरोंको देखा जो खिड़कीका दूसरा भाग ईंटोंसे चुन रहे थे तथा कुछ गाते भी जाते थे।

यह दृश्य देखनेसे उस स्त्रीको अवर्णनीय वेदना हुई। वह रोती हुई अपने कमरेकी ओर लौटी।

"आह, यदि मैं" उसने रुंधे हुए कंठसे कहा "यदि मैं कुछ—आह, हम स्त्रियोंके दुर्भाग्यसे ईश्वरने स्त्रियोंके हृदयको सहानुभूतिसे पूरित कर रखा है कि दूसरों.........। यदि हाथ पर हाथ रखे बैठे रहना ही अपना कर्त्तव्य विचारा जाय (रुक कर) दुखी अथवा आपत्तिग्रस्तकी सहायता तनिक भी न की जाय तो यह ईश्वरकी दृष्टि तथा उसकी सृष्टिमें निःसन्देह अनुचित है।" एक घंटेसे अधिक समय तक वह इसी तरह न मालूम क्या विचारती गम्भीरभाव धारण किये बैठी रही। न जाने वह क्या सोचती थी, कोई भी नहीं कह सकता कि उसका आन्तरिक अभिप्राय क्या है। वह अपनी असहाय स्थिति पर बैठी बैठी शोक करती रही। उसमें सरलता तथा विनीत भाव कूट कूट कर भरा जान पड़ता था। वह उस मर्य्यादाकी सीमाको कभी स्वप्नमें भी उल्लंघन करनेका ध्यान न करती थी जिसका सबसे अधिक महत्व भारतवर्षकी स्त्रियोंको स्वाभाविक ही प्राप्त है। साथ ही इसके सुशीलता, सहानुभूति और इस कठोर दृश्यको देखनेसे उसका क्रोध और भी दृढ़ताके साथ भड़का। वह विचार रही थी कि मुझे अब क्या करना आवश्यक है? क्या मैं दुर्गाधिपतिके पास जाकर उसके पैरों पर गिर कर अभागे कैदीकी प्राणरक्षाके लिये विनय करूं? आह! पाषाण सदृश न पसीजनेवाले हृदय तथा निर्दय

व्यक्तिसे किसी प्रकारका लाभ होना सम्भव नहीं है। उसकी उद्दण्डताका समाचार सब लोग भली भांति जानते थे। बीजापुरके राजाके कानों तक भी रियायाकी फरयाद कई बार पहुंच चुकी थी। सिवा इन कारणोंके एक और बात यह थी कि वह उस व्यक्तिकी स्त्री थी जो इस दुर्ग प्रधानके पद पर नियुक्त होकर आ रहा था। उस स्त्रीने विचारा कि यदि मैं उससे कोई बात कैदीके विषयमें कहूं और प्रधानका क्रोध विशेष प्रचण्ड हो जावे और वह अपने निर्दय कृत्यको नवीन दुर्गाधिपति के सितारेमें आने तथा दुर्गका अधिकार हाथमें लेनेके पहले ही शीघ्रता पूर्वक समाप्त कर दे तो महा अनर्थ हो जाय। फिर एक भी उपाय न बन सकेगा। इन्हीं बातोंको वह स्त्री विचार रही थी।

अचानक उसके जीमें एक विचार उत्पन्न हुआ और उसने अपनी टहलनीसे कहा ;—

"यह कमरा बहुत ही अंधेरा है मैं इसमें पश्चिमकी ओर दीवारमें एक खिड़की बनवाना चाहती हूं। उस कैदखानेमें दो कारीगर काम करते हैं। तुम वहां जाओ और उनमें से एकको मेरे पास बुला लाओ।"

टहलनी चली गयी और कुछ समयके पश्चात् अपने साथ उन कारीगरोंमें से एकको साथ लेकर लौटी। कारीगरने अदबसे सिर झुकाकर पूछा कि मुझे आपने किस वास्ते बुलाया है और क्या हुक्म देती हैं ?

उस स्त्रीने उत्तर दिया—"मैं अपने कमरेकी पश्चिमी दीवारमें एक खिड़की बनवाना चाहती हूं जिससे मैं यावतेश्वर तथा दूसरी पहाड़ियोंको, जो पश्चिममें हैं, यहांसे देख सकूं"। अनन्तर उसने कहा—

"तुम चतुर जान पड़ते हो ; परन्तु मुझे बड़ा आश्चर्य्य तथा शोक है कि तुम हिन्दू होकर भी ऐसे समयमें गाते रहते हो जब कि तुम एक वीर तथा साहसी योद्धाका जीवित स्मारक बना रहे हो जिसका कोई अपराध है—यदि वह अपराध ही कहा जाय तो केवल यह है कि वह तुम्हारे देशके हितके लिये अत्या-

यात्रियोंसे लड़ा तथा उन देवताओंके हेतु उसने अपना मन मन समर्पण कर दिया जिनको तुम श्रद्धा पूर्वक पूजते हो तथा पवित्र मानते हो।"

कारीगरने उत्तर दिया—"सरकार बचपन होसे मेरी आदत पड़ गयी है कि काम करते समय मैं गाता रहता हूं। जिस समय मैं गाता रहता हूं अच्छी तरह काम कर सकता हूं। परन्तु मेरे गीत सदैव प्रसन्नतामय ही नहीं होते हैं। जब मेरा चित्त उदास होता है, जैसा कि आज सुबहको था, तो मैं उदासीन गीत गाया करता हूं। मेरा हृदय भी आपके समान उस वीर योद्धाके कारागारमें जीवित चुने जानेके कारण शोकान्वित है (एकाएक कुछ सोचकर) परन्तु सरकार मैं दीन तथा धन हीन मनुष्य हूं और अधिक कहनेका साहस नहीं कर सकता हूं। बीजापुरके किसी दुर्गमें महाराष्ट्र विद्रोही पर सहानुभूति दिखाना भयान्वित है और"...

इतना कहते कहते कारीगर रुक गया और उसने भेद भरी निगाह उस स्त्रीकी टहलनी पर डाली।

"ओफ तुमको तारासे (इसी नामसे वह अपनी टहलनीको पुकारती थी) भय करनेकी आवश्यकता नहीं है" उस स्त्रीने कहा "वह भी हमारे समान हिन्दू ही है। यद्यपि वह भारतके एक बहुत दूर स्थानकी रहनेवाली है तथा कभी महाराष्ट्रमें नहीं आयी परन्तु वह तुम्हारे अथवा मेरे भेदको कभी प्रकट न करेगी।

"फिर तो" कारीगरने उत्तर दिया "मैं आपसे वह सब कहनेका साहस कर सकूंगा जो मैंने अपने प्राणोंको जोखिममें डालकर कैदीको भागकर बच जानेका अवसर देनेके लिये किया है। लोहेके छड़ जो दरवाजेमें (कैदखानेके) लगे हैं इस भांति लगाये गये हैं कि खिड़कीकी बायीं ओर सबसे ऊपरवाले कोनेमें जो भाग चार हिस्सोंमें बंटा हुआ है वह भीतर होसे एक खटकेके दबाने पर सुगमतासे खोला जा सकता है। परन्तु कैदीसे मैं यह बात किस प्रकार कह सकता हूं? क्योंकि जिस समय मैं वहां ईंटें चुनता

रहता हूं मुझ पर दुर्गाधिपति स्वयं या उनका कोई मातहत कड़ी निगाह रखते हैं और इस हेतु उन लोगोंके सामने मेरे लिये कैदीसे कुछ भी कहना असम्भव है। यदि किसी प्रकार वह खिड़की खोल भी सके तो भी उसे दुर्गकी दीवार जो कैदखानेके ठीक पीछे है लांघनेकी बाधा अवश्य पड़ेगी। दीवार लांघना असम्भव ही है। कैदसे निकलने पर भी मेरी समझमें उसको कुछ विशेष लाभ नहीं है"

उस स्त्रीने अपनी इस असहाय अवस्था पर ठंडी सांस ली। यद्यपि चारों ओरसे निराशा मुंह खोले निगलनेको तय्यार देख पड़ती थी, तथापि उसने अपने दयामय अभिप्रायको सिद्ध करनेके लिये प्रत्येक उपाय तथा उद्योग करना निश्चय किया।

"मैं विचारती हूं" उसने कहा "खिड़कीके वे चार भाग जिनमें ईंटें अभी तक नहीं चुनी गयी हैं कदाचित वेही हैं जो भीतरसे खोले जा सकते हैं।"

"हां" कारीगरने उत्तर दिया "मैंने नौ भागोंमेंसे पांच भागोंको ईंटोंसे इस आशामें चुना कि वेभाग जिनमें ईंटें अभी तक नहीं चुनी गयी हैं और जो भीतरसे खुल सकते हैं, खुले रहनेसे कैदीको भाग बचनेके लिये अन्तिम क्षण तक भी सहायता करनेको यदि कोई अवसर प्राप्त हो, तो उपयोगी हों।"

"ऐसा अवसर अब अपने आप ही उत्पन्न हो गया है" उस स्त्रीने कहा "पहली कठिनाई तो कुशलता पूर्वक उल्लंघन की जा सकती है। जिस समय कल प्रातःकाल तुम काम करने आओ नित्यके समान काम करते समय गाते रहना और दिनकी अपेक्षा विशेष ऊंचे स्वरसे गाना कि कैदी तुम्हारे गानेको भलीभांति सुन सके।"

"परन्तु इसमें आपने क्या लाभ विचारा है?"

प्रथम अपने गीतमें उसका ध्यान आकर्षित करनेके लिये आशा बधानेवाले गीत गाना। अनन्तर अपने गीतमें ही उस गुप्त खटकेका भेद कह देना तथा खोलनेका समय कल अर्द्ध रात्रिको निश्चित करना।

"फिर?"

"फिर यह कि ज्योंही वह कारागारसे बाहर निकले वहां उसके स्वागतको हम लोग मौजूद रहेंगे। तुम अंधेरेहोमें उसे घर ले जाना। उसकी अनुपस्थिति वहां तब तक प्रकट न होगी जब तक कि प्रातःकाल कारा‍ध्यक्ष उसको भोजन तथा जल देने न आवेगा। उसी अंधेरेमें अर्थात् सुबह होनेके पहले उसे तुम्हारे साथी दूसरे कारीगरके वेषमें दुर्गके बाहर निकाल देंगे।"

कारीगरने देखा कि यह यत्न साध्य है; परन्तु निःसन्देह विशेष भयान्वित उद्योग है। कारीगर एक अपरिचित व्यक्तिके हेतु अपने सिर पर जान जोखिम लेनेको कुछ हिचकता जान पड़ा। उस स्त्रीने कारीगरको उस दयामय विचारका स्मरण कराया जिसने उसके हृदयमें उत्पन्न होकर चार भागोंमें पहले ईंटें न चुननेको प्रेरित किया था। उसने कारीगरको यह कह कर लालच भी भर पूर दिया कि यदि वह उस स्त्रीका उपाय सिद्ध करनेमें सहायता करेगा तो भरपूर इनाम पावेगा। (परोपकार अथवा मानुषिक सहानुभूतिके) अधिकतर उत्तम या (द्रव्यके लालचको) निकृष्ट विचारोंका उसके हृदयमें सञ्चार हुआ अथवा दोनोंहीका उस पर प्रभाव पड़ा यह हमें ठीक नहीं मालूम। परन्तु वह उस स्त्रीकी आज्ञानुसार कार्य्य करनेको राजी हो गया और उससे विदा ले घर गया।

जब कारीगर प्रातःकाल वहां काम करनेको गया तो देखा कि सौभाग्यवश वह मनुष्य जो उसके कामकी निगरानीको उस दिन कारागारमें मुकर्रर किया गया है एक अरब है वह महाराष्ट्र भाषाका एक शब्द भी न जानता था। इस कारण कारीगर स्पष्टतर तथा उच्चस्वरसे अपना गीत गाने तथा कैदीको आन्तरिक अभिप्राय समझानेमें अरबसे बेखटके होगया। उसने इस प्रकारका गीत गाया।

मधुसूदन महिमा तोरि अपार॥
करत भलाई होत बुराई, है चित कपट प्रचार।
सहत दुःख सज्जन भवसागर, तासों पार उतार॥
मधुसूदन महिमा तोरि अपार॥
केहरि, गज, पक्षी बन्धन लखि विधिकी गति विस्तार।
सूर्य चन्द्रको राहु ग्रसत है संकटको नहिं पार॥ मधुसूदन०॥

रहि नवमास बन्द नर भीतर सहत कलेश अपार ।
जन्म भये पर भूले उनको पाई अवस्था चार ॥ मधुसूदन० ॥
तिनको समुझि शून्य निकसौ तुम अर्द्धराखि निज द्वार ।
तब मिटि जैहै सुनहु सबै दुख खटकहि बाम विचार॥मधुसूदन०॥

कारीगरने सरबको अपनी भाषा न समझनेसे निश्चिन्त हो खिड़कीके पास जाकर गीत गा दिया तथा अपना अभिप्राय प्रकट कर दिया कि खटका बायीं ओर है। उसने धीरेसे पूछा यदि तुम मेरे गानेका अर्थ भलीभांति समझ गये हो तो संकेत करो। संकेत भी हो गया। कारीगर ईंटोंके चुननेमें लगा और छठे भागको भी ईंटोंसे चुन दिया। कामसे निबट कर वह वहांसे चल दिया परन्तु उस भागमें ईंटें इस प्रकार दी गयीं थीं कि वे सुगमता पूर्वक बाहर निकाली जा सकती थीं। शीघ्र ही दीवारमें खिड़की बनानेके बहानेसे जिसके बनानेका हुक्म उस स्त्रीने दिया था, वह नवीन दुर्गाधिपतिके स्थानकी ओर खिड़कीके विषयमें अपनी सफलताकी सूचना देनेको गया। प्रिय पाठको! आप पहचानते हैं यह नवीन आगन्तुक विचित्र स्त्री कौन है?

पञ्चदश परिच्छेद

—*※*—

कारागारके बाहर और भीतर।

गज भुजङ्गमयोरपि बन्धनम् शशिदिवाकर योर्ग्रह पीड़नम्।
मतिमताञ्च समीक्ष्य दरिद्रतां, विधि रहो बलवान इति मेमतिः॥
भर्तृहरि।

नेताजी कारीगरके आन्तरिक अभिप्रायको भलीभांति समझ गये थे, परन्तु उन्होंने तुरन्त ही परीक्षा न की। यदि कोई उनको

कारागारमें लोहेके छड़ों पर हाथ डालते देख लेता तो निःसन्देह वे अपनी ही मूर्खतासे अपने जीवन तथा स्वतंत्रताका यह एक मात्र अन्तिम अवसर खो बैठते, कारण कारागारके सामने हीसे मार्ग था जहां लोगोंकी आमदरफ़ रहती थी। इस हेतु जब तक दिन रहा नेताजीने उस खटकेको न छुआ। सावधानी पूर्वक उसे जांच लेनेसे ही उन्होंने अपने चित्तको शान्त किया। वे अपने उद्विग्न मनको उसके छूनेसे तब तक रोके रहे जब तक सूर्यका प्रकाश सम्पूर्णतः छिप न गया। सूर्यास्त होनेके पश्चात् सन्ध्या नहीं रात्रि अपनी काली चादर ओढ़े हुए आ पहुंची। दोपहरहीसे बादल आकाशमें घिरे थे, जो रात्रिके आरम्भ होने पर और भी बड़े तथा काले देख पड़ने लगे।

सूर्य भगवानको अस्ताचल पर पहुंचे तथा पश्चिम दिशामें जाकर गुम हुए अभी विशेष विलम्ब न हुआ था कि नेताजीने उस खटके पर हाथ रखा। जांच करने पर विदित हुआ कि उसके दबानेसे खिड़कीमें लगे हुए लोहेके छड़ भीतरकी ओर झुक जाते हैं। नेताजीने फिर उसको ज्योंका त्यों कर दिया और अंधेरेमें अर्द्धरात्रि होनेकी धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा करने लगे।

किसी इच्छित समयका आना कैसा कठिन हो जाता है! ज्यों त्यों राम राम करके आधी रात हुई। हवामें धूल उड़ रही थी। ज्ञात पड़ता था कि आंधी चल रही है जो कि (यदि वे कारागारसे निकलनेमें कृतकार्य हुए तो) उनके भाग बचनेमें विशेष सहायता करेगी। ज्योंही निर्दिष्ट समय समीप आया बिजलीकी गरज सितारेके आसपासवाले बादलोंमें प्रतिध्वनि करती हुई सुन पड़ी। अन्तमें घड़ियालीने आधी रातका घंटा बजाया। ज्यों ही मोगरी घंटे पर लगी नेताजीने खटके पर हाथ रखा। बिना किसी कठिनाईके लोहेके छड़ भीतरी ओर झुक गये। उसी क्षण बाहर खड़े हुए कारीगरने ईंटोंको उखाड़ना प्रारम्भ किया। नेताजीने तब अपनेको उस खाली स्थानमेंसे (जो छड़ोंके भीतरी ओर झुक जानेसे ही गया था) उस कारागारके बाहर किया जो उनका जीवित स्मारक होनेको निश्चित किया गया था।

रात्रिकी अंधेरीने उन्हें यह जाननेको बाधित किया कि उनके सहायक कौन थे। एकाएक दामिनीकी दमदमाती हुई दमकने सम्पूर्ण दुर्गको प्रकाशित कर दिया। नेताजीने अपने सामने एक मनुष्य तथा दो नकाबपोश स्त्रियोंको देखा। उन स्त्रियोंमेंसे एकने मर्मभेदी स्वरसे (जिसने नेताजीके हृदयको तहतक पहुंच कर हिला दिया तथा बचपनकी बातें स्मरण करा दीं) कहा ;—

"आह, नित्या, मेरे प्यारे भाई! क्या हम पुनः इस भांति मिलते हैं ?

"गङ्गा! गङ्गा! आह, क्या तुम हो मेरी बहिन ? तुम्हें तो हम बहुत दिनसे मृतक समझ चुके थे ओफ... ...

भाई तथा बहिन एक दूसरेके गले मिलकर दुःख तथा आनन्दके आंसू गिराने लगे। जिस समय दोनों भाई बहिन अनुराग पूर्वक मिल रहे थे बादल बड़े शब्दसे कड़का और बिजलीकी चमकने इस सम्पूर्ण दृश्यको दुपहरीकी तरह देदीप्यमान कर दिया। वह चमचमाता हुआ प्रकाश उस नवीन आगन्तुक व्यक्तिकी झलझलाती तलवार पर गिरी जो क्रोध तथा मानसिक वेदना प्रकट करनेवाले स्वरमें भाई और बहिनकी ओर यह कहता हुआ दौड़ा आ रहा था ;—

"या परवरदिगार क्या यह मेरी गङ्गा है जो आधी रातको ऐसे एक खौफनाक जगहमें आयी है ?

प्रिय पाठको! आपको विशेष चक्करमें न डालकर यह कह देना उचित जान पड़ता है कि यह नवीन आगन्तुक व्यक्ति गङ्गाका पति रुस्तमजवां ही था जो दुर्गमें निश्चित समयके पहले ही आ पहुंचा था। अपनी प्रीति पात्र स्त्रीको देखनेकी उत्सुकतासे वह सवारोंको पीछे छोड़ कर अकेला ही आगे चला आया था और निर्दिष्ट समयसे कई घण्टे पहले दुर्गमें आ गया था, वह इतना अधैर्य्य हो रहा था कि रास्तेके देखनेके लिये मशालची भी साथ लेनेको फाटक पर न ठहरा। शीघ्रता पूर्वक वह सदर फाटकमें होकर नगरके मध्यकी ओर चल दिया तथा प्रसङ्ग वश कारागारके सामने वाले मार्गसे ठीक उस समय निकला

जब कि नेताजी तथा गङ्गा गले लग रहे थे। अपनी स्त्रीको पहचान कर तथा उसको एक व्यक्तिसे आलिङ्गन करते देख रुस्तमजमांका क्रोध असीम हो गया और वह तलवार निकालकर उस ओर दौड़ा।

गङ्गा पतिके पैरों पर गिर पड़ी और बोली "नेताजीको वध मत करो—यह वही मेरा भाई है जिसे तुमने पाटल गङ्गाके किनारे मुल्लाके हाथसे बचाया था और प्रिय पति !..."

इतना कहते कहते गङ्गाका गला रुक गया। रुस्तमजमांने अपनी तलवार मियानमें कर ली तथा इस विचित्र दृश्यके विषयमें गङ्गासे पूछा। गङ्गाकी मानसिक तथा शारीरिक शक्ति जाती रही थी। वह मूर्छित हो गयी और पृथ्वी पर गिर पड़ी होती परन्तु नेताजीने उसे अपने हाथोंमें रोक लिया। गङ्गा बड़ी सरल हृदय थी। एक तो उसके इस प्रकार चुपचाप अंधेरी रात्रिमें कारागारमें आने हीसे उसका कलेजा कांप रहा था, दूसरे बिजलीकी चमक तथा बादलकी हिला देनेवाली गरजने उसको भयभीत कर दिया था। वह एक निरपराध मनुष्यको यवनों द्वारा निर्दयता पूर्वक वध होनेसे रक्षा करनेको आयी थी ; उसको वहां अपने भाई नेताजीके मिलनेको कदापि स्वप्नमें भी आशा न थी। अपने भाईको पहचानने तथा उसी समय अकस्मात अपने पतिके आ जानेसे उसका हृदय जो शोक तथा हर्ष दोनों हीसे (नेताजीके कारण) भर रहा था अब रुस्तमजमांके कारण भयसे पूरित होकर इस विचित्र धड़केको सहन न कर सका और वह मूर्छित होकर गिर पड़ी।

अपनी टहलनी तथा कारोगरकी सुरक्षामें गङ्गा उस कमरेमें जहां वह ठहरी थी, पहुंचायी गयी। नेताजी तथा रुस्तमजमां दोनों ही एक दूसरेको देखकर प्रसन्न हो गये थे। न मालूम उनके चित्तमें इस समय क्या क्या विचार घूम रहे थे। नेताजी तो प्रत्यक्ष ही बहुत उद्विग्न जान पड़ते थे। इस समय दोनों ही मूकवत गङ्गाके पलंगकी बगलमें खड़े थे। जब गङ्गाकी मूर्छा भङ्ग हुई तो उसके मुंहसे शब्द ये निकले—

"मेरे भाई, मेरे पति"

हार्दिक प्रसन्नताको झलक उसके सुन्दर मुख पर उस समय फैल गयी जब उसने अपने भाई तथा पति दोनों हीको पलंगकी बगलमें खड़े देखा।

"निश्चय रखो सब भांति कुशल है" गङ्गाके पतिने (एक बार उसपर भेदभरी निगाह डालकर कहा "तुम अपने भाईको कल प्रातः-काल पुनः देख सकोगी (कुछ रुककर) परन्तु अब हमें तुमको तुम्हारी विश्वस्त दाईकी सुरक्षामें छोड़कर यहांसे जाना आवश्यक है कि तुमको मूर्छासे उत्पन्न हुई कमजोरीसे आराम मिले तथा सावधानी प्राप्त हो"।

प्रिय पाठको! आपको निःसन्देह अतीव आश्चर्य हुआ होगा कि यवन मतावलम्बी रुस्तमजमां ऐसी भाषा बोलनेको किस प्रकार योग्य हुआ? परन्तु अभी आपका सन्देह मिटानेमें हम असमर्थ हैं।

रुस्तमजमां नेताजीको अपने साथ ले दूसरे कमरेमें चल दिया। वहां पहुंच कर उसने कहा :—

"यद्यपि आपका मन मुसलमानोंसे बिल्कुल पलटा है और होना भी चाहिये मगर मौजूदा बातों पर निगाह कर आपको अपनी जोशीली तबीयतको संभाले रहना जरूरी है। अब यह कहिये कि आगे क्या करना जरूरी है।"

"सबसे आगे यही करना जरूरी है कि तुम्हारी खोपड़ी अलग कर दी जाय और इस..."

"इसीसे तो कहता हूं कि आप अपनी जोशीली तबीयतको रोके रहें और मौजूदा हालत पर गौर कर कोई काम जल्दीमें न कर बैठें।" रुस्तमजमांने कहा।

"अच्छा, कोई चिन्ता नहीं, पहले तुम्हीं कहो, कि आगे क्या करना जरूरी है। थोड़ी देरके लिये मैं तुम्हारी बातें सुननेमें कोई हर्ज नहीं समझता" नेताजीने कहा।

"पहले यह बताइये कि आप यहां कैसे आये?" रुस्तमजमांने कहा।

जावलीसे चलनेके बाद जिस तरह वे पकड़े गये थे—, जिस भांति उन्हें दुर्गाधिपतिने बीजापुरकी ओर मिल जानेको ओर दिया था तथा अन्तमें जिस भांति उस बातको अस्वीकार करने पर उस कैदखानेमें बन्द करके उसने उनका प्राण लेना चाहा था वह सब रामकहानी नेताजीने रुस्तमजमांसे कह सुनायी।

रुस्तमजमांने गौरसे सारा हाल सुन कर कहा ;—

"पहलेहीसे दुर्गाधिपतिके अत्याचार तथा निर्दयताके कृत्योंकी सूचना बीजापुरके राजाके कानों तक पहुंच चुकी थी। रियाया उससे बहुत नाराज थी, इसीसे वह यहांसे बीजापुर बुला भेजा गया और मैं मुकर्रर किया गया। अब दरबारमें ज्यादातर इन्साफ होता है। उन लोगोंसे मेल करनेके लिये हरेक सूरत की जा रही है जो बीजापुरके बरखिलाफ बागी हो गये हैं। शिवाजीके बाप शाहजी भी छोड़ दिये गये हैं। इस किलेको अपने हाथमें लेनेके बाद पहला काम मेरा यही है कि मैं तुमको उस खौफनाक कैदखानेसे निकाल कर इस तरह रखूं जैसे कि तुम जैसे बहादुर और आबरूदार दुश्मनको रखा जाना चाहिये, मगर........ (कुछ सोच कर) तुम तो मेरे ही घरमें मौजूद हो और भाग कर बच जानेकी जवाबदेही मेरे....."

नेताजीने कहा "जैसा कि भाग्य अभीतक मेरे अनुकूल रहा है यदि आगे भी वैसा ही रहा तो······यह कुछ कठिन नहीं है। विशेष कुशलतासे यह सब हो सकता है। मूसलधार पानी तथा बादलोंसे और दिनकी अपेक्षा आज रात्रि बहुत अंधेरी है। मैं पुनः कैदखानेका विना किसीके जाने ठीक उसी तरह जैसे मैं निकल आया था, लौटकर जा सकता हूं तथा प्रातःकाल जैसा आप उचित समझें मेरे हेतु प्रबन्ध कर सकते हैं। परन्तु तुम मुसलमान होकर भी मेरे साथ यह सहानुभूति क्यों दिखाते हो?

"नहीं नहीं आप अभी अपनी तबीयतको रोके रहें और मुझसे आप किसी तरहकी बुराईकी उम्मेद न रखें।"

यद्यपि रुस्तमजमां अपनी स्त्रीके भाईको कैदखानेमें भेजनेकी इच्छित नहीं था, परन्तु जब उसने देखा कि सिवा इसके कठिना-

इयोंसे निकलनेका अन्य उपाय नहीं है तो लाचार होकर उसे नेताजीकी बात मान लेनी पड़ी। इस हेतु अंधेरे हीमें नेताजी बिना किसीकी दृष्टि पड़े पुनः उसी कैदखानेमें लौट गये। भीतर घुसकर उन्होंने खटका दबाकर लोहेके छड़ पुनः जैसेके तैसे कर दिये। कारीगरने (जो साथ हो था) निकाली हुई ईंटोंको पुनः चुन दिया जिससे कोई चिह्न प्रातःकाल उस विचित्र घटनाको प्रमाणित करनेवाला न रहा।

षोड़श परिच्छेद।

नेताजी और गंगा।

लोभश्चेद गुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः
सत्यं चेत्तपसा किं शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्।
सौजन्यं यदि किं गुणैः स्व महिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः
सद्विद्या यदि किं धनैरप यशो यद्यस्ति किं मृत्युना॥

भर्तृहरि।

दूसरे दिन सुबहकोही रुस्तमजमांने दुर्गका अधिपतित्व पहले अधिपतिसे अपने हाथमें ले लिया। पुराने अधिपति लोगोंकी शिकायतको (जो बीजापुर पहुंची थी) भलीभांति जान चुके थे। वे मनमें बहुत रुष्ट हो रहे थे। दुर्गाधिपतिने उनको दावत करनेको कहला भेजा परन्तु उन्होंने यह कह कर इनकार कर दिया कि हम आज ही सितारेसे कूच करना चाहते हैं इस वास्ते आपकी दावत कबूल नहीं कर सकते।

उनके सितारेसे चले आनेके पश्चात् नेताजी उस भयानक कारागारसे निकाले गये। उनके निवासके हेतु ऐसे स्थानका प्रबन्ध कर दिया गया जिसमें कि वे सुगमता तथा सुखपूर्वक

रह सकें। उचित आदरके साथ उनका सब प्रबन्ध किया गया तथा "भाग न जाने"की सौगन्ध खाने पर उनको दुर्गके भीतर इच्छानुसार घूमने फिरनेकी परवानगी दे दी गयी।

एक बार और नेताजी दुर्गके बुर्जों पर घूमनेके लिये गये। अकस्मात् वहां गंगा भी मिल गयी। नेताजीने अपने उद्विग्न चित्तका समाधान कर अपनी बहनसे यह पूछनेका निश्चय किया कि उस समयसे, उस अभागे दिनसे जब कि वह चौकग्रामसे रवाना हुई थी और उस समूहकी सुरक्षामें बड़गांवको पहुंचायी जानेवाली थी उस पर क्या बीती? नेताजीने कहा,—

"बहिन गङ्गा, क्या कारण है कि तुमने अपने जीवित रहनेका सन्देशा हमलोगोंको नहीं भेजा?"

"प्रसङ्ग ही ऐसा था तथा कोई आवश्यकता भी न थी।"

"क्यों?"

क्योंकि मैं, एक मुसलमानकी स्त्री हो चुकी थी। मुझे इससे इतनी लज्जा उत्पन्न हुई कि मैंने यही उचित समझा कि तुम लोग मुझे मरीही समझो तो अच्छा है?"

"निःसन्देह मर जाना कुछ बात नहीं है। ऐसे व्यक्तिसे विवाह कर लेनेको अपेक्षा जो अपनी जाति तथा धर्म्मके विरुद्ध है, प्राण देना ही ठोक है। जो धर्म्म हमारे पिता, प्रपिता न मालूम कितने समयसे मानते आये और जिसको यवनोंके अत्याचारसे बचानेके हेतु न जाने कितने वीरोंने युद्धभूमिमें प्राण दे दिये तथा अब भी देते हैं उस पवित्र सनातनधर्म्मकी प्राचीन तथा मर्य्यादामय सीमा उल्लंघन करनेकी अपेक्षा प्राण दे देना करोड़ गुना श्रेष्ठ है। जैसे अनेक वीर राजपुत्रियां पहले अपने धर्म्मकी रक्षाके लिये अपने ही हाथसे अपने प्राण दे चुकी हैं। तुमने भी वैसा क्यों नहीं किया?"

"भैया, यह बात भी एक बार मेरे मनमें उत्पन्न हुई और एक दिन रात्रिको मैंने खञ्जरसे अपनी जान लेनी चाही। परन्तु मैं अशक्त हृदय हूं, मुझसे वह खंजर अपने कलेजेमें न भोंकते बना और डरपोकपन या बेशरमीसे मैं जीती रही।"

"परन्तु कल रात्रिको तुममें भारी हिम्मत आ गयी थी" नेताजीने बीचहीसे रोक कर कहा।

"नहीं, भाई नित्या कह तो चुकी, कि मैं अशक्त हृदय स्त्री हूं। कल रात्रिको जब मैं यहांसे बाहर अंधेरेमें गयी मैं सिरसे पैरतक कांप रही थी। बादलोंकी भारी गर्जना और बिजलीकी तड़पने मुझे भयसे अधमरा कर दिया था। यह सब कुछ था; परन्तु मेरे हृदयमें इस भयकी अपेक्षा दया अपना बल पूर्णरूपसे सञ्चार कर रही थी। दयाका वेग भयसे अधिक बलवान था। वही मुझको वहां तक खींच ले गया; हां भया, नेताजी वास्तवमें मैं डरपोक हूं। मुझे वह भी........" इतना कहते कहते गङ्गा अकस्मात रुक गयी और उसने अपने मनका भाव मनमें दबाकर फिर कहना प्रारम्भ किया "मुझे कई बातोंका नित्य ध्यान होता था। अपने घर तथा माता पिता भाई इत्यादिका स्मरण करके बहुत कष्ट होता था, परन्तु मैंने तुम लोगोंको अपने जीवित रहनेका समाचार न भेजना ही उचित समझा और......

नेताजीने गङ्गाकी बात बीचहीसे काट कर कहा "और यह तुमने बहुत ही अच्छा किया जो अपने जीवित रहने—इस प्रकार अपने पिताकी नाक कटा कर जीवित रहनेका समाचार न भेजा, नहीं तो वृद्ध माता पिताको जितना शोक होता कदाचित उससे........ (कुछ रुक कर) उनके प्राणों पर हो बन आता। आह! नेकनाम व्यक्ति अपने नामको जैसा समझते हैं वैसा अपने प्राण, धन, पद, या संसारको कुछ भी नहीं समझते। आह, उनको अपने नाम चरित्र तथा मर्यादाका सबसे अधिक ध्यान रहता है। संसारमें सभी कुछ प्राप्त हो सकता है सोनेकी सहायता अथवा उद्योगसे; परन्तु गयी हुई कीर्त्ति पुनः प्राप्त नहीं हो सकती। सोनेके बलसे सारे कष्ट मिट सकते हैं, सम्पत्ति मिल सकती है, परन्तु सोनेका बल बदनामीका धब्बा नहीं छुड़ा सकता है। आह........."

नेताजीका मन कई कारणोंसे विचलित हो गया और वे कुछ देरतक चुप रहे। अन्तमें पुनः सावधान होकर कहना प्रारम्भ किया;—

"ईश्वरकी इच्छा प्रबल है, उस पर किसीका अधिकार नहीं।

इधर मुझपर भी आपत्तिके मेघ घिरे ही रहे” उन्होंने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त ब्योरेवार कह सुनाया।

गङ्गा, अपने भाईकी जबानी राजमच्छी, कल्याण तथा व्यङ्कट बाघकी भजकी कन्दराकी घटना सुन कर आश्चर्यान्वित हुई, परन्तु घमण्डी अयूबखांको गिरिफ्तारीका हाल सुन कर वह बहुत हंसी।

इसी समय रुस्तमजमां भी वहां आ पहुंचा; उसने अयूबखांको गिरिफ्तारीका हाल सुन कर कहा;—

“अयूबखांने जो कुछ अपने बारेमें कहा वह ठीक है सचमुच वह बीजापुरके राजा मुहम्मद शाहकी प्यारी बेगम बदरुन्निसाका बड़ा भाई है। मुझे राजाने इधर आते वक्त इस बातकी तलाश करनेका जरूरी हुक्म दिया था कि “अयूबखां जिन्दा हैं कि नहीं। अगर उनका पता लग जावे तो उनके छुड़ानेकी बहर सूरत कोशिश और बन्दोबस्त किया जावे। शायद राजा शिवाजी तुम्हारे बदले उनको हमें दे देवें। मुझे तो यकीन है कि वह इस बदलेको मञ्जूर कर लेंगे।”

इस अभिप्रायसे रुस्तमजमांने महाराष्ट्रके उद्धारक शिवाजीसे लिखा पढ़ी की। शिवाजीको यह जानकर कि उनके मित्र और दाहिने हाथ नेताजी जीवित हैं अकथनीय आनन्द हुआ। उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक अयूबखांको स्वतन्त्र कर नेताजीको लेना स्वीकार कर लिया। कुछ ही समयके पश्चात् उचित प्रबन्ध हो गया और नेताजी स्वतन्त्र कर दिये गये। नेताजी अपनी बहनसे एक बार पुनः एकान्तमें मिले। तथा उनमें यह बातचीत हुई। नेताजी होने पहले बातचीत करना प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा;—“प्यारी बहन गङ्गा! निःसन्देह यह विषय शोकान्वित, द्विगुण शोकान्वित है कि तुम हमारे देश तथा धर्मके विरोधी यवन परिवारमें हो। मुझे बहन तुमसे पृथक होनेमें बहुत शोक है। क्या तुमको अपने माता पिताके घर चलकर सुखपूर्वक रहना अधिकतर श्रेष्ठ न होगा?

“नहीं, भैया, नहीं” गङ्गाने उत्तर दिया। “तुम क्या कह रहे हो? क्या पतिको छोड़ना धर्म विरुद्ध नहीं है? पति ही धर्म, पति ही

ईश्वर, पति ही स्त्रीका सर्वस्व है, क्या ऐसा धर्म शास्त्र मुक्तकण्ठसे नहीं पुकार रहे हैं?"

"परन्तु क्या हिन्दू रमणी किसी यवनके चङ्गुलमें पड़कर ऐसा कहनेका साहस कर सकती है? क्या उस व्यक्तिको जो अन्य मतावलम्बी हो कोई स्त्री पति शब्दसे सम्बोधन कर सकती है?" नेताजीने कहा।

"और यदि वह तुम्हारा ही सजाति तथा मतावलम्बी हो तब तो तुम्हें कुछ उज्र नहीं हो सकता? नेताजी मैं भी तुम्हारी ही तरह हिन्दू, सनातन धर्मावलम्बी हूं" किसीने नेताजीके पीछेसे कहा।

उन्होंने पीछे फिरकर देखा कि वहां एक सजीला महाराष्ट्र युवक खड़ा है। नेताजी कुछ कहना ही चाहते थे कि उस युवकने (उनके उत्तरकी प्रतीक्षा न कर) कहना प्रारम्भ किया।—"मुझे लोग मुसलमान मतावलम्बी जानते हैं। आज पन्द्रह वर्षसे मैं यही वेष बनाये हुए हूं तथा रुस्तमजमांके नामसे प्रसिद्ध हूं; परन्तु वास्तवमें मैं भी वही हूं जो तुम हो। तुमको अनेक शङ्काएं उत्पन्न हुई होंगी। अनेक गुप्त कारणोंसे जिनके कहनेका अभी अवसर नहीं है मुझे यह वेष रखना पड़ा। मैं यवन नहीं हूं, इतना ही कहना काफी है। जब तक मेरा कार्य सिद्ध न होगा मुझे इसी यवन वेषमें रहना होगा, परन्तु वेष बनाये रखनेसे क्या है। मनुष्य अपना धर्म रखकर चाहे किसी भी वेषमें अपने कार्य अथवा किसी गुप्त दबावसे रह सकता है। क्या आप सहेरन पर दो वर्ष तक योगियोंके वेषमें नहीं रहे? मैं समझता हूं कि कदाचित आप अब भी अपनी बहन गङ्गाको ग्लानियुक्त दृष्टिसे देखते होंगे। परन्तु आप इस ध्यानको अपने चित्तसे निकाल दीजिये।"

"तुम्हारा कहना ठीक है वेषसे कुछ नहीं है; परन्तु पन्द्रह वर्षसे तुम्हें क्यों यह वेष रखना पड़ा?"

"अभी इसके कहनेका अवसर नहीं है। एक समय यह विचित्र रहस्य आप ही सब पर प्रकट हो जायगा। वर्त्तमान अवस्थामें आपको भी इस भेदको गुप्त रखना होगा; नहीं तो मेरी

बड़ी हानि होगी कदाचित् आज तक जाना कब्भर है। मैंने आपको बहुत ही खिन्न देखकर लाचार हो यह भेद खोल दिया। तुम्हारी बहनको भी मैंने ताकीद कर दी थी कि वह इस विषयका एक अक्षर भी तुमसे न कहे और मुझे विश्वास है कि उसने वैसा ही किया भी होगा।"

"निःसन्देह, गगांने मुझे भारी भ्रममें रखा। कदापि स्वप्नमें भी ऐसी बात सुननेका ध्यान न था—ओफ्......"

"अभी यह बात बिलकुल छिपी हुई रहना चाहिये। किसी अन्यके कानमें इसके पड़नेसे अनर्थ हो सकता है। अस्तु, अब मुझे फिर रुस्तमजमां बनना उचित है, क्योंकि अगर इस तरह मुझे कोई देख लेगा तो........."

"आपकी बोली पहिनाव तथा ढंगसे कदापि यह कोई नहीं पहचान सकता कि आप हिन्दू हैं"

"समय, देश तथा कई कारणोंसे सभी कुछ करना पड़ता है, आप मेरा हाल जाननेको निस्सन्देह उत्सुक होते होंगे, परन्तु क्या किया जाय........."

"अच्छा तो जैसा आप उचित समझें ठीक है, मैं भी इस गुप्त भेदको किसी औरसे क्या अभी अपने माता पितासे भी न कहूंगा। आप निश्चिन्त रहें, मेरी तैयारी हो चुकी है, मैं अब आपसे विदा होनेको........."

भैया, वह कौनसा, सौभाग्यका दिन होगा जब मैं, अपनी जन्मभूमि तथा माता पिताका दर्शन करूंगी। गङ्गाने जिसकी आंखोंसे आंसू गिर रहे थे नेताजीसे गले लग कर कहा "भगवान तुम्हारी रक्षा करे, तुम्हारे देखनेसे मेरा चित्त ऐसा प्रसन्न हुआ कि मैं अपने सम्पूर्ण कष्टोंको भूल गयी।"

"बाई, गगां, जिस दीनबंधु करुणानिधि मधुसूदनने, इस विचित्र रीति पर तुम्हारे धर्म तथा सतीत्वकी रक्षा की वही सब कुछ करनेमें समर्थ है। शीघ्रही हम तुम पुनः मिलेंगे। अपने भानजे तथा भानजीका मुख (गङ्गा अब एक पुत्र और एक कन्याकी माता हुई थी।) प्रेम सहित चूम उनको हृदयसे लगा नेताजी अब जान

पर सवार हो सितारेसे रवाना हो गये। नेताजीके बहनोई— जिनको हम अब यशवंतजीके नामसे पुकारेंगे कई कोस तक उनको पहुंचाने गये। अपने साथ सुरक्षाके हेतु आदमियोंको लेजाना नेताजीने अस्वीकार किया दोनों साले बहनोई अब एक दूसरे पर परम प्रीतिमान थे। उन्होंने आपसमें प्रतिज्ञा कर ली कि जहां तक हो सकेगा—मालिककी नौकरी तथा धर्म निर्वाहके अतिरिक्त वे परस्पर उचित सहायता करते रहेंगे। निस्संदेह नेताजी भी उनके कृतज्ञ थे कि उनके प्राण पाटल गंगाके किनारे उन्हींके द्वारा बचाये गये थे। कई कोस साथ साथ चले आने पर नेताजीने, यशवंतजीको लौटा दिया और आप लोहगढ़ चले।

प्रिय पाठको, वहां पहुंचने पर नेताजी और राजा शिवाजीको एक दूसरेसे मिलकर कैसा आनन्द प्राप्त हुआ होगा। कुछ दिन वहां ठहरा कर शिवाजीने उन्हें चौकग्राममें यह कह कर रवाना किया कि आपको घर छोड़े बहुत दिन हुए तथा वृद्ध माता पिता आपके समाचार न पानेके कारण विशेष चिन्तित हैं; इस हेतु अब आपको चौक जाना आवश्यक है।

चौक पहुंचने पर नेताजीने अपने वृद्ध माता पिताका पदरज लिया। आशीर्वाद पाकर अनन्तर उन्होंने अपनी सम्पूर्ण व्यतीत घटना कह सुनाई जिसको सुनकर वे बहुतही आश्चर्य्यमें डूबे। नेताजी पुनः अपने घर चौकग्राम पहुंचकर अपनी प्रिय गृहिणी काशीके "सौंदर्य्य कुसुम" की सुगंध मधुकरकी भांति अनुभव करने लगे। नेताजीके वृद्ध माता पिता भी, अपने पोतेका मुंह देखकर अपना पुराना दुख भूल गये।

प्रिय पाठको, हमको अब आपसे विशेष कहना नहीं है। नेताजी अब सब भांतिसे सुखी हुए। उनके वृद्ध माता पिता भी पौत्रको गोदमें लेकर प्रसन्न हुए। वे आनन्द पूर्वक अपनी जन्मभूमि चौकग्राममें निवास करने लगे।